श्रीविजयलक्ष्मीसूरिविरचित

श्री

उपदेशप्रासाद भाषांतर.

भाग ३ जो

स्थंभ १०-११-१२-१३-१४

(व्याख्यान १३६ थी २१०)

चार शिक्षाव्रतो तथा बीजी अनेक बाबतोनुं
अनेक दृष्टांतो युक्त वर्णन

श्रावकवर्गने खास उपयोगी होवाथी
संस्कृत गद्यपद्यात्मकनुं गुर्जरगिरामां भाषांतर करीने

प्रसिद्धकर्त्ता

श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा
भावनगर

आवृत्ति त्रीजी

विक्रम संवत् १९९५] [वीर संवत २४६५

किंमत रू. २-०-०

मुद्रक—शाह गुलाबचंद लल्लुभाई श्री महोदय प्रिन्टिंग प्रेस भावनगर

प्रथमावृत्तिनी प्रस्तावना

कोई पण ग्रथनी प्रस्तावना खास करीने ते ग्रथमा शु शु कहेल छे ते (अभिधेय) कहेवा माटे लखवामा आवे छे आ उपदेशप्रासाद ग्रथ श्रीविजयलक्ष्मीसूरिए २४ स्थभ प्रमाण बनाव्यो छे तेना छपाववानी सगवडने माटे पाच भाग पाडेला छे तेमाना पहेला विभागमा चार स्तभनु भाषातर छपायेलु छे ते मुबईनिवासी चिमनलाल साकळचद मारफतीआए छपाव्या बाद (बधाया अगाउ) अमारा हाथमा आवता तेमा घणी भूलो जणावाथी केटलोक सुधारो अमे सूचव्यो हतो के तेमणे ते भागना आद्य विभागमा प्रगट करेल छे, परतु आखु भाषातर मूळ ग्रथ साथे सरखावी जोया सिवाय तेनी खरी शुद्धि थइ शकती नथी अमारो विचार ते चारे स्थभोनु फरीने भाषातर करावी शुद्ध प्रगट करवानो छे, परतु एक वखत पाच विभागमा आखो ग्रथ सपूर्ण छपाइ गया पछी ते करवा धारलु छे

आना बीजा विभागमा पाचमाथी नवमा सुधीना पाच स्थभोनु भाषातर आपवामा आव्यु छे तेमा श्रावकना बार व्रतो पैकी प्रथमना आठ व्रतोनी व्याख्या समावेली छे आ भाग अमे भाषातर करावी सुधारीने तैयार करेलो पण ते चिमनलाल साकळचदना मारफत प्रसिद्ध करेलो छे

आ त्रीजो विभाग खास अमारा ज तरफथी भाषातर शुद्ध करीने स्वतत्र छपाववामा आव्यो छे आ भागमा दशमाथी चौदमा सुधीना पाच स्थभोनु भाषातर समाववामा आव्यु छे ए ज प्रमाणे हवे पछीना बे विभागमा पण बाकी रहेला दश स्थभोनु भाषातर छपावीने आखो ग्रथ पूर्ण करवा धारलु छे

आ ग्रथमा ग्रथकर्त्ताए अनेक बाबतोनो समावेश करेलो छे बाळजीवोने तो आ ग्रथ परम उपकारी छे, एटलु ज नहीं पण मध्यम स्थितिना जीवोने पण उपकारक थाय तेवो छे आ विभागमा आवला ७५ व्याख्यानोमा अनेक बाबतो समावेली छे प्रारभमा आठमा व्रत सबधी शेष हकीकतना बे व्याख्यान छे पछी नवमा व्रत सबधी ६ व्याख्यान छे तेमा सम्यक्त्वसामायिक, श्रुतसामायिक, देशविरतिसामायिक तथा सर्वविरतिसामायिकनु स्वरूप सारु बतावेलु छे तेम ज सामायिकमा राखवाना उपकरणोनु वर्णन अने ते सबधी शास्त्राधार सारी रीते बताववामा आवेलो छे. त्यारपछी दशमा व्रत आश्री ब व्याख्यान छे पछी व्याख्यान १४७ मु छ अट्ठाइ सबधी छे अने व्याख्यान १४८ मु वार्षिक कृत्यो सबधी छे त्यारपछी ४ व्याख्यान अग्यारमा व्रत सबधी छे अने ते पछी तेने अगे करवानी जरूरीआत

वाळा प्रतिक्रमण संबंधी ५ व्याख्यान छे. तेमां प्रतिक्रमणना आठ पर्याय उपर आठ कथाओ छे. पछी व्याख्यान १५८ मुं ईर्यावही संबंधी छे, अने पाछां ३ व्याख्यान पौषधव्रत संबंधी छे. एकदर गणीए तो १३ व्याख्यान अग्यारमा व्रत संबंधी छे. त्यारपछी ४ व्याख्यान बारमा व्रत संबंधी छे पछी १६६ मुं व्याख्यान गृहस्थनी भोजनविधि संबंधी छे अने ते प्रसंगे मुनिराजने दान देवानी आवश्यकता होवाथी ३ व्याख्यान ते संबंधी छे. तेमज १७० मुं व्याख्यान साधर्मीवात्सल्य संबंधी छे. पछी १७१ मुं व्याख्यान पौषधशाला कराववा विषे छे, ते मुनिराजने वसतीदान देवाने प्रसंगे कहेल छे. पाछां ४ व्याख्यान मुनिदानना संबंधनां ज छे. एकदर गणीए तो १४ व्याख्यान बारमा व्रतने अनुसरतां ज छे. व्याख्यान १७६ मामां बारे व्रत निश्चय व्यवहारथी समजाव्यां छे ते बराबर लक्ष आपवा योग्य छे. प्राये निश्चयथी बार व्रतनुं स्वरूप तो कोईक ज जाणे छे. १७७ मा व्याख्यानमां बळात्कारे पण व्रत आपवाथी लाभ थवानुं दृष्टांतथी सिद्ध करी आप्युं छे. त्यारपछीनां ४ व्याख्यान प्रासंगिक महापुरुषोनी कथाओनां छे.

अहीं १८१ मुं व्याख्यान शरू करतां ग्रंथनो मध्यभाग आववाथी मध्य मंगळाचरण करवामां आव्युं छे. व्याख्यान १८२ मुं ने १८३ मुं तीर्थयात्रा संबंधी छे. व्याख्यान १८४ मामां बतावेलो स्नानविधि अने १८५ मामां बतावेल पुष्पपूजाविधि खास ध्यान आपवा लायक छे. त्यारपछीनां बे व्याख्यान जिनचैत्य अने जिनमूर्ति संबंधी छे. व्याख्यान १८८ मुं यशोधर राजानी कथावाळुं छे मानसिक हिंसा पण केटली हानि करे छे ते आ कथामां बहु स्पष्ट रीते बतावी आपेल छे. त्यारपछीनां बे व्याख्यान मूर्तिपूजानी सिद्धि करनारां अने जिनपूजानी विधि बतावनारां छे. व्याख्यान १९१ मुं कायर मनुष्योना 'अविधिए करवा करतां न करवुं सारुं' एवा वचनने निरस्त करनारुं छे त्यारपछीनां बे व्याख्यान देवद्रव्य संबंधी छे. १९४ मा व्याख्यानमां मानतुंगाचार्यनी वांचवा लायक कथा छे अने १९५ मुं व्याख्यान नवकारमंत्रना जाप संबंधी छे

चौदमा स्थंभना प्रारंभथी तीर्थंकरना पांच कल्याणकनुं वर्णन शरू करेल छे. एकंदर १० व्याख्यान ते संबंधी छे तेमां १९६ मा व्याख्यानमां वीश स्थानकनुं स्वरूप छे अने २०३ मा व्याख्यानमां सर्व जातिना जीवोने आश्रवो केवी रीते लागे छे तेनुं स्वरूप बहु सारी रीते समजावेलुं छे. छेवटनां पांच व्याख्यान काळनुं स्वरूप बतावनारां अने दरेक काळचक्रना बार आरानी स्पष्टताथी समजुती आपनारां छे तेमां प्रसंगे अनागत चोवीशी संबंधी बहु सविस्तर वर्णन आपेलुं छे, तेवुं वर्णन बीजा कोइक ज ग्रंथमां लभ्य थाय छे. आमां दिवाळीकल्पनो समावेश करी दीधेलो

जे एकन्दर रीत दरेक हकीकतने ग्रन्थाधार माटे स्पष्ट करवामां कर्त्ताए बनतो प्रयास करवामां कसर राखी नथी

आ विभागमां आवेला ७५ व्याख्यानमां ७५ करतां वधारे मोटी कथाओ छे. बाकीना नाना मोटा प्रबंधो गणीए तो कोई पण व्याख्यान प्राये कथा विनानुं न होवाथी कथाओ एकसो उपर थाय तेम छे आ ग्रंथ मात्र कथाना रसीआओने ज वांचवा योग्य छे एम नथी, कारण के अनेक प्रासंगिक बाबतोनो एनी अंदर समावेश करेलो छे

आ ग्रंथनी प्रतिओ टबावाळी अने प्राये बहु ज अशुद्ध स्थितिमां दृष्टिए पडे छे, तथी तेना भाषांतरमां बहु विशेष लक्ष आपवानी आवश्यकता रहे छे केवळ अन्यदर्शनी शास्त्रीओना विश्वास पर रहीने तेना करेला भाषांतरो जेओ प्रकट करे छे तेओ परिणाम लाभने स्थानके टोटो पण उठावे छे तेनी माहिती तेवा भाषांतरो वांची जोवाथी मळी शके तेम छे आ भाषांतरनी अंदर जेम अमारी अल्पमति प्रमाणे तेवी भूल न थवा माटे पूरतो प्रयास कर्यो छे, तेनी परीक्षा करवानुं कार्य अमारा वाचकवर्गने सोंपवानुं दुरस्त धारीए छीए

फागण शुदि १ संवत् १९६२	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर

आ आवृत्तिनी प्रस्तावना

प्रथम प्रस्तावनामां जणाव्या प्रमाणे अमे आखा ग्रंथनुं भाषांतर स्वतंत्र करावी, तपासी, सुधारी पांच भागमां प्रगट करेल छे तेनी जे जे आवृत्तिओ थयेली छे उत्तरोत्तर सुधारा थयेल छे आ आवृत्तिमां कटलीक स्खलनाने स्थाने नोट करेल छे आ ग्रंथनी जोडमां मूकीए तेवो ३६० व्याख्यानवो कोई ग्रंथ नथी आ ग्रंथमां आवेली तमाम कथाओनो अकारानुक्रम व्याख्याननां अंक साथे पांचमा भागने प्रांते आपेल छे ते खास उपयोगी छे, तेमज तमाम पर्वोनी कथाओनी अनुक्रमणिका पण आपी छे

आ ग्रंथ मूळ पण अमे चार भागमां छपावेल छे, तेनी प्रतो अत्यारे लभ्य नथी परंतु बीजा बधु अमदावादमां हालमां छपावे छे तेना बे भाग बहार पडेला छे ते अमारे त्यां मळे छे आगळ काम शरू छे मूळ ग्रंथ पण खास व्याख्यानमां वांचवा लायक छे आशा छे के आ ग्रंथनो मूळ ने भाषांतररूप बने प्रकारनो चतुर्विध संघ योग्यतानुसार लाभ लइने अमने आभारी करशे

भाद्रपद शुदि १५ सं० १९९५	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर

श्रीउपदेशप्रासाद भाग ३ जो.

स्थंभ १० माथी १४ मा सुधीनी

अनुक्रमणिका.

(व्याख्यान १३६ थी २१० सुधी)

स्थंभ १४ मो.



॥ श्री जिनाय नमः ॥

श्री सद्गुरुभ्यो नमः

॥ श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर ॥

भाग ३ जो



स्थभ १० मो

व्याख्यान १३६ मु

अनर्थदंड विरमण नामना आठमा व्रत संबंधी त्याग करवा योग्य पांच अतिचार कहे छे

सयुक्ताधिकरणत्वमुपभोगातिरिक्तता ।
मौखर्यमथ कौकुच्य, कदर्पोऽनर्थदण्डगाः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

" निरतर अधिकरणो जोडेला तैयार राखवा, पोताना उपभोगमा जोइए ते करता विशेष वस्तु तैयार राखवी, मुखरपणु–अतिवाचालपणु करवु, कुचेष्टा करवी अने कामोत्पादक वाणी बोलवी–ए पाच आठमा व्रतना अतिचार छे.

विस्तरार्थ

ए पाच अतिचारनु स्वरूप आ प्रमाणेः–जेनाथी आत्मा पृथ्वीवगेरेमा अधिकृत थाय ते अधिकरण कहेवाय. तेने सयुक्त एटले बीजा अधिकरणो साथे जोडी राखवा. जेमके खाडणीआ साथे मानेलु, हळ साथे तेनु फळ, धनुष्यनी साथे बाण, गाडा साथे धोंसरु, घटीना एक पड साथे बीजु पड अने कुहाडा साथे हाथो–इत्यादि सयुक्त करी राखवाथी ते अनर्थक्रिया करवाने योग्य थाय छे. तेने सज्ज–तैयार करी राखवापणु ते सयुक्ताधिकरणत्व कहेवाय छे ते विषे आवश्यक बृहद्वृत्तिमा कह्यु छे के " श्रावके गाडा विगेरे अधिकरणो जोडी राखवा नहीं "

वीरना जीवे ते भवमां बोलेला अनर्थदंडरूप वाक्यनी आलोचना करेली नहीं होवाथी आ महीसेन जिह्वाना रोगथी पीडित थयो अने मुनिने उपचारवडे जीवाड्या हता तेथी प्राप्त थयेल लब्धिथी तारा प्रयासवडे ते निरोगी थयो.

आ प्रमाणेनो पूर्वभव सांभळी बन्ने भाईओने जातिस्मरण थवाथी अनर्थदंडने मूळमांथी निवारीने ते बन्ने जणे मुनिपणुं ग्रहण कर्युं

आ शूरसेन अने महीसेनना दृष्टांतथी पापनुं मूळ जे अनर्थदंड तेनो मूळमांथी त्याग करवो

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ षड्विंशदुत्तरशततम प्रबंधः ॥ १२६ ॥

व्याख्यान १२७ मुं

पुनः अनर्थदंडनुं ज वर्णन करे छे

अज्ञानमन्युदंभेभ्योऽनर्थदंड प्रजायते ।
स चूर्ण्यो व्रतवज्रेण चित्रगुप्तकुमारवत् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

" अज्ञान, क्रोध अने दंभथी अनर्थदंड थाय छे तेने चित्रगुप्तकुमारनी जेम व्रतरूपी वज्रवडे चूर्ण करी नाखवो "

आ श्लोकनो भावार्थ श्लोकमां सूचवेला चित्रगुप्तकुमारना संबंधथी जाणी लेवो ते कथा नीचे प्रमाणे छे

चित्रगुप्तकुमारनी कथा

कोशलदेशमां जयशेखर नामे राजा हतो तेने पुरुषदत्त अने पुरुषसिंह नामे बे पुत्रो हता समान गुण तथा शीलवाळा ते बन्नेने परस्पर मैत्री हती जाणे ते मैत्री पासे शीखेलुं होय तेवुं तेमनुं सख्य ऐक्यता पाम्युं हतुं ते विषे अर्थदीपिकामां कह्युं छे के—

पाण्योरुपकृतिं सत्त्व, स्त्रिया भग्नशुनो बलम् ॥
जिह्वाया दक्षतामक्ष्णो , सखिता शिक्षते सुधीः ॥ १ ॥

" मद्बुद्धिवाळा पुरुषे वे हाथ पासेथी उपकार शीखवो, स्त्री पासेथी सत्त्व शीखवु, भागता श्वान पासेथी नळ करता शीखवु, जिह्वा पासेथी उहापण शीखवु अने वे नेत्र पासेथी मित्रपणु शीखवु " ते राजाने वसु नामे गुरु हता तेने चित्रगुप्त नामे एक पुत्र हतो. तेने कौतुक जोवा बहु प्रिय हता

एकदा जयशेखर राजा अकस्मात् मृत्यु पामी गयो. एटले अमात्योए ज्येष्ठ राजपुत्र पुरुषदत्तने राजा कर्यो अने कनिष्ठ राजपुत्र पुरुषसिंहने युवराजपद उपर बेसार्यो. एक वखते राजाए राजसभामा कह्यु के-" आ सर्व समृद्धि के जे मारा पिताने शरणदायक थई नहीं ते मने शरणभूत केम थशे ? " ते सांभळी तेना गुरु बोल्या के-" हे कुमार ! तमारा पिताना श्रेयने माटे सुवर्णना पुतळाना, गायोना, भूमिना, तेम ज शय्या, उपानह, तिल अने कन्या वगेरेना दान ब्राह्मणोने आपो, कारण के पुत्रे आपेला दाननु फळ पिताने प्राप्त थाय छे, एम श्रुतिमा कह्यु छे अने ते माटे ज लोको पुत्रनी इच्छा करे छे. " पछी राजाए सर्व दर्शनवाळाओने बोलावी बोलावीने ते दान आपवा माडया. ज्यारे जैनमुनिओने बोलाव्या त्यारे तेओ बोल्या के-" हे राजन् ! जीवघात करनारा दान मुनिओने योग्य नथी ते विषे वदारुवृत्तिमा कह्यु छे केः—

तथा हि येन जायते, क्रोधलोभादयो भृशं ।
स्वर्णं रूप्यं न तद् देयं, चारित्रिभ्यश्चरित्रहृत् ॥ १ ॥

" जेनाथी क्रोध, लोभ वगेरे विशेष उत्पन्न थाय तेवु सुवर्ण अने रूपु चारित्रधारीओने आपवु नहीं, कारण के ते चारित्रने हरनारु छे. " वळी कह्यु छे केः—

विभवो वीतसगाना, वैदग्ध्य कुलयोषितां ।
दाक्षिण्य वणिजां प्रेम, वेश्यानाममृत विष ॥ १ ॥

" निःसग पुरुषोने वैभव विष समान छे, कुलीन स्त्रीओने अति चातुर्य विष समान छे, व्यापारीने दाक्षिण्यता विष समान छे अने वेश्याओने प्रेम विष समान छे. आ चारे अमृत समान छता ते ते अधिकारीपरत्वे विष जेवा छे वळी हे राजा ! जे अपवित्र वस्तु खाय अने शींगडा खरीओथी जतुओने मारे तेवा पशु वगेरेनु दान श्रेयने माटे केम थाय? माटे जो दान आपवु होय तो एक अभयदान आपवु ते ज श्रेष्ठ छे कह्यु छे के—

कपिलानां सहस्र तु, यो द्विजेभ्य प्रयच्छति ।
एकस्य जीवित दद्यात्, कला नार्हति षोडशी ॥ १ ॥

" जे ब्राह्मणोने एक हजार कपिला-गायो आप अने एकने जीवितदान आपे तो ते गोदान जीवितदाननी सोळमी कळाने पण योग्य थतु नथी " तेमा पण बीजाए करेलु जे धर्मकर्म, तेनु फळ बीजाने मळतु ज नथी जे करे तेने ज मळे छे कहु छे के—

एकस्मिन् भुक्तवत्यन्य., साक्षादपि न तृप्यते ।
मृतस्य कल्पते यत्तु, तद्भस्मनि हुतोपम ॥ १ ॥

" एक माणस जमे अने बीजो तृप्ति पामे एवु साक्षात् पण बनतु नथी तो जे मरेलाने माटे कल्प छे ते तो भस्ममा (घी) होम्या बराबर ज छे " करेलु कर्म तेना कर्ताने ज अनुसरे छे. जो एम न होय तो " कृतनाश (करेलानो नाश) अने अकृतागम (नहीं करेलानो आगम) ए दोष प्राप्त थाय " आ प्रमाणे सामळी राजा बोल्यो—" महाराज ! त्यारे तमने शु शु आपीए ? " पछी मुनिओए एषणीय-प्रासुक आहार विगेरेनु स्वरूप कही बताव्यु ते सामळी जैनमुनिना धर्मना निर्दोष पणु जाणी राजा पुरुषदत्त पोताना कनिष्ठबंधुने राज्य उपर बेसाडीने ते राजपुत्र साथे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे अवधिज्ञान प्राप्त करी पोताना ज्ञातिजनने प्रतिबोधवा माटे त्या आव्या

राजा पुरुषसिंहनी साथे तेना पुरोहितनो पुत्र चित्रगुप्त तेमने वादवा माटे आव्यो. त्या देशना आपता कोई एक कठीआरो प्रतिबोध पाम्यो ते जोई जैनधर्मनो अज्ञात, मिथ्यात्वना लीधे जैनधर्म उपर द्वेष करनारो चित्रगुप्त राजाना भयथी दमकडे आ प्रमाणे बोल्यो के—" आ कठीआराने धन्य छे जेणे सर्वस्व छोडीने चारित्र ग्रहण कर्यु, तेथी हवे महनत वगर तने अन्नादिक मळशे. पछी राजा वगेरेनी वेठथी पण ए निश्चित थई गयो अहो ! मुनिवेषनो महिमा केवो छे ! " आवा तेना व्यग-भरेला वचनो साभळी गुरु बोल्या—अहो ! अद्यापि तने अनर्थदंड मारे छे चित्रगुप्त बोल्यो—अनर्थदंड एटले शु ? ज्ञानीए कह्यु के—अज्ञान, क्रोध अने दंभथी अनर्थदंड थाय छे अने तेनु फळ भवोभव कुयोनिमा पडवारूप प्राप्त थाय छे ए अनर्थदंडनी विवरणा साभळ

अनर्थदंड उपर कथा

पूर्वे भद्दिलपुरमा जिनदत्त श्रेष्ठीनो पुत्र सेन नामे हतो ते बाल्यवयमां वैराग्य वान् थयो पिताए तेने वैराग्यवृत्ति छोडाववाने जारपुरुषोनी गोष्ठिमा मूक्यो त्या तेन राजपुत्र साथे मैत्री थई नीच लोकोना संगथी ते पाप करवामा परायण थयो.

एक वखते तेणे राजपुत्रने कह्यु के-"हे मित्र ! तारा वृद्ध पिताने मारीने सत्वर राज्य केम लेतो नथी ?" आ विचार मंत्रीना जाणवामा आवता तेणे राजाने वात करी राजाए ते वणिकपुत्रने कुमारने कुबुद्धि आपनारो जाणी 'वध करवा योग्य छे' एम सुभटोने जणाव्यु सुभटोए तेने बाधीने मारी नाख्यो ते मृत्यु पामीने नारकी थयो. त्याथी नीकळी असख्य काल सुधी भमीने तु चित्रगुप्त नामे पुरोहितपुत्र थयो छे आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव साभळी जातिस्मरण थता चित्रगुप्त प्रतिबोध पाम्यो अने तेणे पेला मुनिरूप कठीआराने नमन कर्यु त्यारे गुरु बोल्या—हे चित्रगुप्त ! बीजी एक वार्ता साभळ'—

द्रमकमुनिनो प्रबध

एक वखते श्री वीरप्रभु पासे कोई भिखारीए दीक्षा लीधी. तेणे श्री वीरप्रभुने विज्ञप्ति करी के-'हे स्वामी ! ज्ञानरूपी सूर्यना उदय विना हु चारित्रमार्गने केवी रीते जोई शकीश ?' प्रभुए तेने चौदपूर्वनु रहस्य कह्यु के-'तु मनेव मनने वश कर' तेणे ते वात स्वीकारी त्यारथी मासक्षपण वगेरेने पारणे फरता कोइ वखत तेने आहार मळे नहीं अने लोको तरफथी अपमान थाय तो पण ते भगवतनु वचन सभारीने शुभ ध्यान धरवा लाग्यो एक वखते कोई अज्ञ लोकोए तेनु हास्य कर्यु के, 'अहो ! आ पुरुषे केटलु बधु धनादिक छोडीने सयम लीधु छे के जेथी ते पाखड करीने लोकोने फोगट दरावे छे.' आ वाक्य अभयकुमारे चौटामा साभळ्यु पछी अभयकुमारे लोकोने एकठा करीने कह्यु के-'जे कोई चक्षुइद्रियनो विषय छोडी दे तेने हु आ बहुमूल्यवाळु रत्न आपु छु.' ते वखते कोई बोल्यु नहीं पुन अभयकुमारे कह्यु के-'जे कोई स्पर्शइद्रियनो विषय छोडे तेने आ बीजु रत्न आपु छु' वळी कह्यु के-'जे पाचे इद्रियोना विषयने छोडीने तेने वश करे तेने हु आ पाच रत्नो आपु छु.' पण कोईए तेनो प्रत्युत्तर आप्यो नहीं एवामा ते मुनि सन्मुख आवता हता तेमने नमन करीने अभयकुमार कह्यु के- हे स्वामी ! तमे पाचे इद्रियोने जीतनार छो, माटे आ पाच रत्न तमे ज ग्रहण करो' मुनि बोल्या—'ए अर्थ (द्रव्य) अनर्थने ज आपनार छे, तेथी मे श्री वीरप्रभुनी समक्ष यावज्जीव सुधी तेनु प्रत्याख्यान कर्यु छे' पछी अभयकुमारे लोकोने कह्यु के—'अरे लोको ! आ मुनिनु निःस्पृहपणु जुओ ! तमे शु जोईने तेमनु हास्य कर्यु ?' पछी सर्व लोकोए मुनिने प्रणाम करीने खमाव्या ते मुनि वीरभगवतना वचनमा तत्पर रही प्राते केवळज्ञान मेळवीने मुक्तिने प्राप्त थया

आ वृत्तात साभळी चित्रगुप्त गर्व रहित थई गयो पछी सर्व अनर्थदडने निवारवाने माटे मुनिव्रत लई पूर्वकृत पापनो दुस्तप तपस्यावडे नाश करीने आ ससा-

रना प्रपचने टाळी दीधो अथात् सिद्धिपदने पाम्यो. तेथी प्रमाद, क्रोध, कपट अने अज्ञानथी तथा दुर्ध्यान वगेरेथी पोताना आत्मधर्मने हणनार अनर्थदंडनो त्याग करवो अने श्री जैनधर्मने भजवो

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ सप्तत्रिंशदुत्तरशततम प्रबंध ॥ १३७ ॥

व्याख्यान १३८ मुं

हवे वारवार सेववा योग्य चार शिक्षाव्रत कहे छे
तेमा पहेलु सामायिक नामे शिक्षाव्रत कहे छे

मुहूर्त्तावधि सावद्यव्यापारपरिवर्जनम् ।
आद्य शिक्षाव्रत सामायिक स्यात्समताजुषाम् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

"एक मुहूर्त सुधी सावद्य व्यापारने छोडी दवो ते पहेलु शिक्षाव्रत कहेवाय छे ते समताने सेवनारा पुरुषोने प्राप्त थाय छे "

विस्तरार्थ

मुहूर्त एटले ब घडी सुधी सावद्य के० पापयुक्त मन, वचन, कायानी चेष्टारूप व्यापारने छोडवो ते पहेलु शिक्षाव्रत जे शिखवा योग्य एटले वारवार करवा योग्य ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे समता एटले रागद्वेषना हतुमा मध्यस्थपणु ते विष कह्यु छे के-

इतो रागमहाभोधि , इतो द्वेषदवानलः ॥
यस्तयोर्मध्यग॰ पथा , तत्साम्यमिति गीयते ॥ १ ॥

"एक तरफ रागरूप मोटो समुद्र अने एक तरफ द्वेषरूपी दावानळ-ते बनेना मध्यनो जे मार्ग ते साम्य-समता कहेवाय छे " तेवी समताने भजनारा जीवोने सामायिक थाय छे हवे सामायिकना बीजा अर्थ कहे छे-सम एटले रागद्वेष रहित होवा मता आय एटले ज्ञानादिकनो जे लाभ ते सामायिक अथवा सम एटले प्रतिक्षणे ज्ञानादि अपूर्व पर्याय के जेओए चितामणि तथा कल्पद्रुम वगेरेना प्रभावनो पण ति

रस्कार करेलो छे अने जेओ निरुपम सुखना हेतुरूप छे, तेओनी साथे जे योजाय ते समाय कहेवाय अने ते समाय जेनु प्रयोजन छे ते सामायिक कहेवाय छे ते सामायिक सावद्य कर्मनो त्याग कर्या विना थतुं नथी ते विषे परम ऋषिओए कह्यु छे के–" सावद्य योगने छोडीने करवा योग्य एवु सामायिक केवळीओए प्रशस्त (श्रेष्ठ) कहेलु छे तेवु सामायिक गृहस्थना श्रेष्ठ धर्मरूप जाणी आत्मानु हित करनारा पुरुषोए परलोकने अर्थे करवु जोइए " ते सामायिकनु फळ एटलु मोटु छे के जे कोईथी गणी शकातु नथी कह्यु छे के—

दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवन्नस्स खंडिय एगो ।
इयरो पुण सामाइय, करेइ न पहूप्पए तस्स ॥ १ ॥

" एक पुरुष दिवसे दिवसे लाख सुवर्णनु दान दे अने बीजो सामायिक करे तो सुवर्णनु दान सामायिकनी बरोबर न थाय " ते विषे एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सामायिक उपर एक दृष्टांत

कोई नगरमा एक धनाढ्य गृहस्थ रहेतो हतो ते दातार होवाथी हमेशा पात्रा पात्रनो विचार कर्या वगर लक्ष सुवर्णनु दान आप्या पछी पोताना पलग उपरथी नीचे उतरतो हतो. तेनी पाडोशमा एक वृद्ध श्राविका रहेती हती ते हमेशा एक सामायिक करती हती. एक वखते कोई कारणने लईने ते गृहस्थने अने वृद्धाने बन्नेने दान आपवामा अने सामायिक करवामा अतराय आव्यो, तेथी बनेने खेद थयो. ते वृद्धानो खेद साभळी पेला गृहस्थे गर्वथी कह्यु के–" अरे डोशी ! तु शेनो खेद करे छे ? एक वखतनो ककडो लईने हाथ विगेरेनु प्रमार्जन न कर्युं तो तेथी शु जतु रह्यु ? तेमा शु पुण्य थवानु हतु ? ते काममा द्रव्यनो खर्च तो बीलकुल जोवामा आवतो नथी. जो एवी रीते धर्म थतो होय तो मने हमेशा तेज कर्या करे, पछी कोई लक्ष सुवर्णनु दान करे ज नहीं. " ते साभळी वृद्धा बोली के–" एवु कहो नहीं, सुवर्णमणिना पगथियावाळु देरासर करावे तेथी पण सामायिकमा घणु पुण्य छे " पछी ' कंचणमणिसोवाण० ' ए गाथा तेणे कही समजावी.

अनुक्रमे ते गृहस्थ अतकाळे आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामी हस्ती थयो अने ते वृद्ध श्राविका सामायिकना ध्यानथी मृत्यु पामीने ते ज गामना राजानी पुत्री थई अनुक्रमे ते हस्तीने अटवीमाथी राजाए पकडयो अने तेने पोतानो पट्टहस्ती कर्यो एकदा राजमार्गे चाल्या जता ते हस्तीए पोतानु घर विगेरे जोयुं, तेथी तने जातिस्मरण ज्ञान

रना प्रपचने टाळी दीधो अर्थात सिद्धिपदने पाम्यो तेथी प्रमाद, क्रोध, कपट अने अज्ञानथी तथा दुर्ध्यान वगेरेथी पोताना आत्मधर्मने हणनार अनर्थदडनो त्याग करवो अने श्री जैनधर्मने भजवो

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद–वृत्तौ सप्तत्रिंशदुत्तरशततम प्रबन्ध ॥ १३७ ॥

व्याख्यान १३८ मुं

हवे वारवार सेववा योग्य चार शिक्षाव्रत कहे छे तेमा पहेलु सामायिक नामे शिक्षाव्रत कहे छे

मुहूर्त्तावधि सावद्यव्यापारपरिवर्जनम् ।
आद्य शिक्षाव्रत सामायिक स्यात्समताजुषाम् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

"एक मुहूर्त सुधी सावद्य व्यापारने छोडी दवो ते पहेलु शिक्षाव्रत कहेवाय छे ते समताने सेवनारा पुरुषोने प्राप्त थाय छे "

विस्तरार्थ

मुहूर्त एटले वे घडी सुधी सावद्य क० पापयुक्त मन, वचन, कायानी चेष्टारूप व्यापारने छोडवो ते पहेलु शिक्षाव्रत जे शिखवा योग्य एटले वारवार करवा योग्य ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे समता एटले रागद्वेषना हेतुमा मध्यस्थपणु ते विषे कह्यु छे के–

इतो रागमहाम्भोधि , इतो द्वेषदवानलः ॥
यस्तयोर्मध्यग पथा', तत्साम्यमिति गीयते ॥ १ ॥

" एक तरफ रागरूप मोटो समुद्र अने एक तरफ द्वेषरूपी दावानळ–ते बनेना मध्यनो जे मार्ग ते साम्य–समता कहेवाय छे " तेवी समताने भजनारा जीवोने सामायिक थाय छे हवे सामायिकना बीजा अर्थ कहे छे–सम एटले रागद्वेष रहित होता सता आय एटले ज्ञानादिकनो जे लाभ ते सामायिक अथवा सम एटले प्रतिक्षणे ज्ञानादि अपूर्व पर्याय के जेओए चिंतामणि तथा कल्पद्रुम वगेरेना प्रभावनो पण ति

स्कार करेलो छे अने जेओ निरुपम सुखना हेतुरूप छे, तेओनी साथे जे योजाय ते समाय कहेवाय अने ते समाय जेनु प्रयोजन छे ते सामायिक कहेवाय छे ते सामायिक सावद्य कर्मनो त्याग कर्या विना थतु नथी ते विषे परम ऋषिओए कह्यु छे के-" सावद्य योगने छोडीने करवा योग्य एवु सामायिक केवळीओए प्रशस्त (श्रेष्ठ) कहेलु छे. तेवु सामायिक गृहस्थना श्रेष्ठ धर्मरूप जाणी आत्मानु हित करनारा पुरुषोए परलोकने अर्थे करवु जोइए " ते सामायिकनु फळ एटलु मोटु छे के जे कोईथी गणी शकातु नथी कह्यु छे के—

दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवन्नस्स खंडिय एगो ।
इयरो पुण सामाइय, करेइ न पहुप्पए तस्स ॥ १ ॥

" एक पुरुष दिवसे दिवसे लाख सुवर्णनु दान दे अने बीजो सामायिक करे तो सुवर्णनु दान सामायिकनी बरोबर न थाय " ते विषे एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सामायिक उपर एक दृष्टांत

कोई नगरमा एक धनाढ्य गृहस्थ रहेतो हतो ते दातार होवाथी हमेशा पात्रापात्रनो विचार कर्या वगर लक्ष सुवर्णनु दान आप्या पछी पोताना पलग उपरथी नीचे उतरतो हतो. तेनी पाडोशमा एक वृद्ध श्राविका रहेती हती ते हमेशा एक सामायिक करती हती एक वखते कोई कारणने लईने ते गृहस्थने अने वृद्धाने बनेने दान आपवामा अने सामायिक करवामा अतराय आव्यो, तेथी बनेने खेद थयो. ते वृद्धानो खेद साभळी पेला गृहस्थे गर्वथी कह्यु के-" अरे डोशी ! तु शेनो खेद करे छे ? एक वस्त्रनो कटको लईने हाथ विगेरेनु प्रमार्जन न कर्यु तो तेथी शु जतु रह्यु ? तेमा शु पुण्य थवानु हतु ? ते काममा द्रव्यनो खर्च तो बीलकुल जोवामा आवतो नथी जो एवी रीते धर्म थतो होय तो सर्व हमेशा तेज क्रिया करे, पछी कोई लक्ष सुवर्णनु दान करे ज नहीं. " ते साभळी वृद्धा बोली के-" एवु कहो नहीं, सुवर्णमणिना पगथियावाळु देरासर करावे तेथी पण सामायिकमा घणु पुण्य छे " पछी ' कचणमणिसोवाण० ' ए गाथा तेणे कही सभळावी

अनुक्रमे ते गृहस्थ अतकाळे आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामी हस्ती थयो अने ते वृद्ध श्राविका सामायिकना ध्यानथी मृत्यु पामीने ते ज गामना राजानी पुत्री थई अनुक्रमे ते हस्तीने अटवीमाथी राजाए पकडयो अने तेने पोतानो पट्टहस्ती कर्यो. एकदा राजमार्गे चाल्या जता ते हस्तीए पोतानु घर विगेरे जोयु, तथी तेने जातिस्मरण ज्ञान

थयो. ते मूर्च्छा खाइ पृथ्वी उपर पडी गयो. तेने जोवाने राजपुत्री त्यां आवी. तेने पण पोतानुं घर विगेरे जोवाथी जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी पोताना ने हाथीना पूर्वभवनुं सर्व स्वरूप तेना जाणवामां आव्युं. एटले तर्णीए पोताना बे हाथे हाथीने उठाडवा मांड्यो तो पण ते उठ्यो नहीं, एटले राजपुत्री बोली—

उठ सिठि मम भत कर, करि हूओ दाणउसेण ।
हु सामाइय राजधुअ, बहुगुण समहिय तेण ॥ १ ॥

"हे शेठ! ऊठ, भ्रांति न कर, तुं दानना प्रभावथी हस्ती थयो छे अने हुं सामायिकना प्रभावथी राजपुत्री थइ छुं, कम के दान करतां सामायिकनुं पुण्य अधिक छे" आवुं राजपुत्रीनुं वचन सांभळी हस्ती सत्वर बेठो थयो. तेथी राजा विगेरेने मोटुं आश्चर्य उपज्युं. पछी राजाए पूछ्युं एटले पुत्रीए बंनेना पूर्वभवनुं वृत्तांत कही संभळाव्युं.

पछी हस्ती राजपुत्रीना वचनथी प्रतिबोध पाम्यो अने ते काळ सामायिक करवा माटे पृथ्वीनी तरफ ज नीची दृष्टि राखी पोतानी गुरुणीनी समीपे एक एक मुहूर्त सुधी समताथी रहेवा लाग्यो. ते भावसामायिकधारी हाथी सामायिक लेवाने अने पूर्ण करवाने वखते पोतानी गुरुणी जे राजकन्या तेने नमस्कार करीने तेमज ऊठवा लाग्यो. पछी जातिस्मरणवडे भक्ष्याभक्ष्य तथा पेयापेय विगेरेनुं ज्ञान प्राप्त करी समाधिवडे आयुष्य पूर्ण करीने सहस्रार देवलोकमां देवता थयो.

"कोइ धनाढ्य हमेशां याचकोने सुवर्णनी भूमिना दान आपीने पछी मूए अने कोई भविप्राणी दररोज सामायिक करे तेमां सामायिक करनारने अधिक पुण्य थाय छे, एम मुनिवरो कहे छे, तेथी सर्व भवि प्राणीओए पुण्यरूप सामायिक अवश्य करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टत्रिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३८ ॥

व्याख्यान १३९ मुं

सामायिक व्रतमां तजवा योग्य पांच अतिचार कहे छे

कायवाङ्मनसां दुष्ट-प्रणिधानमनादरः ।
स्मृत्यनुपस्थापनं च, स्मृता सामायिकव्रते ॥ १ ॥

भावार्थः

" मन, वचन अने कायाथी दुष्ट आचरण करे ते त्रण, सामायिकमा आदर राखे नहीं ते चार अने व्रतना काळ विगेरेनु स्मरण करे नहीं ते पाच-एम सामायिक व्रतना अतिचार कह्या छे "

विस्तरार्थ·

काया, वाणी अने मनवडे दुष्ट प्रणिधान एटले अनाभोग विगेरेथी सावद्ययोगमा प्रवृत्ति करवी, तेमा शरीरना अवयव-हाथ, पग विगेरेनु वारवार हलाववु, प्रमार्ज्या वगर शरीर खजवाळवु, भिंत विगेरेनु आलबन लेवु अने प्रमार्जन कर्या वगरनी भूमि उपर बेसवु इत्यादि कायानु दुष्ट प्रणिधान कहेवाय छे वचनथी कठोर भाषण करवु, अथवा मार, बाध, जा, आव, बेस, ऊभो रहे, आ दुकान तथा घरनी कुची ले इत्यादि वचनो बोलवा ते वचन सबधी दुष्ट प्रणिधान कहेवाय छे ते विषे कह्यु छे के-" जेणे सामायिक लीधु होय तेणे प्रथम बुद्धिए विचारीने सत्य अने निर्दोष वचन बोलवु, अन्यथा सामायिक थयु न कहेवाय " मनवडे घर तथा दुकान प्रमुखनु सावद्य चितवन करवु ते मन सबधी दुःप्रणिधान कहेवाय छे ते विषे कह्यु छे के-" जे श्रावक सामायिक करीने गृहकार्य चिंतवे ते आर्त्तध्यानवाळा श्रावकनु सामायिक निरर्थक थाय छे " एटले के जे श्रावक सामायिक लइने एवु चिंतवे के-'आजे घरमा घी, हिंग, मीठु अने इधणा नथी अने स्त्री आजकालनी तरुण छे, तो काले घरनो निर्वाह शी रीते थशे?' आ प्रमाणे चिंतवनार श्रावकनु सामायिक निरर्थक थाय छे आ मन सबधी दुष्ट प्रणिधान समजवु, एम त्रण योग सबधी त्रण अतिचार जाणवा

चोथो अतिचार अनादर एटले सामायिक करवामा उत्साह न राखवो ते, अर्थात् नियमित वखते सामायिक करवु नहीं अथवा लईने तत्काल पारी देवु, कह्यु छे के-" जे सामायिक लईने तत्काल पारी दे अथवा यथेच्छपणे करे तेनु सामायिक अनवस्थित समजवु. तेवा अनादरथी तेने शुद्ध समजवु नहीं. "

पाचमो अतिचार सामायिकनु स्मरण न थाय ते, जेमके मे सामायिक कर्युं छे के नहीं ? एवा प्रबल प्रमादथी सामायिक सांभरे नहीं ते पाचमो अतिचार कहेवाय छे.

अहीं कोई शका करे के-" सामायिकमा दुविहं तिविहेणं ए पाठ प्रमाणे द्विविध त्रिविधे (मन वचन काया सबधी) पच्चक्खाण कराय छे, पण मननो रोध करवो अशक्य होवाथी मन सबधी दुष्ट प्रणिधान थवानो सभव छे अने तेथी

लीधेला व्रतनो भंग थाय छे तेमज व्रतनो भंग थवाथी प्रायश्चित्त आवे छे माटे तेवु सामायिक न करवु ते ज श्रेष्ठ जणाय छे " (गुरु कहे छे के) आवी शंका करवी नहीं, कारण के सामायिकमा मनवडे करु नहीं, करावु नहीं, वचनवडे करु नहीं, करावु नहीं अने कायावडे करु नहीं करावु नहीं एम प्रत्याख्याननना छ भागा छे तेमा अनाभोग विगेरेथी तेमाथी एकनो भंग थता पण बाकीना भागा अखंड रहे छे तेथी ते व्रतनो सर्वथा भंग थतो नथी. वळी मनना दुःप्रणिधाननी मिथ्यादुष्कृत आपवावडे ज शुद्धि कहेली छे, तेथी सामायिक न करवु ते श्रेष्ठ समजवु नहीं, केम के जो सामायिक न करे तो परिणामे सर्वविरतिनो पण अनादर थवानो प्रसंग आवे

वळी कोइ ' अविधिए करेला धर्मानुष्ठानथी, धर्मानुष्ठान न करवु ते ज सारु ' एम कहे छे ते पण घटित नथी कह्यु छे के—

अविहिकया वरमकय, उस्सुयसुअ भणंति गीयत्था ।
पायच्छित्त जम्हा, अकये गुरुअ कये लहुअ ॥ १ ॥

' अविधिए करवा करता न करवु सारु ' एम जे कहे छे ते ' उत्सूत्र वचन छे ' एम गीतार्थ कहे छे, कारण के धर्मानुष्ठान न करवाथी गुरु प्रायश्चित्त आवे छे अने (अविधिए) करवाथी लघुप्रायश्चित्त आवे छे ' प्रथम कांईक अतिचार सहित क्रिया करतां करतां अभ्यासथी काळे करीने अतिचार रहित अनुष्ठान थइ शके छे धनुर्विद्या शीखनार विगेरे प्रथमथी सर्व कळाना पारगामी होता नथी पण अभ्यास करवाथी तेओ प्राये कुशळ थई शके छे वळी एक वखत जलबिंदु पडवाथी काइ सरोवर पूर्ण भरातु नथी, धीमे धीमे भराय छे, तेथी सम्यग् प्रकारे मननी शुद्धिवडे वारंवार करवा करवु आगममा पण कहु छे के—

जीवो पमाय बहुलो, बहुसोवि बहुविहेसु अत्थेसु ।
एएण कारणेण, बहुसो सामाइय कुज्जा ॥ १ ॥

" जीव घणा प्रकारना कार्योमा पडेलो होवाथी बहु प्रमादी होय छे, माटे तेणे बहु वार सामायिक करवु " सामायिकमा रहेलो श्रावक पण यति जेवो गणाय छे थी आवश्यक निर्युक्तिमां कहु छे के–" श्रावक सामायिक करवाथी मुनिना जेवो थाय छे, तेथी ते वारंवार करवा करवु " आ सामायिक व्रत मरणसिंहनी जेम हमेशा आराधवु तेनी कथा आ प्रमाणे—

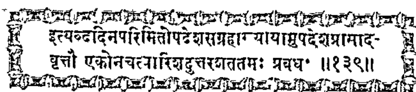
१ अतीचारमा

महणसिहनी कथा

दिल्हीमा पिरोजशाह बादशाह राज्यगादी पर हतो त्यारे त्या महणसिह नामे एक साहुकार रहतो हतो. एक वखते बादशाहे दिल्हीथी बीजे नगर जता महणसिहने पोतानी साथे लीधो. मार्गमा चालता सूर्य अस्त थवानो समय आव्यो एटले महणसिंह घोडा उपरथी उतरी, भूमिने प्रमार्जी प्रतिक्रमण करवाने रोकायो. ते हमेशा प्रतिक्रमण करवाना उपकरणो साथे राखतो हतो बादशाह आगळ चालता बीजे गाम पहोंच्यो त्या महणसिंह श्रेष्ठीने साथे जोयो नहीं एटले तेने शोधवा एक माणसने मोकल्यो. श्रेष्ठी सामायिक पूरु करी पारीने बादशाहनी पासे आव्यो बादशाहे पाछळ रहेवानु कारण पूछ्यु एटले महणसिंहे कह्यु के–" हे महाराजा! ज्यारे सूर्य ऊगे छे अने अस्त थाय छे त्यारे ग्राम, अरण्य, नदी, स्थळ के पर्वत गमे ते स्थाने ते वखते हु अवश्य प्रतिक्रमण करु छु " बादशाहे कह्यु के–" हे श्रेष्ठी! आपणे शत्रुओ घणा छे तेथी कदी तेओ तमने ते काम करता एकला देखीने मारी नाखे तो पछी शु करो?" महणसिहे कह्यु के–" जहापनाह! धर्म करता जो मृत्यु थाय तो स्वर्ग ज मळे ते माटे मे आजे ते स्थळे ज प्रतिक्रमण कर्यु." महणसिहनु आ वचन साभळी बादशाह घणो खुशी थयो अने एवो हुकम कर्यो के–" अरण्यमा, पर्वतमा के ज्या आ महणसिह प्रतिक्रमण करवा बेसे त्या एक हजार सुभटोना सैन्ये तेनी रक्षा करता रहेवु."

एक वखत बादशाहे दिल्ही आव्या पछी कोईक दोष ऊभो करीने महणसिंहना हाथपगमा बेडी नाखीने तेने कारागृहमा नाख्यो त्या तेने आखा दिवसनी लाघण थई तोपण सायकाले प्रतिक्रमण करवा माटे रक्षकोने बे सोनैया आपी बे घडी सुधी हाथमाथी बेडी कढावी अने तेणे प्रतिक्रमण कर्यु. एवी रीते एक मास सुधीमा साठ सोनैया खर्चीने तेणे हमेशा प्रतिक्रमण कर्यु आ वृत्तात जाणी दिल्हीपति तेना दृढ नियमथी खुशी थयो अने तेने बदीखानामाथी मुक्त करी सिरपाव आपीने पूर्वथी विशेष मान साथे पोतानी पासे राख्यो.

" एवी रीते महणसिंह धर्म उपरनी दृढताथी दिल्हीपतिनो कोशाध्यक्ष थयो अने पिरोजशाह बादशाहनी पासे घणी प्रशसा पाम्यो, ए सर्व ते ज भवमा सामायिक व्रतनु फळ जाणवु


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबध ॥१३९॥

व्याख्यान १४० मुं.

हवे सामायिकना भेद कहे छे

सामायिक स्यात्त्रिविध्य, सम्यक्त्व च श्रुत तथा ॥
चारित्र तृतीय तच्च, गृहिकमनगारिकम् ॥ १ ॥

भावार्थः-

"सामायिक त्रण प्रकारनु छे समकित सामायिक, श्रुत सामायिक अने चारित्र सामायिक तेमा त्रीजु चारित्रसामायिक बे प्रकारनु छे' एक गृहिक एटले श्रावकनु अने बीजु अनगारिक एटले साधुनु."

विस्तरार्थ -

पहेलु समकित सामायिक उपशमादिक भेदथी पांच प्रकारनु छे बीजु श्रुत सामायिक ते द्वादशांगी रूप छे त्रीजु चारित्र सामायिक बे प्रकारनु छे तेमा पहेलु गृहिक एटले देशविरति सामायिक द्वादशव्रतना आराधनरूप छे अने बीजु जे अनगारिक सामायिक ते सर्वसावद्यवर्जन तथा पंचमहाव्रतरूप छे ते सर्वविरति चारित्र सामायिक सर्वद्रव्यविषय सबंधी छे ते विषे कह्यु छे के—

पढममि सव्वजीवा, बीए चरमे य सव्वदव्वाइ।
सेसा महव्वया खलु, तदिक्कदेसेण दव्वाण ॥ १ ॥

"पहेला व्रतमा सर्व जीव आवे छे, बीजा अने पांचमा व्रतमा सर्व (षट्) द्रव्य आवे छे अने बाकीना एटले त्रीजा अने चोथा व्रतमा ते द्रव्यनो एक देश आवे छे" तेनो विस्तरार्थ एवो छे के-पहेला महाव्रतमा सर्व सूक्ष्म-बादर जीवनु पालन करवानु होवाथी तेमा एक जीवद्रव्य आवे छे बीजा अने पांचमा व्रतमा सर्व द्रव्य आवे छे ते आ प्रमाणे-'आ पंचास्तिकायात्मक लोक कोणे जोयो छे? ते तो खोटी वात छे' एवा वचन बोलवाना त्यागथी बीजा महाव्रतमा छए द्रव्यनो सबंध आवे छे' अने पांचमा व्रतमा अति मूर्च्छावडे एवु चिंतवे के-'हु सर्वलोकनो स्वामी थाउ तो ठीक' एम सर्व द्रव्यविषयिक जे मूर्च्छा तेना त्यागरूप पांचमु परिग्रहविरमणव्रत होवाथी तेमा छए द्रव्यनो समावेश थाय छे बाकीना बे महाव्रत द्रव्यना एक देशभूत छे एटले के कांइपण द्रव्य वगर [illegible] के लेवु ते पुद्गल द्रव्यनो एक देश थयो ते अदत्तादानना विर[illegible] कोइ स्त्रीनु रूप जोइने तेनो तथा तेनी साथ रहेला द्रव्य [illegible]

रूप चोथु महाव्रत छे तेमा पण द्रव्यनो एक देश आवे छे अने आहारद्रव्यविषयिक छठ्ठु रात्रिभोजन त्यागरूप व्रत छे, तेमा पण द्रव्यनो एक देश ज छे. एवी रीते चारित्रसामायिक सर्व द्रव्यविषयी छे. तेम श्रुतसामायिक पण ज्ञानरूप होवाथी सर्व द्रव्यविषयी छे एवी रीते समकितसामायिक पण सर्व द्रव्यनी श्रद्धामय होवाथी सर्वद्रव्यविषयी थाय छे. ए सामायिकने एक जीव आ संसारमा पर्यटन करतो सतो संख्यात असंख्यात वार प्राप्त करे छे कह्यु छे के—

सम्मत्तदेसविरया, पलीयस्स असंखभागमित्ताओ ।
अट्ठभवाउ चरित्ते, अणंतकाल सुअ समए ॥

"देशविरति अने समकित क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भागमा जेटला आकाशप्रदेश होय छे तेटला भवमा लाभे छे सर्वविरति संयम आठ भवमा लाभे छे अने अक्षरात्मक श्रुत तो अनंतकाळ पर्यंत पामे छे" भावार्थ एवो छे के—समकित सामायिक अने देशविरति सामायिक ए बने क्षेत्रपल्योपमना असंख्याता भागमा जेटला आकाशप्रदेश होय छे तेटला प्रमाणवाळा भवमा एक जीव उत्कृष्टथी प्राप्त करे अने जघन्यथी एक भवमा प्राप्त करे चारित्र (सर्वविरति) सामायिक तो उत्कृष्ट आठ भवमा प्राप्त करे, त्यारपछी सिद्धिने पामे अने जघन्यथी मरुदेवा मातानी जेम एक भवमा ज प्राप्त करीने सिद्धिने पामे सामान्यथी श्रुतसामायिक अनंत भवमा प्राप्त थाय अने जघन्यथी मरुदेवानी जेम एक ज भवमा थाय स्वल्प श्रुतसामायिकनो लाभ तो अभव्यने पण थाय छे अने ते ग्रैवेयक देवताना स्थान सुधी जाय छे अंतरद्वारमा कह्यु छे के-कोई एक जीव अक्षरज्ञान प्राप्त करी पतित थईने पाछो अनंतकाळ पछी प्राप्त करे ते उत्कृष्ट अंतर जाणवु. समकितादि सामायिकमा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्तनु जाणवु अने उत्कृष्ट देशे ऊणु अर्द्ध पुद्गलपरावर्त्तनु जे अंतर छे ते बहु आशातना करनारा जीवने माटे समजवु कह्यु छे के-तीर्थंकर, प्रवचन, संघ, श्रुत-ज्ञान, आचार्य, गणधर अने लब्धिवाळा महर्द्धिक मुनिनी बहुवार आशातना करनार जीव अनंतसंसारी थाय छे, परंतु त्यारपछी पण समकित सामायिकना महिमाथी प्राणी जरूर सिद्धिपदने पामे छे. आ संबंधमा चार चोरनी कथा छे ते आ प्रमाणे.—

चार चोरनी कथा

क्षितिप्रतिष्ठित नगरनो रहेवासी कोई श्रावक पोतानो निर्वाह करवाने माटे भिल्ललोकोनी पाळ(पल्ली)मा आवीने वस्यो हतो पुण्ययोगे त्या रहेता सता ते कोटी धननो स्वामी थई गयो. एक वखते ते भिल्ल लोकोना कुळना चार वृद्ध पुरुषो ते श्रावकनी समृद्धि

अनत, अक्षर, अनक्षर, अमल, अरूपी, अकर्म, अनघ, अनुदीरक, अयोगी, अभेद्य, अछेद्य, अकषाय, अदेहात्मक, अतींद्रिय, अनाश्रव, लोकालोकज्ञायक, सर्व प्रदेशे कर्म परमाणुओथी व्यतिरिक्त, शुद्धचिदानद, चिन्मय, चिन्मूर्ति अने चिरिंपड छे इत्यादि अनेक गुणे युक्त एवा आत्माने पण हे चेतन! मोहाधकारवडे परवश चेतनवाळो करीने तें कया कया अपाय नथी पमाड्या? आ प्रमाणे आत्मानी अने बीजानी अपायपरपराने चिंतववा सता योगी पुरुषो अपायविचय नामे धर्मध्यानने प्राप्त करे छे.

हवे विपाकविचय नामे धर्मध्याननो त्रीजो भेद कहे छे. अनतज्ञानादि गुणे युक्त एवो जीव पण विपाक एटले करेला कर्मना शुभाशुभ फळने द्रव्य क्षेत्रादिक सामग्रीवडे अनुभवे छे तेमा द्रव्यथी स्त्री, पुष्प विगेरेना सुखनो सुदर जे उपभोग ते शुभ विपाक जाणवो, अने सर्प, शस्त्र, अग्नि अने विष विगेरेथी थता अनिष्ट फळने अशुभ विपाक जाणवो. क्षेत्रथी महेलमा वसवाथी शुभ विपाक अने स्मशानमा वसवाथी अशुभ विपाक जाणवो. काळथी शीत विगेरेमा रति थवाथी शुभ अने अरति थवाथी अशुभ विपाक जाणवो. भावथी मननी प्रसन्नताथी शुभ अने रौद्र परिणाम विगेरेथी अशुभ विपाक जाणवो. भवथी देवतामा अने भोगभूमिमा शुभ अने नरकादि भूमिमा अशुभ विपाक जाणवो एवी रीते द्रव्यादि सामग्रीना योगथी प्राणीओने पूर्वे बाधेला कर्म पोतपोतानु फळ आपे छे, तेथी सुख दु:खने पामीने जीवे खेद के हर्ष धरवो नहीं आ प्रमाणे सर्व कर्मनी प्रकृतिओना विपाकने विचारवा, ते विपाकविचय नामे त्रीजु धर्मध्यान कहवाय छे.

हवे सस्थानविचय नामे चोथु धर्मध्यान कहे छे–चौद राजलोकना आकारनु चिंतवन करवु जेमा ऊर्ध्व, अधो अने तिर्छालोकना स्वरूपनु चिंतवन थाय छे तेनु विशेष स्वरूप लोकभावनाथी जाणी लेवु ए सर्व लोकस्थानमा आ जीवे जन्मादिकथी नहीं स्पर्श करेलु एवु एके स्थान नथी इत्यादि चिंतवन करवुं ते सस्थानविचय नामे चोथु धर्मध्यान कहेवाय छे.

आ धर्मध्यान चोथा गुणस्थानथी माडीने सातमा गुणस्थान सुधी जाणवु. चद्रावतम राजानी जेम कष्ट प्राप्त थता पण जे पुरुष आ धर्मध्याननेे मूके नहीं, तेने ज सामायिक प्राप्त थाय छे

चंद्रावतंस राजानी कथा

विशालापुरीमा चद्रावतस नामे राजा हतो ते परम धर्मनिष्ठ थई राज्य करतो हतो एक वखते ते चतुर्दशीने दिवसे पोताना महेलमा कायोत्सर्ग करीने

बुद्धिवडे समये समये विशुद्धमान थता थता शुभ शुभतर परिणामवाळो प्राणी म सामायिकश्रुत कर्मनि अनेना प्रथमाक्षर ककार प्राप्त करे छे एवी रीते अनंत बुद्धिवडे समये समये विशुद्धमान थता कर्मादि अष्टकर्मनी पंक्तिने पामे छे ए मायने सामायिकनो लाभ भव्य प्राणीने थाय छे. एम करता करता "करेमि सामाइय" इत्यादि समस्त सूत्रने मेळवे छे ते विषे कह्युं छे के—"मास जाव कर्मनाशि मरनाति ने अगनाति कर्मप्रकृतिनुं उद्घाटन थतां समये स बुद्धिवडे विशुद्ध एवा प्राणीने सामायिकनो लाभ थाय छे" आ स्थाने घ छे ते सर्व श्रीविशेषावश्यकथी जाणी लेवुं

वळी सामायिक शुभ ध्यानथी थाय छे शुभ ध्यान ते धर्मध्यान अने तेथी सामायिकना धर्मध्यानने विशेष प्रकार छे ते धर्मध्यान चार तेमा पहेलुं आज्ञाविचय ते श्री वीतराग प्रभुना वचनने यथार्थपणे म के श्री वीतराग प्रभुना वचन, निश्चय अने व्यवहार, नित्य एवा स्याद्वाद प्रकारथी सर्वोत्तम अने अमूल्य छे ते विषे ध्यानशास्त्र कह्युं छे के—

कल्पद्रुमः कल्पितमात्रदायी, चिंतामणिश्चिंतितम्
जिनेंद्रधर्मातिशयं विचिंत्य, द्वयं हि लोके लघु

"कल्पवृक्ष मात्र कल्पित वस्तुने आपे छे, चिंतामणि मात्र आपे छे, परंतु श्री जिनेंद्र धर्मनो अतिशय चिंतवतां ते बन्ने—कल्प तेनी आगळ लघुताने पामे छे" वळी कह्युं छे के—

स्वरूपपररूपाभ्यां, सदसद्रूपशालिषु
यः स्थिरप्रत्ययो ध्यानं, तदाज्ञाविच

"स्वरूप अने पररूपवडे सत् असत् रूपवाळा वस्तुधर्म ध्यान ते आज्ञाविचय नामे पहेलुं धर्मध्यान कहेवाय छे"

धर्मध्यानने बीजो भेद अपायविचय नामे छे, संसारमां परिभ्रमण करतां घणा अपायो (कष्टो) प्राप्त क स्वाधीन एवा मुक्तिमार्गने छोडी दइने ते ज नारा पाडयो छे पण आ आत्मा तत्त्वत अज्ञानादिकथी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यवाळो एवा अनंतचतुष्टय

फळनी इच्छा वगर जिनकल्पिनी जेम यथार्थ करे ते असंगानुष्ठान कहेवाय छे वचनानुष्ठान ने असंगानुष्ठानमा एटलो तफावत छे के कुमारना चक्रनु भ्रमण प्रथम दंडना संयोगथी थाय छे तेनी जेम वचनानुष्ठान अने पछी जे चक्रनु भ्रमण दंडना संयोग विना केवळ संस्कारमात्रथी थाय छे तेनी जेम असंगानुष्ठान, एटले जे श्रुत संस्कारथी क्रियाकाळे वचननी अपेक्षा वगर थाय ते असंगानुष्ठान कहेवाय छे आ युक्तिथी बनेमा भेद समजवो आ चारे भेद अनुक्रमे विशेष विशेष शुद्ध छे. ते विषे बृहद्भाष्यमा कह्यु छे के–" प्रथम भावनी स्वल्पताथी प्राये बालादिकने संभवे छे, पछी उत्तरोत्तर निश्चय शुद्ध यथार्थ क्रियानी प्राप्ति होय छे " आ प्रमाणे अनुष्ठाननु स्वरूप साभळीने तेने विधिपूर्वक आदरवु तेम करवाथी ज आगळ कहेवाशे तेवु फळ प्राप्त थाय छे, अन्यथा थतु नथी

" मन, वचन अने कायाना दोषथी मुक्त एवु जे अनुष्ठान अहीं प्रथम कहेलु छे ते प्रमाणे विधिपूर्वक निर्दोष सामायिक हमेशा करवु के जेथी तेनी सफळता थाय "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विचत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥ १४२ ॥

व्याख्यान १४३ मुं

सामायिकमा धर्मना उपकरण केटलां जोइए ते कहे छे.

धर्मोपकरणान्यत्र, पंचोक्तानि श्रुतोदधौ ।
तदालब्य विधातव्य, सामायिकं शुभास्तिकैः ॥ १ ॥

भावार्थ.

" शास्त्ररूपी समुद्रमा धर्मना उपकरण पाच कहेला छे, ते उपकरणो लइने उत्तम आस्तिक पुरुषोए सामायिक करवु. "

विस्तारार्थ

सामायिक करवामा धर्मना उपष्टंभ(टेका)ने आपनारा अर्थात् धर्मकार्यमा उपकार करनारा उपकरणो शास्त्ररूपी समुद्रमा पाच कहेला छे. श्री अनुयोग-

आने भ्रष्ट करवा माटे कर्यु हतु तेनी जेम २ परलोकना सुखने अर्थे जे तपस्या क्रिया विगेरे करे ते गरलानुष्ठान जाणवु, वसुदेवना पाछला भवमां नंदीषेणनी जेम ३ उपयोग वगर जे तप, सामायिक विगेरे करे अथवा बीजानी क्रिया जोईने समूर्च्छिमनी जेम करे ते अन्योन्यानुष्ठान जाणवु लौकिकमां पण कह्यु छे के " गुरुना उपदेश विना ज कोई बीजानु दखीने आचरे ते जटिलना मूर्ख शिष्यनी जेम हास्य करवा योग्य थाय छे "

जटिलना मूर्ख शिष्यनी कथा

वर्द्धमाननगरमा कोई मरहा–जटिलनो एक शिष्य हतो ते एक वखते नगरमा भिक्षा मागवाने कोई सुतारने घेर गयो त्या सुतार एक वांसने तेल चोपडी अग्निना तापथी पाधरो करतो हतो ते जोई पेला जडबुद्धि शिष्य सुतारने पूछ्यु के–' आ शु करो छो ?' सुतारे कह्यु–' वांका थई गयेला वांसने पाधरो करीए छीए ' मूर्ख शिष्ये विचार्यु के–'मारा गुरु पण वायुना विकारथी वांका थई गया छे तेमन माटे आ उपाय सारो जणाय छे सर्वने पाधरा करवानो आ ज प्रकार हशे ' पछी घेर आवी गुरुने तेलथी चोळी अग्निमा तपावा माड्या त्या अग्निथी अत्यत कष्ट पामी गुरु पोकार करवा लाग्या तेमनो आक्रद सामळी घणा लोको एकठा थया अने महा–महेनते गुरुने छोडाव्या सर्व लोकोए मूर्ख शिष्यनो तिरस्कार कर्यो आनो उपनय पोतानी बुद्धिए विचारी बुद्धिमान् पुरुषोए अन्योन्यानुष्ठान न करवु

उपयोगपूर्वक अभ्यासने अनुकूळ एवी क्रिया करवी ते तद्धेतुअनुष्ठान, ते आनद श्रावक विगेरेनी जेम जाणवु अने मोक्षने अर्थे यथार्थ विधिपूर्वक जे तपक्रियादि करवु ते अमृतानुष्ठान, वीतरागसयमी अर्जुनमाळी विगेरेनी जेम जाणवु आ पाच प्रकारना अनुष्ठानमा पहेला त्रण त्याग करवा योग्य छे अने छेल्ला बे स्वीकारवा योग्य छे तेवी रीते बीजा पण अनुष्ठानना चार प्रकार छे–१ जे प्रीतिरसवडे कराय अने अति रुचिथी वधे ते प्रीत्यनुष्ठान कहेवाय छे ते सरल–स्वभावी जीवोने हमेशा क्रियामा थाय छे २ बहुमानथी भव्यजीवो पूज्यउपरनी प्रीतिवडे जे करे ते भक्त्यनुष्ठान कहेवाय छे प्रीत्यनुष्ठान ने भक्त्यनुष्ठानमा एटलो तफावत छे के स्त्रीनु पालन प्रीतिथी थाय छे अने मातानी सेवा–भक्तिथी थाय छे ३ सूत्रना वचनथी जे क्रिया करवामा आवे ते वचनानुष्ठान कहेवाय छे ते सर्वत्र आगमने अनुसारे प्रवृत्ति करवारूप होवाथी चारित्रधारी साधुने होय छे पासत्थादिकने होतु नथी जे अभ्यासना बळथी श्रुतनी अपेक्षा वगर अने

फळनी इच्छा वगर जिनकल्पिनी जेम यथार्थ करे ते असंगानुष्ठान कहेवाय छे वचनानुष्ठान ने असंगानुष्ठानमा एटलो तफावत छे के कुंभारना चक्रनु भ्रमण प्रथम दंडना संबंधथी थाय छे तेनी जेम वचनानुष्ठान अने पछी जे चक्रनु भ्रमण दंडना संयोग विना केवळ संस्कारमात्रथी थाय छे तेनी जेम असंगानुष्ठान, एटले जे श्रुत संस्कारथी क्रियाकाळे वचननी अपेक्षा वगर थाय ते असंगानुष्ठान कहेवाय छे. आ युक्तिथी बनेमा भेद समजवो. आ चारे भेद अनुक्रमे विशेष विशेष शुद्ध छे. ते विषे बृहद्भाष्यमा कह्यु छे के–" प्रथम भावनी स्वल्पताथी प्राये बालादिकने संभवे छे, पछी उत्तरोत्तर निश्चय शुद्ध यथार्थ क्रियानी प्राप्ति होय छे " आ प्रमाणे अनुष्ठाननु स्वरूप सांभळीने तेने विधिपूर्वक आदरवु तेम करवाथी ज आगळ कहेवाशे तेवु फळ प्राप्त थाय छे, अन्यथा थतु नथी

" मन, वचन अने कायाना दोषथी मुक्त एवु जे अनुष्ठान अहीं प्रथम कहेलु छे ते प्रमाणे विधिपूर्वक निर्दोष सामायिक हमेशा करवुं के जेथी तेनी सफळता थाय "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विचत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥ १४२ ॥

व्याख्यान १४३ मुं

सामायिकमां धर्मना उपकरण केटलां जोइए ते कहे छे

धर्मोपकरणान्यत्र, पंचोक्तानि श्रुतोदधौ ।
तदालंब्य विधातव्यं, सामायिकं शुभास्तिकै ॥ १ ॥

भावार्थ

" शास्त्ररूपी समुद्रमा धर्मना उपकरण पांच कहेला छे, ते उपकरणो लइने उत्तम आस्तिक पुरुषोए सामायिक करवु "

विस्तारार्थ

सामायिक करवामा धर्मना उपष्टंभ(टेका)ने आपनारा अर्थात् धर्मकार्यमा उपकार करनारा उपकरणो शास्त्ररूपी समुद्रमा पांच कहेला छे. श्री अनुयोग-

द्वारनी चूर्णीमा कह्यु छे के "सामायिकने करनारा श्रमणोपासक(श्रावक)ने पाच धर्मोपकरण कह्या छे, ते आ प्रमाणे–पहेलु उपकरण स्थापनाचार्य, बीजु मुहपत्ति, त्रीजु नवमाळा (नवकारवाळी), चोथु चरवळो अने पाचमु कटासणु "

प्रथम स्थापनाचार्य स्थापीने सामायिक करवु. ते स्थापना दश प्रकारनी थाय छे–" १ अक्ष, २ वराटक, ३ काष्ठ, ४ पुस्तक, ने ५ चित्रामण आ पाच प्रकारनी स्थापनाना सद्भाव ने असद्भाव एवा वे भेद छे. तेम ज इत्वर अने यावत्कथित एवा पण वे भेद छे " एम आवश्यक निर्युक्तिना वदनाध्ययनमा कहेलु छे आ गाथावडे एम जाणवु के गुरुने अभावे स्थापनाचार्यनी आगळ वदनादि करवु, तेमा मुख्यवृत्तिवडे कर्त्ता तरीके साधु कहेला छे ते विषे कह्यु छे के " पच महाव्रतधारी, प्रमादरहित, माने करी रहित बुद्धिवाळा, मोक्षार्थी अने निर्जराना अर्थी एवा मुनिमहाराज कृतिकर्ममा वदनाना दाता छे " परतु साधुनी जेम श्रावके पण वदना करवी नहीं कोइ शका करे के, शास्त्रमा कोइ ठेकाणे श्रावकने पण स्थापनाचार्यनी स्थापना कही छे ? तेना उत्तरमा कहेवानु के श्री व्यवहारसूत्रनी चूलिकामा कह्यु छे के–' सिंह नामनो श्रावक द्रव्याधिकारे दिव्य ऋद्धि अने पुष्पनो शेखर विगेरे छोडी दइ स्थापनाचार्य स्थापीने पौषधशाळामा स्थित थयो पछी कर्या छे आभूषणो दूर जेणे एवो ते श्रावक इरियावहि पडिकमी, मुखवस्त्रिका पडिलेही अने त्यारपछी चार प्रकारनो पोषध करे " आवी रीते सिंह श्रावके स्थापना प्रगटपणे ग्रहण करली छे. वळी विशेषावश्यकमा पण कह्यु छे के–" गुरुने विरहे स्थापना स्थापवी ते गुरुना वचनना उपदर्शनने माटे छे ते जिनने विरहे जेम जिन बिंबनु सेवन अने आमत्रण कराय छे ते प्रमाणे समजवु "

अहिं कोइने शका थाय के " मुनिना सामायिक सबधी प्रस्तावमा भते ए शब्दनी व्याख्या करता " गुरुविरहम्मि " इत्यादि वाक्योवडे भाष्यकार महाराजे साधुने आ रीते स्थापना करवानु कहेलु छे, श्रावकने आश्रीने कहेलु नथी " तो ए शका करनारने एटलु ज पूछवु के, श्रावक ज्यारे सामायिक उच्चरे छे त्यारे भदत (भते) ए शब्द भणे छे के नहीं ? जो भणे छे तो साधुनी जेम साक्षात् गुरुने अभावे ते पण स्थापनानु स्थापन करे, कारण के न्यायनु तो बने ठेकाणे समानपणु छे पन ' भते ' ए पद भणवु नहीं ए पक्ष तो दीवानखाते श्री जिनेश्वर भगवतने ज घटे छे तेम वळी ज्यारे सर्व ज्ञानक्रियामा प्रवीण एवा साधु स्थापना स्थापे तो पछी गृहकार्यमा व्यग्र मनवाळो श्रावक तो विशेष प्रकारे एवी प्रवृत्ति करे ज आ प्रमाणे आगमप्रमाण बताबीने हवे युक्ति दर्शावीए छीए जो स्थापनाचार्य विना अनुष्ठान करीए तो वदनकनिर्युक्तिमा कहेलु छे के—

आयप्पमाणमित्तो, चउदिसि होइ उग्गहो गुरुणो ।

" आत्मप्रमाण एटले साडात्रण हाथ प्रमाण चारे दिशाए गुरुनो अवग्रह होय." ते अवग्रह क्षेत्रमा गुरुनी आज्ञा विना पेसवु नहीं, एम पण कहेलु छे तो ए वाक्य शी रीते घटशे? कारण के गुरुने अभावे अवग्रह घटतो नथी, जेम गामने अभावे सीमनी व्यवस्था न होय तेम वळी श्री समवायांग सूत्रमा वादणाना पचवीश आवश्यक कह्या छे. तेमा " दुप्पवेस एग निक्कमण " इत्यादि जे कहेलु छे ते पण गुरु विना केवी रीते करवु? वळी कोइ एम कहे के–' अमे तो गुरुनु स्थापन हृदयमा करशु ' गुरु कहे छे के–' आ तमारु कहेवु गधेडाना शीगडाना लावण्यनु वर्णन करवा जेवु (मिथ्या) छे, केमके गुरु हृदयमा रह्या होय तो वदना करनारनी साथे ज गुरुनो सचार थयो, एटले वे प्रवेश ने एक निष्क्रमणमा गुरु साथे ज सचर्या, तेथी कोइ पण प्रकारे गुरुना मुख आगळ निर्गम अने प्रवेश करवानु घटमान थाय नहीं, अने ते न थता पचवीश आवश्यक पूरा थशे नहीं अने ते ज्यारे पूरा नहीं थाय त्यारे वदननी शुद्धि थशे नहीं; माटे गुरुनी स्थापना स्थापीने ज क्रिया करवी एम सिद्ध थाय छे.'

बीजु उपकरण मुखवस्त्रिका राखीने सामायिक करवु. ते विषे श्री व्यवहार सूत्रमा कह्यु छे के–" हे गौतम! जे मुहपत्ति पडिलेह्या विना वादणा आपे तेने गुरु प्रायश्चित्त आवे छे " वळी श्री व्यवहारचूर्णीमा कह्यु छे के– " प्रावरण आभूषण विगेरे मूकी, मुहपत्ति ग्रहण करीने वस्त्र तथा कायानु प्रमार्जन करी पौषधादिक आचरवा." वळी श्री आवश्यकचूर्णीमां कह्यु छे के–" जे सामायिक करे ते मुगट उतारे अने कुडल, मुद्रिका, पुष्प, तावूल अने प्रावरण विगेरे वोसिरावे " श्री निशीथसूत्रनी चूर्णीमा १४ मा उद्देशामा ' प्रावरण ' नो अर्थ ' उत्तरीय वस्त्र ' कह्यो छे. अहीं उत्तरीय वस्त्र मूकवाथी श्रावकने मुखवस्त्रिकानु ग्रहण करवु एम अर्थापत्तिवडे सूचवे छे श्री उपासगदशाग सूत्रना छट्ठा अध्ययनमा कह्यु छे के–" एकदा ते कुडकोलिक श्रमणोपासक पूर्व अपराह्न[1] काळे अशोक वनमा ज्यां पृथ्वीशिलापट्ट छे त्या आवे, आवीने नामांकित मुद्रिका अने उत्तरीय[2] वस्त्र शिलापट्ट उपर स्थापन करे, करीने श्रमण भगवत श्रीवीरपरमात्मानी समीपे धर्मतत्त्वने आदरतो सतो विचरे " ते ज ठेकाणे देवनी परीक्षा पछी कह्यु छे के–" ते काळे ते समये प्रभु समवसर्या, ते वात श्रमणोपासक कुडकोलिके साभळी तत्काल ते पण कामदेव श्रावकनी जेम प्रभुने वादवाने नीकळ्यो, यावत् पर्युपासना करवा लाग्यो " कामदेव श्रावक पौषध पार्या विना ज वादवा नीकळेलो छे ते विषे

१ बपोर अगाउनो समय २ ओढवानु वस्त्र

व्याख्यान १४४ मुं

सामायिकनु फळ कहे छे

देशसामायिक श्राद्धो, नितन्वन् घटिकाद्वयम् ।
द्रव्यादीना व्ययाभावा-दहो पुण्य महद्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ

"बे घडीनु देशसामायिक आचरता श्रावकने द्रव्यादिकना खर्च विना पण अहो ! केटु मोटु पुण्य थाय छे."

विस्तारार्थ

श्रावक बे घडी(एक मुहूर्त)नु देशसामायिक करतो सतो मोटु पुण्य उपार्जन करे छे ते सामायिक केवी रीते करवु ? ते कहे छे-पूर्वोक्त मुखवस्त्रिकादि रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरे उपकरणो लइने-इरिआवही पडिक्कमवा ते विषे श्रीमहानिशीथसूत्रमा कयु छे के-"इरियावही पडिक्कम्या विना चैत्यवंदन, स्वाध्याय अने ध्यानादिक करवु कल्पे नहीं " वळी श्री हरिभद्रसूरिए रचेली श्री दशवैकालिक-सूत्रनी वृत्तिमा कयु छे के-"ईर्यापथिकी पडिक्कम्या सिवाय बीजु काइ करवु नहीं, कारण के ते प्रमाणे करेल कार्यमा अशुद्धपणानी आपत्ति छे " तेथी प्रथम इर्यापथिकी पडिक्कमीने सामायिक करवु पचाशकवृत्तिमा, नवपदप्रकरणमा, आवश्यक-निर्युक्तिना बीजा खडना प्रात भागमा अने श्राद्धदिनकृत्यसूत्रमा प्रथम 'करेमि भंते' इत्यादि सूत्र भणीने पछी इर्यापथिकी पडिक्कमे एम कहेलु छे ते देखीने श्री आर्हतधर्ममा व्यामोह (सदेह) करवो नहीं, कारण के श्री गणधर महाराजाओनी समाचारीओ पण जुदी जुदी सामग्रीए छीए तत्त्व तो बहुश्रुतथी जाणवा योग्य छे, परतु बुद्धिमान पुरुषोए पूर्वाचार्यनी परपराए चाल्यो आवेल न होय तेवो पक्ष पोतानी बुद्धिथी कल्पना करीने स्वीकारवो नहीं

सामायिक ग्रहण करवानो विशेष विधि श्रीधर्मसग्रहादि ग्रथोथी जाणी लेवो एवी रीते विधिपूर्वक सामायिक आचरतो श्रावक द्रव्य-वस्त्रादिकना खर्च वगर मोटु पुण्य उपार्जन करे ते विषे पूज्यपुरुषोए कयु छे के-" बे घडी समभाव सामायिक करतो एवो श्रावक एटला पल्योपमनु देवतानु आयुष्य बाधे केटला पल्योपमनु ? त कहे छे-बाणु क्रोड, ओगणसाठ लाख, पचवीश हजार, नवसो अने पचीश पल्योपम तथा ३ ने ८ पल्योपम " वळी कयु छे के-" जे कोइ मोक्षे गया,

मोक्षे जाय छे अने मोक्षे जशे ते सर्वे सामायिकना प्रभावथी ज गया छे एम जाणवु" तेमज वळी कह्यु छे के–"जेमा होम नहीं, तप नहीं अने दान नहीं एवी अमूल्य करणी ते सामायिक छे के जे मात्र समतावडे ज सिद्ध थाय छे" ते विषे एक कथा छे ते आ प्रमाणे–

सामायिकना महिमा उपर केशरी चोरनी कथा

श्रीपुर नगरमा पद्मश्रेष्ठीने केशरी नामे एक पुत्र हतो. ते नट, विट अने अधर्मीओनी संगतथी चोरी करवा लाग्यो. लोकोनी राव सांभळी राजाए तेने पकडी मंगावी शिखामण दइने छोडी मूक्यो, तथापि ते चोरीना व्यसनमा आसक्त रह्यो. एटले राजाए तेना पिताना वचनथी तेने पोताना देशमाथी काढी मूक्यो मार्गे जता तेणे विचार्युं के–" आजे हु कोने घेर चोरी करीश ? " आवु विचारी ते कोइ सरोवरनी पाळ उपरना वृक्ष उपर चढ्यो. त्याथी सर्व दिशाओमा दृष्टि करी, एवामा कोइ सिद्धपुरुषने अकस्मात् आकाशमाथी उतरी, सरोवरने किनारे पादुका उतारी अंदर जइने स्नान करतो जोयो आ लाग जोइ ते केशरी तेनी पादुका पहेरी आकाशमा उडी गयो पछी पोताना नगरमा आवी लोकोनु सर्वस्व चोरवा लाग्यो राजाना अंतःपुरमा पण जवा लाग्यो, तेथी राजा पोते बहु खेद पामी हाथमा खड्ग लइने सर्व ठेकाणे चोरने शोधवा लाग्यो. वनमा जता जेनी दिव्य पूजा करेली छे एवो चंडिकानो प्रासाद जोयो. त्या चोरना आववानो संभव जाणी राजा छानी रीते संताइ रह्यो. तेवामा पेलो चोर त्या आवी सर्वे पादुका उतारी देवीने नमी बोल्योः " हे देवी ! आजे जो मने घणु धन मळशे तो हु तारी विशेषे पूजा करीश " एम कही जेवो ते पादुका पहेरवा जाय छे तेवामा राजाए एक पादुका लइ लीधी. चोर राजाने उग्र शासनवाळो जोइ नासवा लाग्यो. नजीकमा गुप्त रहेला राजाना योद्धाओ पण तेनी पछवाडे दोड्या चोर भयथी विह्वल थइने विचारवा लाग्यो के 'अहो ! आजे मारु पाप फळ्यु.' तेवामा समीप मार्गमा एक मुनि तेना जोवामा आव्या एटले तेणे मुनिने पोताना भवपर्यंत करेला पापना त्यागनो उपाय पूछ्यो. मुनिए कह्यु के–

> तप्येद्वर्षशतैर्यश्च, एकपादस्थितो नरः ।
> एकेन ध्यानयोगेन, कलां नार्हति षोडशीं ॥

" कोइ मनुष्य सो वर्ष सुधी एक पगे ऊभो रहीने तप करे तोपण ते एक ध्यान योग(सामायिक)नी सोळमी कळाने योग्य पण थाय नहीं. " पछी गुरुना मुखथी सामायिकनु फळ सांभळी, सामायिक लइने ते चोर पोते पूर्वे करेला

पापोनो पश्चात्ताप करवा लाग्यो " अहो ! में नास्तिक बुद्धिथी मोटुं पाप कर्युं छे, मने धिक्कार छे " आ प्रमाणे शुभध्यानमां आरूढ थवाथी क्षपकश्रेणी माडवावडे तेणे केवळज्ञान प्राप्त कर्युं देवताए रजोहरणादि आपी मोटो उत्सव कर्यो. राजा ते चोरने समतावान्-संयमी थयेलो जोइ आश्चर्य पामी अनिमेष दृष्टिथी जोइ रह्यो ते जोइ ज्ञानी महाराज बोल्या-हे राजा ! तुं एम विचार करे छे के आवा अन्याय करनारने केवळज्ञान क्याथी होय ? पण ए सर्व सामायिकना ताडवनो आडम्बर जाणवो अर्थात् सामायिकनुं फळ जाणवुं कह्युं छे के—

प्रतिहन्ति क्षणार्द्धेन, साम्यमालम्ब्य कर्म तत् ।
यन्न हन्यान्नरस्तीव्रतपसा जन्मकोटीभिः ॥ १ ॥

" पुरुष कोटी जन्म सुधी तीव्र तपस्या करवावडे जेटला कर्मने हणी शके नहीं, तेटला कर्मने समतामय सामायिकनुं आलंबन करनार पुरुष अर्द्धक्षणमां हणी शके छे " ते सांभळी राजा पण प्रतिदिन सात आठ सामायिक करवानो अभिग्रह लइ घेर आव्यो केवळी मुनि ज्ञानवडे पृथ्वी पर विहार करी अनेक जीवोने प्रतिबोध पमाडी अनुक्रमे मुक्तिने प्राप्त थया

" सात व्यसनमां आसक्त अने सर्वने संताप करनारा चोरने पण निर्वाण आपनारुं सामायिक हमेशा प्राज्ञ पुरुषोए सेववुं "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमः प्रबंधः ॥१४४॥

व्याख्यान १४५ मुं

नवमुं सामायिक व्रत कह्युं पछी हवे दशमुं
देशावकाशिक व्रत कहे छे

दिग्व्रते परिमाणं यत्, तस्य संक्षेपणं पुनः ।
दिने रात्रौ च देशाव-काशिकव्रतमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ —

" छट्ठा दिग्विरमणव्रतमां जे दिशानुं परिमाण करेलुं होय तेनो दिवसे अथवा रात्रिए संक्षेप करवो ते दशमुं देशावकाशिक व्रत कहेवाय छे "

विस्तारार्थ

पहेला गुणव्रतमा दशे दिशाओमा जवानु परिमाण जे राखेलु होय तेनो दिवसे अथवा रात्रे उपलक्षणथी पहोर विगेरे माटे जे संक्षेप करवो ते देश अने तेमा अवकाश एटले अवस्थान ते देशावकाशिक व्रत कहेवाय प्रथम दिग्व्रतमा यावज्जीवित सुधी अथवा वर्ष प्रमुखनी मर्यादाए सो योजन विगेरेनी जे छूट राखी होय तेमाथी आ देशावकाशिक व्रतमा मुहूर्त, दिवस, पहोर विगेरेड च्छित काळ सुधी घटाडवामा आवे छे अने तेटला वखत सुधी घर, हाट, शय्या विगेरे विभागमा अवस्थान तजीने एक देशनी मर्यादाए रहेवाय छे तेने देशावकाशिक व्रत कहे छे.

दृष्टिविष सर्पना विषनो विस्तार बार योजन सुधी होय छे तेने विद्याना बळथी ऊणो करीने एक योजनसुधी जेम लावी मूके छे, अथवा बधा शरीरमा रहेलु वींछीनु विष मत्रना बळथी जेम एक आगळीमा (डकमा) लावी मूके छे, एवी रीते विवेकी मनुष्ये दिग्व्रतमा राखेला दिशापरिमाणनो हमेशा सक्षेप करवो. आ व्रतथी बीजा सर्व व्रतोना नियमोनो पण प्रतिदिन सक्षेप कराय छे एथी ज पूर्वे कहेल " सचित्तदव्व० " ए गाथामा बतावेला १४ नियमोने श्रावक प्रात काळे ग्रहण करे छे, सायकाळे तेनो सकोच करे छे अने तेनु पच्चरखाण करता 'देसावगासिय पच्चक्खामि' ए पदथी गुरुनी समक्ष कबूल करे छे ते विषे कह्यु छे के "दिग्विपरिमाण व्रतनो नित्य सक्षेप करवो ते देशावगासिक अथवा सर्व व्रतनो सक्षेप प्रतिदिन जे व्रतमा थाय छे ते देशावगासिक व्रत जाणवु " तेमा पहेला व्रतनो सक्षेप आ प्रमाणे समजवो—"पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु अने वनस्पति तथा त्रसजीवो सबधी जे आरभ अने उपभोग ते सर्वनी दशमा व्रतमा यथाशक्ति सक्षेप करवो." तेवी रीते सर्व व्रतमा यथाशक्ति वर्तवु. शयन वखते तो विशेषे करीने सर्व हिंसा तथा मृषावाद विगेरेनो सक्षेप करवो आ व्रत पाळवाथी सुमित्रनी जेम उत्तम सपत्ति प्राप्त थाय छे, तेनी कथा आ प्रमाणे—

सुमित्रनी कथा

चद्रिका नामनी नगरीमा प्रजापाल नामे राजा हतो तेने सुमित्र नामे जैनमत्री हतो ते बनेने हमेशा धर्म विषे वाद थतो हतो राजाने धर्म उपर श्रद्धा नहोती एक वखते राजाए मत्रीने कह्यु–'अरे प्रधान! तु देवपूजा विगेरेमा वृथा मोह केम पाम्यो छे?' मत्री बोल्यो–'ह राजन्! पूर्व भवमा सुकृत कर्या विना

तमे राजा केम थया अने अमे सेवक केम थया ? मन पण सरखा केम नथी ?' राजा बोल्यो-'एक पत्थरनी शिलाना बे कटका करीए, पछी तेमांथी एक कटकानु देवनु प्रतिबिंब घडावीए अने बीजा कटकानु पगथियु करीए, ते बन्नेमां कोणे धर्म अने पाप कर्यु छे ? मात्र स्थानक उपरथी न्यूनता अने विशेषता गणाय छे ' मंत्री बोल्यो-'आ तमारी युक्ति अयोग्य छे, कारण के तमारा मगजीनो जमाव होवाथी ते युक्ति तमारी छे जो तमो समकीत होय तो ते तो आत्मशक्तिथी पूज्य अने अपूज्य कर्म उपार्जे छे पण ते पत्थरमां एकेन्द्रिय जीव होय छे, तेमाना एक कटकामां रहेला जीवे पूर्वे मोटु पुण्य करेलु, तेथी ते देवनु प्रतिबिंब थयो अने ते हजारो वर्ष सुधी कापण ताडन, घषण अने निभाडामां पाकवु विगेरे तथा चूर्ण (चूनो) थवा प्रमुख दुःखने पामतो नथी, बीजा कटकामां रहेला जीवे पूर्वे पाप करेल तेथी ते मोटु दुःख पामे छे आ प्रमाणे सर्वत्र जाणी लेवु ' प्रधानना आवा वचन सांभळी राजाए मंत्रीने कह्यु-'प्रत्यक्ष फळ जोया विना पुण्य उपर मने श्रद्धा थती नथी ' आ प्रमाणे तेमने हमेशा संवाद थया करतो हतो

एक वखते मंत्रीए पाखीनी रात्रे घरमांथी बहार जवाना पच्चक्खाण कर्या ते ज रात्रे राजाए कोइ कार्य आवी पडवाथी तेने बोलाववाने प्रतिहार मोकल्यो मंत्रीए प्रतिहारने पोतानो नियम जणाव्यो प्रतिहारे आवीने ते वात राजाने जणावी राजाए अति रोष करी प्रतिहारने पाछो मोकली मंत्री पासेथी महोर-छाप मगावी मंत्रीए तत्काळ ते प्रतिहारने आपी दीधी प्रतिहार कौतुकथी ते महोरछापनी मुद्रिका हाथमां पहेरी पोतानी मावना पाडाओनी आगळ हसतो हसतो बोल्यो के-'अरे सेवको ! जुओ, राजाए मने मंत्रीपद आप्यु ' सेवको 'मंत्री-राज ! खमा, पधारो ' एम बोलवा लाग्या पछी ते प्रतिहार थोडे आगळ चाल्यो त्यां दैवयोगे कोइ दुष्ट सुभटोए तेने मारी नाख्यो आ खबर राजाए जाणी एटले ते विचारमां पड्यो के ' जरूर ते प्रतिहारने मंत्रीए ज मरावी नाख्यो हशे, माटे हु जाते जइ ए मंत्रीने ज मारी नाखु ' आवा विचारथी राजा त्यां आव्यो तेवामां प्रतिहारने हणनारा पेला सुभटो जेने दीवीओना प्रकाशथी शोधीने पकडी लीधेला तेम ज बांधेला तेओ मार्गमां मळ्या राजाए तेमने पूछ्यु-'तमे क्याथी आव्या हता ?' तेओ बोल्या- महाराज ! अमने पटभगने शु पूछो छो ? तमारा वैरी सूर राजाए मंत्रीनो वध करवाने अमने मोकल्या हता अमे आ प्रतिहारने मुद्रिका उपरथी मंत्री जाणीने मारी नाख्यो छे ' पछी राजाए मंत्रीने घेर आवी मिथ्या दुष्कृत्य आपी ते सर्व वृत्तांत जणाव्यु मंत्रीए ते सुभटोने जीवता छोडी मूक्या राजाए कह्यु-' मंत्रिराज ! आजे पुण्यनु फळ में प्रत्यक्ष जोयु ' पछी पुण्यनी प्रशंसा

करी राजाए गृहस्थधर्म अंगीकार कर्यो प्राते मंत्री अने राजा बने पुन्य उपार्जन करी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपदने पाम्या

" सुमित्र मंत्री दशमा व्रतमा उद्यमवंत थइ आ लोकमा धर्मनुं पूर्ण फळ पाम्यो अने राजा तेने जोइ नास्तिकपणुं छोडी प्रतिबोध पामीने शुद्ध धर्मने प्राप्त थयो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पंचचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १४५ ॥

व्याख्यान १४६ मुं

देशावकाशिक व्रतमां त्याग करवा योग्य पांच अतिचार कहे छे.–

प्रेष्यप्रयोगानयने, पुद्गलक्षेपणं तथा ।
शब्दरूपानुपातौ च, व्रते देशावकाशिके ॥ १ ॥

भावार्थ.–

" चाकरने मोकलवो, अंदर कांई अणाववुं, पुद्गल फेंकवां (कांकरादि नाखवा), शब्द करवो अने रूप बताववुं " ए पांच देशावकाशिक व्रतना अतिचार छे.

विस्तारार्थ.–

दिग्व्रतमां जे कांइ विशेष ते देशावकाशिक व्रत कहेवाय छे. ते विशेषपणुं एवी रीते छे के-दिग्व्रत यावज्जीवित, वर्ष अने चातुर्मासना परिमाणवाळुं होय अने आ देशावकाशिक व्रत एक दिवस, रात्रि, पहोर अने मुहूर्त्त (बे घडी) विगेरेना परिमाणवाळुं होय छे ते व्रतमां पांच अतिचार लागे छे ते आ प्रमाणे– प्रेष्य एटले आदेश प्रमाणे करनारा नोकरनो प्रयोग करवो एटले धारेल क्षेत्रनी बहार कोइ प्रयोजनने माटे सेवक विगेरेने मोकलवा, (पोतानी जाते जवाथी तो व्रतनो भंग थाय) ते पहेलो प्रेष्यप्रयोग नामे अतिचार. आनयन एटले कोइ सचेतनादि वस्तु नियमित क्षेत्रनी बहार होय तेने सेवकप्रमुखने मोकली मगाववी ते आनयनप्रयोग नामे बीजो अतिचार. पुद्गल एटले पाषाण काष्ठ विगेरना ककडाने नियमित करेला स्थानथी बहार नाखी पोतानुं कार्य जणाववुं ते पुद्गल-

प्रक्षेप नामे त्रीजो अतिचार. नियमित भूमिनी बहार रहेला पोतानुं कार्य करवा माटे व्रतभंगना भयथी साक्षात् नहि बोलावाय तेथी ऊंचे स्वरे खांसी, खोंखारा विगेरेथी पोताना आगमन जणावशे—ए शब्दानुपात नामे चोथो अतिचार, एवी रीते ज पोताना रूपने दर्शावे अथवा तिरछी, अटारी, मेडी के अगाशी उपर चडी परस्पर जोवे ते रूपानुपात नामे पांचमो अतिचार. आ व्रत नियमित भूमिनी बहार गमनागमनवडे जीववध न थाय एवी बुद्धिथी ग्रहण कराय छे, ते जीववध पोते करो अथवा बीजा पासे कराव्यो तेना फलमां कांइ विशेष नथी, पण उलटो पोते जाय तो तेमां इर्यापथिकीनी शुद्धि विगेरे गुण थाय अने सेवकोने मोकलवाथी तो तेनुं निपुणपणुं न होवाथी, निःशूकपणु होवाथी, तेमज इर्यासमितिनो अभाव होवाथी विशेष दोष लागे छे माटे आनयन प्रयोग विगेरे अतिचार लगाडवा कल्पता नथी. अहीं पहेला त्रण अतिचार "मारा व्रतनो भंग न थाओ" एम इच्छवावाळाने सहसाकार अनाभोग विगेरेथी प्रवर्तता छे अने छेल्ला त्रण अतिचार मायावीपणाथी अतिचारपणाने पामे छे. आ छठ्ठं व्रत निरतिचारपणे पाळवा विषे महारथी स्कन्दनी कथा छे ते श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रनी अर्थदीपिका नामनी वृत्तिमां आपेली छे त्यांथी जाणी लेवी. तेम बीजी पवनजयनी कथा छे ते श्राद्धदिनकृत्यवृत्तिमांथी जाणी लेवी.

जे प्राणी आ व्रत ग्रहण करता नथी अने सर्व ठेकाणे जवानुं मोकळुं राखे छे ते मोटुं दुःख पामे छे. जे गुरुना वचनथी दशावकाशिक व्रतने अंगीकार करे छे ते पुण्यने प्राप्त करी लोहजंघनी जेम विपत्तिने तरी जाय छे. अने जे अश्व, वृषभ, उंट विगेरेना धणीओ ते प्राणीओने हमेशा अपरिमित गतिवडे चलावे छे तेओ पोतानुं हित करी शकता नथी. लोहजंघनी कथा आ प्रमाणे—

लोहजंघनी कथा

एक वखते उज्जयिनी नगरीमां चंडप्रद्योत राजाए एवो पटह वगडाव्यो के-'जे अभयकुमार मंत्रीने बांधीने लावे तेने हुं ते मागे ते आपुं.' पडह कोइ वेश्याए स्वीकार्यो. अने पछी ते श्राविकानो कपटवेष लइ राजगृही नगरीमां आवी. त्यां अभयकुमारने पोताने स्थाने लावी, मोळवी, चंद्रहास मदिरा पाइ दीधी अने तेन केफमां घूर्णित थयो एटले तेने अवंतीए लावी चंडप्रद्योत पासे हाजर कर्यो. राजाए तेन कारागृहमां राखाव्यो. पछी ज्यारे चंडप्रद्योते तेने लाववानो वृत्तांत वेश्याना मुखथ

मासळ्यो त्यारे तेना पर नाखुश थईने बोल्योः ' तु धर्मना छळथी एने पकडी लाव्यो ते सारु न कर्युं '

राजा चंडप्रद्योत पासे अग्निभीरु रथ, शिवादेवी नामे पद्मिणी स्त्री, अनिलवेग नामे हस्ती अने लोहजघ नामे दूत-ए चार रत्नो हता तेमा जे लोहजघ दूत हतो ते प्रतिदिन पचीश योजन जतो अने अनेक देशोना राजाओना गुह्य समाचार लावीने प्रगट करतो हतो. आथी सर्व सामत राजाओ उद्वेग पाम्या अने तेने मारवाने माटे एकदा विषमिश्रित पाथेय (भातु) आप्यु. लोहजघ ते पाथेय लइ अवती तरफ पाछो वळ्यो. मार्गमा भोजन करवा बेठो एटले अपशुकनोए तेने वारंवार अटकाव्यो, तेथी खाधा विना अवतीए आवी ते वृत्तात तेणे प्रद्योत राजाने जणाव्यो. राजाए अभयकुमारने पूछ्यु एटले अभयकुमार बोल्यो-"आ पाथेयना गध उपरथी एवो निश्चय थाय छे के-तेमा दृष्टिविष सर्प उत्पन्न थयेलो छे. विष जाणवानो प्रकार आ प्रमाणे छे-" विषवाळु अन्न जोईने चकोरपक्षीना नेत्र विराम पामे, कोकिल उन्मत्त थइ मरी जाय अने क्रौंचपक्षी तत्काल मद पामे, तथा नोळीयाना रोम विकस्वर थइ जाय अने मयूर खुशी थाय, कारण के नोळीआ तथा मोरनी दृष्टिए पडवाथी विष तत्काळ मद थइ जाय छे वळी विषवाळु अन्न जोइ मार्जार उद्वेग पामे, वानर विष्टा करवा माड, हसनी गति स्खलित थइ जाय, कुकडो रुदन करे, भमरो झेरी अन्न सुघीने वधारे गुंजारव करे, अने मेना तथा पोपट आक्रोश करवा माडे. " आ प्रमाणे सामळी चडप्रद्योत राजाए ते पाथेय पर्छावित वनमा मूकाव्यु त्या तेमाथी दृष्टिविष सर्प नीकळ्यो तेनी विषमय दृष्टिथी वधु वन सुकाइ गयु आ प्रमाणे अनेक प्रसगमा अभयकुमारनी बुद्धिथी राजाए प्रसन्न थइ वर आप्या. ते बधा वर एकठा मागवावडे अभयकुमार पुनः त्याथी मुक्त थयो. चालती वखते अभयकुमारे विनयथी कह्यु-"तमने धर्मना छळ विना, दिवसे, तमारा नगरमाथी "हु चडप्रद्योतन छु" एवो पोकार करता लइ जउ तो हु अभयकुमार खरो." आ प्रमाणे कही अभयकुमार पोताना नगरमा आव्यो. केटलाक दिवस पछी ते वेश्याओनी पुत्रीओने लइ वणिकने वेषे ते पाछो उज्जेणमा आव्यो अने राजा प्रद्योतना महेलनी समीपे एक दुकान भाडे लीधी राजा ते वेश्यानी पुत्रीओने जोइने विह्वल थइ गयो तेणे पोताना आप्त जननी मारफत तेना सगनी इच्छा दर्शावी ते बने स्त्रीओए जवाबमा कह्यु-" अमारो वृद्ध बधु तेना लघु बधुना शरीरमा भूत वळगेलु छे, तेथी तेना सुखने माटे कोइ मात्रिकने घेर जाय छे ते वखते जो राजा गुप्त रीते आवे तो अमारो सग थाय "

अभयकुमारे पोताना एक माणसने गांडो बनाव्यो अने तेनुं प्रद्योत एवुं नाम पाडयुं. ते गांडो माणस 'हुं राजा प्रद्योत छुं' एम कहेतो आम तेम भमवा लाग्यो. अभयकुमार लोकोनी आगळ 'आ गांडाने शी रीते राखवो?' एम कही तेने पकडवा दोडतो अने तेने वारिकने घेर लइ जवाने खाने एक मांचा उपर बेसारी रोता बजार वचेथी लइ जतो ते वखते चौटामां 'हुं प्रद्योत राजा छुं, मने आ बांधीने लइ जाय छे माटे छोडावो' एम ते गांडो ऊंचे स्वरे बोल्या करतो. लोको तेने गांडो जाणीने तेनी उपेक्षा करता

हवे संकेत प्रमाणे प्रद्योत राजा एकलो गुप्त रीते अभयने घेर वेश्यानी पुत्रीओ पासे आव्यो पछवाडेथी अभयकुमारे आवी पोताना माणसो पासे कामांध हस्तीनी जेम तेने पलंग साथे दृढ बंधाव्यो अने थोडे दिवसे 'हुं प्रद्योत राजा छुं, मने छोडावो' एम पोकारता तेने लोकोनी समक्ष राजग्रही नगरीमां लइ गयो. त्यां मगधपतिए तेने छोडावी सन्मान करीने हर्षथी पाछो विदाय कर्यो पछी उज्जयिनीना राजाए पोताना राज्यमां आवी लोहजंघ दूतने एवी शिखामण आपी के-तारे स्वच्छाथी सर्व दिशामां गमन करवुं नहीं के जेथी शत्रु तरफथी तने दुःख थाय लोहजंघे ते प्रमाणे स्वीकार्युं जेथी ते दुःख पाम्यो नहीं. आ कथानो उपनय एवो छे के-जेम ते लोहजंघे दिशामां गमन करवामां संक्षेप कर्यो तो ते शत्रु तरफथी वधादिक दुःखने पाम्यो नहीं, तेम श्रावक पण ए व्रत लेवाथी हिंसादि पापकर्मे करेला उपद्रवने पामतो नथी

"आ दशमा देशावकाशिक व्रतने आचरवाथी पूर्वे उपार्जन करेला घणा पापकर्मानो पण संक्षेप थाय छे अने अनुक्रमे ते पुरुष थोडा काळमां सौभाग्य लक्ष्मी(मोक्षलक्ष्मी)ने भजे छे"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-वृत्तौ षट्चत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १४६ ॥

व्याख्यान १४७ मुं

सामायिक प्रमुख शिक्षाव्रतने धारण करनार भव्यजीवोए षट् अष्टाह्निका (छ अट्ठाइ) पर्व अवश्य सेववा जोइए ते कहे छे.—

अष्टाह्निका. षडेवोक्ता', स्याद्वादाभयदोत्तमे. ।
तत्स्वरूप समाकर्ण्य, आसेव्याः परमार्हतैः ॥ १ ॥

भावार्थ

" स्याद्वाद मतने कहेनारा अने अभयने आपनारा उत्तम पुरुषोए छ अट्ठाइओ कहेली छे, तेनु स्वरूप बराबर जाणीने परम श्रावकोए ते सेववा योग्य छे. "

विस्तारार्थ

अट्ठाइ छ कहेवाय छे, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे—एक अट्ठाइ चैत्र मासमा (ओळीनी), बीजी आषाढ माससा] त्रीजी, पर्युषणपर्व संबधी, चोथी आश्विन मासमा (ओळीनी), पाचमी कार्तिक माससा अने छट्ठी फाल्गुनमाससा—आ छ अट्ठाइमा बे अट्ठाइ शाश्वत छे एम श्रीउत्तराध्ययननी बृहद्वृत्तिमा कहेलु छे ते आ प्रमाणे—" बे अट्ठाइ शाश्वती छे, एक चैत्र माससा अने बीजी आश्विन माससा. ए बे शाश्वती अट्ठाइमा सर्व देवताओ नदीश्वरद्वीपनी यात्रा करे छे अने विद्याधरो तथा मनुष्यो पोतपोताने स्थानके यात्रा करे छे तदुपरात चोमासानी त्रण अट्ठाइ अने एक पर्युषणनी अट्ठाइ एम चार अट्ठाइ तथा प्रभुना जन्म, दीक्षा, केवळ अने निर्वाणादिक कल्याकना दिवसो अशाश्वत पर्वो छे. " दुषमकाळ तथा युगळिआओना समयमा पण देवताओ चैत्र अने आसो मासनी अट्ठाइ हमेशा साचवे छे, तेथी ते शाश्वत कहेवाय छे श्रीजीवाभिगम सूत्रमा कह्यु छे के—" त्या घणा भुवनपति, वाणव्यतर, जोतिषी अने कल्पवासी देवताओ चोमासानी त्रण अट्ठाइए अने पर्युषणपर्वे मोटो महिमा करे छे. "

चैत्र अने आसो मासनी अट्ठाइमा श्रीपाल अने मयणासुदरीनी जेम श्री सिद्धचक्रनु आराधन करवु बाह्यथी मत्रनु स्वरूप निर्धारी मनवडे ललाट विगेरे दश स्थानकोमा यत्रनी आकृति स्थापीने भावथी तेनु ध्यान करवु. सामान्यथी सर्वे अट्ठाइ ओमा अमारी उद्घोषणा करावी, जिनमदिरोमा अट्ठाइ उत्सव मोटा विस्तारथी करवो अने खाडवु, दळवु, पीसवु, खोदवु, वस्त्र धोवा अने स्त्रीसेवन करवु विगेरे कार्यो करवा नहीं अने कराववा नहीं. तेमा पण पजोसणनी अट्ठाइ तो पाच साधनोवडे आराधवी. ते पाच साधन आ प्रमाणे—पहेलु साधन अमारीघोषणा

कराववी, बीजुं साधर्मीवात्सल्य करवुं, त्रीजुं परस्पर खमाववुं, चोथुं अट्टम तप करवो अने पांचमुं चैत्यपरिपाटी करवी. तेमां पहेला साधननुं वर्णन आगळ कहेवाशे.

बीजुं साधन साधर्मिकवात्सल्य ते सर्व साधर्मीओनी भक्ति करवी अथवा यथा शक्ति बने तेटलानी करवी. आम करीने सरखा साधर्मीओ मळवा दुर्लभ छे. कह्युं छे के–" सर्व जीवो परस्पर पूर्वना संबंधी छे, तेथी ते तो वारंवार मळे छे, पण साधर्मी कोइक ज ठामे मळे छे." स्वामीवच्छळना फळ संबंधी कह्युं छे के—

एगत्थ सव्वधम्मा, साहम्मिअवच्छलं तु एगत्थ ।
बुद्धितुलाए तुलिया, दोवी अ तुलाइं भणियाइं ॥ १ ॥

" एक बाजु सर्व धर्म ने एक बाजु स्वामिवच्छळ मूकी बुद्धिरूपी त्राजवावडे तोळीए तो ते बन्ने समान थाय." आ विषे भरतचक्री, दंडवीर्य, कुमारपाळ विगेरेना दृष्टांतो छे ते स्वयमेव जाणी लेवा.

त्रीजुं साधन परस्पर खमाववानुं छे. ते उपर कथा कहे छे के–एक वखते चंदनबाळा साध्वी तथा मृगावती साध्वी वीरप्रभुने वांदवा गया हता. ते दिवसे सूर्य चंद्र मूळविमाने प्रभुने वांदवा आव्या हता. तेथी अस्त समय थया छतां समवसरणमां दिवसवत् प्रकाश हतो, परंतु दक्षपणाथी–सूर्यास्त समय जाणी एकदम चंदनबाळा उपाश्रये आव्या, इर्यापथिकी पडिकमी निद्रावश थया. पछी सूर्य चंद्र स्वस्थाने गया एटले एकदम अंधकार थइ गयो, तेथी रात्रि पडी जवाने लीधे भय पामीने मृगावती तत्काळ उपाश्रये आव्या अने इरियावही पडिक्कमतां चंदनासाध्वीने कह्युं के–' हे गुरुणीजी ! मारो अपराध क्षमा करो.' चंदनबाळाए कह्युं के–' हे मृगावती ! तारा जेवी कुलीनने आम करवुं घटे नहीं.' मृगावती बोली के–' हवे फरी वार आवुं करीश नहीं ' एम कही ते चंदनबाळाना पगमां पड्या. चंदनबाळाने तो पाछी निद्रा आवी गइ, परंतु शुद्ध अंतःकरणवडे वारंवार खमाववाथी मृगावतीने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तेवामां चंदनबाळा पासे सर्प आवतो हतो, एटले तेणे हाथ ऊंचो कर्यो, तेथी तेओ जागी गया. हाथ ऊंचो करवानुं कारण पूछतां तेमणे सर्पनो वृत्तांत जणाव्यो. चंदनबाळाए पूछ्युं के–' आवा अंधकारमां तमे सर्पने शी रीते जाण्यो ?' तेमणे कह्युं के–' आपने पसाये ' एम पूछतां तेने केवळज्ञान थयेलुं जाणी मृगावती साध्वीने खमावतां चंदनबाळाने पण केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तेथी एवी रीते परस्पर खमावीने मिथ्या दुष्कृत आपवुं.

वळी चंडप्रद्योत राजा प्रत्ये जेम उदयन राजाए क्षमापन कर्युं हतुं तेम पर्युषणपर्वमां अवश्य परस्पर क्षमापन करवुं. बे जणमां एक जण खमावे अने बीजो

न खमावे तो तेमा जे खमावे ते आराधक, बीजो नहीं, तेथी पोताने तो उपशमवु कोइ ठेकाणे बने पण आराधक थाय छे अने कोइ ठेकाणे वृथा मिच्छामि दुक्कड देवाथी आराधक थता नथी ते विषे कुंभकार अने क्षुल्लक मुनिनु दृष्टांत छे " कोइ लघुशिष्य कांकरा मारवावडे कुंभारना वासणो काणा करतो हतो कुंभकारे तेने वार्यो एटले तेणे मिथ्या दुष्कृत आप्यु, पण तेनाथी न निवर्त्तता पाछो तेवी ज रीते भाड काणा करवा लाग्यो पछी कुंभकारे कांकरावती तेना कान चोळ्या त्यारे क्षुल्लके कह्यु के 'हु पीडाउ छु' एटले कुंभारे पण वृथा मिथ्यादुष्कृत आप्यु " आवा परस्परना मिच्छामि दुक्कड ते वृथा समजवा.

हवे चोथा साधन तरीके पर्युषण पर्वमा अट्टम तप अवश्य करवु. पाक्षिक तपमा एक उपवास, चोमासी तपमा छट्ठ अने वार्षिक पर्वमा अट्ठम करवो, एम जिनेश्वर भगवंते कहेलु छे. जे अट्टम तप करवाने असमर्थ होय तेमणे ते तपनी पूर्त्ति करवाने त्रण आंबेल करवा, ने त्रण आंबेल करवाने अशक्त होय तेणे नव नीवि करवी, अथवा तेने बदले बार एकासणा करवा, अथवा चोवीश बेसणा करवा, अथवा छ हजार स्वाध्याय करवो, अथवा साठ नवकारवाळी (बाधा पारानी) गणवी आ रीतिथी पण तपनी पूर्त्ति करवी जो तेम न करे तो जिनेश्वर भगवंतनी आज्ञानु उल्लंघन करवानो दोष लागे. आ प्रसंगे नोकारसी प्रमुख तपनु फळ दर्शावे छेः—

नारकीनो जीव एक सो वर्ष सुधी अकामनिर्जरावडे जेटलु कर्म खपावे तेटला पापकर्म एक नोकारसीना पच्चक्खाणथी खपे छे, पोरसीना पच्चक्खाणथी एक हजार वर्षना पाप दूर थाय छे, सार्द्धपोरसीना पच्चक्खाणथी दश हजार वर्षना पाप टळे छे, पूरिमार्द्ध (पुरिमड्ढ) एक लाख वर्षना पापकर्म नाश पामे छे, अचित्त जळयुक्त एकासणे दश लाख वर्षनु पाप जाय छे, नीविना तपथी कोटी वर्षनु पाप जाय छे, एकलठाणे दश कोटी वर्षनु पाप टळे छे एक दत्तीथी (दाताए एक वार अन्न आप्यु तेटलु ज खावाथी) सो कोटी वर्षनु पाप जाय छे, आंबेलना तपथी एक हजार कोटी वर्षनु पाप जाय छे, उपवासना तपथी दश हजार कोटी वर्षनु पाप जाय छे, छट्ठ तप करवाथी एक लाख क्रोटी वर्षनु पाप प्रलय थाय छे, अने अट्टम तपथी दश लाख कोटी वर्षनु पाप जाय छे. त्यारथी आगळ एक एक उपवासनो वधारो करी अनुक्रमे तेना फलमा दशगणो अंक वधारवो अट्टम तप करवाथी नागकेतु ते ज भवमा प्रत्यक्ष फल पाम्यो हतो. ते सर्व तप शल्य रहित करवु. शल्यवाळु तप दुष्कर कर्यु होय तो पण निरर्थक जाणवु ते उपर एक कथा छे ते आ प्रमाणे—

आजथी एशीमी चोवीशीमा एक राजाने घणा पुत्रो थया पछी पुत्रीनी इच्छाथी मेंकडो मानता करवावडे एक लक्ष्मणा नामे पुत्री थइ, ते राजाने बहु

माळीनी हता ज्यारे ते कन्या यौवन वय पामी त्यारे मातापिताए स्वयंवर कर्यो तेमा ते इच्छित वरने वरी, परन्तु विवाहविधि करता चोरीमा ज तेनो स्वामी मृत्यु पाम्यो स्वामीना मृत्युथी सर्व लोकोमा खेद थयो, पछी लक्ष्मणा श्रावकधर्मने सारी रीते पाळवा लागी. अन्यदा ते चोवीशीना छेल्ला तीर्थंकर पासे तेणे दीक्षा लीधी. एकदा ते लक्ष्मणा साध्वी चकलाचकलीनो संयोग जोइ कामातुर थइ मनमा विचारवा लागी, “ अरिहंत प्रभुए शु जोइने आ कर्मनी मुनिने आज्ञा दीधी नहीं होय ? अथवा भगवान पोते अवेदी छे तेथी ते वेदवाळानु दुःख क्याथी जाणे ? ” आवु चिंतवता तत्काळ तेना मनमा पश्चात्ताप थयो तेणीए विचार्युं “ मे माठु चिंतवन कर्युं, हवे हु केवी रीते तेनी आलोचना लइश ? केम के आ वात माराथी कहेवाशे नहीं तो शल्य रही जशे अने शल्य रहेशे तो तेनी शुद्धि थशे नहीं ” आम विचारीने ते आलोयणा लेवा माटे गुरु पासे जवा उजमाळ थइ. जेवी चालवा लागी तेवामा अकस्मात् तेना पगमा कांटो वाग्यो, तथी ते अपशुकनथी क्षोभ पामी पछी तेणीए बीजानु नाम लइने गुरुने पूछ्यु के–‘जे आवु दुर्ध्यान चिंतवे तेने शु प्रायश्चित्त आवे ?’ गुरुए पडवानु कारण जाणवा मागतु कहेता ते कही शकी नहीं, परन्तु गुरु पासेथी तेवुं प्रायश्चित्त जाणीने पचास वर्ष सुधी तीव्र तप कर्युं ते आ प्रमाणे–“ छठ, अट्ठम, चार उपवास अने पांच उपवास करी पारणे नीवि करे एम दश वर्ष सुधी तप कर्युं, बे वर्ष सुधी मात्र निर्लेप चणानो आहार लीधो, त्रण वर्ष भुंजेला चणानो आहार लीधो, सोळ वर्ष मासक्षमण कर्या अने वीश वर्ष आंबेल तप कर्युं ए प्रमाणे लक्ष्मणा साध्वीए पचास वर्ष तप कर्युं ” आवी रीते आकरु तप कर्युं तो पण दंभ राखवाथी तेनी शुद्धि न थइ अने आर्तध्यानथी मृत्यु पामी त्यारपछी दासी प्रमुखना असंख्य भवमा महादुःख भोगवी श्रीपद्मनाभ प्रभुना तीर्थमा सिद्धिपदने पामशे. ते विषे कह्यु छे के–“ पराक्रमवाळ घोर एवु तीव्र तप एक सहस्र दिव्य वर्ष सुधी आचरे पण जो सशल्य होय तो ते निष्फळ थाय छे. ”

पाक्षिक प्रतिक्रमणमा एक हजार अने आठ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग जाणवो प्रत्येक चतुर्विंशति स्तव “ चंदेसु निम्मलयरा ” सुधी पचवीश श्वासोच्छ्वास गणता एवा चाळीश लोगस्स एक नवकार अधिक गणवाथी १००८ श्वासोच्छ्वास थाय छे अहींआ पदसमान श्वासोच्छ्वास समजवो चातुर्मासिक प्रतिक्रमणमा पांचसो श्वासोच्छ्वासनो एटले २० लोगस्सनो प्रतिक्रम-

१ आवती चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर २ दववाई हजारो वर्ष

णमा त्रणमो श्वासोच्छ्वासनो एटले १२ लोगस्सनो काउसग्ग जाणवो.

हवे कायोत्सर्गमा एक श्वासोच्छ्वासमा देवतानु केटलु आयुष्य बाधे ते कहे छे. त्रे लाख, पीस्तालीश हजार, चार सो अने आठ पल्योपम अने एक पल्योपमना नव भाग करीए तेवा चार भाग जेटलु एक श्वासोश्वासमा देवगतिनु आयुष्य बाधे. ते विषे लखे छे के–

लक्खदुग सहस्स पणचत्त, चउसया अट्ठचेव पलियाइं ।
किंचुणा चउभागा, सुराउ बंधो इगुसासो ॥ १ ॥

(अर्थ उपर कहेलो छे.) आखा नवकारना आठ श्वासोश्वासमा ओगणीश लाख, त्रेसठ हजार, बसो ने सडसठ पल्योपमनु देवतानु आयुष्य बाधे, अने एक लोगस्सना पचवीश श्वासोश्वासमा एकसठ लाख, पात्रीश हजार, बसो अने दश पल्योपमनु देवगतिनु आयुष्य बाधे आयुष्य बाधवानो क्रम एवो छे के–जे देवलोकमा देवताओनु आयुष्य एटला पल्योपमनु होय, ते देवलोकमा ते उत्पन्न थाय

पर्युषण पर्वमा पाचमा साधन तरिके चैत्यपरिपाटी करवी अने चैत्यपूजा विगेरेथी शासननी उन्नति करवी. जेम एकदा वज्रस्वामी मोटो दुकाळ पडवाथी आखा सघने पट उपर बेसारी सुभिक्षापुरीमा लइ गया हता त्यानो राजा बौद्ध हतो तेणे जिनचैत्यमा पूजा माटे पुष्प आपवानी अटकायत करी हती तेवामा पर्युषण पर्व आव्या एटले श्रावकोए पुष्पने माटे गुरुने विनति करी गुरु आकाशगामिनी विद्यावडे माहेश्वरीनगरीए जइ, पोताना पिताना मित्र कोइ माळीने पुष्प तैयार करवानी आज्ञा करीने पोते हमवत पर्वत उपर श्रीदेवीना भुवनमा गया त्या श्रीदेवीए एक महापद्म आप्यु ते अने हुताशन वनमाथी वीस लाख पुष्पो लइ, (पूर्वभवना मित्र) जृंभक देवताए विकुर्वेला विमानमा बेसी, महोत्सव सहित सुभिक्षापुरीए आवी, श्रीजैन शासननी प्रभावना करी ते जोइ बौद्धराजा आश्चर्य पाम्यो अने ते पण श्रावक थयो

अट्ठाइ पर्वमा अमारी प्रवर्त्तन करवु. जेम श्रीकुमारपाळ अने सप्रति राजा विगेरेए कर्यु हतु तेम आधुनिक काळे (ग्रथकर्त्ताना समये) पण श्रीहीर गुरुना उपदेशथी अकबर बादशाहे पोताना बधा देशमा छ मास सुधी अमारी प्रवर्त्तावी हती तेनी कथा सक्षेपमा आ प्रमाणे छे–

एक वखते अकबर बादशाहे पोताना प्रधानो विगेरेनी पासेथी श्रीहीरसूरिनु वर्णन साभळी पोताना नामनु फरमान मोकलीने बहुमान साथे सूरिने बोलाव्या

१ पाच साधनो पैकी आ साधन पहेलु कह्यु छे तेनु विवरण हवे करे छे

मानीती हती. ज्यारे ते परणवा योग्य थई त्यारे राजाए स्वयंवर कर्यो. तेमा ते इच्छित वरने वरी, परंतु विवाहविधि करता चोरीमां ज तेनो स्वामी मृत्यु पाम्यो. त्यारथी ते सुशील सतीओमा श्रेष्ठ गणाती सती ब्रह्मचर्यने सारी रीते पाळवा लागी. अन्यदा ते चोवीशीना छेल्ला तीर्थंकर पासे तेणे दीक्षा लीधी. एकदा ते लक्ष्मणा साध्वी चकलाचकलीनो संयोग जोई कामातुर थई मनमां विचारवा लागी, "अरिहंत प्रभुए शुं जोईने आ कर्मनी मुनिने आज्ञा दीधी नहीं होय? अथवा भगवंत पोते अवेदी छे तेथी ते वेदधारीनुं दुःख क्यांथी जाणे?" आवुं चितवना क्षणवार पाछो तेने पश्चात्ताप थयो. तेणीए विचार्युं "में माठुं चिंतवन कर्युं, हवे हुं कई रीते तेनी आलोयणा लईश? जेम के आ वात माराथी कहवाशे नहीं तो शल्य रही जशे अने शल्य रहशे तो तेनी शुद्धि थशे नहीं" आम विचारीने ते आलोयणा लेवा माटे गुरु पासे जवा उजमाळ थई जेवी चालवा लागी तेवामां अणचिंतव्यो तेना पगमां कांटो वाग्यो, तेथी ते अपशुकनथी क्षोभ पामी. पछी तेणीए बीजानुं नाम दईने गुरुने पूछ्युं के–'जे आवुं दुर्ध्यान चिंतवे तेने शुं प्रायश्चित्त आवे?' गुरुए पूछवानुं कारण जणाववानुं कहेता ते कंई कही शकी नहीं, परंतु गुरु पासेथी तेनुं प्रायश्चित्त जाणीने पचास वर्ष सुधी तीव्र तप कर्युं ते आ प्रमाणे–" छठ, अठम, चार उपवास अने पांच उपवास करी पारणे नीवि करे एम दश वर्ष सुधी तप कर्युं, बे वर्ष सुधी मात्र निर्लेप चणानो आहार लीधो, बे वर्ष भुंजेला चणानो आहार लीधो, सोळ वर्ष मासक्षमण कर्यां अने वीश वर्ष आंबेल तप कर्युं. ए प्रमाणे लक्ष्मणा साध्वीए पचास वर्ष तप कर्युं" आवी रीते आकरुं तप कर्युं तो पण दंभ राखवाथी तेनी शुद्धि न थई अने आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामी त्यारपछी दासी प्रमुखना असंख्य भवमां महादुःख भोगवी श्रीपद्मनाभ[1] प्रभुना तीर्थमां सिद्धिपदने पामशे. ते विषे कह्युं छे के–" पराक्रमवडे घोर एवुं तीव्र तप एक सहस्र दिव्य[2] वर्ष सुधी आचरे पण जो सशल्य होय तो ते निष्फळ थाय छे"

वार्षिक प्रतिक्रमणमां एक हजार अने आठ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग जाणवो. प्रत्येक चतुर्विंशति स्तव "चंदेसु निम्मलयरा" सुधी पचीश श्वासोच्छ्वास गणवा. एवा चाळीश लोगस्स एक नवकारे अधिक गणवाथी १००८ श्वासोच्छ्वास थाय छे. अहीं आ पदसमान श्वासोच्छ्वास समजवो. चातुर्मासिक प्रतिक्रमणमां पांचसो श्वासोच्छ्वासनो एटले २० लोगस्सनो अने पाक्षिक प्रतिक्रम-

१ आवता चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर २ देवताई हजारो वर्ष एटले के घणा वर्षो सुधी

नेमती हती, तेथी तेणीए वस्त्रने छेडे बांधीने स्नान कर्यु पछी ते बादशाहना छे एम जाणी तेणीए पोताना इष्ट स्थलमा तेने साचवीने मूक्या. त्यारपछी केटलेक दिवसे दैवयोगे ते स्त्री व्याधिग्रस्त थइने मृत्यु पामी.

अन्यदा बादशाहे हजारी पासे ते मोती माग्या एटले तेणे कह्यु के–स्वामी ! मारे घेरथी लइ आवु राजाए आज्ञा आपी एटले तेणे घेर आवी सर्व ठेकाणे शोध करी पण कोइ ठेकाणेथी ते मळ्या नहीं एटले ते अत्यत चितातुर थइ बादशाह पासे जवा चाल्यो ते अति निस्तेजपणे चाल्यो जतो हतो तेवामा तेना पुण्यना उदयथी मार्गमा शातिचद्र उपाध्याय मळ्या तेओए तेने चितानु कारण पूछयु, एटले जेणे जीववानी पण आशा मूकी छे एवा तेणे जे हकीकत बनी हती ते गुरु पासे जणावी. वाचकेंद्रे कह्यु के–' तु पाछो घेर जा अने प्रथम जे ठेकाणे जेने तें आप्या हता तेनी पासेथी ते मागी ले, तने मळशे ' हजारी आश्चर्य पामी तत्काळ घेर गयो त्या स्नान करवानी तैयारी करती पोतानी स्त्रीने तेणे जोइ. एटले तेनी पासेथी तेणे बे मुक्ताफळ माग्या तेणीए पोताना वस्त्रना छेडानी गाठेथी छोडीने ते आप्यां हजारी आश्चर्य पामी बादशाहनी पासे आव्यो अने मुक्ताफळ बादशाहनी आगळ मूकी पोते चामर वींजवा लाग्यो, पण ते अत्यत आश्चर्यमा मग्न थयेलो होवाथी जड जेवो बनी गयो हतो बादशाह तेनी तेवी स्थिति जोईने पूछयु के–' आजे तु चित्रमा आलेख्यो होय तेवो केम देखाय छे ? ' बहु आग्रह करीने पूछवाथी तेणे मोतीना सबधमा बनली सर्व बात कही सभळावी ते सामळी बादशाहे कह्यु के–' तेमा शु आश्चर्य छे ? ते तो बीजा पयगंबर छे. '

बीजे दिवसे प्रात काले उपाध्यायजी बादशाहने धर्म सभळाववा माटे बादशाहे कचेरीमा ढळावेली सुवर्णनी पाट उपर आवीने बेठा. एटले बादशाहे उपाध्यायने प्रणाम करीने विज्ञप्ति करी के–' हे पूज्य ! मने पण काइक आश्चर्य बतावो ' गुरु बोल्या के–' काले सवारे गुलाबवाडीमा आवजो ' बीजे दिवसे प्रातःकाळे बादशाह त्या गयो. उपाध्यायजी पण त्या आव्या बने परस्पर धर्मगोष्ठी करवा लाग्या तेवामा अकस्मात् बादशाही नोबतनो डंको थयो ते साभळी बादशाहे सभ्रांत थईने पोताना सेवकोने पूछयु के–' मारा हुकम विना बार गाउ सुधीमा कोइनी पण नोबत वागती नथी तो आ शु थयु ? तपास करो ' सेवकोए तपास करी बादशाहने जणाव्यु के–' जहापनाह ! आपना पिता हुमायु बादशाह मोटी सेना सहित आपने मळवा आवे छे ' सेवको वात करता हता तेवामा तो हुमायु बादशाह त्या आवी पोताना पुत्र–अकबरने भेटी ऊभा रह्या अने अकबरना सर्व माणसोने मेवा तथा मीठाइ

संवत् १६३९ ना वर्षमा ज्येष्ठ मासनी कृष्ण त्रयोदशीए सूरिराज मोटा मान साथे गंधार नगरथी त्या आव्या बादशाहने मल्या एटले तेमणे आदरथी बोलाव्या पछी योग्य अवसरे सूरिए एवो धर्मोपदेश आप्यो के जेथी फतेपुरथी ते अजमेर सुधीना रस्तामा प्रत्येक कोशे कुवा सहित मीनारा करी, ते प्रत्येक मीनारे पोतानु शिकार करवानु कळाकौशल्य प्रगट करवाने माटे हरिणना सैकडो शींगडा जेणे आरोपण करेला तेवो हिंसक बादशाह पण दयाळु थइ गयो अन्यदा बादशाहे सूरिश्वरने कह्यु 'महाराज! दर्शननी उत्कंठाथी मे आपने दूर देशथी अही बोलाव्या छे, परंतु आप तो मारु काई पण लेता नथी तो मारी पासेथी ज काइ आपने योग्य लागे ते मागी ल्यो' सूरिए विचार करीने तेना बधा देशमा पर्युषण पर्वनी अट्ठाइना आठे दिवस अमारी प्रवर्त्तन अने बंदीवानने छोडी मूकवानु मागी लीधु. सूरिराजना गुणथी मनमा चमत्कार पामेला बादशाह 'मारी तरफथी तेमा चार दिवस अधिक थाओ' एम कही पोताना ताबाना सर्व देशमा श्रावण मासनी कृष्ण दशमीथी आरंभीने भाद्रपदनी शुक्ल छठ सुधी बार दिवस अमारी प्रवर्त्तावनाने सुवर्ण रत्नमय, पोताना नामनी महोरछापवाळा छ फरमान मस्तर गुरुने अर्पण कर्या तेमा एक गुजरात देशनु, बीजु माळव देशनु, त्रीजु अजमेर प्रांतनु, चोथु दील्ही तथा फतेहपुरनु, पांचमु लाहोर तथा मुलताननु अने छठु पांचे देश संबंधी साधारण गुरुनी पासे राखवानु–एम छ फरमान करी आप्या अने ते देशमा तेणे अमारी पटह वगडाव्यो पछी श्रीगुरु पासेथी ऊठी अनेक गाउना प्रमाणवाळा डाबर नामना सरोवरने किनारे जइने साधुओनी समक्ष देशांतरना लोकोए भेट करेला विविध जातिना सख्याबंध पक्षीओने छोडी मूक्या, तेम ज कारागृहमा पूरेला घणा लोकोना बंधन पण तोडावी नाख्या (छोडी मूक्या)

पछी हीरसूरिए बादशाहनी प्रार्थनाथी जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिनी टीकाना करनारा, स्वशास्त्र अने परशास्त्रना जाण अने पश्चिम दिशाओना लोकपाळ वरुणनु वरदान मळवनार उपाध्यायजी श्री शांतिचंद्रने धर्म सभळाववा माटे त्या राख्या अने पोते विहार कर्यो श्री शांतिचंद्रगणिए स्वोपज्ञ एवा कृपारसकोश नामना शास्त्र रूप जळथी सिंचन करेली दयारूप वेल बादशाहना हृदयमा वृद्धि पामी

एकदा कोइ व्यवहारीए बादशाहनी आगळ आमळाना फळ जेवडा ने मुक्ता फळ भेट धर्या तेनु सन्मान करीने राजाए पोताना कोशाध्यक्ष अने चामर वीज नार एवा थारूहजारी नामना मनसबदारने ते व मुक्ताफळ सूक्या आप्या, हजारीए । आपीने ते मुक्ताफळ पोतानी स्त्रीने आप्या ते नगते ते स्त्री स्नान करवा

बेमती हती, तेथी तेणीए वस्त्रने छेडे बांधीने स्नान कर्युं पछी ते बादशाहना छे एम जाणी तेणीए पोताना इष्ट स्थलमां तेने साचवीने मूक्या. त्यारपछी केटलेक दिवसे दैवयोगे ते स्त्री व्याधिग्रस्त थइने मृत्यु पामी.

अन्यदा बादशाहे हजारी पासे ते मोती माग्या एटले तेणे कह्यु के-स्वामी ! मारे घेरथी लइ आवु. राजाए आज्ञा आपी एटले तेणे घेर जाने सर्व ठेकाणे शोध करी पण कोइ ठेकाणेथी ते मळ्या नहीं. एटले ते अत्यत चिंतातुर थइ बादशाह पासे जवा चाल्यो ते अति निस्तेजपणे चाल्यो जतो हतो तेवामा तेना पुण्यना उदयथी मार्गमा शातिचद्र उपाध्याय मळ्या. तेओए तेने चिंतानु कारण पूछ्यु, एटले जेणे जीववानी पण आशा मूकी छे एवा तेणे जे हकीकत बनी हती ते गुरु पासे जणावी. वाचकेंद्रे कह्यु के-' तु पाछो घेर जा अने प्रथम जे ठेकाणे जेने तें आप्या हता तेनी पासेथी ते मागी ले, तने मळशे ' हजारी आश्चर्य पामी तत्काळ घेर गयो. त्या स्नान करवानी तैयारी करती पोतानी स्त्रीने तेणे जोइ. एटले तेनी पासेथी तेणे बे मुक्ताफळ माग्या तेणीए पोताना वस्त्रना छेडानी गाठेथी छोडीने ते आप्या. हजारी आश्चर्य पामी बादशाहनी पासे आव्यो अने मुक्ताफळ बादशाहनी आगळ मूकी पोते चामर वींजवा लाग्यो, पण ते अत्यत आश्चर्यमा मग्न थयेलो होवाथी जड जेवो बनी गयो हतो बादशाहे तेनी तेवी स्थिति जोईने पूछ्यु के-' आजे तु चित्रमा आलेख्यो होय तेवो केम देखाय छे ? ' बहु आग्रह करीने पूछवाथी तेणे मोतीना सबधमा बनेली सर्व वात कही सभळावी ते साभळी बादशाहे कह्यु के-' तेमा शु आश्चर्य छे ? ते तो बीजा परवरदिगार छे. '

बीजे दिवसे प्रात काले उपाध्यायजी बादशाहने धर्म सभळाववा माटे बादशाहे कचेरीमा ढळावेली सुवर्णनी पाट उपर आवीने बेठा. एटले बादशाहे उपाध्यायने प्रणाम करीने विज्ञप्ति करी के-' हे पूज्य ! मने पण काइक आश्चर्य बतावो ' गुरु बोल्या के-' काले सवारे गुलाबवाडीमा आवजो ' बीजे दिवसे प्रातःकाळे बादशाह त्या गयो. उपाध्यायजी पण त्या आव्या बने परस्पर धर्मगोष्ठी करवा लाग्या तेवामा अकस्मात् बादशाही नोबतनो डको थयो ते साभळी बादशाहे सभ्रान्त थईने पोताना सेवकोने पूछ्यु के-' मारा हुकम विना बार गाउ सुधीमा कोइनी पण नोबत वागती नथी तो आ शु थयु ? तपास करो. ' सेवकोए तपास करी बादशाहने जणाव्यु के-' जहापनाह ! आपना पिता हुमायु बादशाह मोटी सेना सहित आपने मळवा आवे छे ' सेवको वात कहेता हता तेवामा तो हुमायु बादशाह त्या आवी पोताना पुत्र-अकबरने भेटी ऊभा रह्या अने अकबरना सर्व माणसोने मेवा तथा मीठाइ

भरेला रूपाना थाळ आप्या. पछी अकबरने पण शिरपाव साथे मोटुं सन्मान आपी हुमायु जेम आव्या हता तेम चाल्या गया अने क्षणवारमां तो अदृश्य थइ गया. अकबर आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्यो के-' आ इन्द्रजाळ तो जणाती नथी, कारण के अमने आपेली आ सर्व वस्तु प्रत्यक्ष देखाय छे, माटे जरूर आ सर्व चेष्टित गुरुए करेलुं जणाय छे.' एम विचारी गुरुने नमस्कार करीने स्तुति करी.

एक वखते अकबर बादशाहे अटकदेशना राजाने जीतवा जतां एक दिवसे बत्रीश कोशनी मजल करी. पछी पोताना खास माणसो जे साथे आवेला तेमनी नाम साथे हाजरी लेवा मांडी. तेमां शांतिचंद्र उपाध्यायनुं नाम पण आव्युं ते सांभळी बादशाहे विचार्युं के-अहो! वाहन अने उपानहादि विना आ उपाध्यायजी बहु कष्ट पाम्या हशे आवुं विचारी तेमने तेडवाने माणसो मोकल्या. माणसोए आवी गुरुने कह्युं के-आपने बादशाह बोलावे छे. ते वखते राजसेवकोए उपाध्यायजीने एवी स्थितिमां जोया के-' तेमना पग सुजी गया हता तेथी आगळ एक पगलुं पण चालवाने अशक्त हता. उलखामां रहेला प्रासुक जळथी वस्त्रनो छेडो भींजो करी छाती उपर मूक्यो हतो अने बे शिष्यो तेमनी वैयावच्च करता हता.' सेवकोए बादशाह पासे जईने गुरुनी एवी स्थिति जणावी. ते सांभळी बादशाहे गुरुने तेडवाने सुखपाल मोकल्युं. त्यारे गुरु एक काष्ठनी पाटली मंगावी तेनी उपर बेठा अने पाटलीना बे छेडा बे शिष्योनी कांध उपर मूकावीने चाल्या. तेवी अवस्थाए आवता उपाध्यायजीने जोई बादशाह विचारमां पड्यो के-' अहो! आ गुरुना मननुं धन्य छे के जेओ तेमनी सोजा होवाथी महा कष्ट वेठीने मने अनुसरे छे. नहि तो तेओने मारी पासेथी कांइ प्राप्ति के अभिलाषा नथी. अहो! आवा महा समर्थनी आ अद्भुत क्षमा छे.' पछी बादशाह अकबरे पोतानी जाते सन्मुख जई गुरुना चरणने चक्षुथी स्पर्श कर्यो अने हाथ जोडीने कह्युं के-' हे स्वामी! आजथी आप मारी साथे मोटी मजल करवी नहीं, पछवाडे हळवे हळवे आववुं.'

त्याथी आगळ चाली अनुक्रमे बादशाह अटक देशना राजाना नगर उपर घेरो घाल्यो. त्यां चार वर्ष सुधी लश्करनो पडाव राख्यो, तो पण तेनो किल्लो अकबरने ताबे थयो नहीं. एक वखते मुसलमानो, काझीओ, मुल्लाओए मळी बादशाहने कह्युं के-" हे अकबर बादशाह! तुं हमेशा काफर एवा श्वेतांबरीनो संग करे छे तेथी आ किल्लो लेवातो नथी एम जणाय छे." बादशाहे आ वृत्तांत गुरुने जणाव्यो. गुरु बोल्या-" जे दिवसे किल्लो लेवानी तमारी इच्छा थाय ते दिवस किल्लो लइए. पण तमारे बहु सैन्य छावणीमां राखवुं अने आपणे बनेए ज त्यां जवुं.

तेम ज ते दिवसे नगरनी बहार के अंदर कोइए बीलकुल हिंसा करवी नहीं." गुरुना आवा वचन सांभळी बादशाहे पटहनी घोषणाथी सर्व स्थाने हिंसा करवानो प्रतिषेध कर्यो अने प्रातःकाळे तेओ बने एकला किल्ला पासे जवा चाल्या ते जोई केटलाएक निंदक म्लेच्छो कहेवा लाग्या के–' आ काफर हिंदु अकबरने शत्रुना हाथमा सोंपी देशे.'

अहिं वाचकेंद्र गुरुए किल्ला पासे आवी एक फुक मारवावडे बधी खाई रजथी पूरी दीधी, बीजी फुके शत्रुना सैन्यने स्तंभित करी दीधु अने त्रीजी फुके धार्णानी जेम दरवाजा फुटीने उघडी गया. अकबर बादशाहे आश्चर्य पामीने ते नगरमा पोतानी अखंड आज्ञा प्रवर्त्तावी पछी गुरु पासे आवीने कह्यु के–' हे पूज्य! मने काइक पण कार्य बताववानो अनुग्रह करो.' ते वखते सूरिए बादशाहना राजभंडारमा प्रतिवर्ष जजीआवेराना करतु चौद कोटी द्रव्य आवतु हतु ते माफ करवानी मागणी करी अने कह्यु के–" तमे हमेशा सवाशेर चकलानी जीभ खाओ छो, ते हवेथी खावी बंध करो अने शत्रुजयगिरि पर जनारा मनुष्य दीठ एक सोनैयानो कर लेवाय छे ते माफ करो, तेम ज छ मास सुधी अमारी प्रवर्त्तावो ते छ मास आ प्रमाणे–आपनो जन्म मास, पर्युषण पर्वना बार दिवस, बधा रविवार, १२ संक्रातिओनी १२ तिथिओ, नवरोजनो (रोजा) महिनो, ईदना दिवसो, मोहरमना दिवसो अने सोफिआनना दिवसो." बादशाहे ए चारे वात कबूल करी अने तेना फरमानो महोरछाप साथे तरत करावीने वाचकेंद्रने अर्पण कर्यां. वाचकेंद्रे गुरुमहाराज श्री हीरविजयसूरिने तेनु भेटणु कर्यु

" एवी रीते सौभाग्यलक्ष्मी विगेरेना सुखनी इच्छावाळा भाविक पुरुषोए अट्ठाइ पर्वोमा धर्मनी वृद्धिने माटे विविध प्रकारे शासननी उन्नति करवी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १४७ ॥

व्याख्यान १४८ मुं

अट्ठाइ पर्वना आराधकोए वार्षिक कृत्यो पण अवश्य करवा ते कहे छे.

सघार्चादिसुकृत्यानि, प्रतिवर्षं विवेकिना ।
यथाविधि विधेयानि, एकादशमितानि च ॥ १ ॥

भावार्थ —

" विवेकी श्रावक प्रत्येक वर्षे सघपूजा विगेरे अगीआर प्रकारना सुकृत्य विधियुक्त जरूर करवा. "

विस्तारार्थ —

ते अगीआर कृत्य पूर्वसूरिओए करेली गाथाओ अनुसार दर्शावीए छीए " १ सघपूजा, २ साधर्मि भक्ति, ३ यात्रात्रिक, ४ जिनमदिरमां स्नात्रोत्सव, ५ देवद्रव्यनी वृद्धि, ६ महापूजा, ७ रात्रिजागरण, ८ सिद्धांतपूजा, ९ उद्यापन (उजमणु), १० तीर्थप्रभावना अने ११ शोधि (पापनी विशुद्धि) आ अगिआर वार्षिक कृत्य छे "

१ प्रतिवर्ष जघन्यपणे एक वार पण सघपूजा करवी सघपूजा एटले साधु-साध्वीने निर्दोष आहार तथा पुस्तकादिनु दान आपवु अने श्रावक-श्राविकाने यथाशक्ति भक्तिपूर्वक पहेरामणी विगेरे करवु सघपूजा उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य एम त्रण प्रकारनी छे सर्व दर्शन तथा सर्व सघने पहेरामणी करवी ते उत्कृष्ट सघ-पूजा, सूतरनी नोकारवाळीओ आपवी ते जघन्य सघपूजा अने बाकीनी सर्व प्रकारनी मध्यम सघपूजा जाणवी जो अधिक खर्च करवाने अशक्त होय तो छेवटे तेणे साधु साध्वीने सूतरनी आटी, मुहपत्ति विगेरे अने बे त्रण श्रावक श्राविकाने सोपारी प्रमुख आपीने पण प्रतिवर्ष सघपूजारूप कृत्य भक्तिवडे सफळ करवु अति निर्धन होय तेने पुणियाश्रावकनी जेम तेवी रीते भक्ति करवाथी पण सघपूजानु मोटु फळ प्राप्त थाय छे ते विषे कह्यु छे के-

सपत्तौ नियम शक्तौ, सहन यौवने व्रत ।
दारिद्र्ये दानमप्यल्प, महालाभाय जायते ॥ १ ॥

" सपत्तिमा नियम, शक्ति छता सहनशीलता, यौवनावस्थामा व्रत अने दारिद्रा-वस्थामा अल्प पण दान—ए [illegible] "

२ प्रतिवर्ष साधर्मीओने निमंत्रण करी, विशिष्ट आसने बेसारी वस्त्रादिकनु दान करवु अने जो कोइ सहधर्मी आपत्तिमा आवी पड्यो होय तो तेनो पोतानु धन खर्चीने उद्धार करवो कह्यु छे के,

न कयं दीणुद्धरण, न कय साहम्मिआण वच्छल ।
हिअयम्मि वियराओ, न धारिओ हारिओ जम्मो ॥

" जे प्राणीए दीनजनोनो उद्धार कर्यो नहीं, साधर्मिनु वात्सल्य कर्युं नहीं अने हृदयमा श्रीवीतरागप्रभुने धार्या नहीं, ते पोतानो जन्म हारी गयो छे एम समजवु "

श्रावकना जेवी श्राविकानी पण भक्ति करवी, न्यूनाधिक करवी नहीं. श्राविका पण ज्ञान, दर्शन, चारित्रवाळी सुशीला होय तो ते सधवा होय के विधवा होय तेने साधर्मी तरीके मानवी

अहीं शिष्य प्रश्न करे छे के–" हे गुरुमहाराज ! लौकिकमा ने लोकोत्तरमा स्त्रीओने तो दोषवाळी कहेली छे कह्यु छे के–

अनृत साहस माया, मूर्खत्वमतिलोभता ।
अशौचं निर्दयत्व च, स्त्रीणा दोषा· स्वभावजाः ॥ १ ॥

" असत्य, साहस, कपट, मूर्खता, अतिलोभ, अपवित्रपणु अने निर्दयपणु— एटला तो स्त्रीओमा स्वाभाविक दोष होय छे. " ए विषे सुकुमालिका, सुरीकाता, कपिला, अभया, नुपूरपडिता अने नागश्री प्रमुखना दृष्टातो पोतानी मेळे जाणी लेवा. सिद्धातमा कह्यु छे के,

अणताओ पावरासीओ, जया उदयमागया ।
तया इथ्थित्तण पत्त, सम्म जाणाहि गोयमा ! ॥ १ ॥

" हे गौतम ! ज्यारे अनंती पापनी राशीओ उदयमा आवे त्यारे स्त्रीपणु प्राप्त थाय छे, ते सम्यक् प्रकारे जाणवु " ते विषे ब्रह्मसाध्वीनो सबध जाणवो आ प्रमाणे सर्वत्र स्त्रीओनी निंदा दृष्टिए पडे छे, तो तेवी स्त्रीओनु दान, मान अने वात्सल्य करवु केम घटे ? "

गुरुमहाराज तेनो उत्तर आपे छे के–" हे शिष्य ! तारे एकात एम जाणवु नहीं के स्त्रीओ ज दोषनी भरेली छे, केटलाएक पुरुषो पण तेवा होय छे अम्बाइ राठोड जेवा महाक्रूर आशयवाळा, नास्तिक अने देवगुरुने पण ठगनारा घणा पुरुषो जोवामा आवे छे तेवी रीते केटलीएक स्त्रीओमा पण घणा दोष जोवामा आवे छे, तथापि केटलीएक स्त्रीओमा घणा गुण पण होय छे जेवी के सुलसा,

रेवती, कलावती अने मदनरेखा विगेरे कटलीक श्राविकाओ एवी उत्तम हती के जेमनी श्री तीर्थंकरोए पण प्रशंसा करली छे, तेथा तेवी श्राविकाओनु मातानी जेम, बहननी जेम अने पोतानी पुत्रीनी जेम वात्सल्य करवु ते युक्त छे. वधारे कहेवाथी सर्यु. आटलु बस छे "

३ प्रत्येक वर्ष जघन्यथी एकेक पण यात्रा करवी. यात्रा त्रण प्रकारनी कही छे

अष्टाह्निकाभिधामेका, रथयात्रामथापरा ।
तृतीया तीर्थयात्रा चे–त्याहुर्यात्रास्त्रिधा बुधा ॥ १ ॥

" एक अट्ठाइउत्सव यात्रा, बीजी रथयात्रा अने त्रीजी तीर्थयात्रा एम त्रण प्रकारनी यात्रा पंडितजनो कहे छे " सर्व अट्ठाइ पर्वोमा सर्व चैत्यपूजा विगेरे महान् उत्सव करवो ते प्रथम यात्रा बीजी रथयात्रा ते कुमारपाळ राजाए आ प्रमाणे करेली हती

" चैत्र मासनी शुक्ल अष्टमीए चोथ पहोरे महा संपत्तियुक्त तेमज हर्ष सहित मळेला लोकोए करला जय जय शब्द साथे श्री जिनेश्वरनो सुवर्णरथ तैयार करवामा आव्यो ते रथ चालतो त्यारे मेरुपर्वत जेवो शोभतो हतो ते रथनी उपर सुवर्णना मोटा दंडवाळी ध्वजा हती अंदर छत्र हतु अने बाजुमा रहली चामरनी श्रेणीओथी ते दीपतो हतो तेवा रथमा स्नान विलेपन करी पुष्प चडावीने श्रीपार्श्वनाथ प्रभुनी प्रतिमा स्थापन करी पछी ते रथ समस्त महाजने कुमारपाळ राजाना राजद्वार पासे मोटी ऋद्धि सहित लावीने स्थापित कर्यो

ते रथने वाजित्रोना शब्दो दश दिशाओने पूरी रह्या हता अने मनोहर तान मानवी स्त्रीओनो समूह नृत्य करतो हतो पछी ते रथने वाजतेगाजते सामंत तथा प्रधानो राजमंदिरमा लइ गया त्या कुमारपाळे रथमा रहली प्रतिमानी पट्टवस्त्र तथा सुवर्णना अलंकारादिकवडे पोतानी जाते पूजा करी अने विविध प्रकारना नृत्य कराव्या पछी ते रात्रि त्या निर्गमन करी, प्रभाते राजा रथ सहित नगरनी बहार नीकळ्या त्या ध्वज सहित वस्त्रनो मनोहर तंबु रचेलो हतो तेना मंडपमा रथ राख्यो त्या राजाए रथमा रहली जिनप्रतिमानी पूजा रची अने चतुर्विध संघनी समक्ष पोते ज आरती उतारी पछी हाथी जोडला ते रथने आखा नगरमा फेरवी ठामे ठामे मंडपमा विस्तारवाळी रचना करावी ते उत्सवने दीपाव्यो " आ प्रमाणे रथयात्रा जाणवी.

हवे त्रीजी तीर्थयात्रा ते तीर्थोनी यात्रा करवी श्री शत्रुंजय, रैवताचल अने समेतशिखर विगेरे तीर्थो छे तेम ज श्री तीर्थंकरनी जन्म, दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण अने विहारनी भूमिओ पण तीर्थ गणाय छे घणा भव्य प्राणीओने शुभ

भावना संपादक थईने भवसागरथी तारे छे, तेथी ते तीर्थ कहेवाय छे तेवा तीर्थोमा दर्शनादिनी शुद्धिने माटे विधिपूर्वक यात्रा करवी जेम श्री सिद्धसेनदिवाकरवडे प्रतिबोध पमाडायेला विक्रमादित्ये श्री शत्रुंजयनी यात्रार्थे संघ काढ्यो हतो ते संघमा एक सो ने ओगणोतेर सुवर्णना अने पांचसो चंदन तथा हाथीदांत विगेरेना देवालयो हता श्री सिद्धसेन विगेरे पांच हजार आचार्यो हता, तेम ज चौद मुगटबंध राजाओ, सीत्तेर लाख श्रावकोना कुटुंब, एक कोटी, दश लाख अने नव हजार गाडाओ, अढार लाख घोडाओ, छोंतेरसो हाथीओ अने तेना प्रमाणमा ऊंट अने बळदो विगेरे पण हता

कुमारपाळ राजाना संघमा सुवर्ण रत्नमय अढारसो ने चुमोतेर देवालयो हता आभू संघपतिना संघमा सातसो जिनमंदिर हता अने तेनी यात्रामा बार करोड सोनैयानो खर्च थयो हतो साहुकार पेथडने तीर्थनु दर्शन थता अगियार लाख रूपीआनो खर्च थयो हतो. तेना संघमा बावन देवालय अने सात लाख मनुष्यो हता. मंत्री वस्तुपाळनी साडाबार यात्रा प्रसिद्ध छे

४ चैत्यमा पर्व दिवसे स्नात्रमहोत्सव पण विस्तारथी करवो जोईए जो प्रत्येक पर्व दिवसे तेवो महोत्सव करवाने अशक्त होय तो तेणे प्रत्येक वर्षे तो एक एक महोत्सव जरूर करवो एम समजाय छे के शाह पेथड श्रावके श्रीरवतगिरि (गिरनार) उपर स्नात्रमहोत्सवमा छप्पन घडी प्रमाण सुवर्णवडे इंद्रमाळा पहेरी हती अने शत्रुंजयथी गिरनार पर्यंत एक सुवर्णनो ध्वज चडाव्यो हतो ने पछी तेना पुत्र शाह झाझणे रेशमी वस्त्रनो तेवडो ध्वज चडाव्यो हतो

५ देवद्रव्यनी वृद्धि माटे प्रतिवर्षे माळा पहेरवी योग्य छे, तेमा इंद्रमाळा अथवा बीजी माळा पण ग्रहण करवी एक वखते रैवतगिरि उपर श्वेतांबरी अने दिगंबरी संघ वच्चे विवाद थता वृद्ध पुरुषोए एवो ठराव कर्यो के 'जे इंद्रमाळा पहेरे तेनु आ तीर्थ ' ते समये साहुकार पेथडे छप्पन घडी सुवर्णवडे इंद्रमाळा पहेरी अने चार घडी सुवर्ण याचकोने आपी तीर्थने पोतानु कर्यु. एवी रीते शुभ विधिवडे दरवर्ष देवद्रव्यनी वृद्धि करवी

६ प्रत्येक वर्षे या प्रतिपर्व चैत्यमा महापूजा करवी

७ प्रतिवर्ष रात्रिजागरण करवु. ते तीर्थदर्शन समये, कल्याणकना दिवसोए अने गुरुना निर्वाणादि प्रसंगे करवु. तेमा श्री वीतरागना गुणगान अने नृत्य विगेरे उत्सवो करवा

८ प्रतिदिवसे श्रुतज्ञाननी भक्ति करवी जो प्रतिदिवस करवा अशक्ति होय तो प्रतिमासे के प्रतिवर्ष करवी.

९ नवपद संबंधी एटले सिद्धचक्र संबंधी तथा एकादशी, पंचमी अने रोहिणी विगेरे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिना आराधनभूत विविध तप संबंधी उद्यापन (उजमणा) करवा. जघन्यथी दरवर्षे एक एक उद्यापन विधि प्रमाणे करवुं. कह्युं छे के—

उद्यापनं यत्तपसः समर्थने, तच्चैत्यमौलौ कलशाधिरोपणं ।
फलोपरोपोऽक्षयपात्रमस्तके, तांबूलदानं कृतभोजनोपरि ॥ १ ॥

"तपस्यानुं जे उद्यापन करवुं ते जिनमंदिर उपर कळश चडाववो, अक्षयपात्र उपर फळ आरोपवुं अने भोजन करावीने तांबूल आपवा जेवुं छे."

सर्वत्र शुक्ल पंचमी विगेरे विधि तपना उजमणामां उपवासनी संख्याना प्रमाणमां नाणुं (द्रव्य), वर्तुलिका, नाळीएर अने मोदक विगेरे विविध वस्तु मूकी शास्त्रसंप्रदाय प्रमाणे उद्यापन करवा.

१० तीर्थनी प्रभावना निमित्ते श्री गुरुमहाराजनो प्रवेशोत्सव तथा प्रभावना विगेरे जघन्यपणे पण प्रतिवर्षे एक एक वार करवा. तेमां श्रीगुरुना प्रवेशोत्सवमां सर्व प्रकारना मोटा आडंबर साथे चतुर्विध संघे सन्मुख जवुं अने श्रीगुरुनो तथा संघनो सत्कार यथाशक्ति करवो. ते प्रसंगे श्री ऊववाइ सूत्रमां श्री वीरप्रभुने वांदवा जतां कोणिक राजाए करेलो महोत्सव जेवो वर्णव्यो छे तेवो महोत्सव करवो, अथवा परदेशी राजा, उदायी राजा अने दशार्णभद्र राजानी जेवो महोत्सव करवो. साहुकार पेथडे श्री धर्मघोषसूरिना प्रवेशोत्सवमां सत्यावीश हजार टंकद्रव्यनो खर्च कर्यो हतो. आ संबंधमां संवेगी साधुना प्रवेशोत्सव करवो अनुचित छे एम न कहेवुं, कारण के व्यवहारभाष्यमां साधुना प्रतिमा वहनना अधिकारमां कह्युं छे के-"साधु संपूर्ण पडिमा वही रह्या पछी एकाएक नगरमां प्रवेश न करे, पण नजीकमां आवीने कोई साधु के श्रावकने पोताना दर्शन आपे या संदेशो पहोंचाडे, जेथी नगरनो राजा, मंत्री के ग्रामाधिकारी महोत्सवपूर्वक प्रवेश करावे, तेने अभावे श्रावकनो संघ प्रवेशोत्सवादि बहुमान करे." कारण के शासननी उन्नति करवाथी तीर्थंकरपणानी प्राप्तिरूप फळ थाय छे.

११ गुरुनो योग होय तो जघन्यपणे प्रतिवर्ष तो जरूर गुरु पासे आलोचना करवी. कह्युं छे के "जंबूद्वीपमां जेटला वेलुओना रजकण छे ते बधा रत्न थई जाय अने तेटला रत्न कोई प्राणी सात क्षेत्रमां आपे तो पण आलोयणा कर्या विना एक दिवसना पापथी पण छूटातुं नथी." वळी कह्युं छे के "जंबूद्वीपमां जेटला पर्वतो छे ते बधा सुवर्णना थई जाय अने तेने कोई सात क्षेत्रमां आपे तो पण आलोयणा कर्या

विना एक दिवसना पापथी पण छूटातु नथी." त्यारे आलोयणा विना घणा दिवसोना उपार्जित पापनी हानि तो केवी रीते थाय ? तेथी विधिपूर्वक आलोचना करीने गुरु जे प्रायश्चित्त आपे ते प्रमाणे जो करे तो ते ज भवे पण प्राणी शुद्ध थाय छे. जो एम न होय तो दृढप्रहारी प्रमुखनी ते ज भवे सिद्धि केम थाय ?

" विवेकी श्रावको प्रतिवर्ष उपर कहेली अगियार करणी करे छे, अने ते वडे थयेली पुण्यनी पुष्टिथी तेओ कृतार्थ थईने जिनधर्ममा तत्परपणे आत्मकल्याणने प्राप्त करे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१४८॥

व्याख्यान १४९ मुं

पर्वदिवसे पौषध मूकवो नहि

ये पौषधोपवासेन, तिष्ठंति पर्ववासरे ।
अंतिम इव राजर्षिर्धन्यास्ते गृहिणोऽपि हि ॥ १ ॥

भावार्थ.—

" जे पर्वदिवसे पोसहपूर्वक उपवास करीने रहे छे ते गृहस्थ छता पण छेल्ला राजर्षिनी जेम धन्य छे. "

छेल्ला राजर्षिनी कथा

सिंधुसौवीर देशमा वीतभयादि ३६३ नगरनो अधिपति उदायी नामे राजा छे. तेने प्रभावती नामे पटराणी छे अने अभिचि नामे पुत्र अने केशी नामे भाणेज छे.

चंपानगरीमा जन्मथी स्त्रीलंपट एवो कुमारनंदी नामे एक सोनी रहेतो हतो, ते जे कोई स्वरूपवती कन्या माभळे तेने पांचसो सोनामहोर आपीने परणतो हतो. एवी रीते तेने पांचसो स्त्रीओ थई हती ते स्त्रीओनी साथे ते एक स्तंभवाळा महेलमा क्रीडा करतो हतो. ते सोनीने नागिल नामे एक श्रावक मित्र हतो

एकदा पंचशैल द्वीपनी अधिष्ठात्री व्यंतर स्त्री तो इंद्रनी आज्ञाथी नंदीश्वर द्वीपे जती हती. त्या मार्गमा तेमनो स्वामी विद्युन्माली देव च्यवी गयो एटले हासा अने प्रहासा नामनी बे देवीओ ऊचा महल उपर रहेला कुमारनंदी सोनीने अत्यंत कामी जोई त्या उतरी. ते सुंदर देवीओने जोई कुमारनंदी अत्यंत मोह पाम्यो. तेमने आलिंगन करवानी इच्छाथी ते बोल्यो के ' तमे बन्ने कोण छो ? अने अहीं शा माटे आव्या छो ? ' तेओ बोली-' अमे तमारे माटे ज आवेली छीए.' आवो उत्तर सांभळी हर्षित थईने सोनीए प्रार्थना करी, एटले तेओ बोली के ' तमे पंचशैल द्वीप आवजो, त्यां आपणो संयोग थशे.' एम कही तेओ ऊडीने आकाशमार्गे चाली गई.

कुमारनंदीए राजाने सुवर्ण आपीने एवो पटह वगडाव्यो के " जे मने पंचशैल द्वीप लई जशे तेने एक कोटी द्रव्य मळशे." एवो पटह सांभळी कोई वृद्ध खलासीए पटह झाल्यो अने कोटी द्रव्य लीधु. पछी तेणे वहाण तैयार कर्यु एटले सोनी तेनी साथे वहाणमा बेसीने चाल्यो. वृद्ध खलासीए समुद्रमा घणे दूर गया पछी कह्यु के- " जुओ, समुद्रने कांठे आ वड जणाय छे ते पंचशैल पर्वतमा उगेलो छे, तेथी ज्यारे आ वहाण तेनी नीचे थईने चाले ते वखते तु तेनी शाखाने वळगी रहेजे. रात्रे त्या भारंड पक्षीओ आवशे. तेओ ज्यारे सुई रहे त्यारे तेमाथी कोईना पग साथे वस्त्रवडे तारु शरीर बांधी दृढ मुष्टिथी तेने वळगी रहेजे, एटले प्रातःकाळे ते पक्षी उडीने तने पंचशैल उपर लई जशे, पण जो तु वडनी साथे वळगीश नहि तो आ वहाणनी जेम तु पण महा आवर्त्तमा पडी विनाश पामीश." सोनीए तेना कह्या प्रमाणे कर्यु अने भारंडपक्षी तेने पंचशैल उपर लई गयु. अनुक्रमे ते हासा अने प्रहासाना जोवामा आव्या एटले सोनीए भोग माटे प्रार्थना करी. देवीओ बोली के ' भद्र ! आ शरीरथी अमारो संग थाय नहि, तेथी तु अग्निमा प्रवेश करीने अथवा बीजी रीते नियाणु बांधीने मरण पामे अने आ पंचशैल द्वीपनो स्वामी थाय तो अमे तारो संग करीए.' कुमारनंदी विचारमा पड्यो के ' अरे ! हु तो उभयभ्रष्ट थयो.' आम चिंता करता एवा ते सोनीने देवीओए तेना नगरमा मूकी दीधो. देवांगनाना संगथी मोह पामेला कुमारनंदीए त्या पहोंच्या पछी तरत ज अग्निमा पडीने मरण पामवानी तैयारी करी. ते वखते तेना मित्र नागिल श्रावके कह्यु-' मित्र ! आम बाळमरण करवु तने योग्य नथी.' ए प्रमाणे वारता छता पण ते नियाणु बांधीने अग्निशरण थयो अने पंचशैल द्वीपनो स्वामी बन्यो. ते जोईने वैराग्य पामवाथी नागिल श्रावके दीक्षा लई, मृत्यु पामीने अच्युत देवलोकमा देवता थयो.

अन्यदा नंदीश्वर द्वीपनी यात्रा माटे देवताओ जता हता. तेमनी आगळ गायन

करवानी आज्ञा थता हामा ग्रहामा चाली तेमणे पोताना स्वामीने कह्यु के ' तमे ढोल वगाडो. ' तेणे अभिमानथी वगाड्यो नहि, एटले पूर्वना दुष्कर्मथी ढोल तेना कठमा आवीने वळग्यो त्यारे देवीओ बोली-' प्राणेश ! शरमाओ नहि, आपणा कुळने उचित काम करो. ' पछी विद्युन्माळी देवे ढोल वगाडवा माड्यो अने देवीओ गायन करवा लागी ए प्रमाणे देवताओनी आगळ चाल्या. ते समये ते विद्युन्माळीनो पूर्व भवनो मित्र नागिल देवता पण यात्रार्थे जतो हतो. तेणे अवधिज्ञानथी पोताना पूर्व भवना मित्र विद्युन्माळीने जोईने ओळख्यो, एटले तेणे तेने बोलाव्यो के ' भद्र ! तु मने ओळखे छे ? ' ते बोल्यो-' ह तेजस्वी देव ! हु तमने ओळखतो नथी के तमे कोण छो ? ' पछी तेणे पोतानु पूर्वभवनु श्रावकनु रूप बतावीने पोतानु तथा तेना पूर्वभवनु स्वरूप अने जे धर्मथी पोताने देवपणु प्राप्त थयु ते सर्व वृत्तात जणाव्यु. ते साभळी कुमारनदी बोल्यो-' हे मित्र ! हवे हु शु करु ? ' अच्युत देवे कह्यु-' मित्र ! गृहस्थपणे चित्रशाळामा कायोत्सर्गे रहेला भावसाधु श्री वीर भगवतनी प्रतिमा तु कराव, तेथी तने बोधिबीज उत्पन्न थशे ' तेनु कहेवु अगीकार करी तेणे गृहमा कायोत्सर्ग करीने रहेला श्री वीरप्रभुने जोया पछी हिमवतगिरिए जई गोशीर्ष चदन लावी, ते वडे जेवी जोई हती तेवी वीरप्रभुनी काष्ठमय मूर्ति अलकार सहित तेणे करावी पछी जातवत चदननी एक पेटी करावी, कपिल केवली पासे प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावीने ते पेटीमा मूकी ते समये कोई मुसाफरनु वहाण समुद्रमा उत्पात योगे छ मासथी भम्या करतु हतु कुमारनदी देवे ते जोई तेनी पीडा दूर करीने प्रतिमानी पेटी तेने आपी कह्यु के-' अहींथी वीतभय पाटण जई, आ पेटी बतावीने एवी आघोषणा करजे के " आमा परमात्मानी प्रतिमा छे तेने ग्रहण करो. " देव आ प्रमाणे कहीने गया पछी ते प्रतिमाना प्रभावथी पेलो शेठ वीतभय पाटणे निर्विघ्ने पहोंच्यो. त्या जईने तेणे देवना कह्या प्रमाणे उद्घोषणा करी, एटले नगरनो राजा, ब्राह्मणो, तापसो विगेरे अनेक एकठा थया. तेओए पोतपोताना इष्टदेवनु स्मरण करीने ते पेटी उघाडवा माडी पण उघडी नहि, तेम करतां मध्याह्न काळ थयो, एटले राणीए भोजन माटे राजाने बोलाववा दासीने मोकली. राजाए बधो वृत्तात कहेवराव्यो, एटले राणी प्रभावती त्या आवी तेणीए विचार्यु के आमा परमात्मा जे देवाधिदेव तेनी प्रतिमा छे, एम कहेवामा आवे छे तो देवाधिदेव तो अरिहत छे, बीजा ब्रह्मादिक देवता नथी, तेथी अरिहतना स्मरणथी पेटी उघडवी जोईए. आम विचारी ते सपुटनी चदनादिकथी पूजा करीने ते आ प्रमाणे बोली—

प्रातिहार्याष्टकोपेतः, प्रास्तरागादिदूषणः ।
देयान्मे दर्शनं देवाधिदेवोऽर्हन् त्रिकालवित् ॥ १ ॥

भावार्थ.—

" अष्ट प्रातिहार्यवडे युक्त, रागादि दूषणने अत्यंतपणे दूर करनार अने त्रिकालज्ञ एवा देवाधिदेव श्री अरिहंत भगवान् मने दर्शन आपो "

एटलु कहेता ज ते संपुट उघडी गयु अने जिनप्रतिमा स्वतः प्रगट थई पछी प्रभावती प्रतिमाने पोताना चैत्यगृहमा स्थापीने तेनी त्रिकाल पूजा करवा लागी

एक वखते द्रव्यपूजा कर्या पछी राणी प्रसन्नचित्ते भगवननी आगळ नृत्य करती हती अने राजा वीणा वगाडतो हतो ते वखते राजाए मस्तक वगरनु राणीनु धड नाचतु जोयु ते अनिष्ट जोई राजा क्षोभ पामता तेना हाथमाथी वीणा पडी गई. ते समये राणी क्रोध करीने बोली–' प्राणेश ! आ शु थयु ? ' राजाए तेना आग्रहथी यथार्थ वात कही बतावी, एटले ते बोली के ' आ अनिष्ट दर्शनथी मारु आयुष्य अल्प जणाय छे ' वळी एक वखते राणीए देवपूजाने योग्य श्वेत वस्त्र दासी पासे मगाव्या. भावी विघ्नने लीधे राणीए ते वस्त्र राता दीठा ते पूजाने अयोग्य जाणी क्रोधथी राणीए दर्पणवडे दासी उपर प्रहार कर्यो दासी मरण पामी. पछी ते ज वस्त्रने श्वेत जोई राणीए चिंतव्यु के ' मने धिक्कार छे, मारु प्रथम व्रत खंडित थयु आ पापनो क्षय करवा माटे हु दीक्षा लउ पूजाना वस्त्रनो वर्ण विपर्यय जोवाथी जरूर हवे मारु आयुष्य अल्प ज छे ' पछी स्वामीनी आज्ञा लई ते व्रत लेवामा उत्सुक थई ते समये राजाए कह्यु–' हवे तमे देवपणु पामो तो मने आवीने बोध करजो ' प्रभावती राणी चारित्र लई सारी रीते पाळी छेवटे अनशन करीने सौधर्म देवलोके देवता थई अहीं राणीए दीक्षा लीधा पछी देवदत्ता नामे कुब्जा दासी पेली मूर्तिनी पूजा दररोज करवा लागी

हवे देव थयेल प्रभावती तापसनु रूप धारण करी राजानी सभामा आवी दररोज एक दिव्य अमृतफळनी राजाने भेट धरवा लाग्यो राजा ते फळना स्वादथी मोह पामी गयो, तेथी एक दिवस तेणे तापसने कह्यु के ' हे मुनि ! आवा फल कया स्थानमा उत्पन्न थाय छे ? ते स्थान मने बतावो. ' तापसे कह्यु के ' मारे आश्रमे आवो तो बतावु ' राजा वेगथी ते तापसनी साथे चाल्यो देवताए आगळ जई तेवा दिव्य फलथी भरपूर एक आराम विकुर्व्यो राजाए ते जोईने विचार्यु के ' हु आ तापसनो भक्त छु, तेथी तेओ मारा फल खावानी इच्छा पूरी थवा देशे, मने रोकशे नहीं ' आवु विचारी राजा वानरनी जेम फलो लेवा दोड्यो, एटले अनेक तापसो दोडी आवी क्रोधथी

लाकडीओ वडे तेने मारवा लाग्या, तेथी राजा तस्करनी जेम त्याथी भाग्यो. नासता नासता मार्गमा साधुओने जोया, एटले राजाए तेमनु शरण लीधु साधुओए तेने आश्वासन आप्यु, एटले राजा विचार करवा लाग्यो के अहो ! क्रूर तापसोए मने छेतर्यो तेवामा तेने बोध करवा माटे आवेला प्रभावती देवे प्रत्यक्ष थई पोते निकुर्वेलु स्वरूप कही बताव्यु अने स्वस्थाने गयो राजा जैन धर्ममा एकचित्तवाळो थई पोताना नगर तरफ जवा चाल्यो, त्या तो तेणे पोताने राजसभामा बेठेलो जोयो

हवे ते अरसामा गाधार नामे एक श्रावक शाश्वत प्रतिमाने वादवानी इच्छाए वैताढ्यगिरिना मूळमा जई तप करतो हतो तेनी उपर शासनदेवी सतुष्ट थई, एटले तेनु वाछित तेणे पूर्ण कर्युं उपरात तेणे प्रसन्न थईने एकसो आठ वाछितदायक गूटिका तेने आपी तेमाथी एक गूटिका मुखमा नाखी तेणे चिंतव्यु के ' हु वीत भय नगरमा देवाधिदेवनी मूर्तिने वादवा जाउ. ' एम चिंतवता ज ते मूर्तिनी नजीक देवताए तेने पहोंचाड्यो. तेनी पूजा करीने ते त्या सुखे रह्यो.

अन्यदा ते बुद्धिमान् गाधार श्रावके पोतानु मृत्यु नजीक जाणी पोतानी साधर्मी देवदत्ता नामनी कुब्जा दासीने ते गूटिकाओ आपी अने पोते दीक्षा लीधी. देवदत्ता सुदर रूपनी इच्छा राखती हती, तेथी तेणीए एक गूटिका मुखमा राखीने दिव्य रूपनु चिंतवन कर्युं, एटले ते तत्काळ दिव्य आकृतिवाळी थई गई, तेथी राजाए तेनु नाम सुवर्णगुली एवु पाड्यु पुन तेणीए एक गूटिका मुखमा राखीने चिंतव्यु के ' योग्य वर मळ्या सिवाय आ रूप वृथा छे अने आ राजा तो मारा पिता तुल्य छे, तेथी चडप्रद्योत राजा मारा पति थाओ ' आवु चिंतवता ज पेली देवीए चडप्रद्योत राजा पासे जईने तेनी आगळ देवदत्ताना रूपनु वर्णन कर्युं एटले तेणे तेनी मागणी करवा माटे पोताना दूतने तेनी पासे मोकल्यो. दूते त्या जईने देवदत्तानी प्रार्थना करी, एटले देवदत्ताए कह्यु के ' राजा अहीं आवशे त्यारे अमारा बनेनु वाछित पूर्ण थशे. ' दूते ते वात चडप्रद्योत राजाने जणावी, एटले चडप्रद्योत राजा अनिलवेग नामना हाथी उपर बेसी ते ज रात्रे त्या आव्यो उद्यानमा तेओ बने एकठा थया राजा बोल्यो के ' हे प्रिया ! तमे अवंतिनगरीमा चालो ' कुब्जा बोली के ' आ जिन-प्रतिमा विना हु जीवी शकु नहि, तेथी आ प्रतिमा जेवी ज बीजी प्रतिमा करावीने तमे अहीं लावो, एटले ते प्रतिमा अहीं राखीने आ प्रतिमा आपणे साथे लई जईशु. ' अवतीपतिए ते वात कबूल करी अने पोताना नगरमा जई जातिवत चदन काष्ठनी श्री वीरप्रभुनी तेवी ज मूर्ति करावी, तेम ज पाचसो मुनिओना परिवारवाळा कपिल मुनिनी प्रार्थना करीने ते मूर्तिनी वासक्षेपपूर्वक प्रतिष्ठा करावी. पछी विधिपूर्वक

ते मूर्ति साथे लई, हाथी उपर चडीने चंडप्रद्योत वीतभयपूरे गयो अने ते सुदर मूर्ति देवदत्ता दासीने आपी तणी चैत्यगृहमा ते नवीन मूर्ति स्थापी मूलमूर्ति त्याथी लईने ते चंडप्रद्योतनी साथे अवतीए आनदथी आवी

अहीं उदायी राजा प्रात काळे देवालयमा दर्शन करवा गयो जिनेश्वरने नमीने सन्मुख जोयु तो तेमना पर चडावली पुष्पमाळा म्लान थयेली जोई ते जोता ते राजा चितववा लाग्यो के प्रतिमा जरूर बीजी लागे छे, जो असल मूर्ति होय तो तेनी माळा म्लान थाय नहीं. वळी स्थंभ उपर रहली देवतानी पुतळी जेवी दासी पण अहीं जोवामा आवती नथी वळी ग्रीष्म ऋतुमा दुर्लभ एवो मरुदेशना जळनी जेवो हाथीनो मद आ स्थाने पडेलो जोवामा आवे छे, तेथी जरूर अहीं चंडप्रद्योत राजा अनिलवेग हाथी उपर चडीने आव्यो हश एम जणाय छे अने प्रतिमा अने दासीने लई गयो सभव छे आम चितवता उदायी राजाने घणो कोप चडयो तेथी तत्काळ दश मुगटबध राजाओने साथे लई मोटा सैन्य साथे तेणे अवती उपर चडाई करी तेनेनी वच्चे परस्पर मोटो सग्राम थयो छेवटे उदायने बाणोवडे चंडप्रद्योत राजाने हाथी उपरथी नीचे पाडी हाथवडे पकडीने बाधी लीधो अने तेना ललाट उपर तपावेला लोढानी शलाकाथी ' आ मारा दासीनो पति छे ' एवा अक्षरो लख्या पछी तेने बदीखाने नखावीने उदायन राजा प्रद्योतना दरबारमा ज्या जिनालय हतु त्या गयो. त्या मूल प्रतिमाजीने जोई, नमी, स्तुति करीने त्याथी उपाडवा उपक्रम कर्यो, पण प्रतिमा ते स्थानथी चलित थइ नहि त्यारे राजाए कह्यु के ' हे नाथ ! मे शो अपराध कर्यो छे के जेथी तमे मारी साथे आवता नथी ? " ते समये तेनो अधिष्ठायक देव बोल्यो–" हे राजा ! तारु नगर रजनी वृष्टिथी स्थलरूप थइ जवानु छे, तेथी हु त्या आवीश नहि, माटे तु शोक न करीश " ते साभळी उदायन राजा अवतीथी पाछो फर्यो. मार्गे चालता वचाळे चातुर्मास आव्यो, एटले राजाए ते स्थाने छावणी नाखी दश राजाओना जुदा जुदा पडाव होवाथी ते स्थाने दशपुर नगर वस्यु

अन्यदा पर्युषण पर्व आवता उदायन राजाए पोसह लीधो हतो तेथी ते दिवसे रसोयाए चंडप्रद्योतने पूछ्यु के ' आजे तमे शु जमशो ? ' ते साभळी अवतीपति क्षोभ पामी विचारमा पड्यो के ' कोई दिवस नहि ने आजे रसोयो जमवानु पूछे छे तेथी तेनु कांइक कारण हशे ! ' आम विचारी तेणे कह्यु–'हे पाचक ! आजे पूछवानो शो हेतु छे ? ' पाचक बोल्यो–' स्वामी ! आजे पर्युषण पर्व छे, तेथी मारा स्वामी उदायन राजाए उपवास कर्यो छे, एटले तमारे माटे ज [illegible] करवानी छे ' चंडप्रद्योत बोल्यो–' हे पाचक ! तें पर्युषणनी वात [illegible] कर्यु, मारे पण आजे

उपवास छे.' एमोये ते वात उदायन राजाने करी, एटले राजाए विचार्यु के 'चडप्रद्योत उपवासी होवाथी मारो साधर्मी थयो, तेथी ते जो बंदीखाने होय तो मारु पर्युषणपर्व शुद्ध न गणाय' आवु विचारी तेणे चडप्रद्योतने बंदीखानामाथी बहार कढावी खमाव्यो अने तेना ललाटमा करेला अक्षरोने ढाकवा माटे सुवर्ण रत्नमय पट्ट बधावी तेने अवतीदेश पाछो आप्यो पछी चडप्रद्योत पोताने स्थाने गयो.

वर्षाकाल वीत्या पछी उदायन राजा पोतानी नगरीमा आव्यो तेणे मूळ प्रतिमानी पूजाना निर्वाह माटे बार हजार गाम आप्या अने प्रभावती देवनी आज्ञाथी ते नवी मूर्तिनी पूजा करवा लाग्यो

एक वखते राजा पोताना पौषधागारमा पोसह लइने रह्यो. मध्य रात्र शुभ ध्यान ध्याता तेना मनमा आवो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के " जे राजा विगेरेए श्री वीर प्रभुनी पासे दीक्षा अने बीजा सम्यक्त्वादि व्रत लीधेला छे तेओने धन्य छे, तेओ वदन करवा योग्य छे जो प्रभु अहीं पधारीने मने पवित्र करे तो हु पण तेमना चरणकमळमा दीक्षा लइने कृतार्थ थाउ " भगवत तेना आवा अध्यवसाय जाणीने त्या पधार्या उदायन राजा कोणिक राजानी जेम मोटा उत्सव साथे तेमने वदन करवा नीकळ्यो विधिपूर्वक प्रभुनी देशना साभळी घर आव्यो. पेर आवीने विचार्यु के ' अहो ! आ राज्य अते नरक आपनारु छे, तेथी ते मारा पुत्र अभिचिने तो न आपवु. ' आवु विचारी पोताना भाणेज केशीने राज्य आप्यु. पछी केशीराजाए जेनो निष्क्रमण महोत्सव करेलो छे एवा उदायन राजाए भगवत पासे दीक्षा लीधी. व्रत लेवाना दिवसथी ज तीव्र तपस्या करीने उदायन राजर्षिए पोताना देहने शोषवी नाख्यो

निरतर नीरस आहार करवाथी अन्यदा ते राजर्षिने व्याधि उत्पन्न थयो. ते कोई वैद्यना जोवामा आवतां वैद्ये कह्यु के ' तमे दधिनु भक्षण करी तमारा देहनी रक्षा करो ' मुनि स्वदेहमा नि.स्पृह छे, ते छता दधि लेवा माटे गवेषणा करवा लाग्या. अन्यदा विहार करता करता वीतभयनगरे आवी चढ्या त्या मत्रीए मुनि परना द्वेषथी केशी राजाने जणाव्यु के ' हे राजन् ! आ तमारा मामा तपस्याथी कटाळी तमारु राज्य लेवाने आव्या छे, माटे तेमनो विश्वास करशो नहि. ' केशीए कह्यु के– ' आ राज्य तेमनु ज छे, भले सुखेथी ले ' मत्री बोल्यो–' राज्य कोइनु आप्यु मळतु नथी, पुण्यथी मळे छे तो मळेलु राज्य शा माटे पाछु आपवु ? तेथी हे राजा ! ए मुनिने कोई प्रकारे विष आपो ' मत्रीनी प्रेरणाथी केशीए पोताना उपकारी मामाने कोई पशुपालिका (गोवालणी) पासे विषसयुक्त दधि अपाव्यु ते विष सहरी लई कोई देवताए उदयन मुनिने जणाव्यु के ' तमने विषसयुक्त दधि मळशे, माटे तमे दधि खाशो नहि अने

दधिनी स्पृहा पण करशो नहि.' मुनिए ते दिवसथी दही खावु छोडी दीधु, एटले रोग वधवा लाग्यो, तेथी पुन रोग दूर करवा दधि लीधु पेला देवताए पाछु विष हरी लीधु एम त्रण वखत देवताए विष हरण कर्यु एक वखते देवता प्रमादथी विष हरी गयो नहि एटले मुनिए विष सहित दधिनु भोजन कर्यु, तेथी विषनी असर शरीरमा व्यापी गइ ते जाणी मुनिए अनशन अंगीकार कर्यु त्रीश दिवस अनशन पाळी, केवलज्ञान उत्पन्न करी, मृत्यु पामीने उदायन राजर्षि मोक्षे गया ते पछी पेला देवताए क्रोध करीने केशी राजाना वीतभयनगरने रजनी वृष्टिवडे पूरी दीधु

अहीं पिताए व्रत लीधा पछी तेना पुत्र अभिचिए चिंतव्यु के 'अहो! मारा पिताए मने छोडी पोताना भाणेजने राज्य आप्यु, तेथी पिताना एवा विवेकने धिक्कार छे!' आम विचारी कशीनी सेवा करवी तजी दइने पिताए करेला अपमा नथी कटाळी अभिचि कोणिक राजा पासे आव्यो त्या श्री वीर भगवतनी वाणीथी प्रतिबोध पामी श्रावकधर्म पाळवा लाग्यो, परंतु पोताना पिता उदायन साथेनु वैर तजी दीधु नहि अतकाले पाक्षिक अनशन लइ पूर्वोक्त पाप आलोव्या वगर मृत्यु पामीने भुवनपति देवता थयो त्या एक पल्योपमनु आयुष्य भोगवी, त्याथी च्यवीने अभिचिनो जीव महाविदेह क्षेत्रमा मनुष्य थइ मोक्षे जशे श्री वीर प्रभुना निर्वाणथी सोळसो ने ओगणोतेर वर्ष त्यारे जशे त्यारे कुमारपाळ राजा ते प्रतिमाने धूळना दट्टणमाथी बहार काढशे अने पूर्वनी जेम तेनी पूजा करशे " जेम उदायन राजाए धर्मना दिवसोए सर्व सावद्य कर्म छोडी निष्काम भक्तिवडे शुभ योग सयुक्त धर्म ग्रहण कर्यो हतो, तेवी रीते व्रतधारी गृहस्थोए पण निरिच्छ धर्म ग्रहण करवो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकोनपचाशदधिकशततम प्रबंध

व्याख्यान १५० मुं

त्रीजा शिक्षाव्रतनु स्वरूप

पोष धर्मस्य धत्ते यत्तद्भवेत्पो
तद्व्रतधा

"पुष् पुष्टौ" पुष् धातुनो अर्थ पुष्टि करवी थाय छे. "धर्मस्य पोष–पुष्टिं धारयतीति पौषधम्" धर्मनी पुष्टिने धारण करे ते पौषध कहेवाय छे ते अष्टमी विगेरे पर्व दिवसोनु नियमित अनुष्ठान छे तेना चार प्रकार कहेला छे. ते प्रत्येकना पण बे बे प्रकार छे. ते विषे श्री आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमा तथा तेनी चूर्णिमा पण आ प्रमाणे पाठ छेः–"आहारपोसह बे प्रकारे छे, देशथी अने सर्वथी अमुक विगइनो त्याग करवो अथवा आबेल के एकासणु करवु ते देशथी आहारपोसह कहेवाय छे अने रात्रिदिवसना मळीने आठे पहोर चारे प्रकारना आहारनो त्याग करवो ते सर्वथी आहारपोसह कहेवाय छे शरीरसत्कार पोसह पण देशथी अने सर्वथी एम बे प्रकारे छे. अमुक स्नानविलेपन न करवु ते देशथी अने स्नान, मर्दन, विलेपन तथा पुष्पादिकनो तद्दन त्याग करवो ते सर्वथी शरीरसत्कार पोसह जाणवो ब्रह्मचर्य पोसह पण देशथी अने सर्वथी एम बे प्रकारे छे दिवसनो अथवा रात्रिनो त्याग करवो, अथवा एक वार, बे वार विगेरे परिमाण बांधवु ते देशथी अने दिवसे अने रात्रिए आठे पहोर ब्रह्मचर्य पाळवु ते सर्वथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवो अव्यापार पोसह पण देशथी अने सर्वथी एम बे प्रकारे छे. 'अमुक व्यापार हु नहिं करु' एम धारवु ते देशथी अने हळ, गाडा, घर विगेरे सर्व प्रकारनो व्यापार छोडी देवो ते सर्वथी अव्यापार पोसह जाणवो.

अहीं जो देशथी पोषध करे तो सामायिक करे वा न करे, पण जो सर्वथी पोसह करे तो सामायिक अवश्य करे जो न करे तो तेनु फळ न मळे. सर्वथी पोसह चैत्यगृहमा, साधुनी समीपे अथवा घरे के पौषधशालामा जईने करवो. त्या जई, आभूषणादि दूर करी, पोसह अंगीकार करीने पुस्तक वाचवा अथवा शुभ ध्यान ध्यावु श्रावकप्रज्ञप्तिनी वृत्तिमा पण ए सर्व कहेलु छे. तेम ज पौषधसूत्रमा पण—

"करेमि भंते! पोसह आहारपोसह देसओ सव्वओ"

इत्यादि चारे भेदथी पोसह कहेल छे अहीं पोषध शब्दनो अर्थ नियम करीए तो ज तेनो अर्थ बराबर बधबेस्तो थाय छे. ते आहार विगेरे चारे प्रकारना पोसहना देशथी तथा सर्वथी मळी आठ भागाना एक बे विगेरे सयोगी भागा गणता एंशी भागा थाय छे तेमा हाल आहारपोसह बे प्रकारे करवामा आवे छे, कारण के निर्दोष आहार लेवामा सामायिकनी साथे विरोध जोवामा आवतो नथी, तेम ज साधु अने उपधान वहन करनार श्रावको पण आहार ग्रहण करे छे बाकीना त्रण पोसह तो सर्वथी ज ग्रहण करवा, केम के जो सर्वथी न ले तो "सावज्जजोगं पच्चक्खामि" एवो पाठ संभवे नहि.

अहीं कोई शका करे के निर्दोष देहसत्कार अने निर्दोष व्यापार करवामा शो दोष

छे। तेना उत्तरमां कहेवानु के ते बन्ने क्रिया देहनी शोभाना तथा लोभादिकना हेतु भूत छे अने सामायिकमां ते बन्ने(देहविभूषा अने लोभ)नो निषेध करेलो छे अने समर्थपणाने अभावे धर्मक्रियानो निर्वाह करवाने माटे साधुनी जेम आहार तो स्वीकारवा योग्य छे ते विषे श्री महानिशीथ सूत्रमा कहेलु छे के " जो देशथी आहार पोसह कर्यो होय तो गुरुनी समक्ष पचक्खाण पारी आवस्सही कहीने उपाश्रय माथी नीकळे अने ईर्यासमितिवडे घरे जाइ, इरियावही पडिकमी, गमणागमणे आलोवी, चैत्यवन्दन करे पछी सडासा प्रमार्जी कटासणा उपर बेसे पात्रने प्रमार्जी योग्य भोजन पीरसावे. पीरस्या पछी नवकार भणी, पचक्खाण समारी, वदन प्रमार्जी सबडका के बचकारा बोलाव्या सिवाय, विलंब कर्या वगर, टाळ्या (एठु मूक्या) सिवाय, मन, वचन अने कायगुप्तिए युक्त थई साधुनी पेठे भोजन करे भोजन कर्या पछी प्रासुक जळवडे मुखशुद्धि करी नवकार समारीने ऊठे पछी चैत्यवंदन करी, पचक्खाण धारी पुन. पोषधशाळामा आवे अने स्वाध्याय ध्यान करे "

श्राद्धप्रतिक्रमणनी चूर्णीमा पण आ प्रमाणे कह्यु छे, पण आ सामायिक अने पौषधनी स्वरूपतानी अपेक्षाए छे, कारण के मुहूर्त मात्रना सामायिकमा तो अशन करवु सर्वथा निषिद्ध छे पौषधने आश्रीने श्री निशीथ भाष्यमा एम पण कहेलु छे के "उद्दिट्ठकडंपि सो भुंजे " "तेने उद्देशीने कर्यु होय तो पण पौषधवाळो श्रावक खाय " निशीथ चूर्णीमा पण कह्यु छे के "जेने उद्देशीने करेलु होय ते सामायिक कर्या छता पण खाय " निर्विवाद वृत्तिए तो सर्व आहार विगेरनो त्याग करवो ए ज सर्वोत्कृष्ट पोषध छे ते शंख श्रावकनी जेम करवो

शंख श्रावकनी कथा

श्रावस्ती नगरीमा शंख अने पुष्कली नामे बे श्रावक रहेता हता तेओ श्री वीर भगवतने नमी पाछा वळ्या त्यारे शंखे पुष्कलीने कह्यु के ' तमे मारु भोजन विगेरे तैयार करावो, ते जमीने पछी आपणे पाक्षिक पोसह लइने रहेशु ' पुष्कलीने आम कह्या पछी शंखे घेर आवीने विचार्यु के-' आजे तो जम्या वगर ज पौषधव्रत करवु ठीक छे, कारण के तेनु फळ मोटु छे. ' आम विचारी पोतानी भार्याने कही पौषधशाळामा जइने एकाकीपणे शरीर उपरथी अलंकारादि उतारी, शरीरसत्कारनो त्याग करी, पौषध लइ दर्भना संथारा उपर बेसी, शुभ ध्यान ध्यावा लाग्यो अहीं पुष्कली श्रावके भोजनादि सर्व तैयार कराव्यु. भोजन तैयार थयु एटले ते शंखने आमंत्रण करवा गयो शंखनी स्त्री उत्पला पुष्कली श्रावकने आवता जोई ऊभी थई अने तेनु सन्मान कर्यु पछी ते स्त्रीना कहेवा प्रमाणे शंख श्रावक पौषधशाळामा छे एम जाणी पुष्कली त्या आव्यो अने ईर्यापथिकी पडिक्कमीने भोजन माटे शंखने

निमत्रण कर्युं शखे कह्यु-' मारे तेमाथी काई कल्पतु नथी, तमे तमारी इच्छाथी जेम गमे तेम करो. ते भोजनादि क्रिया मारी आज्ञाथी काई करवानी नथी. ' ते साभळी पुखली श्रावक पाछो फर्यो अने ते वृत्तात बीजाओने जणाव्यु.

अहीं शख श्रावक रात्रे धर्मजागरणमा चितववा लाग्यो के-' हु तमने-श्री वीरप्रभुने नमीने पछी पौषध पूर्ण करीश अर्थात् पछी पारीश. ' प्रभात थता ते श्री वीरप्रभु पासे जई नमीने बेठो, एटलामा त्या पुखली श्रावक पण आव्यो. ते प्रभुने नमीने शखने ठपको आपवा लाग्यो के ' हे शख ! तमे गई काले सारु काम कर्युं नहि. ' ते समये भगवते कह्यु-' हे पुखली ! तमे शखनी निंदा करो नहि ए गई रात्रे सुदक्ष जागरिकाथी जागेलो छे ' ते अवसरे श्री गौतमस्वामीए प्रश्न कर्यो के ' स्वामी ! जागरिका केटला प्रकारनी छे ? ' प्रभु बोल्या-" गौतम ! जागरिका त्रण प्रकारनी छे. पहेली बुद्ध जागरिका, ते केवळी भगवतने होय छे. बीजी अबुद्ध जागरिका, ते छद्मस्थ अनगारी(मुनि)ने होय छे, अने त्रीजी सुदक्ष जागरिका, ते श्रमणोपासक(श्रावको)ने होय छे." पछी शखे क्रोधादिकनु फळ पूछ्यु, एटले प्रभु बोल्या-" हे शख ! क्रोध मान विगेरे कषायो आयुष्य कर्म सिवायना सात कर्मनी शिथिल बधनवाळी प्रकृतिओने दृढ बधनवाळी करे छे " ते साभळी पुखली विगेरे श्रावको शखने वारवार खमाववा लाग्या शंख श्रावक पौषध विगेरे व्रतो पाळी सौधर्म देवलोके अरुणाभ विमानमा देवपणे उत्पन्न थयो त्या चार पल्योपमनु आयुष्य भोगवी महाविदेह क्षेत्रने विषे मोक्षे जशे. आ सर्व कथा श्री विवाहप्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्रना वारमा शतकमाथी लखेल छे.

" पाचमा अगमा श्री जिनेश्वर भगवते पण शख श्रावकनु चार प्रकारवाळु उत्कृष्ट पौषध व्रत वखाणेलु छे, तेथी ते व्रत पर्वना दिवसोए हर्षपूर्वक विशेषे धारण करवु. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पचाशदुत्तरशततम' प्रबध:

इत्युपदेशप्रासादवृत्तौ व्याख्यानहेतवे ।
[1]पचदशभिरस्ताभि. स्थभोऽय दशमो मत. ॥ १ ॥

दशमस्तभ' समाप्त'

१ मारी रीत धमध्यानमा प्रवर्तेला छे

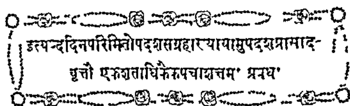
मयूरः प्राग्भवेऽभूस्त्व मन्मुक्तबाणतो हतः ।
सांप्रत मानुजं लब्ध्वा, मुंच दौष्ट्यं भवप्रदम् ॥ १ ॥

" तुं पूर्वभवे मयूर हतो अने मारा मुकेला बाणथी मरण पाम्यो हतो. हवे तुं मनुष्यजन्म पाम्यो छे तो संसारने आपनारी दुष्टता छोडी दे. "

आ श्लोक सांभळी तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, तेथी प्रतिबोध पामीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी अने पोते पूर्वे करेली सर्व दम जणावी दीधो

विशालनगरनो राजा पण केवलज्ञानीना उपदेशथी पोषधव्रतवडे पर्वना दिवसोनी आराधना करवा लाग्यो. केवली भगवंते अन्यत्र विहार कर्यो. पछी अनुक्रमे मोक्षने प्राप्त थया.

जे प्राणी हर्षपूर्वक पौषधव्रतवडे सर्व पर्वोनी आराधना करे छे अने चित्तमांथी धर्मपर्वोने वजतो नथी ते सर्व संपत्तिओवडे युक्त थाय छे


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकशताधिकैकपंचाशत्तमः प्रबंधः

व्याख्यान १५२ मुं

हवे पर्वनी आराधना विषे ज कहे छे.

सर्वारंभपरित्यागात्पाक्षिकादिषु पर्वसु ।
विधेयः पौषधोऽजस्रमिव सूर्ययशा नृपः ॥ १ ॥

भावार्थ --

" पाक्षिक (चतुर्दशी) पर्व विगेरमां सर्व आरंभनो त्याग करी सूर्ययशा राजानी जेम हमेशा पौषधव्रत अंगीकार करवुं "

सूर्ययशानुं वृत्तांत

उपर कहेला श्लोकनो संबंध श्री ऋषभदेव प्रभुना राज्यनी स्थितिना समयनो छे पूर्वे इंद्रनी आज्ञाथी भगवंतनी राज्यस्थितिने अर्थे कुबेरे एक रात्रि अने दिवसमां

विनीता नामे बार योजन लाबी अने नव योजन विस्तारवाळी नगरी बनावी हती. तेनी फरतो सुवर्णनो किल्लो रच्यो हतो. तेनी मध्ये मणिरत्नने माटे एकवीश अटारी(माळ)नु एक मदिर कर्यु हतु ते नगरमा भरतचक्रीनी पछी तेना सवा करोड पुत्रोमां मोटो सूर्ययशा नामे पुत्र राज्य करतो हतो. तेने सवालक्ष पुत्र हता अने दश हजार मुगटबद्ध राजाओनो ते अधिपति हतो. ते पोतानु विशाल राज्य नीतिथी पाळतो हतो अने दररोज प्रात काळमा पोतानी सेनासहित शक्रावतार नामना श्री ऋषभदेव प्रभुना प्रासादे स्तव–स्तुति मगल करतो हतो तेम ज पाक्षिक विगेरे पर्वने दिवसे दश हजार राजाओ अने बीजा स्वजनोथी परवर्यो सतो ते परिपूर्ण (आठ पहोरनो अने चारे प्रकारनो सर्वथी) पोषध करतो हतो. ते दिवसे पोते कांई आरभ करतो नहीं तेम बीजानी पासे करावतो पण नहीं.

एक वखते सौधर्मेंद्रे पोतानी सभामा बेठाबेठा अवधिज्ञानवडे सूर्ययशानुं पर्व सबधी धर्माराधनमा स्थिरपणुं जाणी वारवार मनवडे ज तेनी प्रशसा करी मस्तक धुणाव्युं ते जोई इद्रनी आगळ रभा, उर्वशी विगेरे गधर्वीओ मधुर गान, तान अने हावभावपूर्वक नृत्य करती हती तेमणे इद्रने पूछ्यु—“ हे स्वामी ! मर्त्यलोकना जराथी जर्जरित एवा मनुष्यना मस्तकनी जेम तमे मस्तक केम धुणाव्यु ? अमारी कलाकौशल्यमा के वाजित्रना तालमा भूल पडवाथी तो तेम नथी थयु ? हे देव ! आवी सभाने थयेलो आ सदेह इष्टवाक्यवडे दूर करी अमारा मनने शल्यरहित करो ” इद्र बोल्या–“ मर्त्यलोकमा भरतचक्रीना ज्येष्ठ पुत्र सूर्ययशानी एवी धर्मदृढता छे के तेवी बीजा कोईमा जणाती नथी, परतु तेवा गुणीजनने ते घटे छे कह्यु छे के–“ दिग्गज, कूर्म, कुलपर्वत अने शेषनागे धारण करी राखेली आ पृथ्वी कदी चलायमान थाय. पण निर्मळ अने दृढ हृदयवाळा पुरुषो जे अगीकार करे तेने युगाते पण छोडता नथी ” वळी ए सूर्ययशाना परिचयथी बीजा पण घणा जीवो पर्वना आराधनमा तत्पर थया छे. कह्यु छे के—

सुदरजणससग्गी, सीलदरिद्दं कुणइ सिलट्ठं ।
जह मेरुगिरि विलग्ग, तणंपि कणगत्तणमुवेइ ॥ १ ॥

“शील रहित एवो माणस होय पण जो उत्तम जननो ससर्ग करे तो ते शीलवाळो थाय छे. जेम मेरुपर्वत उपर ऊगेलु घास पण सुवर्णपणाने पामे छे तेम ”

आ प्रमाणे सौधर्म इद्रे करेलु तेनु वर्णन साभळीने रभा अने उर्वशी बोली–‘ हे स्वामी ! धान्यना कीडा अने मात्र अन्न उपर जीववारा मनुष्यनी आटली बधी प्रशसा

शु करो छो ? ज्यासुधी तेमणे अमारु मुख जोयु नथी त्यासुधी ज तेमनी धर्म विषे दृढता छे' आ प्रमाणे कही त बने प्रतिज्ञा लईने मर्त्यलोकमा आवी अने शत्रुंजय तार नामना जिनमंदिरमा जईने हाथमा वीणा लई मधुर स्वरे जिनेश्वर भगवतना गुणोनु गान करवा लागी तेमणे सप्त स्वरमय एवु संगीत गायु के जे सांभळी पोतानी जातिना स्वरनी भ्रान्तिथी पक्षीओ पण त्या सामन्ना आव्या. कह्यु छे के- "मयूर षड्ज स्वर बोले छे, कूकडो ऋषभ स्वर वदे छे, हंस गाधार स्वर उचारे छे, गवेलक मध्यम स्वर बोले छे, वसतऋतुमा पुष्प विस्तार थवाने समये कोकिला पचम स्वर बोले छे, सारस धैवत बोले छे अने हाथी सातमो निषाद स्वर बोले छे." एवी रीते जुदी जुदी पक्षीओनी जातिमा रहेला स्वरो तेमना कलाकौशल्यथी एकी साथे प्रगट थइ गया. ते क्रम नन्यु ? तेना उचरमा स्वरोनी उत्पत्तिना स्थान बतावे छे " कठमाथी षड्ज स्वर उत्पन्न थाय छे, हृदयमाथी ऋषभ उद्भवे छे, नासिकामाथी गाधार प्रगटे छे, नाभिमाथी मध्यम थाय छे, उरस्थळ अने कंठमाथी पचम थाय छे, ललाटमाथी धैवत थाय छे अने सर्व सधिमाथी निषाद उद्भवे छे आ प्रमाणे साते स्वरोनी उत्पत्ति छे "

श्री आदीश्वरनो पौत्र सूर्ययशा राजा पाक्षिक पौषध पूर्ण करीने प्रात'काले परिवार सहित प्रभुने नमवा माटे शत्रुंजयतार चैत्ये आव्या दूरथी तीर्थने जोई वाहनमाथी उतर्यो अने छत्र, चामर अने मुगट दूर मूकी उपानह(जोडा)रहित चरणवडे चालवा लाग्या. ते रस्ते दूर चैत्यमा थता संगीतने सामळता ज अश्व, हस्ती, पेदल अने बीजा राजा प्रमुख सव सूर्ययशा राजाने छोडी सत्वर त्या दोडी गया कह्यु छे के " जे सुखी जननु सुखनु कारण छे, दु खी जनने विनोदरूप छे, श्रवण अने हृदयने हरनार छे, कामदेवनो अग्र दूत छे, नवनवा रमनो करनार छे अने नायिकाने वल्लभ छे, एवो पाचमो उपवेद 'नाद' आ जगतमा जय पामे छे " पछी राजा पण अनुक्रमे त्या आव्या अन जिनेश्वर भगवतने नमीने बहार आव्या ते समये आ बने अप्सरानु संगीत, स्मित, नृत्य, वेष, लावण्य अने अनुपम रूप तेना जोवामा आव्यु पोतानी कातिथी सूर्यना बिंबने पण तिरस्कार करती ते बालानु विशेष वर्णन शु करु ! इद्र पण तेना रूप गुणने जोइने असख्यकाळे पण तृप्ति पामतो नथी. आवु उत्तम तेमनु सौंदर्य जोई राजा मडळनी बहार द्रव्यथी भूमि पर अने भावथी तेमना गुणोनी स्तुतिमा स्थित थयो पछी ते सुदरीओना अवसरोचित करेला नृत्य गीत रूप अमृतरसनु कर्णपुटवडे पान करी, पोताना मत्रीने मुखे तेमना जाति कुळ पूछाव्या ते अप्सराओ बोली-" अमे बने विद्याधरोनी पुत्रीओ छीए अद्यापि कुमारिका छीए अमारी मरजी अने अमारा वचन प्रमाणे वर्तनार

पतिने शोधवा अमे बने तीर्थे तीर्थे अने नगरे नगरे पर्यटन करीए छीए, पण अमने हजु सुधी तेनो योग्य पति जोवामा आव्यो नथी, तेथी हवे अमे स्वस्थाने जइशु" त्यारे मत्री बोल्यो–"आ अमारा स्वामी सूर्ययशा के जे मरुदेवीना पुत्र ऋषभदेव प्रभुना पौत्र थाय छे तेना जेवो कोई त्रिभुवनमा नथी तेनी साथे ज तमे विवाह करो अने तमारा विरहना दाहने शात करो अमारा स्वामी सत्य प्रतिज्ञावाळा अने सुज्ञ छे. ते राजा कदी पण तमारा बनेना वाक्यनु उल्लघन करशे नहीं" मत्रीना आवा वचन साभळी ते बोली–'ते अमारु वाक्य उल्लघन करशे नहीं तेनु कोण साक्षी?' मत्री बोल्यो–'ते विषे हु जामीन छु.' त्यारे ते बोली के 'वचन आपो.' पछी राजाए वचन आप्यु अने श्री युगादीश प्रभुनी समक्ष ते बंनेनु पाणिग्रहण करी ते बनेने लईने राजा घरे आव्यो ते विद्याधरीओ सुदरावासमा सुखे रहेवा लागी अने राजा पण हमेशा अभिनव कलाना अवलोकनवडे प्रसन्न थवा लाग्यो.

एकदा तेमनी साथे राजा पोताना सुदरावासमा बेठो हतो तेवामा मार्गे थती पटहनी घोषणा तेमना साभळवामा आवी. ते साभळी विद्याधरीओए राजाने पूछ्युं–'स्वामी! आ शेनो ध्वनि सभळाय छे?' राजा बोल्यो–"सुदरीओ! आवती काले अष्टमीनो पर्व दिवस छे; तेथी ते दिवसे अनेक प्रकारना दळण, खडन, पेषण, रधन, अब्रह्मसेवन, ज्ञातिभोजन, तिल तथा एरडी विगेरेनु पीलन, रात्रिभोजन, वृक्ष छेदन, भूमिविदारण, इट तथा चुनो पकाववा माटे अग्निप्रज्वालन, वस्त्रक्षालन, वासी भोजननु राखवु, शाळी तथा चणा सेकवा अने शाकपत्र खरीदवा विगेरे कोई जातना पापव्यापार कोई करशे नहीं तेम करावशे पण नहीं. बालक सिवाय सर्व लोको प्राये उपवास करशे तेओ तेमज दश हजार राजाओ जेओ काले पौषध लेनारा छे तेओ हमेशां सुखमग्न होवाथी पर्व दिवसने शी रीते जाणी शके? तेथी पर्वने आगले दिवसे एटले सातम, तेरस विगेरे तिथिए मारी आज्ञाथी हमेशा पटहनी उद्घोषणा थाय छे अने हु पण पर्व दिवसे पौषध ग्रहण करु छु."

कर्णमा सीसा रेडवा जेवा राजाना वचनो साभळी ते बने विद्याधरीओ मूर्च्छा पामी गई. पछी राजाए शीतल जल तथा चदनना सिंचनथी तेमने सज्ञ करी एटले तेओ बोली–"हे स्वामी! एक क्षणमात्र पण तमारो विरह अमने कोटीकल्प जेवो थाय छे, तेथी तमे पोषध ल्यो त्यारे आठ पहोर सुधीनो तमारो विरह अमे सहन करी शकशुं नहीं, माटे जो अमारा अगना सुखनी अभिलाषा होय तो पर्वे पौषध करवानु छोडी दो." राजा बोल्यो–"प्राणाते पण हुं छोडीश नहीं सासारिक सुखमा शु महत्तर छे? इद्रादिकनु पद मळवु सुलभ छे, पण धर्म प्राप्त थवो ए अत्यत दुर्लभ छे"

ते बने बोली-" हे स्वामी ! ज्यारे तमे अमने पाणिग्रहण करती वखते वचन आप्युं हतुं ते वचन क्यां गयुं ? " राजा बोल्यो-" प्रियाओ ! धन तथा राज्यादिक सर्व तमारा वचनथी छोडी दउं, पण धर्म तो छोडीश नहीं, केम के ते तो आत्माना कल्याणने माटे छे " ते बोली-" प्रिय ! तमारु वचन जवाथी तमारा वचननी खातर अमे अमारु अंग चितामां भस्म करीशुं " राजा क्रोध करी बोल्यो-" अरे ! अधम कुळमां उत्पन्न थयेली स्त्रीओ, शा माटे आवु अकार्य करवा लागो छो, कारण के बुद्धिमान होय ते धर्मने विघ्न करनार थाय नहीं. तमे चितामां प्रवेश करवानुं शा माटे स्वीकारो छो ? बीजुं जे मागवुं होय ते मागी ल्यो, हुं आपवा तैयार छुं " ते बने बोली-" प्राणनाथ ! अमे अत्यंत स्नेहथी अमारा स्वामीने तपस्याथी कायक्लेश न थाओ एवा इरादाथी आ प्रमाणे कह्युं हतुं, तेमां तमारे क्रोध करवानो अवसर नथी. वळी तो पिताना राज्यनु उल्लंघन करीने नीकळेली अमो धर्मना पूर्व कर्मना संबंधथी तमे पति थया छो अने तमे श्रीजिनेश्वर भगवाननी समक्ष अमारु वाक्य अन्यथा करवुं नहीं एवी प्रतिज्ञा लीधेली छे, तेथी अमे हमेशां अमारा सुखने मागीए छीए. अन्यथा तो अमे बाल्यावस्थाथी पाळेला शीलथी ने पिताना राज्यथी बनेथी भ्रष्ट थई, तो हवे तमारा राज्यादिकने अमे शुं करीए ? हवे जो अमारा वचनथी तमे पर्वनो भंग करी शको तेम न होय तो आ जिनगृह पाडी नाखो " आ वचन सांभळतां ज राजा मूर्छावडे पृथ्वी पर पडी गया. ज्यारे सेवकोए शीतळ उपचारथी सचेत कर्यो त्यारे ते बोल्या-" अरे अधम स्त्रीओ ! में मोहने वश थई भगिनी समान धर्मानो कडको लीधो हवे ज थयुं ते खरुं, पण तमे एक धर्मना लोप सिवाय बीजुं जे जोईए ते यथेच्छ रीते मागी ल्यो, के ज आपीने हुं मारा वचनस्थानथी अनृणी थाउं " ते विद्याधरीओ बोली-" जो तमारे वाक्य पाळवानुं प्रयोजन होय तो तमारा पुत्रनुं मस्तक छेदीने आपो " राजा बोल्यो-" भद्रे ! पारका जीवने केम मागो छो ? ए पुत्र तो मारा देहथी उत्पन्न थयो छे, तो मारुं ज मस्तक ग्रहण करो " आ प्रमाणे कही राजाए वेगथी पोताना मस्तक उपर खड्गनो प्रहार कर्यो एटले तेणीए खड्गनी धारा स्तंभित करी दीधी राजा नवुं नवुं खड्ग लई कंठ उपर प्रहार करवा लाग्या तेवामां ते बने अंतर्धान थई गई राजा विस्मय पामी विचार करवा लाग्या के-" अहो ! आ शुं थयुं " तेवामां ते बनेए प्रगट थई पुष्पवृष्टि करीने पूर्वनु सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं अने कह्युं के-' तमारा महिमाथी अमारु मिथ्यात्व नाश पाम्युं छे ' इत्यादि प्रशंसा करी स्वर्गमां जईने इंद्रनी सभामां पण तेमणे सूर्ययशानी प्रशंसा करी

अन्यदा सूर्ययशा अरिसाभुवनमां पोताना पितानी जेम केवलज्ञान पामी मोक्षे गया एमनी विशेष हकीकत जाणवी होय तो शत्रुंजय माहात्म्यमांथी जाणी लेवी अमे तो जेवुं सांभळ्युं तेवुं अहीं लखेलुं छे

" पाक्षिक विगेरे तिथिमा करेलो पौषधधर्म सूर्ययशा राजानी जेम आ लोक अने परलोकमा सुख आपे छे अने तेथी प्राणी निष्कलक कातिनो सचय करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ
एकशताधिकद्विपचाशततमः प्रबध. ॥ १५२ ॥

व्याख्यान १५३ मुं

पौषधमां प्रतिक्रमण करवु जोईए ते विषे कहे छे

पर्याया सन्ति ये चाष्टौ, निर्धार्य सूरिभि कृता ।
प्रतिक्रमणशब्दस्य, कार्य तत्पौषधे मुदा ॥ १ ॥

भावार्थ.–

" सूरिमहाराजाओए विचारीने करेला एवा जे प्रतिक्रमणशब्दना आठ पर्याय छे ते प्रतिक्रमण श्रावके पौषधव्रतमा हर्षथी करवु "

विस्तारार्थ.–

' प्रतीप एटले पाछु, क्रमण एटले चालवु. अर्थात् पापथी पाछा ओसरवु तेनु नाम प्रतिक्रमण ' कहेवाय छे. कह्यु छे के–

स्वस्थानाद्यत्परस्थान, प्रमादस्य वशाद्गत ।
तत्रैव क्रमणं भूय., प्रतिक्रमणमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थः–

" प्रमादने वश थया थका जे पोताना स्थानथी परस्थान प्रत्ये जवायु होय, त्याथी पाछा फरी वार त्याज (पोताना स्थानमाज) क्रमण–गमन करवु ते प्रतिक्रमण कहेवाय छे "

अथवा प्रतिकूल एवु क्रमण एटले रागादिकथी विरुद्ध गमन करवु ते ' प्रतिक्रमण ' कहेवाय छे. ते विषे कह्यु छे के–

क्षायोपशमिकाद्भावादौदयिकस्य वशं गतः ।
तत्रापि च स एवार्थं, प्रतिकूलगमात् स्मृतः ॥

" क्षायोपशमिक भावथी औदयिक भावमां गयेलानुं ज पाछुं प्रतिकूल गमन थवु, अर्थात् क्षयोपशम भावमां आववु तेथी पण ए अर्थ सिद्ध थाय छे "

अहीं कोई शंका करे के "प्रतिक्रमण तो अतीत-पूर्वकाळना पापने पडिकमवा रूप छे कह्यु छे के-' अतीत काळ संबंधी हुं प्रतिक्रमुं छुं, वर्तमान काळे संवरुं छुं अने अनागत काळे पाप न करवानुं पच्चखाण करुं छुं, एटले नवुं पाप न करवानुं प्रत्याख्यान करुं छुं तो अहीं त्रणे काळनुं प्रतिक्रमण केम कह्युं?' तेना समाधानमां कहे छे-" अहीं प्रतिक्रमण शब्द सामान्यथी मात्र अशुभ योगनी निवृत्ति ए अर्थमां छे, तेथी अतीत काळ संबंधी पापनी निंदाद्वारा अशुभ योगनी निवृत्ति, वर्तमान काळे संवरद्वारा अशुभ योगनी निवृत्ति अने अनागत काळ संबंधी प्रत्याख्यान द्वारा अशुभ योगनी निवृत्ति समजवी "

प्रतिक्रमण दैवसिक विगेरे पांच प्रकारनुं प्रसिद्ध छे तेमां उत्सर्गे दैवसिक प्रतिक्रमणनो काळ आ प्रमाणे कहेलो छे ज्यारे सूर्य अडधो आथमतो होय ते वखते गीतार्थ प्रतिक्रमणसूत्र (श्रमणसूत्र) कहे. आ वचन प्रमाणे देवसी प्रतिक्रमणनो काळ समजवो प्रतिक्रमण संपूर्ण थाय ते वखते बे त्रण तारा आकाशमां ऊगेला देखाय, एम पण कहेलुं छे

रात्रिप्रतिक्रमणनो काळ आ प्रमाणे कहेलो छे-" आवश्यक करवाने समये आचार्यो निद्रानो मोक्ष करे छे अर्थात् निद्रा तजी दे छे पछी प्रतिक्रमणनी क्रिया एवे वखते शरू करे छे के प्रभाते प्रतिलेखना कर्या पछी तरत ज सूर्य ऊगे." उत्सर्गथी बतावेला उक्तकाळे प्रतिक्रमण क्रिया करवाथी योग्य समये कृषि करनारा खेडूतनी जेम मोटुं फळ प्राप्त थाय छे अपवादथी तो योगशास्त्रनी वृत्तिमां लखे छे के " देवसि प्रतिक्रमण मध्याह्न पछी अर्ध रात्रि सुधी थई शके छे अने राई प्रतिक्रमण अर्ध रात्रिथी मांडी मध्याह्न सुधी थई शके छे "

आ प्रतिक्रमण शब्दना भद्रबाहु विगेरे सूरिओए आठ पर्याय कहेला छे तेना नाम आगळ कहेवामां आवशे. ते आठ पर्याय निश्चयपूर्वक धारी राखीने तेवुं प्रतिक्रमण पौषधव्रतमां श्रावके[1] हर्षथी करवु ते विषे चूलनीपिता श्रावकनी कथा

[1] श्रावके अहींया वदित्ता सूत्र समजवुं

सातमा अंग श्री उपासक दशांग सूत्रथी जाणी लेवी. ते विषे कह्युं छे के " जे प्रतिक्रमणयुक्त पोसह करे छे ते गृहस्थने धन्य छे अने चूलनीपितानी जेम जे पाळे छे तेने विशेष धन्य छे."

प्रतिक्रमणनां आठ पर्यायनाम कहे छे

पहेलुं नाम प्रतिक्रमण, बीजुं प्रतिचरणा, त्रीजुं परिहरणा, चोथुं वारणा, पांचमुं निवृत्ति, छठ्ठुं निंदा, सातमुं गर्हा अने आठमुं शोधि. एक प्रतिक्रमण वस्तुना ए आठ पर्याय नाम छे.

प्रतिक्रमण ए पहेलुं पर्यायनाम आ प्रमाणे सिद्ध थाय छे. प्रतिक्रमण ए शब्दमां प्रति ए उपसर्ग प्रतीप (ऊलटुं) विगेरे अर्थमां प्रवर्ते छे. क्रमण ए शब्दमां क्रम् ए धातु पादनिक्षेप एटले डगलां भरवा ए अर्थमां छे, तेने अनट् प्रत्यय आववाथी प्रतिक्रमण ए शब्द सिद्ध थाय छे. तेनो अर्थ एवो थाय के प्रति एटले पाछुं क्रमण एटले पगलुं भरवुं ते प्रतिक्रमण. तेनो आशय एवो छे के शुभ योगमांथी अशुभ योगमां गयेलाने पाछुं शुभ योगमां आववुं ते प्रतिक्रमण. तेनो भावार्थ दृष्टांत उपरथी जाणी शकाय तेम छे. ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

कोई राजाए पोताना शहेरनी बहार महेल बांधवानी इच्छाथी कोई एक क्षेत्रनी भूमिने अस्थिप्रमुख शल्य काढी, शुद्ध करावी ते उपर महेल माटे दोरी छटावी पछी त्यां रक्षकोने राखीने तेमने राजाए एवी आज्ञा करी के ' जो कोई पण माणस आ भूमिमां प्रवेश करे तो तेने तमारे मारी नाखवो, पण जो ते तरत ते ज पगले पाछो फरे तो तेने छोडी मूकवो. ' आवी आज्ञा करी राजा शहेरमां आव्यो. अन्यदा कोई बे गामडीआ माणस ते भूमिमां पेसी गया. तरत ज पेला रक्षकोए तेमने जोईने पूछ्युं–' अरे! तमे अहीं केम पेठा? ' एटले तेमांथी एक माणस जे धृष्ट हतो ते बोल्यो–' एमां शो दोष छे? ' तेम बोलतां ज तेने राजसेवके मारी नाख्यो. ते जोईने बीजो माणस भय पाम्यो, एटले ते तत्काळ रक्षकनी आज्ञा प्रमाणे ते ज पगले पाछो वळ्यो, तेथी ते सुखी थयो. आ प्रमाणेना दृष्टांतथी द्रव्य प्रतिक्रमण समजवुं.

हवे भाव प्रतिक्रमण उपर ते दृष्टांतनो उपनय घटावे छे–जे राजा ते श्री तीर्थंकर समजवा. महेल करवानुं स्थळ ते संयम समजवुं. जे बे गामडीआ माणस ते कुसाधु समजवा के जेओ रागद्वेषने आधीन थयेला हता. ते बेमां जे प्रमादना दोषथी असंयमने प्राप्त थया छतां पाछो वळ्यो ते शुभ फळने पाम्यो अने यावत् ते

मुनिवर निर्वाण सुखनो भागी थयो अने जे पाछो न वळ्यो ते दुःखनो भागी थयो आ प्रमाणे उपनयरूप दृष्टांतथी प्रतिक्रमण शब्दना अर्थ जाणी लेवो.

बीजु पर्यायनाम जे 'प्रतिचरणा' छे तेनो शब्दार्थ एवो छे के प्रति एटले वारवार ते ते भावमा चरण-गमन-सेवन एटले गमन करवु वा सेवन करवु ते प्रतिचरणा कहेवाय छे ते प्रतिचरणा अप्रशस्त अने प्रशस्त एवा वे भेदवाळी छे तेमां मिथ्यात्वादिकनु सेवन ते अप्रशस्त प्रतिचरणा अने त्रण रत्न-ज्ञान, दर्शन ने चारित्रनु सेवन ते प्रशस्त प्रतिचरणा. ते विषे एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कोइ वणिक पोतानी स्त्रीने 'तु आ रत्नादिकथी भरेला महेलनी संभाळ राखजे' एम कही देशांतर गयो ते स्त्री पोताना शरीरनी विभूषा विगेरेमा ज तल्लीन रही, तेथी तेणे महेलनी बिलकुल संभाळ राखी नहि दैवयोगे महेलनी एक दीवालमा पीपळानो अंकुर फुटयो अने ते एटलो वधो वृद्धि पाम्यो के जेथी ते दीवाल तूटी जवाथी वधो महेल विशीर्ण थइ गयो, तो पण ते स्त्रीए तेनी सारवार करी नहि केटलेक दहाडे पेलो वणिक घर आव्यो एटले महेलनी तेवी स्थिति जोईने तेणे पेली स्त्रीने घरमाथी काढी मूकी पछी महेल पाडीने नवो कराव्यो अने बीजी स्त्री परण्यो केटलेक दिवसे पाछो अगाउ प्रमाणे ते नवी स्त्रीने ते महेलनी भलामण करीने विदेश गयो. ते स्त्री त्रिकाळ महेलनी संभाळ राखवा लागी. पेलो वणिक विदेशथी आवी महेलने सारो राखेलो जोई खुशी थयो अने ते स्त्रीने पोताना सर्वस्वनी मालेक करी.

आ द्रव्य प्रतिचरणा जाणवी भावथी तेनो उपनय एवो छे के-वणिकने स्थाने गुरुमहाराज समजवा जे महेल ते संयम समजवु के जे नित्य संभाळ लेवा योग्य छे वणिकरूप गुरुनी आज्ञा प्रमाणे जे साधु सातादि गारवमा लीन थयो थको कडरीकनी जेम ते संयमरूप महेलनी बराबर संभाळ राखतो नथी ते वणिकनी प्रथमनी स्त्रीनी जेम दुःखी थाय छे अने जे साधु ते संयमरूप प्रासादने बराबर जाळवी राखे छे ते बीजी स्त्रीनी जेम निर्वाणसुखनो भागी थाय छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ शतोत्तरत्रिपंचाशत्तमः प्रबंध ॥ १५३ ॥

व्याख्यान १५४ मु

प्रतिक्रमणना पर्याय

परिहरण एटले सर्व प्रकारे वर्जवु ते. वर्जन अप्रशस्त अने प्रशस्त एम बे प्रकारे छे. ज्ञानादिकनु त्यजवु ते अप्रशस्त अने क्रोधादिकनु त्यजवु ते प्रशस्त. आ प्रतिक्रमणनु त्रीजु पर्यायनाम छे, ते विषे दूधनी कावडनु दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे–

कोइ एक कुलपुत्र हतो तेने बे बहेनो हती ते बने बहेनोने एक एक युवान पुत्र हतो. ते बने मामानी पुत्रीने परणवा माटे एक साथे आव्या. मामाए तेमने कह्यु, 'तमारा बनेमा जे दक्ष हशे तेने हु मारी पुत्री आपीश.' पछी तेणे तेओने गोकुल- (नेहडा)मांथी दूध लाववाने माटे बे कावड आपीने मोकल्या तेओ त्याथी दूधवडे बे बे घडा भरीने पाछा वल्या. पाछा आववाना बे मार्ग हता, तेमा एक सरल मार्ग हतो ते घणो लांबो हतो अने बीजो विषम हतो ते टूको हतो. बनेमाथी एक जण लाभ अने पर्वतादिक विनाना सरल मार्गे चाल्यो ते दूधना कुंभ भाग्या वगर क्षेम- कुशल आव्यो अने बीजो लाभ लेवाने उत्सुक थई नजीकना विकट मार्गे चाल्यो, ते दूधना घडा भागीने आव्यो. मामाए कुशळक्षेम आवेला भाणेजने पोतानी पुत्री आपी

आ द्रव्यपरिहरणा समजवी. भावथी तेनो उपनय आ प्रमाणे छे–कुलपुत्रने स्थाने जिनेश्वर भगवंत समजवा दूध ते चारित्र, कन्या ते मुक्ति अने गोकुलने स्थाने मानुष जन्म समजवो. सम ने विषम बे मार्ग ते स्थविरकल्प ने जिनकल्प समजवा. तेमा विषम मार्गे चालनार एटले जिनकल्पी थवा इच्छनार साधु सहस्त्रमल्ल- दिगंबरनी जेम चारित्ररूप दूधने राखी शकता नथी अने तेथी ते पोतानु वांछित मेळवी शकता नथी, तेमने मुक्ति दुष्प्राप्य छे जे स्थविरकल्पी छे ते हळवे हळवे सुगम मार्गे चाली चारित्ररूप दूधनु रक्षण करी अंते सिद्धिने प्राप्त करे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ शताधिकचतुःपंचाशत्तमः प्रबंधः ॥ १५४ ॥

आनो उपनय एवो छे के ते कन्याओने स्थाने मुनिओ जाणवा जे धूर्त गायक ते विषयो समजवा. गाथा सभळावनार ते उपाध्याय समजवा ते साभळीने उपदेशनु तत्त्व समजी असयमथी निवृत्त थनारा मुनि राजपुत्रीनी जेम सुगतिनु भाजन थाय छे अने बीजा तेथी विपरीत वर्तनारा दुर्गतिनु भाजन थाय छे

प्रतिक्रमणनु छठ्ठु पर्यायनाम निंदा छे; एटले आत्मानी साक्षीए आत्मानी निंदा करवी ते. तेना प्रशस्त अने अप्रशस्त एवा बे प्रकार छे. असयमादिकनी निंदा ते प्रशस्त छे अने सयमादिकनी निंदा ते अप्रशस्त छे. ते उपर एक दृष्टात छे, ते नीचे प्रमाणे—

कोई राजाए पोतानु सभास्थान चित्र वगरनु होवाथी तेने चित्रित करवा माटे केटलाक चित्रकारोने बोलावीने तेनी दीवालो सरखे भागे वहची आपी. ते चित्रका रोमा एक वृद्ध चित्रकार हतो. तेनी पुत्री तेने माटे हमेशा त्या भात लावती हती. एक वखते ते मार्गे आवती हती त्या राजा तोफानी घोडा उपर बेसीने राजमार्गे चाल्यो जतो हतो, तेथी भय पामीने ते मुश्केलीए पोताना पितानी पासे आवी. तेने आवेली दीठी एटले तेनो पिता देहचिंता माटे गयो, तेवामा राजा त्या ज चित्रो जोवा आव्यो. ते चित्रमा मयूरनु पीछु चितरेल तेने भ्रातिथी सत्य जाणी लेवा गयो, एटले तेना हाथनो नख भाग्यो ते जोई ते चित्रकारनी पुत्री बोली—' मूर्खरूप माचानो चोथो पायो हवे मळ्यो ' ते साभळी राजाए तेणीने पूछ्यु—' ते शी रीते?' चित्रकारनी पुत्री बोली—" प्रथम पायो चहुटामा तोफानी घोडो दोडावनार, बीजो पायो मारो पिता के जे भोजन जोईने देहचिंताए गयो, त्रीजो पायो आ मयूरपींछीने भ्रमथी पकडनार तमे अने चोथो पायो आ गामनो राजा के जेणे युवान, वृद्ध अने बाळक सर्व चित्रकारोने दीवालना सरखा भाग वहेंची आप्या छे" ते साभळी राजा तेणीनी बुद्धि जोई हर्ष पाम्यो अने ते चित्रकारनी पुत्रीने परण्यो

एकदा राजा तेणीना वासगृहमा रात्रे सूतो हतो ते वखते राजानी आज्ञाथी दासीए राणीने कोई वार्ता कहेवा जणाव्यु. राजा काईक निद्रित थया, एटले राणीए आ प्रमाणे वार्ता शरू करी—

कोई गृहस्थने एक पुत्री हती. तेणीने वरवा माटे तेणीना माता, पिता अने भाईए वचन आपेला जुदा जुदा त्रण वरो एक साथे आव्या दैवयोगे ते पुत्री रात्रे सर्पना दशथी मृत्यु पामी. त्यारे पेला त्रण वरमाहेथी एक वर तो तेणीनी साथे बळी मुओ, बीजो वर तेणीना पछवाडे सदा उपवास करी श्मशानमा ज बेठो अने त्रीजाए कोई देवतानु आराधन करी सजीवीनी विद्या मेळवीने तेने पाछी सजीवन करी. आटली कथा कहीने राणीए पूछ्यु-' हे दासी ! कहे, ते कन्या कोने आपवी योग्य ?'

व्याख्यान १५५ मुं

प्रतिक्रमणना पर्याय

प्रतिक्रमणनु चोथु पर्यायी नाम वारणा छे, जेमा निवारवामा आवे ते वारणा कहेवाय छे ने उपर एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कोइ एक राजाए शत्रुराजानु सैन्य पोता पर चडी आवतु जाणीने तळाव विगेरे जळाशयो तथा पुष्प, फळ विगेरे सर्व वस्तुओमा झेर मेळवी दीधु आ खबर शत्रु राजाने पडी, एटले तेणे घोषणा करावीने यधा सैन्यने ते राज्यनी सर्व वस्तुनो उपभोग करता निवार्यु, तथापि जेमणे पोताना राजानु वाक्य मान्यु नहि तेओ विष प्रयोगथी मृत्यु पाम्या अने जेओए तेनु वाक्य मान्यु तेओ सुखी थया

उपरना दृष्टांतनो उपनय आ प्रमाणे छे के विषसमान विषयो जाणवा निवारनार राजाने गुरु समान जाणवो तेना सैनिको ते भव्य प्राणीओ समजवा जेओ गुरुना कथथी विषयथी विमुख रह्या तेओ तरी गया अने जेओए गुरुवाक्यनो अनादर कर्यो तेओ दु खी थया.

प्रतिक्रमणनु पाचमु पर्यायनाम निवृत्ति छे. ते प्रशस्त अने अप्रशस्त एवा बे प्रकार छे समिति अने गुप्ति विगेरेथी निवृत्ति ते अप्रशस्त अने प्रमाद विगेरेथी निवृत्ति ते प्रशस्त जाणवा. ते उपर एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कोई एक नगरमा त्याना राजानी पुत्री अने कोई चित्रकारनी पुत्री बने सखीओ हती ते बनेए एवो संकेत कर्यो के आपणे एक ज पतिने वरवु एकदा कोई पुरुष मधुर गायन करतो हतो, ते साभळी ते बने सखीओ तेनी उपर मोह पामी तेनी साथे चाली. मार्गे जता राजपुत्रीए एक गाथा साभळी तेनो भावार्थ एवो हतो के "हे आम्रवृक्ष! आ कणेरना वृक्ष तो भले प्रफुल्लित थाय, पण तारे आ अधिक मासमा प्रफुल्लित थवु घटे नहि, कारण के जे नीच होय ते आडबर करे ज छे, उत्तम होय ते अकाळे आडबर करता नथी" ते साभळी राजपुत्रीए विचार्यु के-आ गाथामा नसते आम्रवृक्षने उपालभ आपेलो छे के कणेरना वृक्षो अधम छे ते तो प्रफुल्लित थाय, पण हे आम्र! तारे आ अधिक मासमा प्रफुल्लित थवु न घटे, कारण के तु उत्तम वृक्ष छे तें शु अधिक मासनी घोषणा साभळी नथी? आ उपरथी सार विचारवा योग्य छे के आ चितारानी पुत्री तो आवी रीते जेवातेवा पुरुषनी सगाते चाली जाय, पण तने राजपुत्रीने तेम करवु घटे छे? नथी घटतु " आम विचारीने 'हु मारा आभूषणनो डाबलो भूली गई छु ते लई आवु' एम कही पाछी वळी अने पोताना पिताना प्रमादथी कोई राजपुत्रने परणीने सुखी थई अने चित्रकारनी पुत्री पेला धूर्त गायकने वरीने परिणामे दु'खी थई

व्याख्यान १५६ मुं

प्रतिक्रमणना पर्याय

प्रतिक्रमणनु सातमु पर्यायनाम गर्हा छे, ते पण पूर्वनी जेम प्रशस्त अने अप्रशस्त एवा बे भेदवाळु छे. तेमा द्रव्यगर्हा विषे एक दृष्टात छे ते नीचे प्रमाणे—

कोई वृद्ध उपाध्यायने तरुण स्त्री हती ते नर्मदा नदीनी सामेना तट उपर रहेनारा कोई गोवाळीआनी साथे आसक्त थई हती, तेथी हमेशा रात्रे घडावडे नर्मदा ऊतरीने ते गोपनी पासे जती हती ते कुलटा एवी मायावी हती के दिवसे 'हु कागडाना शब्दथी भय पामु छु' एम पोताना वृद्ध पतिने जणावती हती; तेथी वृद्ध उपाध्याय ज्यारे ते स्त्री दिवसे कागडाने वलि आपती त्यारे तेनी रक्षा माटे पोताना छात्रोने (विद्यार्थीओने) मोकलता हता. कोई वार पाठकनी तेणीने कहेता के अमुक पुरुषने बोलाव, त्यारे ते कहेती के हु अन्य पुरुष साथे बोली जाणती नथी, एटले पाठकजी पोते ते पुरुषने बोलावता ते स्त्रीनी आवी चेष्टा जोई कोई एक चतुर विद्यार्थीए विचार्यु के सरलतानु लक्षण आटलु बधु होय नहि माटे आ स्त्री जरुर वधारा पडतो डोळ करे छे. कह्यु छे के—

> अत्याचारमनाचारमत्यार्जवमनार्जवम् ।
> अतिशौचमशौच च, षड्विध कूटलक्षणम् ॥ १ ॥

"ज्या अतिआचार बतावावामा आवतो होय त्या अनाचार होय छे, ज्या अतिसरलता बतावावामा आवती होय छे त्या सरलता होती नथी अने ज्या अतिपवित्रता बतावावामा आवे छे त्या पवित्रता होती नथी, एटले अतिआचार, अनाचार, अतिसरलता, असरलता, अतिपवित्रता अने अपवित्रता ए छए कूट (माठा अथवा खोटा) लक्षण छे" आ प्रमाणे विचारी ते विद्यार्थी तेनी चर्चा जोवा लाग्यो. एक वखते ते स्त्री रात्रे नर्मदा उतरती हती, तेवामा नठारे आरे ऊतरता चोर लोकोने मगरे पकड्या ते जोई ते स्त्रीए कह्यु–'अरे पुरुषो ! तमे एवे नठारे आरे शा माटे ऊतर्या ? हजु पण ते मगरनी आखो ढाकी द्यो एटले ते तमने छोडी देशे.' तेना आवा वचन साभळी पेला छात्रे विचार्यु के–'अहो ! आ स्त्रीनी हिंमत तो जुओ ।'

आ बधी चेष्टा प्रत्यक्ष जोईने ते विद्यार्थी घेर आव्यो. बीजे दिवसे ज्यारे ते कागडाने बलि आपता भय पामवानो डोळ करवा लागी त्यारे ते विद्यार्थी बोल्यो—

दासी बोली–' ते तमे ज कहो ' राणीए कह्यु–' आजे तो मने निद्रा आवे छे, तेथी हु सुई जईश, आवती काले कहीश ' राजा जागतो हतो ते तेनी वार्तीना उत्तरमा आसक्त थई गयो, तेथी बीजे दिवसे पण ते ज राणीने वारो आप्यो. योग्य अवसरे दासीए कालनो उत्तर पूछयो, एटले राणी बोली–' जे माथे बळी मुवो ते पाछो मावे जीवतो थयो ते तो तेनो भाई थाय, जेणे तेने जीवाड्यो ते तेनो पिता थाय अने जे उपगाम करीने त्या ज रह्यो हतो ते तेणीनो पति थाय. '

दासीए बीजी वार्ता कहवाने कह्यु, एटले राणी बोली–' एक हाथना प्रमाण वाळा प्रासादमा चार हाथना देव रहला छे ' दासी बोली–' ते केवी रीते समवे ? ' राणीए कह्यु–' ते काले कहीश ' ते जाणवाना कौतुकथी राजाए तेने त्रीजे दिवसे पण वारो आप्यो. रात्रे राणीए उत्तर आप्यो के ' एक हाथना देवालयमा चार हाथना देव रहे ते चतुर्भुज देव समजवा. चार हाथ ऊचा समजवा नहि. '

आ प्रमाणे नवी नवी वार्ताओ कहीने ते चतुर राणीए राजाने छ मास सुधी पोताना वासगृहमा बोलाव्या आथी तेनी सपत्नीओ ईर्षाथी तेणीना छिद्रो जोवा लागी नवी राणी हमेशा सध्याकाळे पोताना ओरडामा पेसी पोतानी पूर्वावस्थामा पोताना पिता तरफथी मळेला लुगडा पोते पहेरती अने राज्यना वस्त्राभूषण आगळ मूकी पोताना आत्मानी निंदा करती के " हे जीव ! आ तारी मूल सपत्ति छे, तु एक कारीगरनी पुत्री छे, तने राजाए स्वीकारी तेथी तु गर्व करीश नहि. " आ प्रमाणे करती तेनी सपत्नीओना जोवामा आवता तेणीओए राजाने कह्यु–' तमारी नवी राणी हमेशा कार्मण करे छे ' राजाए एकाते रही ते सर्व जोयु अने साभळ्यु तेथी ते घणो खुशी थयो अने तेने पोतानी पट्टराणी करी

आ वातनो भावार्थ एवो छे के मुनिए आत्मनिंदा करवी. सागरचद्राचार्य विगेरनी जेम गर्व करवो नहि एवो गर्व करनारा सागरचद्र मुनिने कालिकाचार्ये घणे कष्टे प्रतिबोध्या हता.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पचपचाशदधिकशततम प्रबध ॥१५५॥

रजके ते तांबूलना डाघने खारा विगेरेथी दूर करी प्रातःकाळे ते वस्त्र राजा पासे जईने आप्या. राजाए रजकने पूछ्यु–' आ वस्त्रनी शुद्धि विषे जे वस्तु होय ते यथार्थ कहे ' एटले रजके यथार्थ कही दीधु, तेथी राजाए तेनो सत्कार कर्यो आ द्रव्यशुद्धि जाणवी.

ए प्रमाणे साधु अने श्रावके जे अतिचार लाग्या होय तेनी उपासकदशांग-सूत्रमा कहेल सुरदेव तथा चुल्लशतक श्रावकनी जेम तत्काळ शुद्धि करवी.

सुरदेव श्रावकना संबधमा एवी वातों छे के वाराणसी नगरीनो निवासी सुरदेव श्रावक एक वखते पोषधशालामा पोसह लईने रहेलो हतो. त्या कोई देवताए आवीने कह्यु के–' जो तु जैनधर्मनो त्याग करीश नहि तो तारा शरीरमा एक साथे महारोगो उत्पन्न करीश. ' देवताना आवा भयकारी वचनथी ते पोतानी प्रतिज्ञाथी चलित थई गयो. पछी श्री वीरप्रभुनी पासे जई, तेनी आलोचना करी अने प्रतिक्रमण करी निर्मळ थई सौधर्म देवलोके गयो. त्या चार पल्योपमनु आयुष्य पूरु करी महाविदेह क्षेत्रमा सिद्धिपदने पामशे आ भावशुद्धि जाणवी.

शुद्धि विषे बीजु दृष्टात छे ते नीचे प्रमाणे—

कोई राजाए पोतानी उपर शत्रुनु सैन्य चडी आववाथी तेनो नाश करवाने माटे कोई वैद्य पासेथी विष मगाव्यु. वैद्य जवना दाणा जेटलु विष लईने राजा पासे आव्यो राजा तेटलु ज विष जोई तेना उपर कोपायमान थयो. वैद्य बोल्यो–' महाराजा ! कोप करो नहि, आ सहस्रघाती विष छे. ' पछी तेनी परीक्षा करवाने माटे एक मरेला हाथीनु रूवाडु उपाडी तेमा ते मूक्यु, एटले ते हाथीनु सर्व शरीर विषमय थई गयु. वैद्ये जणाव्यु के जे आ हाथीनु भक्षण करशे अथवा स्पर्श करशे ते सर्व विषमय थई जशे. राजाए पूछ्यु–' आ विष उतारवानु औषध पण छे ? ' वैद्ये कह्यु–' हा छे ' पछी तेवा औषधनो एक जवमात्र भाग मूकवाथी ते हस्ती निर्विष थई गयो आ प्रमाणे वैद्यनी जेम साधुए पण आलोचनारूप औषध-वडे अतिचाररूप विषने ऊतारी शुद्धि करवी

आ प्रतिक्रमणना आठ पर्याय श्री हरिभद्रसूरिए करेली श्री आवश्यकसूत्रनी टीकाने आधारे (कर्ता कहे छे) मे लख्या छे, तेथी तेने यथार्थ रीते जाणीने क्रिया करवी

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ सप्तपंचाशदुत्तरशततमः प्रबंधः ॥१५७॥

दिवा बिभेनि काकेभ्यो, रात्रौ तरति नर्मदाम् ।
कुतीर्थान्यपि जानासि, जलजन्त्वक्षिरोधनम् ॥ १ ॥

" दिवसे कागडाथी बीए छे ने रात्रे नर्मदा तरे छे, मारा अने नठारा आरा जाणे छे अने जळजंतुनी आंखो मींचवानो उपाय पण जाणे छे "

आ प्रमाणे सामळी ते स्त्री बोली-' शु करीए, अहीं तारा जेवा युवान पुरुष मारी इच्छा करता नथी, तेथी त्यां जवु पडे छे ' विद्यार्थी बोल्यो-' हु शु करु ? तारा पतिनो मने भय लागे छे ' पछी ते स्त्री पोताना पाठक पतिने मारी एक पेटीमा नाखी तेने मूकी देवा वनमा गई त्या वनमा कोइ व्यंतरीए ते पेटी तेना मस्तक साथे स्तंभित करी दीधी पछी ते वनमा भमवा लागी अने उपरथी मास तेनी उपर गळवा लाग्यु आथी असह्य पीडाथी पीडित अने क्षुधातुर थई सती ते घेर घेर आत्म निंदा करती कहेवा लागी के-" पतिने हणनारी आ नीच स्त्रीने भिक्षा आपो " एवी रीते तेणीए घणो काळ निर्गमन कर्यो एक वखते कोई साध्वीने पगे लागता जता तेणीना मस्तक उपरथी पेटी पडी गइ, एटले तेणीए तत्काळ चारित्र ग्रहण कर्यु

आ दृष्टात उपरथी उत्तम प्राणीओए निरंतर दुष्कृत्यनी गर्हा करवी

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ षट्पञ्चाशदधिकशततमः प्रबंधः ॥१५६॥

व्याख्यान १५७ मुं

प्रतिक्रमणना पर्याय

प्रतिक्रमणनु आठमु पर्यायनाम शुद्धि छे शुद्धिनो अर्थ निर्मळ करवु एवो थाय छे तेना पण प्रशस्त ने अप्रशस्त एवा बे भेद छे ज्ञानादिकनी शुद्धि ते प्रशस्त अने अज्ञान अथवा क्रोधादिकनी स्पष्टता ते अप्रशस्त तेमा पण क्रोधादि रूप मळने दूर करी आत्माने निर्मळ करवो ए प्रशस्त शुद्धि छे शुद्धिविषे वस्त्रनु ने वैद्यनु एम बे दृष्टात छे, ते नीचे प्रमाणे—

श्रेणिकराजाए बे वस्त्र कोई रजकने धोवा माटे आप्या हता तेवामा कौमुदी महोत्सव आववा ते रजक पोतानी बे स्त्रीओने ते पहेराव्या. श्रेणिकराजाए महोत्सवमा ते वस्त्रो जोवाथी ओळख्या, एटले एधाणी राखवा माटे ते वस्त्र उपर तांबूल छांट्यु.

देवताना नवाणु भेद छे, तेना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे बे भेद गणता एकसो ने अठाणु भेद थाय छे. एकंदर चारे गतिना गणता बधा मळीने पांचसो ने त्रेसठ भेद थाय छे. (१४-४८-३०३-१९८=५६३)

५६३ जीवभेदने अभिहया विगेरे दश पदवडे गुणता ५६३०, तेने रागद्वेषे गुणता ११२६०, तेने त्रण योगवडे गुणता ३३७८०, तेने त्रण करणवडे गुणता १०१३४०, तेने त्रण काळ आश्री गुणता ३०४०२० भेद थाय छे. तेमने अरिहंत, सिद्ध, साधु, देव, गुरु अने आत्मानी साक्षीए गुणता अढारलाख, चोवीश हजार, एकसो ने वीश थाय छे ते विषे कह्यु छे के " अढार लाख, चोवीश हजार, एकसो ने वीस एटलु ईर्यावहीना मिच्छादुक्कडनु प्रमाण सूत्रमा कह्यु छे. "

ईर्यापथिकी पडिक्कमता त्रण वार पग मूकवानी भूमि प्रमार्जीने सम्यक् प्रकारना मनवडे अतिमुक्त मुनिनी जेम ईर्यावही पडिक्कमवा अतिमुक्त मुनिनी कथा आ प्रमाणे-

पोलासपुर नामना नगरमा विजय राजा अने श्रीदेवी राणीने अतिमुक्त नामे पुत्र हतो ते छ वर्षनो थयो तेवामा एक वखते श्रीगौतमस्वामी छठने पारणे गोचरीए जता हता. तेमने जोईने ते पुत्रे पूछ्यु-' तमे कोण छो ? अने केम फरो छो ?' गौतम गणधरे कह्यु-' वत्स ! अमे साधु छीए अने भिक्षा माटे फरीए छीए.' अतिमुक्ते कह्यु-' भगवन् ! चालो पधारो, हु तमने भिक्षा अपावु. ' आ प्रमाणे कही भगवतने आगळीए पकडी राजकुमार पोताने घेर तेडी लाव्यो मुनिने आवेला जोई श्रीदेवी राणी बहु खुशी थया अने तेमने प्रतिलाभित कर्या बाळ छता बुद्धिथी अबाळ एवा ते कुमारे फरीथी गौतमस्वामीने पूछ्यु-' भगवन् ! आप क्या रहो छो ?' गणधर बोल्या-' भद्र ! अमे श्रीवीरपरमात्मा जे अमारा गुरु छे तेनी पासे रहीए छीए ' कुमार बोल्यो-' शु तमारे पण बीजा गुरु छे ? चालो, तमारी साथे हु तेमनी पासे आवु. ' गणधर बोल्या-' यथासुख देवानुप्रिय (हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो) ' पछी ते अतिमुक्त कुमार भगवतनी पासे आव्यो. भगवतने नमस्कार करी, धर्म साभळी पाछो घेर आवी मातापिताने कहेवा लाग्यो-" हे मातपिता ! हु आ ससारथी निर्वेद (खेद) पाम्यो छु, माटे मने दीक्षा लेवानी आज्ञा आपो." मातपिता बोल्या-" वत्स ! तु बाळक छे, दीक्षा केवी होय ते तु शु जाणे ? " कुमार बोल्यो-" हे मातपिता ! जे हु जाणु छु ते नथी जाणतो, जे नथी जाणतो ते जाणु छु " मातपिताए कह्यु-' ते केवी रीते ? ' कुमार बोल्यो-' जे हु जाणु छु ते ए के जे जन्म्यो ते अवश्य मरवानो ' पण हु नथी जाणतो के ' ते क्या अने केवी रीते मरशे ? ' तेम ज हु नथी जाणतो के ' केवा कर्मथी जीव नरकादिकमा उत्पन्न थाय

व्याख्यान १५८ मुं

पोषध ईर्यावही पडिकमीने थाय.

प्रतिक्रमणश्रुतस्कधमिर्यापथिकं तथा ॥
प्रतिक्रम्य क्रिया सर्वा, विधेया पौषधादिकाः ॥ १ ॥

"प्रतिक्रमणश्रुतस्कंध जे ईर्यापथिक ते पडिकमीने पौषध विगेरे सर्व क्रियाओ करवी."

ईर्यापथिकनुं बीजुं नाम प्रतिक्रमणश्रुतस्कंध एवुं छे ते पडिकमीने सर्व क्रियाओ करवी. ते विषे श्रीविवाहचूलिकामा कह्युं छे के " वस्त्र तथा आभूषण विगेरे मूकी दई ईर्यावही पडिक्कमवापूर्वक मुहपत्ति पडीलहीने पछी चार प्रकारनो पौषध करे."

श्री आवश्यकचूर्णिमा पण कह्युं छे के " त्या ढड्डर नामे श्रावक देहचिंता करीने उपाश्रय आव्यो. आवीने दूरथी ज त्रण निसिहि कही, गृहव्यापारनो त्रिविधे निषेध करी मोटे स्वरे ईर्यापथिकी पडिक्कमे " तथा श्री भगवती सूत्रमा पण पुष्कलि श्रावकना अधिकारमा कहेलु छे, तेथी पोसह लेता प्रथम ईर्यापथिकी पडिकमवी जोईए

इरियावहीमा पांचसो ने त्रेसठ प्रकारना जीवोने मिथ्या दुष्कृत अपाय छे ते जीवोनी संख्या आ प्रमाणे छे-सात प्रकारना नारकीना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे बे भेद गणता चौद प्रकार थाय छे पांच प्रकारना स्थावर जीवना पर्याप्ता, अपर्याप्ता, सूक्ष्म अने बादर एम चार भेद वडे वीश प्रकार थाय छे. प्रत्येक वनस्पति कायना पर्याप्त ने अपर्याप्त एम बे भेद छे विकलेंद्रिय ते बेइंद्रिय, तेइंद्रिय ने चौरेंद्रिय जीवना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बबे भेद होवाथी छ भेद थाय छे जलचर, स्थलचर, खेचर, उरःपरिसर्प अने भुजपरिसर्प-ए पांच प्रकारना तिर्यंच पचेंद्रियना संज्ञी ने असंज्ञी तथा पर्याप्ता ने अपर्याप्ता एम चार चार भेद होवाथी वीश भेद थाय छे एकदर स्थावरथी माडीने अडतालीश भेद तिर्यंचना थाय छे. पंदर कर्मभूमिना अने त्रीश अकर्मभूमिना तथा छप्पन अंतरद्वीपना, एवी रीते बधा मळीने एकसो ने एक भेद मनुष्यना थाय छे तेमा गर्भजना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एवा बे भेद होवाथी बसो ने बे भेद थाय छे तेमा १०१ क्षेत्रना समूर्छिम अपर्याप्तानो एकसो ने एक भेद भेळववाथी मनुष्यना त्रणसो ने त्रण भेद थाय छे भुवनपतिना दश, व्यतर ने वाणव्यंतरना सोळ, चर अने स्थिर भेदे ज्योतिषीना दश, वैमानिकना बार, ग्रैवेयकना नव, अनुत्तरना पाच, लोकांतिकना नव, किल्बिषीकना त्रण, पांच भरत अने पांच ऐरवतना मळी दश वैताढ्य पर रहेनारा तिर्यग्जृंभकना दश अने परमाधार्मिकना पंदर, एम कुल मळीने

१ समूर्छिम मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्तपणामा ज मरण पामे छे तेथी तेना एक ज भेद छे

व्याख्यान १५९ मुं

पौषधव्रतना अतिचार

उत्सर्गादानसंस्ताराः अनवेक्ष्याप्रमार्ज्य च ।
अनादरः स्मृत्यनुपस्थापनं चेति पौषधे ॥ १ ॥

भावार्थः—

" १ त्यजवु, २ लेवु, ३ संथारो करवो–तेमा बराबर जुए नहि अने प्रमार्जे नहि, ४ क्रियामा आदर न राखे अने ५ क्रियाना समयने संभारे नहि–ए पौषधव्रतना पांच अतिचार छे. "

विस्तारार्थः—

उत्सर्ग एटले लघुनीति वडीनीति विगेरेनो त्याग करवामा जुए नहि एटले जीवजंतुथी आकुल एवी भूमिने तपासे नहि, तेम ज रजोहरण विगेरेथी प्रमार्जे नहि, एटले विशुद्धिने माटे प्रतिलेखना करे नहि, ते समये ते कार्यमा प्रतिलेखना-प्रमार्जना करवी जोईए ते न करवाथी अतिचार लागे ते प्रथम अतिचार जाणवो.

आदान एटले लेवु–उपलक्षणथी मूकवु अर्थात् दंड, पाट, पाटला विगेरे लेवा तथा मूकवामा बराबर जोवु अने पुंजवु जोईए; जो तेम न करे तो अतिचार लागे ते बीजो अतिचार जाणवो.

पौषधव्रत लेनाराए रात्रिए दाभ, घास, कांबल के वस्त्र विगेरेथी संथारो करवो जोईए, ते करवामा जुए नहि, के पुंजे नहि तो तेथी अतिचार लागे ते त्रीजो अतिचार जाणवो

पौषधव्रत लेवामा अनादर करे अने ते व्रत संबंधी क्रियाने योग्य अवसरे संभारे नहि तेथी अतिचार लागे ते चोथो अने पांचमो अतिचार जाणवो

बीजा ग्रंथमा पांचमो अतिचार जुदी रीते कहेलो छे ते आ प्रमाणे–पौषधव्रतमा विधिविपरीत वर्तवु–एटले पौषधव्रत लईने तेने बराबर न पाळवुं. अर्थात् आहार पौषध कर्ये सते क्षुधातृषादिकनी पीडाथी एवुं विचारे के " आ पोसह पूरो थशे एटले हुं मारे माटे अमुक अमुक आहारादिक करावीने खाईश " आ प्रमाणे विचारवाथी जे अतिचार लागे ते पांचमो अतिचार जाणवो.

छे ?' पण हुं जाणु छु के "जीव पोताना करेला कर्मवडे ज जुदी जुदी गतिने पामनारो छे" आ प्रमाणे अनेक युक्तिथी कुमारे मातापिताने समजाव्या. पछी मातापिताए करेला महोत्सववडे अतिमुक्तकुमारे श्री वीरप्रभु पासे दीक्षा लीधी. प्रभुए तेने शिक्षण आपवा माटे स्थविरोने भळावी दीधो.

एक वखते अतिमुक्त मुनि स्थविर साथे स्थंडिल गया हता. मार्गमा प्रथम मेघवृष्टि थवाथी बाळको खाडामा भरायेला जळ उपर खाखराना पांदडाना नावडा करी तरावता हता अने 'मारु नाव तरे छे' एम बोलता हता. ते जोईने अतिमुक्त मुनिए पण पोतानु पात्र पाणीमां मूकी तरावता सता कह्यु के 'जुओ, आ मारु नाव पण तरे छे' ते जोई स्थविर तेने तेम करता वार्या पछी कृत्लाक साधुओए श्री वीरप्रभुने कह्यु के "भगवन् ! आ छ वर्षनो बाळक जीवरक्षा करवानु शी रीते जाणी शके ! हमणा तो ते षट्काय जीवनु उपमर्दन करे छे " श्री वीरप्रभु बोल्या-" हे मुनिओ! तमे ते बाळकनी हीलना करशो नहि, तेने समजावीने भणावो, ते तमारी पहेला केवळी थशे " आ प्रमाणे सांभळीने सर्व मुनिओए ते बाळसाधुने समजाव्या.

पठन करता एवा ते बाळमुनि थोडा समयमा एकादशांगी भणी गया एक वखते मार्गमा पूर्वनी जेम बाळकोने नावनी क्रीडा करता जोई पोतानी पूर्वे करेली क्रीडाने निंदता थका समवसरणमा आव्या त्या ईर्यापथिकी पडिकमता-तेना अर्थनी भावना करता 'दगमट्टी' ए पदवडे पोते करेल सचित्त पाणी अने मृत्तिकानी विराधनाने संभारी संभारी गर्हा करवा लाग्या ते वखते शुक्लध्यानना वशपणाथी तत्काळ घातिकर्मने खपावीने केवळी थया देवताओ तेमनो महोत्सव करवाने आव्या. ते समय श्रीवीरप्रभुए कह्यु-' अहो स्थविरो ! जुओ, आ नव वर्षनो बालक केवळी थयो " पछी सर्वेए मळी तेमने वंदना करी

श्री अंतगडसूत्रमा अने भगवतीजीमा जेनु वर्णन करेल छे ते आ मुनि संभळाय छे अने अनुत्तरोपपातीकसूत्रमा जे अतिमुक्तमुनि कहेल छे ते यादव चरित्रमा वर्णवेल छे ते अतिमुक्त हशे एम लागे छे

" अतिमुक्त मुनिए छ वर्षनी वये श्रीवीरप्रभु पासे दीक्षा लीधी अने नव वर्षनी वय थता ईर्यापथिकीनो अर्थ विचारता तेमने केवळज्ञान थयु, तेम ज सिद्धिसुखने पाम्या "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टपंचाशदधिकशततम प्रबंधः ॥ १५८ ॥

पूर्वे आ ग्रथमा दर्दुराक देवनु जे वृत्तात लखेलु छे ते चरित्र ग्रथने अनुसारे जाणवु.

" नदमणिकार श्रेष्ठी व्रतभगवडे देडकानो अवतार पामी तेमा जातिस्मरण प्राप्त करी, पूर्वपापनी आलोचना करीने दर्दुराक नामे देवता थयो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकोनपष्ठ्यधिकशततम प्रबधः ॥ १५९ ॥

व्याख्यान १६० मुं

पौषधव्रत करनारनी स्तुति

धर्मपौपधमाराध्य, सम्यक् सागरचंद्रमा· ॥
समाधिना विपन्नोऽभूत्, त्रिदिवे त्रिदिवोत्तम· ॥ १ ॥

भावार्थः–

" सागरचद्र सम्यक् प्रकारे पौषधव्रतनी आराधना करी समाधिथी मृत्यु पामीने स्वर्गमा उत्तम देवता थया हता "

सागरचद्रनी कथा

द्वारावतीमा बळदेवना पुत्र निपधने सागरचद्र नामे पुत्र थयो हतो ते नगरमा रहेनारा धनसेन राजानी कमलामेला नामे पुत्री उग्रसेनना पुत्र नभसेनने आपी हती एक वखते नारद नभसेनने घेर जई चड्या ते वखते नभसेननु चित्त विवाहकार्यमा व्यग्र हतु, तेथी तेणे नारदनु सन्मानादि काई कर्यु नहि, आथी नारदने क्रोध थयो एटले त्याथी सागरचद्रनी पासे आवीने कह्यु के ' धनसेननी पुत्री कमलामेलाना जेवु स्वरूप त्रिभुवनमा कोई कन्यानु नथी ' ते साभळी सागरचद्र बोल्यो–' ते कन्या कोईने अपाई चूकी छे ? ' नारदे कह्यु–' अपाई चूकी छे, पण हजु सुधी परणावी नथी ' त साभळी ते दिवसथी सागरचद्र कमलामेलानु नाम ज जपवा लाग्यो. त्याथी नारदऋपि कमलानी पासे आव्या कमलाए पूछ्यु–' काई पण आश्चर्य जोवामा आव्यु होय तो कहो ' नारदे कह्यु–' मे सागरचद्रमा सुरूप

सातिचार पौषधव्रत उपर नंदमणिकार श्रेष्ठीनी कथा श्रीज्ञातासूत्रना तेरमा अध्ययन उपरथी अहीं किंचित् मात्र लखीए छीए.

नंद मणिकारनी कथा

राजगृही नगरीमां श्री वीरप्रभुना समवसरणमां प्रथम देवलोकनो निवासी दर्दुराक नामे देव सूर्याभदेवनी जेम प्रभुनी भक्ति करीने स्वर्गे गयो. ते वखते श्री गौतमस्वामीए प्रभुने पूछ्युं के 'आ देवताए कया पुण्यथी आवी समृद्धि प्राप्त करी?' प्रभु बोल्या-" राजगृही नगरीमां नंद मणिकार नामे श्रेष्ठी हतो. तेणे अमारी पासे श्रावकधर्म ग्रहण कर्यो. एक वखते ग्रीष्मऋतुमां तेणे अष्टमतपयुक्त पौषधव्रत ग्रहण कर्युं. जळरहित करेला ते त्रण उपवासमां ते श्रेष्ठीने तृषा लागी. एटले तेणे चिंतव्युं के " जेओ पोताना द्रव्यथी वावो के कूवाओ करावे छे तेओने धन्य छे. " पोसह पार्या पछी ते श्रेष्ठीए अन्यदा श्रेणिक राजानी आज्ञा लइने नगरनी बहार नंदवापिका नामनी चार मुखवाळी एक वाव करावी. तेनी चारे दिशाओमां चार उपवन कराव्यां. घणा लोको तेना सौंदर्यनी प्रशंसा करवा लाग्या. ते सांभळीने श्रेष्ठीने सहज हर्ष थइ आव्यो. अनुक्रमे भावथी मिथ्यात्वरूप रोग अने द्रव्यथी सोळ प्रकारना रोग ते श्रेष्ठीने लागु पड्या. अनेक वैद्योए व्याधिना प्रतिकार माटे उपचारो कर्या, पण ते बधा निष्फळ गया. छेवट ते नंदश्रेष्ठी मृत्यु पाम्यो अने ते नंदवापिकामां ज गर्भज देडको थयो. तेमां क्रीडा करता ते दर्दुरने घणा लोकोना मुखथी ते वापिकानुं वर्णन सांभळतां जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी ते आत्मनिंदा करवा लाग्यो-' अरे! मने धिक्कार छे ! में सर्व व्रतोनी विराधना करी. हवे ते व्रत पाछां आ भवमां स्वीकारुं ' आवो विचार करी तेणे पोतानी बुद्धिथी अभिग्रह लीधो के ' आजथी निरंतर छठ्ठ छठ्ठनी तपस्या करी पारणुं करवुं अने पाणी पण नंदापुष्करणीमां नहावाथी घणा लोकोना पसीना विगेरे मेल पडवाने लीधे कलुषित थइने प्रासुक थयलुं होय ते ज वापरवुं ' आ प्रमाणे वर्तवानो निश्चय कर्यो, तेवामां लोकोना मुखथी श्री वीरप्रभुनुं आगमन सांभळी पोते वंदना करवा माटे चाल्यो. मार्गमां श्रेणिकराजाना अश्वना डाबा पग नीचे दबायो; तेथी तरतज एकांते जइ नमुत्थुणं इत्यादि स्तुति वडे धर्माचार्यने नमी, सर्व पापने आलोची मृत्यु पामी सौधर्म देवलोकमां दर्दुराक नामे देवता थयो, ते देव अहीं आव्यो हतो. हे गौतम ! तेणे पूर्वभवमां करेला शुभध्यानांदिथी आवी संपत्ति प्राप्त करी छे. हवे ते चार पल्योपमनुं आयुष्य पूर्ण करी, महाविदेहक्षेत्रमां मनुष्य थई, भवनो क्षय करीने मोक्षे जशे "

व्याख्यान १६१ मुं

पौषधव्रतनु फळ

विधेय सर्वपापानां, मथनायैव पौषधः ।
सद्यः फलत्यसौ शुध्ध्या, महाशतकश्रेष्ठिवत् ॥ १ ॥

भावार्थः—

"सर्व पापनु मथन करवाने माटे पौषधव्रत अवश्य करवा योग्य छे. ए व्रत शुद्धिवडे करवाथी महाशतक श्रेष्ठीनी जेम तत्काळ फळे छे."

विशेषार्थः—

पौषध सर्व पापाश्रवनो निरोध करवाना हेतुभूत छे. ते व्रत बराबर पाळवाथी अगियार व्रत सारी रीते पाळेला गणाय छे ते पौषध जो शुद्धि सहित एटले योगशुद्धि, क्रियाशुद्धि अने ध्यानशुद्धि विगेरे युक्त करवामा आवे तो तत्काळ फळ आपे छे.

ध्यानशुद्धिनु लक्षण आ प्रमाणे छे—

नेत्रद्वंद्वे श्रवणयुगले नासिकाग्रे ललाटे ।
वक्त्रे नाभौ शिरसि हृदये तालवे भ्रूयुगान्ते ॥
ध्यानस्थानान्यमलमतिभिः कीर्तितान्यत्र देहे ।
तेष्वेकस्मिन् विगतविषय चित्तमालंबनीयम् ॥ १ ॥

"बे नेत्रमा, बे कानमा, नासिकाना अग्रभागे, ललाटमा, मुख उपर, नाभि उपर, मस्तक उपर, हृदय उपर, ताळवे अने बे भृकुटीमा-एटला स्थानो आ देहमा ध्यान करवाना विद्वानोए कहेला छे. तेमाथी कोइ पण एकनी अंदर बीजा विषयथी दूर करीने चित्तने जोडी देवु, अर्थात् चित्तवडे तेमाना एक स्थाननु आलंबन करवु."

आ प्रमाणे ध्यानना स्थानमा चित्तने स्थापन करी एकाग्रमने पौषधव्रत करीने बेमवु पौषधव्रतना फळ विषे कहेलु छे के "कंचनमणिना पगथीआवाळु, हजारो स्तंभवडे उन्नत अने सुवर्णना तळीआवाळु देरासर करावे, तेनाथी पण तपसंयम

जोयु अने नभसेनमा कुरूप जोयु ' ते सांभळता ज कमलामेला सागरचंद्रनी रागी थई अने हमेशा तेनु ज ध्यान करवा लागी

एक वखते सांबकुमार सागरचंद्रने चिंतासागरमा मग्न थयेलु जोई तेनी पछ वाडे आवी बे हाथवडे तेनी आंखो बंध करी ऊभो रह्यो. सागरचंद्रे कह्यु-' कोण कमलामेला ?' सांबे कह्यु-' हु तो कमलामेलक छु, अर्थात् कमलाने मेळवी आपनार छु.' स्वर उपरथी सांबने ओळखी सागरचंद्रे कह्यु-' भद्र ! ए वात सत्य छे, कमलपत्र समान दीर्घ लोचनवाळी ए कमलामेलाने तु ज मेळवी आपीश ए कार्यमा तारा सिवाय बीजो कोइ समर्थ नथी ' पछी सांबकुमार तेम करवा वचनथी बंधाई गयेल होवाथी तेणे प्रद्युम्न पासेथी वचनना छळवडे प्रज्ञप्ति विद्या मागी लीधी पछी ज्यारे कमलामेलाना लग्ननो दिवस आव्यो त्यारे सांबे तेनु प्रज्ञप्ति विद्यावडे आकर्षण कर्यु अने घणा यादवो सहित ते कन्याने उद्यानमा लई गयो त्या सागरचंद्रनी साथे तेनु पाणिग्रहण कराव्यु कन्याना पिताना अने श्वसुरना पक्षवाळाओ तेनी शोध करवा लाग्या शोध करता तेमणे ' तेने कोई विद्याधर हरी गयो छे अने उद्यानमा छे ' एम जाण्यु, एटले तेओए कृष्णनी पासे आवी फरियाद करी कृष्ण क्रोधायमान थईने सैन्य सहित उद्यानमा आव्या त्या सांबे वैक्रियलब्धिथी अनेक रूप करीने कृष्णनी साथ मोटु युद्ध कर्यु छेवटे सांब मूळरूप करीने कृष्णने चरणे पडयो ए कन्या सागरचंद्रने आपी त्यारथी नभसेन सागरचंद्र उपर द्वेष राखी तेना छळ शोधवा लाग्यो

अन्यदा सागरचंद्रे श्रीनेमिप्रभुनी पासे श्रावकना व्रत अंगीकार कर्या अने वैराग्यरत थयो एकदा पर्वदिवसे पौषधव्रत लई स्मशानमा कायोत्सर्गे रह्यो तेवामा दैवयोगे नभसेन फरतो फरतो त्या आवी चडयो. तेणे सागरचंद्रने दीठो एटले तत्काळ ते पापीए अंगारानी भरेली एक ठीब तेना माथा उपर मूकी आ उपसर्ग सहन करता सागरचंद्रनी काया बळी गई ते मृत्यु पामीने आठमा देवलोकमा देवता थयो

" भावनारूप जळथी सिंचन थयेला तेना हृदयमा दुष्कृतरूप अग्नि पेसी शक्यो नहि, तेथी धर्मरूप समुद्रना कल्लोलवडे वृद्धि पामतो सागरचंद्र आठमा देवलोकमा देव संबंधी सुख प्रत्ये पाम्यो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ षष्ट्यधिकशततम प्रबंध ॥ १६० ॥

पहेली नारकीमां चोराशी हजार वर्षने आउखे उत्पन्न थईश " आ प्रमाणे सांभळी ते खिन्न थईने पोताने स्थाने चाली गई अने सात दिवस पछी मरण पामीने पहेली नारकीमां उत्पन्न थई.

महाशतक श्रेष्ठी वीश वर्ष सुधी श्रावकधर्म पाळी, अंते संलेखना करी मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोके देवता थयो आ कथा वर्द्धमानदेशनामांथी विस्तारथी जाणी लेवी.

" महाशतक श्रेष्ठीए पौषधादि व्रत करवावडे श्रीजु ज्ञान प्राप्त करी आ जन्ममां ज तेनु शुभ फळ प्राप्त कर्युं अने बीजा जन्ममां प्रथम देवलोकने प्राप्त करी, अनुक्रमे केवळज्ञान मेळवी महाविदेह क्षेत्रमां मोक्षरूप फळने पामशे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकषष्ठ्यधिकशततमः प्रबन्धः ॥ १६१ ॥

व्याख्यान १६२ मुं

चोथा शिक्षाव्रत अतिथिसंविभागनु स्वरूप

सदा चान्नादि संप्राप्ते, साधूनां दानपूर्वकम् ।
भुज्यते यत्तदतिथि—संविभागाभिधं व्रतम् ॥ १ ॥

भावार्थः—

हमेशां अन्नादिकनी सामग्री प्राप्त थतां जे गृहस्थ साधुओने दान देवापूर्वक तेनो उपभोग करे ते अतिथिसंविभाग नामे चोथुं शिक्षाव्रत छे. "

अतिथिनु स्वरूप आ प्रमाणे—

तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना ॥
अतिथिं तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विदुः ॥ १ ॥

" जे महात्माए तिथि, पर्व, उत्सव विगेरे सर्वनो त्याग करेलो होय ते अतिथि कहेवाय छे, बाकीना अभ्यागत कहेवाय छे " एवा अतिथिने 'सम्' एटले आधाकर्मादि बेतालीश दोषथी रहित, 'वि' एटले विशिष्ट एवो 'भाग' एटले

अधिक छे " एक मुहूर्त मात्र सामायिकमां " बाणवइकोटिओ " ए गाथामां कह्यो छे तेटलो लाभ प्राप्त थाय छे ते गाथा अगाउ सामायिकना सबधमां कही गया छीए तेथी त्रीश मुहूर्तना प्रमाणवाळा अहोरात्रना पौषधमा त्रीशगणो लाभ थाय छे युक्तिथी थाय छे ते आ प्रमाणे—सत्यावीशसो ने सत्योतर क्रोड, सत्योतर लाख, सत्योतेर हजार, सातसो ने सत्योतर अने १ (२७७७७७७७७७७१) एटला पल्यो पमना देवगतिना आयुष्यनो बंध एक पौषधथी थाय छे ए प्रमाणे जोता तेथी अधिक पण थाय छे आवु पौषधव्रत पौषध करनारने महाशतक श्रेष्ठीनी जेम तात्कालिक फळ आपे छे. तेनी कथा आ प्रमाणे—

महाशतक श्रेष्ठीनी कथा

राजगृह नगरमा महाशतक नामे एक गृहस्थ रहेता हतो तेने तेर स्त्रीओ हती तेमा रेवती नामे एक स्त्री बहु रुचिष्ठ हती ते बार गोकुलनी मालेक हती बीजी स्त्रीओ एक एक गोकुलनी मालेक हती रेवती बार कोटि सुवर्णनी स्वामिनी हती अने बीजी बार स्त्रीओ एक एक कोटि सुवर्णनी स्वामिनी हती महाशतक शेठ पण अनेक कोटि सुवर्ण अने अनेक गोकुलनो अधिपति हतो

एकदा महाशतक शेठे श्रीवीरप्रभुनी देशना सांभळी, प्रतिबोध पामी बार व्रत अंगीकार कर्या चौद वर्ष श्रावक धर्मनु आराधन कर्या पछी उपासक प्रतिमाने वहन करता ते शेठने अवधिज्ञान उत्पन्न थयु

रेवती हमेशा पोतानी सपत्नीओ उपर द्वेष राखती हती अनुक्रमे पोतानी सर्व शोक्योने झेर विगेरे प्रयोगथी मारी नाखीने पोते सर्वसत्तानी मालेक थई अने नित्य मद्यमांसनु सेवन करवा लागी एक वखत पोताना शरीरमा तीव्र कामोत्पत्ति करवा माटे सेवकनी पास कोई तरतना जन्मेला बाळकने मगावी, तेनी हिंसा करावीने तेना मांसने संस्कार करावी तेणे भक्षण कर्युं अने ते उपर मदिरानु पान कर्युं; आथी ते अतिशय कामपीडित थई पछी पौषधशाळामा ज्या पोतानो स्वामी पौषधव्रत लईने रहेलो छे त्या गइ अने पोतानो केशपाश छूटो मूकी, स्तन, साथळ, उदर, जघन अने दांत विगेरे अगने वारंवार दर्शावती सती निर्लज्ज थइने कामक्रीडातुरपणे कहेवा लागी—' हे स्वामी ! आ पौषधव्रत छोडी दो, मारी साथ कामक्रीडा करो धर्मनु फळ भोगनो संयोग अने तेनो अभियोग ज छे ' आ प्रमाणे अनुकूळ उपसर्ग थता पण जेनु मन अचळ छे एवा श्रेष्ठीए कह्यु—" हे पापिणी ! धर्मना फळने अधर्ममा जोडे छे ? अहींथी दूर जा. वळी सांभळ, तु आजथी सातमे दिवसे मृत्यु पामी

अर्थ–"स्वामीने ठगनार, लुब्ध अने मुनि, स्त्री तथा बाळकनी हत्या करनारना पाडोशमा आत्महित इच्छनार बुद्धिमान् पुरुषे रहेवु नहि." हवे अंबिकानी सासु जे बहार गई हती ते थोडी वारमा आवी. तेनी आगळ पेली पाडोशणे ते बधी हकीकत कही दीधी. ते सांभळी सासुए क्रोध करी पोताना पुत्र सोमभट्टने ते विषे कह्यु. सोमभट्ट अंबिका उपर धसी आव्यो अने बोल्यो–'अरे पापिणी ! तें आ शु कर्युं ? हजु कुळदेवतानी पूजा करी नथी तेम पितृओने पिंड पण आप्या नथी, ते पहेला मलिन साधुने दान केम आप्यु ? जा, मारा घरमाथी बहार नीकळ' अंबिका पोताना बे पुत्र सिद्ध तथा बुद्धने लई घरना बीजा द्वारथी नीकळी गई कोई ठेकाणे स्थान न मळवाथी नगरनी बहार चाली मार्गे चालता थाकी गयेला बने पुत्रोने तृषा लागी तेमणे वारवार जळ मागवा माड्यु, पण जळ मळ्यु नहि आगळ जता एक सुकायेल सरोवर हतु, ते अंबिकाना शियलना माहात्म्यथी जळवडे भराई गयु अने एक शुष्क थयेल आम्रवृक्ष फळवाळो थई गयो अंबिकाए पुत्रोने जळ पाई हाथमा आम्रफळ आप्या अने तेनी शीतळ छाया नीचे विसामो खावा बेठी

अहीं अंबिकानी सासु घरमा गई. अदर जुए छे तो मुनिने दान आपवा लीधेला पात्रो सुवर्णना, भात मोतीना दाणा अने भोजन उपर शिखा चडेली विगेरे जोवामा आव्यु ते जोई हर्ष पामती ते पुत्रने कहेवा लागी–'वत्स ! अंबिका वधू खरेखरी पतिव्रता छे, माटे तेनी पछवाडे जई तेने पाछी लई आव' सोमभट्ट पण तेणीनु माहात्म्य प्रत्यक्ष जोई पश्चाताप करतो पछवाडे चाल्यो दूरथी पतिने आवतो जोई अंबिका पुत्र साथे भय पामीने नजीकमा एक कूवो हतो तेमा पडी श्रीनेमिप्रभुनु शरण करीने मृत्यु पामवाथी ते कोहड विमानने विषे मोटी समृद्धिवाळी अंबिका नामे देवी थई. ते विषे पूर्वपूज्योए कहेलु छे के "साग अध्यवसाये प्राण त्यजीने अंबिका देवी थई" बीजा वळी एम कहे छे के "गिरनारना शिखर उपरथी झपापात करी मृत्यु पामीने ते सौधर्म देवलोकनी नीचे चार योजन कोहड नामे विमान छे तेमा अंबिका नामे महर्द्धिक देवी थई ते देवीने चार भुजा छे, दक्षिण बे हाथमा आंबानी लुम धारण करेली छे अने डाबा हाथमा बे पुत्र अने अकुश राखेला छे."

अंबिकानो पति सोमभट्ट पण पोतानी स्त्रीने कूवामा पडेली जोई लोकापवादथी भय पामी "जेनु शरण मारी स्त्रीए कर्युं तेनु शरण मारे पण हजो" एम कही ते ज कूवामा पड्यो ते मृत्यु पामीने ते ज विमानमा अंबिकाना वाहनरूप सिंह थयो.

"जे देवीने मुनिदानना प्रभावथी पीतळना पात्रो सुवर्णना थई गया, पोतानो देह

पश्चात्कर्म (पाछु फरी करवु न पडे) विगेरे दोष टाळीने अन्ननो अंश जे आपवो ते संविभाग कहेवाय छे, ते नामनु व्रत ते अतिथिसंविभाग नामे व्रत कहेवाय छे तेनो विधि श्री आवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तिमा आ प्रमाणे कहेल छे के "सामाचारीयुक्त श्रावक तो चोक्खपणे पोसह पारी, साधुने अन्नदान आपीने पछी पच्चक्खाण पारे बीजाओने माटे एवो नियम नथी, तेथी ते दान आपीने पच्चक्खाण पारे अथवा पच्चक्खाण पारीने दान आपे."

श्रावक ज्यारे भोजननी वेळा थाय त्यारे भक्तिपूर्वक साधुने निमंत्रण करी तेमने लइने घेर आवे अने जो मुनि स्वेच्छाए घेर आव्या होय तो तेमने जोता ज तेमनी सामे जवा विगेरे विनय करे. पछी बाल, वृद्ध, तपस्वी के ग्लान विगेरे मुनिने विनय सहित अने स्पर्धा, महत्ता, मत्सर, स्नेह, लज्जा, भय, दाक्षिण्य, प्रत्युपकारनी इच्छा, माया, विलंब, अनादर अने पश्चात्ताप विगेरे दानदोषोथी रहित एवु दान, एकांत आत्माने तारवानी बुद्धिथी पोते पोताना हाथे पात्र लइने आपे, अथवा पडखे ऊभा रही पोतानी स्त्रीप्रमुख द्वारा दान आपे. (गृहस्थने वर्जवा योग्य जे दोषो छे ते पिंडविशुद्धि विगेरे ग्रंथोथी जाणी लेवा) ते प्रमाणे दान आप्या पछी वंदना करीने पोताना घरना द्वार सुधी अथवा छेटे सुधी पाछळ जइने पाछो वळे जो साधुनो अभाव होय तो वादळ विना वृष्टिनी जेम कदी अकस्मात् साधुनु आवबु थाय त्यारे हर्षभर अंबिका श्राविका विगेरेनी जेम दान आपवु तेनी कथा नीचे प्रमाणे—

अंबिका श्राविकानी कथा

गिरनार पर्वतनी नजीक आवेला एक शहेरमा देवभट्ट नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने देविला नामे स्त्रीथकी सोमभट्ट नामे पुत्र थयो हतो तेने अंबिका नामे स्त्री हती ते श्रावककुळमा उत्पन्न थई हती तेने स्वभावे ज दानधर्म उपर विशेष प्रीति हती ते दंपतीने सिद्ध अने बुद्ध नामे बे पुत्र थया हता

एक वखते श्राद्धना दिवसे अंबिकाए कोई मासक्षपणी साधुने भक्तिपूर्वक आनंदथी अन्न वहोराव्यु तेने दान आपती जोई तेनी कोई पाडोशण गाढ स्वरथी कहेवा लागी— 'अरे! आजे श्राद्धने दिवसे अंबिकाए मलिन साधुने पहेलु दान आप्यु, तेथी श्राद्धनु अन्न तथा घर बन्ने अपवित्र कर्यां ' आ प्रमाणे ते नठारी पाडोशण वधारे बडबडवा लागी ते ज कारणथी शास्त्रमा कह्यु छे के "सारा पाडोशमा निवास करवो " यतः

स्वामिद्रोहकृद्व्याधानामृषिस्त्रीबालघातिनाम् ।
इत्यद्यारसहितं धीमान्, प्रातिवेश्मकतां त्यजेत् ॥ १ ॥

आनंदाश्रूणि रोमांच-बहुमान प्रिय वचः ।
तथानुमोदना पात्रे, दानभूषणपचकम् ॥ १ ॥

"आनदना अश्रु आवे, रोमाच खडा थाय, बहुमान करे, प्रिय वचन बोले अने सुपात्रनी अनुमोदना करे-ए पाच दानना आभूषण छे" आत्माने तारवानी बुद्धिथी दान आपीने पछी जमवु ते देवभोजन छे अने ते सिवायनु प्रेतभोजन छे.

दानमा पण जे सुपात्रदान छे ते मोटा फलने आपनारु छे कह्यु छे के—

दानं धर्मेषु रोचिष्णु-स्तच्च पात्रे प्रतिष्ठितम् ।
मौक्तिक जायते स्वाति-वारि शुक्तिगत यथा ॥ १ ॥

"धर्ममा दानधर्म महातेजस्वी छे, ते जो सुपात्रे आप्यु होय तो स्वातिनक्षत्रनु छीपमा पडेलु जळ जेम मोती थाय छे तेम ते सफळ थाय छे." वळी कह्यु छे के-

केसिं च होइ वित्तं, चित्त केसिपि उभयमन्नेसि ॥
चित्त वित्त च पत्त च, तिन्नि पुन्नेहि लब्भति ॥ १ ॥

"कोईने वित्त (धन) होय, कोईने चित्त होय अने कोईने ते बने नाना होय, पण चित्त, वित्त ने पात्र ए त्रण नाना तो पुण्यवडे ज प्राप्त थाय छे" ते उपर एक दृष्टात छे के-कोई दानथी पराङ्मुख एवो राजा मोटा अरण्यमा जई चढ्यो. त्या मधना बिंदु जेमाथी गळी रह्या छे अने माखीओनो बणबणाट थई रह्यो छे एवो मधपुडो तेना जोवामा आव्यो. ते जोई राजाए त्या आवी चडेला पडितोने पूछ्यु के 'आ मधपुडो केम रडे छे?' एटले तेओमाथी एक पडित राजाने प्रतिबोध करवा बोल्यो-" राजन् ! ज्यारे पात्र मळे छे त्यारे वित्त होतु नथी अने ज्यारे वित्त होय छे त्यारे मारुं पात्र मळतु नथी, आवी चितामा पडेलो मधपुडो अश्रुपात करी रुदन करे छे एम मने लागे छे" आ वचन साभळ्या त्यारथी ते राजा सत्पात्रने दान आपवामा तत्पर थयो

कर्णराजा घणो दातार हतो दान करवाथी मोक्ष विगेरे सुख मळे छे एवु मानी ते हमेशा प्रभाते सो भार सुवर्ण आपीने पछी सिंहासनथी ऊठतो हतो एक वखते राजा कर्णने सत्पात्रने दान आपवानी इच्छा थई ते दिवसे प्रभाते कोई बे चारण के जेमा एक श्रावक हतो अने एक मिथ्यात्व धर्मथी वासित हतो ते प्रथम आव्या तेमने जोई कर्णे विचार्यु के आजे मारे प्रथम सत्पात्रने दान आपवु छे, कारण के तेथी सद्गति मळे छे कह्यु छे के—

पण सुवर्ण मरखी कांतिवाळो थई गयो अने परमरमा दशी थई ते प्रभुनी भक्त अंबिका देवीने हु नमन करु छु "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विषष्ट्यधिकशततमः प्रबन्धः ॥ १६२ ॥

व्याख्यान १६३ मुं

हवे चोथुं शिक्षाव्रत अतिथिसंविभाग जे वर्णवे छे

अतिथिभ्योऽशनावासवास पात्रादिवस्तुन ।
यत्प्रदान तदतिथिसंविभागव्रत भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ —

" अतिथिने अन्न, निवास, वस्त्र अने पात्र विगेरे वस्तुओनु दान करवु ते अतिथिसंविभाग नामे व्रत कहेवाय छे "

विस्तारार्थ —

जेमने संसारी तिथिपर्वोत्सव नथी ते अतिथि कहेवाय छे, अथवा हीरा, माणेक, सुवर्ण, धन अने धान्यमा जेने लोभ नथी ते अतिथि कहेवाय छे आवा अतिथि मुख्यपणे चारित्रधारी मुनि कहेवाय छे तेमने अन्न, वस्त्र, निवास अने पात्र विगेरेनु दान करवु ते अतिथिसंविभाग व्रत कहेवाय छे श्राद्धसमाचारीमा लख्यु छे के " ज्या साधुओनु आवागमन होय, ज्या जिनमंदिर होय अने ज्या डाह्या साधर्मी बधु रहेता होय त्या श्रावके निवास करवो " श्रावकने प्रभाते दशगुरुने प्रणाम कर्या विना जळपान पण कल्पे नहि गृहस्थ भोजन करवाने उपाश्रय जइ गुरुने निमत्री भक्तिपूर्वक निर्दोष अन्नदान आपे, पण अनादरथी आपे नहि. कह्यु छे के—

अनादरो विलबश्च, वैमुख विप्रिय वच ।
पश्चात्तापश्च दातु स्यात्, दानदूषणपचक ॥ १ ॥

"अनादर, विलब, मुख बगाडवु, अप्रिय वचन बोलवु अने पश्चात्ताप करवो-ए पाच दाता सबधी दानना दूषणो छे " तथा—

जेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण रत्नना योगे तत्काळ मोक्ष मळे छे, तेम ज शुद्ध चित्त, वित्त अने पात्र ए त्रणना योगे पण मोक्ष प्राप्त थाय छे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्रिषष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६३ ॥

व्याख्यान १६४ मुं

मुनिदाननु वर्णन

पश्य संगमको नाम, संपदं वत्सपालकः ।
चमत्कारकरीं प्राप, मुनिदानप्रभावतः ॥ १ ॥

भावार्थ.–

जुओ, मुनिदानना प्रभावथी संगमक नामे वत्सपाल (गोवाळ) चमत्कार पमाडे तेवी संपत्तिने पाम्यो हतो.

संगमनी कथा

राजगृह नगरनी नजीक आवेला एक शालि नामना ग्राममां धन्या नामे एक गरीब स्त्री रहेती हती. तेने संगम नामे एक पुत्र हतो आ पुत्र गामनी गायोने अने वाछरडाओने चारतो हतो. एक दिवस पर्वदिवस आववाथी सर्वत्र खीरना भोजन जमता लोकोने जोई ए गरीब बाळके पोतानी माता पासे आवी खीरनी याचना करी, एटले माताए कह्यु–' वत्स ! आपणा घरमा खीर नथी ' तो पण बाळक हठ करी वारवार मागवा लाग्यो. पुत्रनी इच्छा पार न पडवाथी माताए पण रुदन करवा माड्यु तेने रुदन करती जोई आसपासनी पाडोशणो भेगी थई अने तेने रोवानु कारण पूछ्यु. तेणीए बधी हकीकत पाडोशणोने जणावी पाडोशणोने दया आवी, एटले दूध विगेरे खीरनी बधी सामग्री तेओए लावी आपी धन्याए खीर बनावी, तेनो थाळ भरी संगम पुत्रने आप्यो अने पोते कोई कार्यप्रसंगे घरनी बहार गई

खीरनो थाळ जोई ते पुण्यवान् बाळकने विचार थयो के ' जो आ अवसरे कोई मुनि आवे तो तेमने वहोरावीने पछी बाकीनी खीर हु जमु तो ठीक थाय. ' दैवयोगे तेवामा कोई मासना उपवासवाळा मुनि तेने घेर आवी चड्या. संगमे मुनिने जोता ज

अन्नदातुरधस्तीर्थंकरोऽपि कुरुते करं ।
तच्च दानं भवेत् पात्रदत्तं बहुफलं यत ॥ १ ॥

"अन्न आपनारना हाथ नीचे तीर्थंकर पण हाथ धरे छे तेवु दान जो पात्रने आपेलु होय तो ते महाफळ आपे छे" आवा विचारथी पात्रनी परीक्षा करवा माटे कर्ण दान आप्यु नहि एटलामा तमाथी एक चारण बोल्यो—

पत्त परिरक्खह किं करह, दिज्जओ मग्गताह ।
वरसतह किं अंबुदह, जोई समविसमाह ॥ १ ॥

"राजा कर्ण! पात्रनी परीक्षा शु करो छो? जे मागवा आवे तेने आपो, वरसाद वर्षे छे ते शु सारु स्थान के नठारु स्थान जोईने वर्षे छे?" ते सामळी कर्णे कह्यु—

वरसो वरसो अंबुदह, वरसोडा फळ जोय ।
धतुरे विष ईक्षु रस, एवडो अंतर होय ॥ १ ॥

"वरसाद भले ज्या त्या वरसो, पण तेना फळ जुओ धतुराने विषे विष थाय छे अने शेलडीमा अमृत जेवो रस थाय छे एटलो अंतर कुपात्र ने सुपात्र दानमा समजवो"

सर्व दानमा अन्ननु दान अति मोटु छे कह्यु छे के—

सर्वेषां चैव भूतानां-मन्ने प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
तेनान्नदो विशां श्रेष्ठः, प्राणदाता स्मृतो बुधैः ॥ १ ॥

"सर्व प्राणीओना प्राण अन्नमांज रहेला छे तेथी अन्नदान करनार पृथ्वीमा श्रेष्ठ छे अने तेने विद्वानो प्राणदाता कहे छे" वळी "प्राणीओना प्राण अन्न छे, अन्न तेज अने सुखनो सागर छे, तेथी अन्नदान जेवु कोई बीजु दान थयु नथी अने थशे पण नहि" "पात्रमा सर्वथी उत्तम पात्र मुनि छे, मध्यम पात्र उत्तम श्रावक छे अने जघन्य पात्र अविरति सम्यग्दृष्टि छे" सत्पात्रनो योग थाय तो तेने आपीने पछी जमवु, अने जो तेनो योग न थाय तो भोजन वखते घरनी बहार आवी दिशावलोकन करीने पछी जमवु आ प्रमाणे अतिथिने आपेलु स्वल्प दान पण चंदनबाळा, श्रेयांस अने नयसारना जेम बहु फळने आपनारु थाय छे

१ मासक्षपण वाळा मुनि अकस्मात् आवी चडे तो लाभ मळी जाय तेटला माटे चारे तरफ जोवु
२ महावीरस्वामीना २७ मा भवपकीना पहेला भवे जंगलमा मुनिदान आप्यु हतु ते नयसार

बत्रीश खंड करी मारा पुत्रनी स्त्रीओए ते वडे पग लुछी नाखी दीधा छे. जो राजाने तेनी जरूर होय तो तु तेमने पूछीने आ नाखी दीधेला खड लई जा.' सेवके जईने राजा श्रेणिकने ते प्रमाणे कह्यु ते साभळी राजा अति आश्चर्य पाम्यो अने ते शेठना पुत्रने जोवानी इच्छा करी तेनी माता भद्राने बोलावीने कह्यु-'भद्रे! तमारा पुत्रने देखाडो, मारे जोवानी इच्छा छे' भद्रा बोली-'राजेंद्र! मारो पुत्र माखणना जेवो सुकोमल छे ते कदी पण घरनी बहार नीकळतो नथी, घरमा ज क्रीडा करे छे; माटे आप कृपा करी मारे घेर पधारवानो अनुग्रह करो."

राजाए भद्राने घेर आववानु कबूल कर्युं एक वखते राजा शालिभद्रने घेर गया. त्या तेना घरनो वैभव जोता ज राजा विस्मय पामी गया घरमा पेसता अनुक्रमे पहेली, बीजी अने त्रीजी भूमिकामा गयो. त्या नवरगित अभिनव देखावो नजरे पड्या. पछी चोथी भूमिकामा जई सिहासन उपर बेठा; एटले भद्रा सातमी भूमिकामा ज्या पोतानो पुत्र रहेतो हतो त्या जईने कहेवा लागी-'पुत्र! आपणे घेर श्रेणिक आवेल छे, माटे तु जाते आवीने तेमने जो' शालिभद्रे जाण्यु के श्रेणिक नामनी काईक वस्तु हशे; तेथी ते बोल्यो-'माता! तमे तेनुं जे कहे ते मूल्य आपीने तेने घरना खूणामा मूकी दो.' भद्रा बोली-'वत्स! श्रेणिक नामे काइ खरीदवा योग्य वस्तु नथी, पण ते तो आपणा स्वामी श्रेणिक राजा छे.' ते साभळी शालिभद्र विचारमा पड्यो-'शु मारी उपर पण बीजो कोइ राजा छे? अरे! आ ससारसुखने धिक्कार छे!' एम सवेग धरता शालिभद्र मातानां आग्रहथी पोतानी स्त्रीओ सहित राजा श्रेणिक पासे आव्यो अने विनयथी राजाने नमन कर्युं. राजा श्रेणिके तेने पोताना खोळामा बेसारी कुशलता पूछी. राजाना उत्सगमा बेठेला शालिभद्रने अग्निना सयोगथी मीणना पिंडनी जेम ओगळी जतो जोई भद्राए राजाने कह्यु-'देव! मारा पुत्रने छोडी दो. ते मनुष्य छे, परतु मनुष्यना समूहनो गध पण सहन करी शकतो नथी, कारण के दिव्य भूमिमा गयेला तेना पिता त्याथी दिव्य वस्त्र, अलकार अने चदन पुष्पादि दिव्य पदार्थो मोकले छे, तेनो ते भोक्ता छे' पछी राजाए तेने छोडी दीधो, एटले शालिभद्र सातमी भूमिए गयो

भद्राए आग्रह करी श्रेणिक राजाने भोजननु आमत्रण कर्युं स्नाननो समय थता राजा शालिभद्रना घरनी वापिकामा स्नान करवा गयो. त्या राजाना हाथनी आगळीमाथी मुद्रिका वापिकाना जळमा पडी गई. राजा आमतेम तेने शोधवा लाग्या, एटले भद्राए दासीने आज्ञा करी के 'वापिकानु जळ दूर करी राजानी मुद्रिका शोधी आप' दासीए तेम कर्युं, एटले पोतानी मुद्रिका बीजा दिव्य आभरणोना मध्यमा जाणे कोलसा जेवी होय तेवी देखावा लागी. राजाए कह्यु-'आ शु?' एटले

तेमनुं वर्णन करतां उल्लासथी खीरनो थाळ उपाडी 'हुं तरी गयो' एवी बुद्धिए बधी खीर मुनिने वहोरावी दीधी दयाळु मुनिए ते खीरवडे पारणुं कर्युं मुनि गया पछी धन्या आवी तेने मुनि संबंधी कांई खबर नहोती, तेथी तेणीए जाण्युं के पुत्र बधी खीर खाई गयो जणाय छे, तेथी फरी थाळ तेणे खीर पीरसी संगमे कंठ सुधी ते खाधी, पण रात्रिए तेने पची नहि, तेथी विशूचिका थवाथी ते मृत्यु पाम्यो मुनिदानना प्रभावथी ते राजगृह नगरमां गोभद्र श्रेष्ठीनी भद्रा नामे स्त्रीना उदरमां अवतर्यो. ते समये भद्राए स्वप्नमां पाकेलुं शालीनुं क्षेत्र जोयुं पूर्ण समय थतां पुत्ररत्ननो प्रसव थयो गोभद्र शेठे स्वप्नने अनुसारे तेनुं नाम शालिभद्र पाड्युं पांच धात्रीओए लालनपालन करातो ते पुत्र कल्पवृक्षनी जेम वृद्धि पाम्यो पिताए सर्व कळाओनो अभ्यास कराव्यो शालिभद्र युवान थयो, एटले गोभद्र शेठे मोटा उत्सवथी तेने मोटा शेठीआओनी बत्रीश कन्याओ परणावी देवीओनी साथे इन्द्रनी जेम शालिभद्र ते स्त्रीओ साथे विलास करवा लाग्यो रमणीओना विलासमां मग्न थयेला शालिभद्रने रात्रि के दिवसना जतानी पण खबर पडती नहोती

एक वखत श्रीवीरप्रभुनी देशना सांभळी गोभद्र शेठने वैराग्य थयो, तेथी श्रीवीर प्रभुना चरणमां चारित्र अंगीकार करी अनशन करीने स्वर्गे गया. त्यां अवधिज्ञानवडे जोईने गोभद्र देवे पुत्रवात्सल्यने लीधे तेम ज तेना पुण्यना आकर्षणथी कल्पवृक्षनी जेम प्रतिदिवस दिव्य वस्त्र, अलंकार अने सुगंधी पदार्थो स्त्रीसहित पुत्रने[1] अर्पण करवा मांड्या घर संबंधी उचित सर्व कार्य तो भद्रामाता करवा लाग्या शालिभद्र तो केवल भोगसुखने ज अनुभववा लाग्यो

एक दिवसे केटलाएक रत्नकंबलना व्यापारीओ राजगृह नगरमां आव्या तेओए रत्नकंबल वेचवा माटे श्रेणिक राजाने बताव्या, पण ते मूल्यमां अति मोंघा होवाथी श्रेणिके लीधा नहि पछी ते व्यापारीओ शालिभद्रने घेर आव्या त्यां गोभद्र शेठनी स्त्री भद्राए मां-माग्युं मूल्य आपी ते खरीद कर्या. आ वृत्तांत जाणी चेलणा राणीए श्रेणिक पासे एक रत्नकंबलनी मागणी करी पछी श्रेणिके ते व्यापारीओने बोलावी एक रत्नकंबल वेचातुं माग्युं व्यापारीओ बोल्या-' भद्रा शेठाणीए बधा रत्नकंबल खरीदी लीधा छे, हवे अमारी पासे एक पण नथी ' ते सांभळी आश्चर्य पामेला श्रेणिक राजाए एक रत्नकंबल मूल्यथी लेवा माटे एक सेवकने भद्रा पासे मोकल्यो तेणे जई भद्रा पासे तेनी मागणी करी भद्रा बोली-' हे सेवक ! ते सोळ रत्नकंबलना

१ बत्रीश स्त्रीओ अने शालिभद्र माटे ३३-३३ पेटी वस्त्र, अलंकार ने सुगंधी पदार्थोनी दररोज आपता हता

२ एक रत्नकंबलनुं सवा लाख द्रव्य-एवा १६ रत्नकंबळ ते बधा खरीद्या

विस्तारार्थः–

सचित्त एटले सजीव एवी पृथ्वी वनस्पति विगेरेनी उपर आपवा योग्य अन्नपानने अदानबुद्धिए अथवा अनाभोगे के सहसात्कारे मूकी देवु–ए पहेलो अतिचार छे तेम ज सचित्त एटले सूरण, कंद, पत्र, पुष्प, फळ विगेरेथी अदानबुद्धिए देवा योग्य आहारने ढांकवो ते बीजो अतिचार छे. काळ एटले साधुने भिक्षा योग्य समयनु उल्लंघन करवुं, अर्थात् भिक्षा लेवा माटे साधुने योग्य जे काळ होय तेनु उल्लंघन करे, त्यारपछी साधुने आमंत्रण करवा जाय अथवा साधु आव्या न होय तो पण पौषधवृत्तिए भोजन करे ते त्रीजो अतिचार छे मत्सर एटले कोप. मागवाथी कोप करे अथवा छती वस्तु माग्या छता न आपे अथवा 'आ क्षुद्र मनुष्ये दान आप्यु, तो शु हु तेनाथी हीन छु के न आपु ?' एवा मत्सरथी दान आपे अहीं बीजानी उन्नति सहन न करी शकवारूप मत्सर समजवो, ते चोथो अतिचार छे. अन्य एटले बीजा संबंधी व्यपदेश एटले मिष करे जेम के 'आ गोळ खांड प्रमुख पारकु छे, तेथी हु केम आपु ?' एवो खोटो मिष करे ते अन्यापदेश कहेवाय छे (अपदेश शब्द कारण, मिष अने लक्ष अर्थमा प्रवर्ते छे, एम अनेकार्थ संग्रहमां कहेल छे)ए पाचमो अतिचार छे. आ पाच अतिचार चोथा शिक्षाव्रतना कहेला छे आ अतिचार अनाभोग विगेरेथी एटले अजाणपणा विगेरेथी थाय छे, पण जो जाणीने करे तो व्रतनो भंग थाय छे अतिचार सहित दान आपवा विषे चंपकश्रेष्ठीनी कथा छे.

चंपक श्रेष्ठीनी कथा

धन्यपुर नगरमा चंपक नामे श्रेष्ठी हतो. ते चारे पर्वमा पौषध करी तेने पारणे हमेशा अतिथिसंविभाग करतो हतो ते संपूर्ण पोसहने पारीने गुरुने विज्ञप्ति करतो के 'स्वामी ! मारे घेर भातपाणीनो लाभ आपशो ' पछी पोताने घेर जई पोताने माटे भोजनादिक करावतो हतो ज्यारे गोचरीनो समय थाय त्यारे पाछो उपाश्रये जई साधुने निमंत्रण करतो तेना निमंत्रणथी साधु पण बीजा कोई साधु के श्रावकनी साथे तेने घेर जता, कारण के साधुने एकला विहार करवो के कोई पण स्थानके जवु उचित नथी. साधु घेर आवता एटले तेमने अचित्त तथा निर्दोष अन्नपानादि अने वस्त्र, कंबल के औषधादि जेनो खप होय ते चंपकशेठ विनयथी आपतो हतो साधु तेने फरीने रांधवु न पडे तेवो भय राखी तेना घरेथी अल्प वस्तु वहोरता हता (साधुनो एवो आचार ज छे, नहि तो पश्चात्कर्मादि दोष लागे छे) पछी ते वंदना करी साधुने विदाय करतो अने पाछळ केटलाएक पगला वळाववा जतो.

पूछयुं–' स्वामी ! आजे मारी माताने हाथे पारणुं केम थयुं नहि ? ' सर्वज्ञ प्रभुए तेमने पूर्वभवनी माताने संबंध सर्व कह्यो पछी बने मुनि दधिवडे पारणुं करी, प्रभुनी रजा लई, पूर्ण वैराग्यवडे वैभारपर्वत उपर गया अने एक शिलातलने पडिलेही तेनी उपर पादपोपगमन अनशन कर्युं

अहीं भद्रा अने श्रेणिक श्री वीरप्रभुने वांदवा आव्या त्यारे प्रभुने नमस्कार करीने पूछ्युं–' स्वामी ! ते बे मुनि क्यां गया छे ? मारे घेर भिक्षा माटे केम न आव्या ? ' प्रभुए कह्युं–' भद्रे ! तारे घेर आव्या हता, पण तें ओळख्या नहि पछी ते पूर्वभवनी माताए आपेली भिक्षा लई, आहार करीने वैभारगिरि उपर गया छे अने अनशन कर्युं छे ' तत्काळ भद्रा श्रेणिकनी साथे त्यां गई तेमने निश्चळ रहेला जोईने बोली–' पुत्र ! मने धिक्कार छे के में तमने घेर आव्या छतां ओळख्या नहि ' एम कही ते विलाप करवा लागी, एटले श्रेणिके तेने समजावी ते बने मुनि अनशन पाळीने सर्वार्थसिद्ध विमाने गया अने त्यांथी मोक्षे जशे

" अहो ! ते दानना सौभाग्यने हुं स्तवुं छुं के जेथी वश थयेली स्वर्गनी भोगलक्ष्मी अभिसारिका(नायका)नी जेम शालिभद्रने मनुष्यना भवमां पण प्राप्त थईने भजती हती "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ चतुःषष्ठ्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६४ ॥

व्याख्यान १६५ मुं

चोथा शिक्षाव्रतना अतिचार कहे छे

सचित्ते क्षेपणं तेन, पिधानं काललंघनम् ।
मत्सरोऽन्यापदेशश्च, तुर्यशिक्षाव्रते स्मृताः ॥ १ ॥

भावार्थ –

" सचित्त वस्तु उपर आहार मूकवो, सचित्त वस्तुथी तेने ढांकवो, योग्य काळनुं उल्लंघन करवुं, मत्सरभाव धारण करवो अने बीजानो व्यपदेश करवो (पोतानुं छतां पारकुं कहेवुं)–ए पांच चोथा शिक्षाव्रतना अतिचार छे "

भावार्थः–

" आ प्रमाणे उपदेशप्रासादनी टीका मे लखेली छे, अने पदर जुदा जुदा प्रबधो-रूप अस्रो(हाशो)वडे आ अगियारमो स्तभ स्तवेलो छे (पूर्ण करेलो छे). "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-वृत्तौ पचषष्ठ्याधिकशततमः प्रबधः ॥ १६५ ॥

अब्दाहर्मितज्ञातेषु, शताग्रं पचषष्ठीतमम् ।
प्रेमादिविजयादिना, नित्य व्याख्यानहेतवे ॥

" वर्षना दिवस जेटला दृष्टातोमाथी एकसो ने पासठ व्याख्यान प्रेमविजयादि मुनिने निरतर व्याख्यान करवा माटे कहेवामा आव्या छे "

इति एकादश स्तंभ समाप्त. ।
(अगियारमो स्तभ सपूर्ण)



त्यारपछी पोते भोजन लेतो हतो तेमा पण ' जे वस्तु साधुने आपवामा आवी न होय ते श्रावके खावी नहि ' एवो आचार होवाथी ते प्रमाणे वर्ततो हतो जो ते गाममा साधु न होय तो भोजनवेळाए ते गृहद्वार जइ अवलोकन करतो अने एवु चिंतवतो के ' जो अकस्मात् आ काळे कोइ साधु आवी जाय तो हु तरी जाउ ' (आ प्रमाण पौषधने पारणे करवानो विधि छे.) चपकश्रेष्ठी ए प्रमाणे सर्वग दान आपतो हतो

एक वखत एवु बन्यु के चपकशेठ कोई भिक्षा माटे फरता मुनिने जोई हर्षथी बोलावी लाव्यो मुनिने घी आपवा उद्यमवत थयो भावथी अखड धाराबंध मुनिना पात्रमा घी रेडवा माड्यु आथी तेणे अनुत्तर विमाननी सपत्ति उपार्जन करी मुनिए तेने पुण्यनो लाभ थतो जोई घीनी धारा पडवा दीधी, निषेध कर्यो नहि. मुनिए ना कही नहि, एटले चपकशेठे मनमा चिंतव्यु के ' अहो ! आ मुनि लोभी लागे छे, पोते एकला छे अने आटलु बधु घी शु करशे ? ' आवा चिंतवनथी जे क्रमबंध ते देवगति उपार्जन करवा चढ्यो हतो ते क्रमबंध तेने पाछो पडतो जोई ज्ञानी मुनि बोल्या-'मुग्ध ! आटले ऊचे जइ पाछो पड नहि ' चपकशेठे कह्यु-' भगवन् ! हु तो अहीं ज छु, क्याथी पडु छु ? आम असबद्ध केम बोलो छो ? ' पछी मुनि पाने खेंची लइ तेने बारमा देवलोकमा स्थापी बोल्या-' श्रावक ! दान आपवामा अन्य विकल्प करवाथी ते दूषित थई जाय छे, माटे निर्विकल्पे दान आपवु लोकमा पण शुकन अने स्वप्नना फळ विकल्पथी दूषित थाय छे. ते साभळी चपकशेठे पोतानु पाप आलोच्यु अने अंत मृत्यु पामी बारमा देवलोकमा गयो ते माटे कह्यु छे के—

सातिचारेण यद्दान, तद्दान स्वल्पसौख्यदम् ।
मत्वेति विधिना श्राद्धैर्वितीर्यं भावधार्मिकैः ॥ १ ॥

भावार्थ –

" जे अतिचार सहित दान छे ते अल्पसुखने आपनारु छे, एम जाणीने भाविक अने धार्मिक एवा श्रावकोए विधिपूर्वक दान करवु "

इत्युपदेशप्रासादटीकेय लिखिता मया ।
पचदशाभिरस्माभि स्तंभश्चैकादशः स्तुतः ॥ १ ॥

दानशाळाओ उघाडीने दान आप्यु हतु कह्यु छे के "ते दुर्भिक्षमा हम्मीरने बार हजार मूडा, वीशळदेवने आठ हजार मूडा अने दिल्हीना बादशाहने एकवीश हजार मूडा धान्य जगडुशाहे आप्यु हतु " समृद्धिवाळा गृहस्थे भोजन समये दयादान विशेषे करवु अने निर्धनने यथाशक्ति दान आपवु. कह्युं छे के—

कुक्षिभरी न कस्कोऽत्र, बह्वाधारा पुमान् पुमान् ।
ततस्तत्कालमायातान्, भोजयेद् बांधवादिकान् ॥ १ ॥

"पोतानु पेट भरनार तो कयो पुरुष नथी ? पण जे पुरुष घणाना आधाररूप होय छे ते ज पुरुष कहेवाय छे, तेथी भोजनकाळे आवेला बांधवप्रमुखने अवश्य भोजन आपवु."

ते उपर एक कथा छे के चित्रकूटमा चित्रांगद नामे एक राजा हतो. एक वखते तेना किल्ला उपर शत्रुना सैन्ये घेरो नाख्यो हतो. ते वखते नगरमा शत्रुओना प्रवेशनो भय छता पण ते धार्मिक राजा भोजन वखते दरवाजा उघाडा राखतो हतो.

प्रारंभना श्लोकना त्रीजा पादमा 'बाळक प्रमुखने जमाडीने पछी जमवु' एम कह्यु छे तेमा प्रमुख (विगेरे) शब्दथी बाळ, ग्लान, वृद्ध, मातापिता, पुत्रवधू, सेवकवर्ग अने गायप्रमुखने भोजन अथवा चारापाणी विगेरे उचित प्रमाणमा आपीने, पछी नवकार गणीने तथा पच्चख्खाण संभारीने भोजन लेवुं. भोजन करताना समयनु उल्लंघन करवु नहि. कह्युं छे के—

याममध्ये न भोक्तव्यं, यामयुग्मं नो लंघयेत् ।
याममध्ये रसोत्पत्ति, यामयुग्मे बलक्षयम् ॥ १ ॥

"एक पहोरनी अंदर जमवु नहि अने बे पहोरनु उल्लंघन करवु नहि, कारण के पहेला पहोरमां जमे तो रसनी उत्पत्ति थाय छे अने बे पहोर सुधी न जमे तो बळनो क्षय थाय छे" वळी योग्य समये जमवु, तेमा पण चालती ऋतुने योग्य एवो आहार लेवो ते विषे कह्यु छे के–" शरदऋतुमा जे जळ पीवायु, पोष अने माघ मासमा जे खवायु अने जेष्ठ अने अशाड मासमा जे सुवायु तेनाथी ज मनुष्य जीवे छे " वळी कह्यु छे के–" वर्षाऋतुमा लवण अमृत छे, शरदऋतुमा जळ अमृत छे, हेमंत ऋतुमा गायनु दूध अमृत छे, शिशिरऋतुमा आमळानो रस अमृत छे, वसंतऋतुमा घी अमृत छे अने ग्रीष्मऋतुमा गोळ अमृत छे "

सर्व भोजन लोलुपता सिवाय करवुं ते विषे कह्यु छे के—

॥ श्री उपदेशप्रासादग्रंथे ॥

द्वादश स्तंभ

व्याख्यान १६६ मु

गृहस्थोनी भोजनविधि कहे छे

मुक्तिकाले गृहस्थेन, द्वारं नैव पिधीयते ।
बालादीन् भोजयित्वातु, शस्यते भोजनं सदा ॥ १ ॥

भावार्थ—

" भोजन वखत गृहस्थे घरनु द्वार बंध करवु नहि अने बाल, वृद्ध, ग्लान विगेरेने जमाडीने हमेशा भोजन करवु ते प्रशंसनीय छे "

विशेषार्थ—

भोजन वखते गृहस्थे घरनु द्वार बंध करवु नहि, कारण के जो गृहस्थनु द्वार बंध होय तो तेने दरी भिक्षुकप्रमुख निराश थई पाछा जाय छे आगममां पण कह्यु छे के—

नेव दारं पिहावेइ, भुंजमाणो सुसावओ ।
अणुकंपा जिणंदेहिं, सड्ढाणं नत्थि वारिया ॥ १ ॥

" श्रावक भोजन करती वखत पोताना घरनु द्वार बंध करे नहि, कारण के प्रभुए श्रावकोने अनुकंपादान करवानो निषेध करेलो नथी " वळी पांचमा अंग श्रीविवाह-पन्नत्तिसूत्रमा तुंगिकागिरिना श्रावकना वर्णन प्रसंगे कह्यु छे के ते श्रावको " अवगुअदुवारा " छे ए विशेषणनो एवो अर्थ थाय छे के 'भिक्षुक विगेरेना प्रवेश माटे ते श्रावको सर्वदा पोताना घरना द्वार उघाडा राखे छे, जेथी भिक्षुक निराश थई पाछा चाल्या जता नथी. द्वार बंध करीने तेओ धर्मनी निंदा करावता नथी ' भोजन वखत द्वार बंध करवा ते महत् पुरुषोनु लक्षण नथी श्री जिनेश्वर भगवंते पण सांवत्सरिक दानथी दीन लोकोनो उद्धार करेलो छे

विक्रमना समयथी तेरसें ने पंदरमे वर्षे ज्यारे मोटो दुकाळ पड्यो त्यारे कच्छ देशमां भद्रेश्वर नगरना रहवासी श्रीमाळी साहुकार जगडुशाहे एक सो ने बार

दानशाळाओ उघाडीने दान आप्यु हतुं कह्यु छे के "ते दुर्भिक्षमा हम्मीरने चार हजार मूडा, वीशळदेवने आठ हजार मूडा अने दिल्हीना बादशाहने एकवीश हजार मूडा धान्य जगडुशाहे आप्यु हतु " समृद्धिवाळा गृहस्थे भोजन समये दयादान विशेषे करवु अने निर्धनने यथाशक्ति दान आपवु. कह्यु छे के—

कुक्षिंभरी न कस्कोऽत्र, बह्वाधारा पुमान् पुमान् ।
ततस्तत्कालमायातान्, भोजयेद् बांधवादिकान् ॥ १ ॥

"पोतानु पेट भरनार तो कयो पुरुष नथी ? पण जे पुरुष घणाना आधाररूप होय छे ते ज पुरुष कहेवाय छे, तेथी भोजनकाळे आवेला बाधवप्रमुखने अवश्य भोजन आपवु."

ते उपर एक कथा छे के चित्रकूटमा चित्रागद नामे एक राजा हतो. एक वखते तेना किल्ला उपर शत्रुना सैन्ये घेरो नाख्यो हतो. ते वखते नगरमा शत्रुओना प्रवेशनो भय छता पण ते धार्मिक राजा भोजन वखते दरवाजा उघाडा राखतो हतो.

प्रारभना श्लोकना त्रीजा पादमा 'बाळक प्रमुखने जमाडीने पछी जमवु' एम कह्यु छे तेमा प्रमुख (विगेरे) शब्दथी बाळ, ग्लान, वृद्ध, मातापिता, पुत्रवधू, सेवकवर्ग अने गायप्रमुखने भोजन अथवा चारापाणी विगेरे उचित प्रमाणमा आपीने, पछी नवकार गणीने तथा पच्चख्खाण संभारीने भोजन लेवु, भोजन करवाना समयनु उल्लघन करवु नहि. कह्यु छे के—

याममध्ये न भोक्तव्यं, यामयुग्मं नो लघयेत् ।
याममध्ये रसोत्पत्तिः, यामयुग्मे बलक्षयम् ॥ १ ॥

"एक पहोरनी अदर जमवु नहि अने बे पहोरनु उल्लघन करवु नहि; कारण के पहेला पहोरमा जमे तो रसनी उत्पत्ति थाय छे अने बे पहोर सुधी न जमे तो बळनो क्षय थाय छे" वळी योग्य समये जमवु, तेमा पण चालती ऋतुने योग्य एवो आहार लेवो ते विषे कह्यु छे के–"शरद्ऋतुमा जे जळ पीवाय, पोष अने माघ मासमा जे खवाय अने जेष्ठ अने अशाड मासमा जे सुवाय तेनाथी ज मनुष्य जीवे छे" वळी कह्यु छे के–"वर्षाऋतुमा लवण अमृत छे, शरद्ऋतुमा जळ अमृत छे, हेमत ऋतुमा गायनु दूध अमृत छे, शिशिरऋतुमा आमळानो रस अमृत छे, वसतऋतुमा घी अमृत छे अने ग्रीष्मऋतुमा गोळ अमृत छे"

सर्व भोजन लोलुपता सिवाय करवु. ते विषे कह्यु छे के—

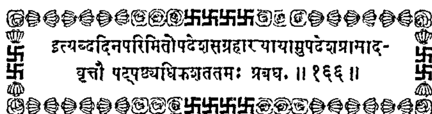
क्षणमात्रसुखस्यार्थे, लौल्य कुर्वन्ति नो बुधा ।
कठनाडीमतिक्रांत, सर्वं तदशन सम ॥ १ ॥

" प्राज्ञपुरुषो क्षणमात्रना सुखने माटे भोजननी लोलुपता करता नथी, कारण के कठनी नाडी अतिक्रम्या पछी तो सर्व भोजन सरखु ज छे " अधिक भोजन पण करवु नहि. अधिक भोजन कराथी अजीर्ण, वमन, विरेचन विगेरे रोग सुलभ थाय छे कह्यु छे के-" हे भीम ! जमवानु अने बोलवानु प्रमाण तु जाणी ले, कारण के अति आहार करवानु अने अति बोलवानु परिणाम दारुण थाय छे " वळी कह्यु छे के-" हितकारी, मित अने पक्व भोजन करनार, डाबे पडखे सुनार, हमेशा चालवानी टेववाळो, दस्त पिशावने नहि रोकनार अने स्त्रीना विषे मनने वश राखनार एवो पुरुष सर्वे रोगोने जीते छे " वळी कह्यु छे के-" आकाशमा (अगासे), तडकामा, अंधकारवाळी जग्यामा, झाडनी नीचे, स्मशानमा, पोताना आसन उपर ज बेठा बेठा, तर्जनी आंगळीने ऊंची करीने, डाबी नासिका वहेती होय त्यारे, केवळ भूमि उपर बेसीने अने जोडा पहेरीने कदी पण जमवु नहि, तेम ज टाढु थई गयेलु भोजनादि फरी ऊनु करावीने खावु नहि. "

श्री जिनदत्तसूरिए करेला विवेकविलास ग्रंथमा कह्यु छे के " एक ज वस्त्र पहेरीने, भीनु वस्त्र माथे वींटी राखीने, अपवित्रपणे अने अति लोलुपता राखीने सुज्ञ पुरुषे भोजन करवु नहि १ वळी मळमूत्रादिवडे अपवित्र थयेलु, गर्भादि हत्याना करनाराए जोयेलु, रजस्वला स्त्रीए अडकेलु अने गाय, श्वान के पक्षीओए बोटेलु वा सुंघेलु भोजन जमवु नहि २ वळी जळ पीवा विषे लखेलु छे के भोजननी पहेलां जळ पीवु ते विष तुल्य छे, भोजनने अंते पीवु ते शिला जेवु छे अने मध्ये पीवु ते अमृत जेवु छे ३ भोजन कर्या पछी सर्व रसे भरेला हाथवडे माणस प्रतिदिन जळनो एक चळु पीवो ४ जमीने ऊठया पछी जळथी आर्द्र एवा हाथवडे बे लमणाने, बीजा हाथने के नेत्रने स्पर्श करवो नहि, पण ढींचण उपर ज ते हाथ फेरववो ते श्रेयकारी छे ५ भोजन कर्या पछी डाबे पडखे बे घडी निद्रा वगर शयन करवु अथवा सो डगला चालवु ६ वळी भोजन समये अग्नि, नैऋत्य ने दक्षिण दिशा, सध्याकाळ, सूर्यचद्रना ग्रहणनी वेळा अने पोताना स्वजनादिकनु शब पड्यु होय ते वखत वर्जित करवो ७ भोजनमा, मैथुनमा, स्नान करवामा, वमनमा, दातण करवामा, मलोत्सर्ग वखते अने पेशाब करता बुद्धिमान् पुरुषे मौन राखवु ८ भोजन कर्या पछी नवकार मत्रनु स्मरण करीने ऊठवु "

आ प्रमाणे विधिथी करेलु भोजन प्रशसनीय छे तेथी तेवा ज विधिथी शुद्ध

आत्मावाळा गृहस्थे भोजन करवु अने पोताना आत्माने सेंकडो प्रकारवडे गृहिधर्मने विषे आरोपण करवो.



व्याख्यान १६७ मुं

दाननी प्रशंसा करे छे

पूर्वकर्मादिभिर्दोषैर्मुक्तं कल्पं शुभाशनम् ।
साधूनां पात्रसात्कृत्य भोक्तव्यं कृतपुण्यवत् ॥ १ ॥

भावार्थ.—

"पूर्वकर्मादि दोषथी रहित अने कल्पे तेवु उत्तम भोजन साधुओना पात्रमा आपीने पछी कृतपुण्यनी जेम भोजन करवु"

कृतपुण्यनी कथा

राजगृही नगरीमा श्रेणिक नामे राजा हतो. ते नगरमा धनेश्वर नामे सार्थवाह रहतो हतो तेने सुभद्रा नामनी स्त्री हती तेने कृतपुण्य नामे एक पुत्र थयो हतो. मातपिताए धन्या नामनी एक गृहस्थनी पुत्री साथे तेने परणाव्यो हतो, परंतु यौवनवय छतां कृतपुण्यने सत्पुरुषोना समागमने लीधे विषयथी विमुख देखीने तेना मातपिताए चिंतव्यु के 'कदी आ पुत्र दीक्षा लेशे तो पछी आपणी शी गति थशे?' आवु विचारी तेमणे पुत्रने भोगरसिक पुरुषोनी संगतिमा मूक्यो त्या जारपुरुषोना संयोगथी कृतपुण्य व्यसनी थई गयो. छेवटे एक वेश्यामा एवो आसक्त थई गयो के ते मातपिताने पण भूली गयो. मातपिता तेना उपयोग माटे हमेशा धन मोकलवा लाग्या. ए प्रमाणे वेश्याने घेर रहेता कृतपुण्यना एक क्षणनी जेम बार वर्ष चाल्या गया मातपिताए तेने वारवार तेडाव्यो, पण ते घरे आव्यो नहि. छेवटे वेश्याने घेर धन मोकलता तेनु सर्व धन नष्ट थई गयु अने एकदा अकस्मात् तीव्र ज्वर आववाथी कृतपुण्यना मातपिता मृत्यु पामी गया मात्र कृतपुण्यनी स्त्री धन्या एकली रही.

एक वखते वेश्यानी माता कुट्टिनीनी आज्ञाथी तेनी कोई दासी कृतपुण्यने घेर

धन लेवाने गई. त्या जीर्ण थडेने पडी गयेला घरमा ष्टत्री धन्याने दीठी. अनुमान वडे आ कृतपुण्यनी स्त्री हशे एवु धारी दासीए कह्यु-" सुदरी ! तारी पासेथी तारा स्वामी धन मगावे छे, मने ते माटे ज मोकली छे." धन्या बोली-" बाई ! हु मदभागी छु, मारी पासे धन क्या छे के हु मोकलु ? मारा सासु अने सासरा तो स्वर्गगामी थया छे, तो पण मारा पिताए आपेलु एक आभूषण मारी पासे छे ते तु लई जा अने मारा पतिने खुशी कर " एम कही ते आभूषण तेणीए दासीने आप्यु. दासी ते आभूषण लई वेश्याने घेर आवी अने कृतपुण्यने तेना घरनी स्थिति जणावी ते आभूषण आप्यु तेणे वेश्याने आप्यु आ उपरथी कुट्टिनीए तेने निर्धन थयेलो जाणी तेनु अपमान करवा माड्यु कुट्टिनीनी आज्ञाथी तेना सेवको पण कृतपुण्यनी सामे रज उडाडवा लाग्या ते जोई अनगसेना नामे वेश्यापुत्रीए पोतानी माता(अक्का)ने कह्यु-' हे माता ! आपणे आ पुरुषनु घणु धन खाई गया छीए, तो हमणा तेनी आवी विटबना केम करो छो ?' अक्का बोली-' पुत्री ! आपणो एवो ज कुलाचार छे ' आवो तेमनो वार्तालाप सामळी कृतपुण्य मनमा कचवातो सतो त्याथी नीकळी पोताना घर तरफ जवा चाल्यो.

पतिने दूरथी आवतो जोई धन्याए ऊभा थई, सामा आवी आसन आपवा आदिथी योग्य सत्कार कर्यो पछी पोताना घरनो सर्व वृत्तात तेणीए निवेदन कर्यो. ते सामळी कृतपुण्य चितवना लाग्यो-' अहो ! मारा जीवितने धिक्कार छे, में मारा मातपिताने दु खसागरमा फेंकी दीधा अने पूर्वे सचय करेला सर्व धननो पण विनाश कर्यो ' आ प्रमाणे पोताना पतिने पश्चात्ताप करता जोई धन्याए तेने सतोष पमाड्यो अने कह्यु-" स्वामीनाथ ! जे भावी होय ते थाय छे कह्यु छे के—

गते शोको न कर्त्तव्यो, भविष्यन्नैव चिंतयेत् ।
वर्त्तमानेन कालेन, वर्त्तयंति विचक्षणा ॥ १ ॥

" गई वस्तुनो शोक करवो नहि अने भविष्यनी चिंता करवी नहि विचक्षण पुरुषो वर्तमानकाळवडे ज प्रवर्ते छे " आवा प्रियाना वचन सामळी कृतपुण्य स्वस्थ थयो पछी पत्नीए आपेला द्रव्यवडे व्यापार करवा लाग्यो अनुक्रमे विलाससुख भोगवता धन्याने एक पुत्र थयो

एक वखते कृतपुण्ये लोकोना मुखथी एवु सामळ्यु के " धनेश्वरना पुत्र कृतपुण्ये पोताना कुळने कलकित कर्यु पोताना पितानु धन वेश्याना फदमा पडीने खाडामा नाखी दीधु तेनु काइ पण धन सुकृतमा गयु नहि " आवी लोकवाणी सामळी कृतपुण्ये पोतानी स्त्रीने कह्यु-" प्रिया ! हालमा कोई सार्थवाह अहीं आवेल छे

तेनी साथे अनेक देश जोवा अने धन उपार्जन करवा माटे हु जवा इच्छु छु. " आवा वचन साभळी कुलीन स्त्री धन्या बोली–' स्वामी ! आम काई पण लीधा विना खाली जवु आपने उचित नथी. ' पछी काईक करियाणु लावी आपी ते सार्थनी साथे पतिने जवा कह्यु अने कोई देवालयमा जई, मोदकनु भातु साथे आपी एक खाटला उपर तेने सुवाडी धन्या घेर आवी

आ अरसामा एवु बन्यु के ते नगरमा धनद नामनो कोई मोटो गृहस्थ रहेतो हतो. तेने चार स्त्रीओ हती अने रूपवती नामे तेनी वृद्ध माता हती. ते धनद अकस्मात् कोई तीव्र व्याधि थवाथी मृत्यु पाम्यो ते वखते तेनी माता रूपवतीए चारे वधूओने कह्यु–" तमारो पति पुत्रनगरनो मृत्यु पाम्यो छे एम जो आपणा राजाना साभळवामा आवशे तो ते आपणु सर्व धन लई लेशे, तेथी तमारे आ वखते बिलकुल रुदन करवु नहि, गुप्त रीते आ शबने भूमिमा क्षेपवी देवु अने ज्या सुधी तमने पुत्र थाय त्यां सुधी बीजो पुरुष सेववो " चारे स्त्रीओए तेम करवा कबूल कर्यु. एटले रूपवती चारे वधूओने लईने कोई योग्य पुरुषने शोधवा नीकळी त्या देवालयमा सूतेलो कृतपुण्य तेमना जोवामा आव्यो, एटले तेने सूतो ने सूतो उपाडी घरमा लई आव्या.

कृतपुण्य जागी ऊठयो, एटले रूपवती तेना कठे वळगी रोवा लागी अने बोली– " वत्स ! तारी माताने छोडी तु आटला बधा दिवस क्या हतो ? हमणा तारो ज्येष्ठ बंधु मृत्यु पामी गयो छे, तेथी हे पुत्र ! हवे तारे बीजे क्याई जवु नहि. तु स्वेच्छाथी तारा बधुनी स्त्रीओ साथे भोग भोगव. " कृतपुण्य विचारमा पड्यो के 'आ शु ? पण हवे जे भावी होय ते थाओ. अत्यारे तो आ स्वर्गनु सुख प्राप्त थयु छे ते भोगवु.' आवु चिंतवी ते बोल्यो–"माता ! हु बधु भूली गयो हतो हमणा पुण्ययोगे मने मातानु दर्शन थयु छे तो तमारी आज्ञा हु माथे चडावु छु " पछी ते चारे स्त्रीओनी साथे अनेक प्रकारना सुख भोगववा लाग्यो तेम करता त्या बार वर्ष वीती गया. अनुक्रमे चारे स्त्रीओने पुत्र थया

अन्यदा पेली वृद्ध रूपवतीए पोतानी वहुओने कह्यु–" हवे तमारे सर्वने पुत्र थया छे, माटे जे स्थानेथी आ पुरुषने लाव्या छो त्या तेने पाछो मूकी द्यो परपुरुषनो वधारे विश्वास करवो योग्य नथी. " स्त्रीओने ए वात अनिष्ट हती, पण सासुना भयथी तेम करवा कबूल कर्यु. पछी ते स्त्रीओए कृतपुण्यने एक माचा उपर सुवार्यो अने स्नेहने लीधे एकेक बहु मूल्यवाळु रत्न नाखीने चार मोदक तेना वस्त्रने छेडे बाध्या, पछी तेने निद्रामा ज पूर्वना स्थाने मूकी आवी

दैवयोगे पेलो सार्थवाह ते ज दिवसे त्या आवीने ऊतर्यो पतिने आवेली जाणी

तेनी पूर्वप्रिया धन्या त्या आवी तेणीए पूर्वनी जेम पतिने सूतेलो जोयो थोडी वारे ते जाग्रत थयो, एटले पुत्र सहित पोतानी पत्नीने जोइ ते चिंतवया लाग्यो-'अहो! स्वप्ननी जेवु आ शु? आ तो मोटु आश्चर्य थयु छे मने अहीं कोई देवताए के मनुष्ये मूक्यो जणाय छे' पछी पत्नीना वचनथी ते पोताने घेर आव्यो प्रियाए हसता हसता पूछ्यु-'प्राणेश! विदेशमा जइने शु कमाइ आव्या?' कृतपुण्य लज्जाथी मौन धरी रह्यो पछी पुत्रने पेलामाथी एक मोदक आप्यो पुत्र ते लईने निशाळे गयो त्या मोदक खाता तेमाथी रत्न नीकळ्यु, राइ कंदोईए ते जळकांत रत्न छे एम जाणी थोडीक सुखडी आपी तेने ठगीने लई लीधु अने छुपाव्यु कृतपुण्य पण बाकीना मोदकमाथी रत्न नीकळता सुखी थयो

आ अरसामा एक दिवस श्रेणिक राजानो सेचनक नामनो हाथी गंगानदीमा जळ पीवा गयेल त्या तेने कोइ जळतंतुए पकड्यो राजा श्रेणिकने सेवके ते खबर आपी, एटले राजाए अभयकुमारने कह्यु बुद्धिमान् अभयकुमारे हाथीने छोडाववा जळकांत मणिनी शोध कोशागारमा करावी, पण तेमा तेवो मणि मळ्यो नहि. पछी नगरमा पडह वगडाव्यो के "जे कोइ जळकांत मणि लावशे तेने अर्ध राज्य सहित राजपुत्री आपवामा आवशे" ते वखते पेला कंदोईए पडह ग्रहण कर्यो अने जळकांतमणि राजाने आप्यो अभयकुमारे ते मणि गंगामा हाथीनी पासे मूक्यो, एटले तेना संयोगथी जळना बे विभाग थइ गया तेथी पेलो जळतंतु हाथीने छोडी नासी गयो अने हस्ती छूटो थयो राजा श्रेणिक सेचनक उपर चडी राजमहेलमा आव्या पछी एकांत अभयकुमारने कह्यु के 'आ कंदोईने राजपुत्री शी रीते अपाय?' अभयकुमारे कह्यु-' जेनु आ रत्न छे ते पुरुषने हु शोधी काढीश' पछी अभयकुमारे ते कंदोइने बोलावीने पूछ्यु-' सत्य कहे, आ रत्न तने क्याथी मळ्यु? जो सत्य नहि कहे तो तारी उपर कोरडाना प्रहार पडशे, जेथी तु मरण पामीश' कंदोईए भयथी सर्व वात खरेखरी जणावी दीधी, एटले राजा श्रेणिक कृतपुण्यने बोलावी, अर्ध राज्य साथे पोतानी पुत्री मनोरमा आपी अने कंदोईने पण काईक द्रव्य आपी तेनु सन्मान कर्यु

' एकदा कृतपुण्ये अभयकुमारने चार वर्ष पहेला जे वार्ता बनी हती ते जणावी के 'मंत्रीराज! आ नगरीमा मारी चार पुत्रो सहित चार पत्नीओ रहे छे तेमने हु दीठे ओळखु छु, पण तेमना निवासगृहने हु जाणतो नथी' अभयकुमारे कह्यु-'तेमने हु शोधी आपीश' पछी मंत्रीए प्रवेश करवाना अने नीकळवाना बे जुदा जुदा द्वारवाळो एक प्रासाद कराव्यो तेनी मध्यमा कृतपुण्यना जेवी आकृतिवाळी लेपनी यक्षप्रतिमा स्थापित करी पछी नगरमा एवो पटह वगडाव्यो के "शहरनी

पुत्रवाळी तमाम स्त्रीओए पोताना पुत्रो सहित आ यक्षनी प्रतिमाने नमन करवा आववुं." तत्काळ नगरनी स्त्रीओ पोतपोताना पुत्रो लई यक्षना दर्शन माटे आववा लागी अने एक द्वारथी प्रवेश करी बीजे द्वारे नीकळवा लागी आ समये पेली रूपवती वृद्धा पण पुत्र सहित चार वधूओने लई यक्षप्रतिमाने नमवा आवी. तेमने ओळखी कृतपुण्ये अभयने कह्यु, तेवामा तो पेला चार पुत्रो यक्षनी आकृति जोई पोताना पिता छे एम जाणी 'हे तात ! हे तात ! ' एम कहेवा लाग्या अने कोई तेना उदरने वळगी पडयो ने कोइ तेनी दाढी मूछ पकडवा लाग्यो ते समये अभये कह्युं-'हे कृतपुण्य ! आ तारा पुत्रो अने आ तारी पत्नीओ ' पछी अभयकुमार रूपवतीने घेर गया अने तेनुं सर्वस्व कृतपुण्यने आप्यु त्यारबाद अगसेना वेश्या पुत्रीने पण त्या बोलावी एवी रीते कृतपुण्यने सात स्त्रीओ थई

एक वखते जगद्बन्धु श्रीवीरप्रभु त्या समवसर्या. कृतपुण्य जगदीशने वादवा गयो. सर्वज्ञ प्रभुनी धर्मदेशना साभळी छेवटे कृतपुण्ये अजलि जोडीने पूछ्यु-'भगवन् ! मारे कया कर्मना उदयथी सपत्ति अने विपत्ति वचे वचे प्राप्त थई ?' प्रभु बोल्या-" कृतपुण्य ! तारो पूर्वभव साभळः—

श्रीपुर नगरमा एक निर्धन गोवाळनो पुत्र रहेतो हतो. एक दिवसे घेरघेर खीरना भोजन थता जोई तेणे पोतानी मातानी पासे तेनी याचना करी गरीब माताना घरमा खीर बनी शके तेम न होवाथी ते रुदन करवा लागी. तेने रोती जोई पाडोशीनी दयाळु स्त्रीओए दूध विगेरे खीरनी सामग्री लावी आपी. ते वडे गरीब माताए खीर राधी पुत्रने पीरसी अने पोते कोई कार्य माटे बहार गई तेवामां मासखमणने पारणे कोई वे मुनि त्या आवी चड्या तमने जोई उल्लास सथी ते गोपालपुत्रे खीरनो एक भाग आप्यो, ते थोडो जाणीने पछी बीजो भाग आप्यो, वळी तेवी ज रीते त्रीजो भाग पण आप्यो ए प्रमाणे त्रण वार आपी, काळयोगे मृत्यु पामी ते वत्सपालनो पुत्र अहीं तु थयेल छु पूर्वभवे तें त्रण वार रही रहीने दान आप्यु, तेथी तने आ भवमा आतरे आतर सपत्ति अने विपत्ति प्राप्त थयेल छे."

आ प्रमाणे पूर्वभव साभळी कृतपुण्यने जातिस्मरण थयु, एटले तेणे पोतानो पूर्वभव जोयो तत्काळ वैराग्य उत्पन्न थवाथी ज्येष्ठ पुत्रने गृहनो भार आपी तेणे दीक्षा लीधी अने तीव्र तप तपी ते पाचमा देवलोके गयो त्याथी च्यवी मनुष्य थइने छेवटे मोक्षे जशे.

" विलंब विना शीघ्र श्रावके स्वशक्ति अनुसार मुनिओने दान आपवु, कारण के वत्सपाळनो जीव कृतपुण्य दानना प्रभावे अपूर्व संपत्ति पाम्यो अने अनुक्रमे मोक्षे जशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ सप्तषष्ट्युत्तरशततमः प्रबंध. ॥ १६७ ॥

व्याख्यान १६८ सुं

भोजन वखते मुनिने संभारीने दान देवु

भोजनसमयेऽवश्य, सस्मार्या मुनिसत्तमा ।
ततो भोजनमश्नीय, धनावहाख्यश्रेष्ठिवत् ॥ १ ॥

भावार्थ.-

" भोजन वखते उत्तम मुनिओने अवश्य संभारवा अने ते पछी धनावह श्रेष्ठीनी जेम भोजन लेवु. "

धनावह श्रेष्ठीनी कथा

एक वखत प्रथम तीर्थंकरना जीव धनावह सार्थवाह घणा सार्थनी साथे ग्रीष्म ऋतुमा प्रयाण कर्युं मार्गमा मोटी मेघवृष्टि थवाथी बधी पृथ्वी कादवथी आकुळ थई गई, तेथी मार्गनी अंदर ज पडाव करीने सार्थवाह रह्यो तेनी साथे धर्मघोषसूरि आवेला हता तेओ पण त्या योग्य स्थळे रह्या सार्थना लोको खोराकी खूटी जवाथी वनमाथी मूळ, फळ लावी खाईने तापसनी जेम रहवा लाग्या

एक वखते धनावह श्रेष्ठी सर्वने संभारी भोजन करवा बेठा तेवामा तेने सूरिनु स्मरण थइ आव्यु धनावह चितव्यु के " अहो ! मने धिक्कार छे आजे पंदर दिवस थया में सूरिजीने बिलकुल संभार्या नथी ए मुनीश्वर अप्रासुक, अपक्व अने तमने उद्देशीने करेलु वहोरता नथी, तेथी एमनो निर्वाह केवी रीते चालतो हशे ? " आम विचारी तत्काळ सूरि पासे जई वंदना करीने कह्यु-' स्वामी ! आजे प्रसन्न थईने मारी साथे मुनिओने वहोरवा मोकलो ' सूरिए धनावहनी साथे बे मुनिने मोकल्या श्रेष्ठीए तेमने निर्दोष एवु पुष्कळ घी घणा हर्षथी वहोराव्यु सर्व मुनिओए तेवडे मासक्षपणनु पारणु कर्युं ते पुण्यथी धनावह श्रेष्ठीए तेरमे भवे तीर्थंकर पदनो निर्धार कर्यो "नैयलोको घीने आयुष्य कहे छे ते खोटु नथी, कमके तेना दानथी धनावह सार्थवाहे पोतानु आयुष्य शाश्वत कर्युं "

त्याथी धनावह युगलियामा उत्पन्न थई सौधर्म देवलोके देवता थयो त्याथी चवी महाबळ नामे विद्याधरेंद्र थयो त्याथी ललितांग देव थयो. त्याथी चवी वज्रजंघ राजा थयो पाछो फरी वार युगलिक थयो. त्याथी पहेले देवलोके गयो. त्याथी चवी महाविदेह क्षेत्रमा जीवानंद नामे वैद्य थयो. तेने चार मित्रो हता एकदा तेओ वैद्यने घेर बेठा हता, तेनामा कोई साधुने कुष्टरोगी जोई तेओए वैद्यने कह्यु–' आ मुनिनी चिकित्सा करो ' वैद्ये कह्यु–' मारी पासे लक्षपाक तेल छे, बाकी रत्नकबळ अने गोशीर्षचदन तमे लावी आपो तो हु चिकित्सा करु. ' पछी ते पाचे मळीने कोई वणिकनी दुकाने गया अने ते वस्तुओ तेनी पासे मागी. ते वणिके ते मूल्य विना आपी. ते पुण्यथी ते वणिक ते ज भवे सिद्धिपदने पाम्यो. अहीं पाचे मित्रो मळीने मुनि पासे गया. प्रथम लक्षपाक तेलवडे मुनिना अगने मर्दन कर्यु. पछी रत्नकबलथी तेमने आच्छादित कर्या, एटले शरीरमाथी नीकळी तमाम कृमीओ तेमा भराई गया. पछी गोशीर्षचदननो लेप कर्यो. एवी रीते त्रण वार करवाथी मुनिनो रोग मूळमांथी नष्ट थयो. पेला कीडाओ तेमणे मृतगायना कलेवरमा मूक्या. ' दयाळु पुरुषो ते कीडाओने पण निराश केम करे ? ' पछी रत्नकबळ ने वधेलु गोशीर्षचदन ए बे वस्तुओ वेची तेना उत्पन्न थयेला द्रव्यवडे अति उन्नत जिनप्रासाद कराव्यो. आयुक्षये काळ करीने ते पाचे जणा बारमा देवलोके गया त्याथी च्यवी जीवानद वैद्यनो जीव चक्रवर्ती थयो अने बीजा चार बाहु, सुबाहु, पीठ ने महापीठ नामे चक्रीना अनुज बधुओ थया पछी ते सर्वे सर्वार्थसिद्ध विमाने गया. त्याथी चवी धनावहनो जीव ऋषभप्रभु थया, बाहुनो जीव भरत थयो, सुबाहुनो जीव बाहुबळ थयो अने पीठ तथा महापीठना जीव ब्राह्मी अने सुदरी थया. पूर्वभवमा दभयुक्त तपस्या करवाथी तेओ स्त्रीपणाने पाम्या.

आ दृष्टातनु विशेष वर्णन जाणवु होय तो प्राचीन आचार्यना रचेला अढार हजार श्लोकना प्रमाणवाळा दर्शनरत्नाकर नामना ग्रथमाथी जाणी लेवु.

" एवी रीते विधि सहित एक वार दान आपवाथी धनावह सार्थवाह तेरमे भवे उज्वळ तीर्थंकरपदने पाम्या "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टषष्ठ्यधिकशततमः प्रबंध ॥ १६८ ॥

व्याख्यान १६९ मुं

जैन राजाओनो दानविधि कहे छे

राजपिंड न गृह्णाति, आद्यांतिमजिनर्षयः ।
भूपास्तदा वितन्वति, श्राद्धादिभक्तिमन्वह ॥ १ ॥

भावार्थ.—

" पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना मुनिओ राजपिंड ग्रहण करता नथी, तेथी ते वखतना जैन राजाओ हमेशा श्रावक विगेरेनी भक्ति कर छे. " आ हकीकतने श्री कुमारपाळ राजानी कथावडे दृढ कर छे

कुमारपाळ नृप कथा

एक वखते श्रीहेमचंद्रसूरिए कुमारपाळ राजानी पासे ' मुनिओने राजपिंड कल्पतो नथी ' ते विषे वर्णन कर्युं. ते सांभळी राजाए आचार्यने पूछ्युं-" भगवन् ! जो मारा घरनुं अन्न जैनमुनि स्वीकार नहि तो पछी मारा वाग व्रत पूरा शी रीते थाय ? अने हु उत्तम श्रावक केम थई शकु ? माटे आप गुरुमहाराजा मारा घरनो आहार स्वीकारो " आचार्य बोल्या-" हे सोलंकी नरेश ! पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना मुनिओने राजपिंड कल्पतो नथी, पण हे राजा ! तमारे श्रावक विगेरेनु पोषण करवु पूर्वे पण श्री नाभिराजाना पुत्र ऋषभदेव ज्यारे अष्टापद गिरि उपर समवसर्या, त्यारे भरते पांचसो गाडा विविध जातना पकवानोना भरी प्रभुने आमत्रण कर्युं हतु प्रभुए तेनो निषेध कर्यो, एटले भरतने बहु खेद थयो. ते अवसरे इंद्रे प्रभुने पूछ्युं-' भगवन् ! अवग्रह केटला प्रकारनो छे ? ' प्रभु बोल्या-" इद्र ! अवग्रहना पाच प्रकार छे देवेंद्रावग्रह, राजावग्रह, गृहपत्यवग्रह, सागारिकावग्रह अने साधर्मिकावग्रह अहीं राजावग्रहमां भरतचक्रीने ग्रहण करवा, ग्रहपत्यवग्रहमा मंडलिक राजा लेवा, सागारिकावग्रहमा जेनी वस्ती वापरीए ते शय्यातर लेवो अने साधर्मिकावग्रहमा साधर्मिक एटले संयमी लेवो ए पांच अवग्रहोमा उत्तरोत्तर अवग्रहथी पूर्वपूर्वनो बाध समजवो जेम राजावग्रहवडे इंद्रावग्रह बाधित थाय छे, अर्थात राजानो अवग्रह स्वामी इद्रना अवग्रहनु प्रयोजन थोडु रहे छे " आवा वचन सांभळी इद्र बोल्या-" जे आ मुनिओ मारा अवग्रहमा विचरे छे तेमने मे अवग्रहनी आज्ञा आपेली छे " पछी भरते चिंतव्युं के ' हु पण मुनिओने अवग्रहनी अनुज्ञा आपु, एटलाथी ज मारी कृतार्थता थाओ ' एम विचारी भरते पोताना अवग्रहनी अनुज्ञा आपी. पछी

लावेला पकानो निषे भरते इंद्रने पूछ्यु.' एटले इंद्रे कह्यु-'हे भरत! तमे जे आ पाचमो गाडा भात पाणी लाव्या छो ते वडे तमाराथी अधिक गुणवाळा श्रावकोनी पूजा (भक्ति) करो.' एटले भरते श्रावकोने बोलावीने कह्यु-"तमारे हमेशा मारे घेर भोजन करवु, कृषि विगेरे काई करवु नहि अने मारा घर पासे आवीने मने कहेवु के-

जितो भवान् वर्द्धते भीः, तस्मान्मा हन मा हन ॥

"तु जितायो छे, भय वधे छे, माटे हणीश नहि, हणीश नहि." भरतना कहेवा प्रमाणे ते श्रावको करवा लाग्या. अहीं भरत सुखमा मग्न थयो छे, परतु हमेशा ते श्रावकोना पूर्वोक्त वचन साभळ्या पछी विचारतो के 'हु कोनाथी जितायो छु?' अज्ञान अने कषायोथी जितायो छु. वळी 'भय वधे छे' एटले तेओनाथी ज भय वधे छे तेथी आत्माने हणवो नहि, आवु चिंतवी भावनवडे निःस्पृह एवा देवगुरुनी ते स्तुति करतो हतो.

आ प्रमाणे निरतर चालवाथी भोजन करनारा लोको वधी पडवाने लीधे रसोया राधवामा कायर थई गया. एटले तेओए भरत राजापासे आवीने कह्यु-'आ जमनाराओमा कोण श्रावक छे अने कोण श्रावक नथी ते जाणवामा आवतु नथी' ते साभळी भरते कह्यु-'तेमने श्रावकना चार व्रत पूछीने पछी भोजन आपवु.' पछी तेमने ओळखवाने माटे राजाए काकिणी रत्नवडे त्रण त्रण लीटा तेमना शरीर पर कर्या अने तेवा चिह्नवाळा, तथा चार व्रतरूप चार तिलक करनारा अने भरते करेला चार वेदने जाणनारा जे होय तेने श्रावक जाणवा एम बधे प्रसिद्ध करवामा आव्यु. पाछा छ मास थया एटले जे बीजा नवा श्रावको थया तेने पण तेवी ज रीते काकिणी रत्नवडे लाछन करवा लाग्या.

भरतचक्री पछी तेमना पुत्र आदित्ययशाए श्रावकोने ओळखवाने माटे सुवर्णनी यज्ञोपवीत पहेरावी. ते पछी महायशा विगेरे जे राजाओ थया तेमणे प्रथम रूपानी यज्ञोपवीत करावी अने पछी केटलाएक विचित्र पट्टसूत्र विगेरेनी यज्ञोपवीत करावी त्यारथी यज्ञोपवीतनी प्रसिद्धि थई, ते अद्यापि चाले छे

इत्यादि सर्व स्वरूप श्रीहेमचद्रसूरिए कुमारपाळ राजानी आगळ जणावीने कह्यु-'हे राजा! तमारे बारमा व्रतमा साधर्मिवात्सल्य करवु योग्य छे' पछी कुमारपाळे ज्यासुधी पोतानी आज्ञा चालती हती त्यासुधीमा रहेनारा श्रावकोना उपरथी तमाम कर माफ कर्यो, जे करवडे प्रतिवर्ष बोतेर लाख द्रव्य उपार्जन थतु हतु वळी तेणे साधर्मी बधुओना उद्धार माटे चौद कोटी द्रव्यनो व्यय कर्यो

पारणाने दिवसे पोते करावेला श्रीत्रिभुवनपाळविहार नामना प्रासादमा स्नात्रमहोत्सवना अवसर जे साधर्मीओ एकठा थता तेओनी साथे कुमारपाळ भोजन करता हता भोजन वखते हमेशा दीन, दुःखी, अनाथ अने क्षुधार्त्तोने अनुकंपादान देवा माटे पडह वगडावता अने तेमने अन्नदान आपीने पछी भोजन लेता हता तेमणे घणी दानशाळाओ स्थापी हती

कह्यु छे के "राजा कुमारपाळ घी, भात, मग, मांडा, शाक, वडा, वडी अने तीखा वघारीआ पदार्थो विगेरे श्रावकोने सत्कारपूर्वक जमाडता हता, दुःखी श्रावकोना कुटुंबने श्रेष्ठ वस्त्रो आपता हता अने जैनधर्मने विषे रहीने तेमणे अनेक दानशाळाओ स्थापी हती"

"आवी रीते श्रावकना बारमा व्रतमा ऊंचे प्रकारे साधर्मिकभक्तिने विस्तारता एवा कुमारपाळ राजाए संप्रति राजा अने भरतादिक राजाओनु स्मरण कराव्यु हतु."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकोनसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १६९ ॥

व्याख्यान १७० मुं

साधर्मिनी सेवानु फळ कहे छे

साधर्मिवत्सले पुण्यं, यद्भवेत्तद्वचोऽतिगम् ।
धन्यास्ते गृहिणोऽवश्यं, तत्कृत्वाश्नंति प्रत्यहं ॥ १ ॥

भावार्थ.—

"साधर्मिवात्सल्य करवामा जे पुण्य थाय छे ते वचनथी कही शकाय तेवु नथी जे गृहस्थो हमेशा साधर्मिवात्सल्य करीने जमे छे तेओने धन्य छे."

विस्तारार्थ.—

साधर्मिवात्सल्य एटले पोताना पुत्रादिकना जन्मोत्सवमा अथवा विवाह प्रमुख बीजा प्रसंगोमा साधर्मीओने निमंत्रण करी विशिष्ट भोजन आपी तांबूलनु दान आपवु अने कोई साधर्मी आपत्तिमा मग्न थयेल होय तो तेनो पोताना धननो व्यय करी उद्धार करवो कह्यु छे के—

न कय दीणुद्धरण, न कय साहम्मियाणवच्छलं।
हियर्यमि वियराओ, न धारिओ हारिओ जम्मो ॥ १ ॥

" जेणे दीनजनोनो उद्धार कर्यो नहि, साधर्मिवात्सल्य कर्युं नहि अने हृदयमा श्रीवीतरागप्रभुने धार्या नहि ते पोतानो जन्म हारी गयो " वळी धर्ममा सीदाता लोकोने ते ते प्रकारे स्थिरता कराववी जेओ धर्ममा प्रमादी थया होय तेमने धर्म संभारी आपवो जेओ अकार्यमा प्रवर्तता होय तेओने तेमाथी वारवा अने शुभ कार्यमा प्रवर्तवानी प्रेरणा वारवार करवी. कह्यु छे के–" प्रमादीने धर्मकार्य संभारी आपवु ते सारणा, अनाचारे प्रवर्त्तताने वारवा ते वारणा, धर्मथी भ्रष्ट थयेलाने तेना अकार्यनु माठु फळ समजाववु ते चोयणा अने निष्ठुर थई गयेलाने धिक्कार आपवो ते पडिचोयणा समजवी " तेम ज पाच प्रकारना स्वाध्याय विगेरेमा पण जेनो जेम घटे तेम विनियोग करवो धर्मानुष्ठान विशेषे थई शकवा माटे साधारण पौषधशाला विगेरे स्थानो कराववा तथा श्रावकोनी जेम पुण्यवान् गृहस्थे श्राविकाओनु पण वात्सल्य करवु. जे श्रावकोनो वैभव अतराय कर्मना दोषथी क्षय पाम्यो होय तेवा श्रावकोने पुन. धनाढ्य करवा साभळीए छीए के थरादना निवासी श्रीमाळी आभु नामना सघपतिए त्रणसो ने साठ साधर्मीओने पोतानी जेवा धनाढ्य कर्या हता. साहित्यमा कह्यु छे के " ते हेमगिरि अथवा रजताद्रि शा कामना के जेणे पोताना आश्रित वृक्षोने पोतारूप कर्या नहि, अमे तो एक मलयाचळने ज मान आपीए छीए के जेना आश्रित एवा आम्र, निंब अने बीजा कुटवृक्षो पण चदनरूप थई जाय छे."

श्री संभवनाथ प्रभुए पोताना पूर्वना त्रीजा भवमा धातकीखडना ऐरवत क्षेत्रमा क्षेमापुरी नगरीने विषे विमलवाहन नामे राजा थई, मोटो दुकाळ पडता, साधर्मी जनोने भोजन आपवावडे तीर्थंकरनामकर्म बाध्यु हतु पछी ते दीक्षा लई आनत देवलोके देवता थई संभव नामे तीर्थंकर थया हता. तेओ फाल्गुन मासनी शुक्ल अष्टमीए अवतर्या, ते वखते मोटो दुष्काळ हतो, पण तेमना जन्मथी ते ज दिवसे सर्व तरफथी धान्य आवी पहोंच्यु अने नवा धान्यनो संभव थयो तेथी तेमनु नाम संभव एवु पाड्यु इत्यादि दृष्टातोथी साधर्मिवात्सल्यनु पुण्य वचनथी कही शकाय तेवु नथी, तेथी जे गृहस्थो प्रतिदिवस ते आचरीने पछी भोजन करे छे तेओने धन्य छे. ते विषे भरतचक्रीना वशमा थयेला त्रण खडना अधिपति दडवीर्यनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

राजा दडवीर्य हमेशा प्रथम साधर्मिकने भोजन करावीने पछी जमतो हतो एक वखते तेनी परीक्षा करवाने माटे इन्द्रे [illegible] वर्णव्या छे तेवा कोटीगमे श्रावको तीर्थयात्रा

फरीन आवता विदुरेंनि दडवीर्यने बनाव्या. राजाए भक्तिपूर्वक तेमने निमंत्रण करीने जमाडवा माड्या. भोजन करावता करावता सूर्य अस्त थइ गयो. बीजे दिवसे पण एम थयुं. एम करता राजा दडवीर्यने आठ उपवास थया, तथापि तेनो भक्तिभाव ओछो थयो नहि पण उलटो वृद्धि पाम्यो. राजाना एवी शुद्ध वृत्ति जोईने इन्द्र संतुष्ट थया, तेथी तेणे तेमने दिव्य धनुष्य, बाण, रथ, हार अने बे कुंडल आप्या. ते साथे शत्रुंजयनी यात्रा करवा अने तीर्थनो उद्धार करवा आज्ञा आपी. राजा दडवीर्ये पण तेम कर्युं. आ विषे विशेष जाणवुं होय तो शत्रुंजयमाहात्म्यमाथी जाणी लेवुं.

आ विषय उपर शुभंकर श्रेष्ठीनी बीजी कथा पण समजाय छे ते आ प्रमाणे—

शुभंकर श्रेष्ठी पोताना जन्ममा एक लाख ज्ञातिजमन भोजन, एक लाख कन्यादान, एक लाख गोदान अने एक लाख ब्राह्मणोने भोजन एम चार लाख पूरा करी मृत्यु पाम्यो. मृत्यु पामीने पोताना घरनी भूमिमा दाटेलु द्रव्य दाटेलु हतु त्यां सर्प थयो पछी दररोज पोताना पुत्रोप्रत्ये फुंफाडा मारवा लाग्यो. तेना घरनी पडखे धर्मदास नामे एक श्रावक हतो. ते शुभंकर श्रेष्ठीना जेवा धनवान् नहोतो. तेथी वर्षमां एक वार एक मुनि, एक साध्वी, एक श्रावक अने एक श्राविकाने भावपूर्वक दान आपतो हतो. ते पुण्यथी तेने अवधिज्ञान प्राप्त थयु हतु. एक दिवस शुभंकर श्रेष्ठीना पुत्रोए पोताने सर्प बीवरावे छे ए वात धर्मदासने जणावी. तेथी धर्मदासे ते पुत्रोने कह्यु-' ए सर्प तमारो पिता छे. तेणे पूर्वभवे लक्ष ज्ञातिभोजन विगेरे करी पदरशयनो आरंभ करेलो छे. ज्ञातिभोजन करावता अनेक पतरावळीओना ढगला उकरडा उपर थया, तेमा द्वींद्रिय विगेरे अनेक जीवोनी विराधना थयेली छे. ए प्रमाणे चारे लाखनु दान करवा तेणे महापाप उपार्जन करेलु छे ते तमे स्वयमेव समजी लेजो. ते पापथी आ भवमा ते सर्प थयेल छे, तेम ज वळी तेणे मारा धर्मकृत्योनी निंदा करी छे तेथी ए दुर्लभबोधी जीव छे. अहींथी मृत्यु पामीने ते नरके जशे.' आवा धर्मदासना वचन सांभळी शुभंकर श्रेष्ठीना पुत्रो प्रतिबोध पाम्या अने श्रावक थया. धर्मदास ते ज भवे मुक्तिने पाम्या.

" पोताना त्रीजा भवमा श्रीसमरनाथनो जीव, श्रीदडवीर्य राजा अने धर्मदास साधर्मीबंधुओनी सेवाथी परम सुखना स्थानने प्राप्त थया."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७० ॥

व्याख्यान १७१ मुं

पोषधशाळा करवानु फळ कहे छे

पुण्याय कुर्वते धर्मशालादि ये जनाः सदा ।
तेषां स्याद्विपुल पुण्यमामभूमिपतेरिव ॥ १ ॥

भावार्थः—

" जेओ हमेशा पुण्यप्राप्तिने माटे धर्मशाळा विगेरे करे छे तेओने आम राजानी जेम घणु पुण्य थाय छे "

आम राजानी कथा

गोपगिरिने विषे श्री बप्पभट्टसूरिना प्रतिबोधथी श्री आम राजाए एक सहस्र स्तभवाळी पौषधशाळा करावी हती ते पौषधशाळाने साधु अने श्रावकोनी सुगमताने माटे प्रवेश अने निर्गमना त्रण उत्तम द्वार कराव्या हता तेमा दूर भागे पट्टशालमा बेठेला साधुओने पडिलेहण तथा स्वाध्याय विगेरे सात मडलीनी वेळा जणाववा माटे मध्यस्तभे एक मोटी घटा बाधी हती, जेनो टकारव ते ते वेळाए थतो हतो ते शालामा व्याख्यानमडप त्रण लाख द्रव्य खर्चीं करवामा आव्यो हतो ते ज्योतिरूप मणिमय शिलाओथी आच्छादित हतो अने चद्रकात मणिथी तेनु तळीउ बाधेलु हतु, तेथी बार सूर्यना जेवु तेज पडतु हतु, एटले रात्रे पण सर्व अधकार हणावाथी पुस्तकना अक्षर वाची शकाता हता. आ प्रमाणे सूक्ष्म अने बादर जीवोनी अविराधना थवा माटे तेणे महातेजस्वी उपाश्रय कराव्यो हतो

आ विषे बीजी पण एक दृष्टातरूप कथा छे पाटणमा सिद्धराज जयसिंहना सर्व व्यापारनो उपरी अधिकारी, पाच हजार अश्वोनो स्वामी श्रीमाळज्ञातिनो सातू नामे मत्री हतो. ते स्याद्वादरत्नाकरग्रथना कर्ता श्री वादिदेवसूरिनो भक्त हतो तेणे चोराशी हजार टकारव द्रव्य खर्चीने राजमहलना जेवु एक अपूर्व घर कराव्यु तेनी सुदर शोभा जोवाने लोकोना टोळेटोळा आववा लाग्या एक वखते तेणे पोतानु घर गुरुने बताव्यु, पण गुरुए तेनी श्लाघा करी नहि, त्यारे मत्रीए तेनु कारण पूछयु, एटले सौभाग्यनि गान नामना क्षुल्लके कहु—

खडनी पेषणी चूल्ही, जलकुभ प्रमार्जनी ।
पचैते यत्र विद्यन्ते, तेन नो वर्ण्यते गृह ॥ १ ॥

" जेमा खांडणीओ, घंटी, चूलो, पाणीआरु अने मारणीं ए पाच खाना होय छे तेवु आ घर छे, माटे तेनी प्रशंसा करी नहि. " वळी ' सुघरी, कागडा, चकलाप्रमुख अनेक पक्षीओ पण यत्नथी पोतानु घर तो करे छे, तेमा कांई तेने पुण्य थतु नथी. ' माटे मंत्रीराज ! जो आवी पौषधशाला होय तो उत्तम वात कहवाय; कारण के ते धर्मनी हेतुरूप छे अने बीजा घर तो पापना हेतुरूप छे, तेथी गुरुजीए प्रशंसा करी नहि वळी हे मंत्री ! घर, मकेरर, विवाहादि प्रसंग अने युद्ध ए सर्व आरंभथी थाय छे, माटे ते सर्वनी प्रशंसा करवी मुनिने योग्य नथी "

आ प्रमाणे सांभळी मंत्रीए विचार्यु के " साधु ोने वसतिदान करवाथी मोटु पुण्य थाय छे पूर्वे पण जयंती श्राविका, वंकचूल अने अवंतिसुकुमाल विगेरे वसति दान करवाथी इच्छित स्थानने प्राप्त थयला छे वळी मेघकुमार एक क्षुद्र जीव (ससला)ने स्थान आपवाथी मोटा सुखने पाम्यो छे तो आ मुनिओ तो सर्व जीवोने अभय आपनारा छे तेमने वसतिदान करवाथी मोटु फळ थाय ज अने जेओ मुनिओने आश्रय आपता नथी तेओ नमुचि प्रधाननी जेम दु खी थाय छे " आ प्रमाणे विचारी मंत्रीए पोतानु ते निर्दोष घर धर्मनिमित्ते अर्पण कर्यु आधाकर्मी आहारनी जेम मुनिनिमित्ते करेल उपाश्रय पण मुनिओने कल्पतो नथी, आमा तेवो कांई पण दोष नथी आ प्रमाणे ते स्थान मुनिओने अर्पण करी मंत्रीए बीजी पण धर्मशाळाओ करावी.

" जे सर्वसिद्धिरूप स्त्रीनी वरमाळा जेवी पौषधशाला करावे छे ते सम्यक्त्वरूप बीजनी विशाळ अने निर्मळ एवी लक्ष्मी प्राप्त करे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकसप्तत्यधिकशततम प्रबंध ॥१७१॥

व्याख्यान १७२ मुं

साधुने अकल्पतु दान आपवु नहि.

त्यक्तु योग्य विषैर्मिश्र, कुत्सित भक्ष्यवर्जितं ।
क्रोधकैतवदुर्मत्या, दत्त दानमनर्थदम् ॥ १ ॥

भावार्थ —

" त्याग करवा योग्य, झेर साथे मळेलु, कोही गयेलु, अभक्ष्य अने क्रोध, कपट के दुर्मतिथी आपेलु दान अनर्थ करनारु छे " ते विषे नागश्रीनी कथा आ प्रमाणे-

नागश्रीनी कथा

चपानगरीमा सोमदेव, सोमभूति अने सोमदत्त नामे त्रण सहोदर बधु हता तेमने नागश्री, यज्ञश्री अने भूतश्री नामे अनुक्रमे त्रण स्त्रीओ हती ते त्रण भाईओना गृहव्यवहारनी स्थिति एवी हती के वाराफरती एक एक दिवस सर्वे एक एकने घेर भोजन करवा जता. एक वखत नागश्रीनो वारो आवता तेणीए अजाणता कडवी तुबडीनु शाक राध्यु अने तेने हिंग विगेरे द्रव्यथी सारी रीते वघार्यु तेमाथी तेणीए जरा चाखी जोयु तो ते कडवु लाग्यु, एटले तेमा थयेल द्रव्यनो खर्च सभारी कोई पात्रमा जुदु राखी मूक्यु अने बीजा भोजनथी भर्ता विगेरेने जमाड्या.

तेवामा धर्मघोषसूरिना शिष्य धर्मरुचि नामे मुनि मासक्षपणने पारणे ते नागश्रीने घेर आव्या. नागश्रीए 'आ शाकमा थयेलो द्रव्यनो खर्च वृथा न थाओ' एवु विचारी ते कडवु शाक ते मुनिने वहोराव्यु. ते लई मुनि गुरु पासे आव्या. 'अहो! आ स्त्रीनी बुद्धिने धिक्कार छे! जेने घेर तपना तेजथी कांचनगिरि जेवा मुनिवर आव्या तेमने तेणीए उकरडा जेवा गण्या कल्पवृक्ष, सूर्य, कामकुभ अने पुण्योदधि जेवा मुनिने ए पापी स्त्रीए आकडो, राहु, कुभारनो कुभ अने खाबोचीआ जेवा गण्या.' धर्मरुचि मुनिए ते आहार गुरुने बताव्यो. गुरु चार ज्ञानी होवाथी ते आहार अयोग्य (विषमिश्रित) जाणी कह्यु-'हे शिष्य! आ आहार कोई शुद्ध स्थळे परठवी द्यो.' गुरुनी आज्ञाथी धर्मरुचि मुनि वनमा गया. त्या हाथमा राखेला पात्रमाथी कोई स्थळे एक बिंदु पडी गयु. ते बिंदुना स्वादथी आकर्षाई त्या घणी कीडीओ एकठी थई, परतु तेनो स्वाद लेता ज हजारो कीडीओ मरती जोवामा आवी. एटले ते मुनिए विचार्यु के " एक बिंदु आटलु प्राणघातक छे तो आ समग्र आहार केटला जीवोने भस्मप्राय करशे, माटे हवे हु बीजा जीवोने सुख करु के मारी जिह्वाने सुख करु? जो हु जीवोने अभय आपु छु ने आ आहार वापरु छु तो मारी आ जिंदगीनो तो अत थाय छे, पण ते साथे भव(ससार)नो पण अत थवा सभव छे, नहि तो ऊलटी भवनी वृद्धि थशे अथवा जिनाज्ञा पाळवी के मारा जीवने पाळवो? अहो! जिनाज्ञा पाळवी ज योग्य छे. वळी मारा गुरुनी पण आज्ञा छे के 'शुद्ध स्थळे जईने आ आहारने परठवी दवो,' तो मारा उदरना जेवु बीजु स्थळ क्याई पण जोवामा आवतु नथी अरे जीव! पूर्वे तें अनेक जीवोवाळा द्रव्यथी मधुर एवा मधुप्रमुख अभक्ष आहार करेला छे आ आहार द्रव्यथी दुष्ट छे, पण परिणामे जीवदयाना रसरूप होवाथी विशिष्ट छे, तेथी हे जीव! तु पोते ज ते खाई जा " आ प्रमाणे चिंतवी धर्मरुचि मुनिए सर्प जेम राफडामा पेसे तेम अदीन मनवडे ते आहारने पोताना कोठामा क्षेपवी दीधो पछी अनशन करी ते महामुनि सर्वार्थसिद्ध विमाने गया.

धर्मघोषसूरिए आ वार्ता जाणी आणी लोकोनी समक्ष ते नागश्रीनी निंदा करी. ते वात जाणी स्वजनोए नागश्रीने घरमांथी बहार काढी मूकी. सर्व स्थळे ममती नागश्री अरण्यमा दावानलमा दग्ध थई मरण पामीने छट्ठी नरकमा उत्पन्न थई, पछी मातेमातेनारकीमा ते ते गई पछी अनंतो काळ भवभ्रमण करी अनुक्रमे पाडवोनी स्त्री द्रौपदी थई. आ विषे विशेष वृत्तांत श्री ज्ञातासूत्रथी जाणी लेवो.

" त्याग करवा योग्य एवु भोजन मुनिने आपवाथी नागश्री अनतकाळ ससारमां भमी, तेथी श्रावकोए क्रोधादि दोष छोडी सुपात्रने निरतर दान आपवु "

इत्यब्दिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विसप्तत्यधिकशततम' प्रबंध ॥ १७२ ॥

व्याख्यान १७३ मु

दान अनुमोदना करनारने पण फल आपे छे

फलं यच्छति दातार, दानं नात्रास्ति संशय' ।
फलं तुल्यं ददात्येतत्, आश्चर्य त्वनुमोदक ॥ १ ॥

भावार्थ'—

" दान दातारने फळ आपे छे तमा तो काई संशय ज नथी, पण ते अनुमोदना करनारने पण तुल्य फळ आपे छे, ए आश्चर्य छे " ते विषे बलभद्रमुनि विगेरेनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

दाननाअनुमोदक मृगनी कथा

एक वखते श्रीनेमिनाथ प्रभु गिरनारना उद्यानमा समवसर्या ए खबर जाणी कृष्णवासुदेव बलदेवनी साथे त्या वादवा गया जिनेश्वरने वादी वैराग्ययुक्त देशना सांभळी कृष्णे प्रभुने पूछ्यु—" हे प्रभु ! स्वर्गना जेवी आ द्वारका नगरीनु भावि काळे शु थशे?" जिनेश्वर बोल्या—" मदिरापान करवाथी अंध थयेला तमारा वे पुत्रो साथ अने प्रद्युम्नथी कोप पामेला द्वैपायनथी आ नगरीनो विनाश थशे अने त्यार पछी जराकुमारे छोडेला बाणथी डाबा पगमा विंधायेला तमे काळ करी त्रीजी नारकीमा उत्पन्न थशो, " प्रभुना आवा वचन सांभळी जराकुमारे चिंतव्यु के ' हु

भाईनी हणनार न थाउ ' एम विचारी ते जगलमा चाली नीकळ्यो श्रीकृष्ण ' हु नरके जईश ! ' एवु आर्त्तध्यान करवा लाग्या ते जोई प्रभु बोल्या–" हे अच्युत ! तमे आवती चोवीशीमा अमम नामे बारमा तीर्थंकर थशो " ते साभळी कृष्ण हर्ष पामी पोतानी नगरीमा आव्या अने तत्काळ नगरीनी अदर जेटली मदिरा हती ते तमाम बहार कढावी फेंकावी दीधी.

एक वखते सांब अने प्रद्युम्न कुमार वनमा क्रीडा करवाने दूर गया त्या गिरनार पर्वतनी गुफाओमा नाखेली पेली मदिरानी गध आवी, तेथी चिरकाळे देखवाथी अतिलुब्ध थयेला यादवकुमारोए त्या जई ते मदिरानु पान कर्यु पछी मदथी विकळ बनी तेओ यथेच्छ भमवा लाग्या तेवामा द्वैपायन तपस्वी तेमना जोवामा आव्या, एटले ते उन्मत्त थयेला कुमारोए गाढ प्रहारवडे तेने कूटी नाख्यो. ते वखते क्रोधायमान थयेला द्वैपायने तत्काळ नियाणु कर्यु के " जो मारु तप प्रमाणभूत होय तो हु यादवोनी द्वारावती पुरीनो दाह करनार थाउ " आ वृत्तात ते कुमारोए रामकृष्ण पासे जईने कह्यो ते साभळी रामकृष्ण द्वैपायननी पासे जई कहेवा लाग्या–' हे मुनि ! आवु भयकर नियाणु कृपा करीने निष्फळ करो. ' द्वैपायने कह्यु–" ते वृथा थशे नहि, पण तमने बेने जवा दईश, ते सिवाय बीजा कोईने पण छोडीश नहि हवे विशेष तमारे मने कांई कहेवु नहि. " पछी कृष्णे द्वारकामा आवी पटह वगडाव्यो के " भो लोको ! द्वैपायन तापसे कोपथी आपणी नगरीनो प्रलय करवो निर्धार्यो छे, माटे तमे जिनध्यानमा एक चित्तवाळा थजो " लोकोए तेम करवा माड्यु ते प्रसगे श्रीनेमिनाथ प्रभुए देशना आपी के " सध्याकाळना वादळनो रग, हस्तीना कान, दर्भना अग्रभागे रहेलु जलबिंदु, समुद्रना मोजा अने इन्द्रधनुष जेवु आ सासारिक द्रव्य, यौवन अने राज्यसुख सर्व चपल छे " श्रीनेमिप्रभुनी आवी देशना साभळी केटलाएक लोकोए दीक्षा अगीकार करी

द्वैपायनऋषि मृत्यु पामीने अग्निकुमार निकायमा देव थयो पूर्वना रोषथी ते द्वारिका नगरीने उपद्रव करवा आव्यो, पण कृष्णनी आज्ञाथी लोको आबेल विगेरे तप करता हता, तेथी ते तेमनो पराभव करवा समर्थ थई शक्यो नहि. एवी रीते बार वर्ष वीती गया अन्यदा सर्व लोको लौकिक पर्वने दिवसे धर्मकार्यमा प्रमादी थई गया ते अवसरनो लाभ लई दुरात्मा द्वैपायने सवर्तक पवनवडे नगरीमा तृणकाष्ठ क्षेपवी तेने सळगावी ते वखते बहारगाम गयेला यादवोने पण तेणे लावीलावीने तेमा नाख्या ते समये राम अने कृष्ण सभ्रम पामी रोहिणी, देवकी अने वसुदेव ए त्रणने रथमा बेसारी नगरीना दरवाजा पासे आव्या त्या रथना घोडा एक

उगलु पण आगळ चाली शक्या नहि. एटले रामकृष्ण पोते रथ खेंचवा लाग्या. त वखते द्वैपायन देवे कह्यु-' हे रामकृष्ण! तमे वृथा प्रयास शा माटे करो छो? तमारा त्र सिवाय कोईने हु छोडीश नहि ' एटलु कहेतामा ज नगरीनो जाज्वल्यमान थतो दरवाजो रथ उपर तूटी पडयो अने रथमा बेठेला त्रणे जण मृत्यु पामी गया तेओ श्री जिनेश्वरना ध्यानमा लीन होवाथी देवपणाने पाम्या.

रामकृष्णे नगरीमाथी नीकळी कोटि पर्वतना शिखर उपर चडी ते नगरीने छ मास सुधी बळती जोई पछी ते बने पांडुपुत्रनी पाडुमथुरा नगरीए जवा उत्सुक थया अनुक्रमे चालता चालता तेओ कौशबी नगरीना वनमा आव्या त्या एक वडना वृक्ष नीचे शिला उपर बने विश्राम लेवा बेठा जे वखते घणी तृषा लागवाथी कृष्णे पोताना बधु पास जळ माग्यु, एटले बळभद्र कृष्णने त्या मूकी जळाशये पाणी लेवा गया अहीं कृष्ण पीतावर ओढी ढींचण उपर वाम चरण मूकी वृक्षनी नीचे सुई गया. ते अवसर पेलो जराकुमार ते तरफ आवी चडयो. तेणे दूरथी सुवर्णमृगनी भ्रातिए तीक्ष्ण बाण छोडयु, तेनाथी कृष्णनो वाम चरण विंधाई गयो, तेथी तत्काळ जागृत थई कृष्णे कह्यु-' अहो! कया दुरात्माए आ कृत्य कर्यु ? ' ते सामळी जराकुमार पोताना आत्मान निंदतो अने नेत्रमाथी अश्रु पाडतो बधुना चरणमा पडी रुदन करवा लाग्यो कृष्ण बोल्या-" भाई! शा माटे रुदन करे छे ? भगवते जे कह्यु हतु ते थयु छे तो तमा शो शोक करवो? हवे तो ह याधव ! मारु आ कौस्तुभ रत्न लई तु पाडवो पासे जा अने ते पाडवोने आपी द्वारकाना दाह विगेरेनो सर्व वृत्तात निवेदन करज, आ कौस्तुभरत्ननो एधाणीथी तेमने खरखरो निश्चय थशे जो तु अहींथी नहि जा तो हमणा ज बलभद्र आवी तने हणी नाखशे " ते सामळी जराकुमार कौस्तुभ लई पाडमथुरा तरफ चाल्यो तेना गया पछी कृष्णे चितव्यु के " गजसुकुमाल अने ढढणकुमार विगेरने धन्य छे के जेओ मोहने वश करी परमानन्दने प्राप्त थई गया पछी ज्यार प्राणात समय आव्यो त्यारे कृष्णने नरकने योग्य लेश्या उत्पन्न थई, तेथी तेणे चितव्यु के " अहो ! मारी सुदर नगरीने बाळनार ए पापी वैरीने हु काई रीते जोउ तो तेने मारीने यमराजनो अतिथि करी दउ " आवु चितवता मृत्यु पामीने ते त्रीजी नरके गया

अहीं बळभद्र कमळना पत्रमा जळ लई वड नीचे आव्या. त्या मृत्यु पामेला कृष्णने सबोधीने कह्यु-' बधु ! ऊठो, आ शीतळ जळ पीओ ' आ प्रमाणे घणी वार कहेता छता पण प्रत्युत्तर मळ्यो नहि, एटले शरीर उपरथी वस्त्र लइ लीधु, त्या तो वाम चरणे विंधाई मृत्यु पामेला तेने जोइ बळभद्र विलाप करवा लाग्या पछी मोहथी कृष्णनु मृत शरीर स्कध उपर लई आम तेम छ मास सुधी भम्या

ते अवसरे बळरामनो मित्र सिद्धार्थ नामे देवता तेने बोध करवा माटे आव्यो ते एक खेडूतनु रूप लई बळरामनी आगळ शिला उपर कमळना बीज वावना लाग्यो ते जोई बळराम बोल्या–'अरे मूर्ख ! आ शिला उपर कमळ शी रीते ऊगशे ?' खेडूत बोल्यो–' अरे भाई ! तारा स्कध उपरनु शव जो जीवशे तो आ शिला उपर कमळ पण ऊगशे ' तेनु ए वचन अवगणी बळराम मोहथी शब लईने आगळ चाल्या. त्या मार्गमा दग्ध थएला वृक्षने सिंचन करनार एक पुरुष तेमना जोवामा आव्यो. बळरामे तेने कह्यु–' अरे मूढ ! दग्ध थई गयेल वृक्षने सिंचन करवाथी शु ते कदी पल्लवित थशे ?' पेलाए कह्यु–' आ मृत शरीर जो जीवतु थशे तो ते पण थशे ' ते साभळी रामे विचार्यु के ' जरूर आ मारो बधु निश्चेष्ट होवाथी मृत्यु पामेल ज छे ' तत्काळ देवताए प्रगट थइने कह्यु–" हे बधु ! हु तमारो सिद्धार्थ नामनो मित्र छु तमने बोध करवा माटे ज आ सर्व में रचेलु हतु आ कृष्णने जराकुमारे ज मारी नाखेल छे " पछी बधो पूर्व वृत्तात देवे कही समजाव्यो ते जाणी बळभद्रे मोह छोडी दईने कृष्णना देहने अग्निसस्कार कर्या

ते समये बलभद्रने दीक्षा लेवामा उत्सुक जाणी श्रीनेमिनाथे एक चारणमुनिने त्या मोकल्या तेमनी पासे बलभद्रे सयम ग्रहण कर्यु. पछी तुगिका पर्वत उपर जई तीव्र तपस्या करवा लाग्या एक दिवस एवु बन्यु के रामर्षि मासक्षपणने पारणे कोई नगरमा भिक्षा लेवा जता हता, त्या नगरमा पसता कूवाना काठा उपर कोई स्त्री बाळकने साथे लई जळ भरवा आवेली, ते बळराम मुनिनु स्वरूप जोई मोह पामी गई. तेणीना नेत्र बळराम उपर होवाथी तेणे जळ भरवानी रज्जु घडाने बदले बाळकना गळामा नाखी आ प्रमाणे अनुचित कार्य करती ते स्त्रीने जोई राममुनिए तेणीने सावधान करी अने मनमा चितव्यु के ' आवो अनर्थ करनार मारा रूपने धिक्कार छे ! आजथी मारे नगरमा भिक्षा लेवा माटे जवु नहि वनमा काष्ठ लेनारा विगेरे आवे तेमनी पासेथी जे मळे ते आहार लेवो '

एक वखते काष्ठग्राहकोए पोतपोताना राजाओने कह्यु के ' वनमा कोई पुरुष मोटी तपस्या करे छे ' ते साभळी ते राजाओए चितव्यु के ' ते पुरुष तपस्या करीने आपणा राज्य लई लेशे, माटे चालो तेने हणी नाखीए ' एम विचारी तेओ पोतपोतानु सैन्य लई मुनिने मारवा माटे तेमनी समीपे आव्या. ते समये रामनो मित्र पेलो सिद्धार्थ देव वैयावच्च करवा माटे त्या आव्यो हतो, तेणे हजारो सिंह विकुर्व्या, तेथी ते राजाओ भय पामी, मुनिने नमी पोतपोताने स्थानके चाल्या गया. त्यारथी लोकोमा तेमनु नृसिंह ए नाम प्रसिद्ध थयु

बलराम मुनिना स्वाध्यायने सांभळीने केटलाक, सर्प, सिंह, मृग विगेरे प्राणीओ समकित तथा श्रावकव्रतने प्राप्त थया तेमांनो कोई एक मृग रामऋषिनो पूर्व भवनो मित्र हतो, तेने जातिस्मरण थवाथी ते वनमां कोई पण सार्थवाह विगेरे आवेला होय त्यारे मुनिने त्यां लई जई अशनादि प्राप्त कराववा वडे वैयावृत्य करवा लाग्यो ते साथी मुनिने वधी सूचना करतो हतो एवी रीते राममुनिए सो वर्ष सुधी तीव्र तप कर्युं ते विषे कह्युं छे के "साठ मासक्षमण अने चार चोमासी तप जेमणे करेला छे एवा बळभद्र मुनिने हुं नमुं छुं"

एक वखते कोई काष्ठच्छेदक रथकार ते वनमां आवी अरधा कापेला वृक्षने तेमज रहेवा दई मध्याह्न काळ थवाथी भोजन करवा माटे बेसवा तैयार थयो ते समये पेला मृगे तेने जोईने गुरुने संज्ञाथी जणाव्युं, एटले मासक्षपणने पारणे बळभद्र मुनि मृगे दर्शावेला मार्गे त्यां आव्या पेला रथकार मुनिने जोईने भावशुद्धिथी दान आप्युं अने मनमां चिंतववा लाग्यो के "हुं धन्य छुं, हुं कृतपुण्य छुं " ते समये ते मृग ऊंचुं मुख करी रामने अने रथकारने जोईने विचारवा लाग्यो के-" अरे! हुं अधन्य छुं, तिर्यंचयोनिमां उत्पन्न थई दूषित थयो छुं, तेथी हुं दीक्षा लेवा के साधुने भिक्षा आपवामां समर्थ नथी हुं एकज मंदभाग्य छुं पशुपणाथी हणायेला मने धिक्कार छे! " आवुं चिंतवन करता, ते राम, रथकार अने मृग त्रणेनी उपर पवनना वेगथी पेलुं अर्धं कापेल वृक्ष तूटी पड्युं तेथी त्रणे मृत्यु पामी ब्रह्मदेवलोकमां देवपणे उत्पन्न थया राममुनिए सो वर्ष सुधी संयम पाळ्युं

देवपणाने पामेला बळराम अवधिज्ञानवडे पोताना बंधुना स्नेहने संभारी तरत ज तेने मळवा माटे जवा उत्सुक थया, परंतु तेमना कल्पना पुस्तकमां लखेला पांच सभाने योग्य आवश्यक दिनकृत्य करतां ब्याशी हजार वर्ष वीती गया त्यारपछी शीघ्रपणे त्रीजी नरके आवी तेओ कृष्णने त्यांथी लई जवा माटे खेंचवा लाग्या कृष्णे कह्युं-" हे बंधु! मने अहींज रहेवा दो, आकर्षण करो नहि, तमारा स्पर्शथी उलटो हुं अति दुःख पामुं छुं, परंतु लोकमां आपणा बंनेनो यश देवताओ ने मनुष्यो गाय तेम करो "

पछी बळभद्र देव पाछी पूर्व स्थळे ज यादवोथी भरपूर द्वारका कृत्रिम रची अने लोकोनुं वांछित पूरवा मांड्युं ते द्वारका समुद्रना पूरमां तणाई गई एवी रीते सात वार समुद्रमां द्वारकाने डुबावी, तेथी लोकोमां तेमनो मोटो महिमा प्रसर्यो.

ब्राह्मणोना शास्त्रमां कृष्णावतारने अठ्ठावीससो वर्ष थया एम कहे छे, ते प उपरनो प्रकार सत्य होय तो बन तुं छे जैनशास्त्रमां तो तेने अत्यारे छाशी हजा वर्ष थया एम वृद्ध पुरुषो कहे छे

"दातार दान आपे छे ते वखते जे अनुमोदना करे छे अथवा जे शुभ हृदयथी प्रशंसा करे छे, ते मारग(मृग)नी जेम दातारना जेटलो लाभ मेळवे छे, एम तत्त्ववेत्ताओ कहे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्रिसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७३ ॥

व्याख्यान १७४ मु

मुनिने दान आपतां बिंदुपात विगेरे दोष त्यजी देवा

घृतादिवस्तुनो बिंदुर्भूमौ क्षरति नो यथा ।
तथा दानं प्रदातव्यं, साधूनां तच्च कल्पते ॥ १ ॥

भावार्थ —

"मुनिओने तेवी रीते दान आपवु के जे आपता घी विगेरे वस्तुनु बिंदु पृथ्वी उपर खरी पडे नहि, तेवु दान साधुओने कल्पे छे." ते विषे एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

मुनिदानमां बिंदुपात उपर धर्मघोषनु दृष्टांत

चंपानगरीमां धर्मघोष नामे मंत्री हतो. तेनी स्त्रीओ त्याना नगरशेठ सुजातश्रेष्ठीनु स्वरूप जोई मोह पामी हती, तेथी एकदा ते मंत्रीनी एक स्त्री सुजातशेठनो वेष लईने दासीओनी साथे क्रीडा करती हती ते जोई धर्मघोष मंत्री परमार्थ (खरी वात) जाण्या विना ते शेठ उपर द्वेष करवा लाग्यो एक वखते तेणे शेठना नामथी एक कूट लेख लख्यो, तेमा एटलु दर्शाव्यु के सुजातशेठ विक्रम राजाने लखे छे के–"अमारी आ विज्ञप्ति ध्यानमा लई तमारे अहीं सत्वर आववु हु अमारा राजाने प्रपंचथी मारी तमने राज्य अपावीश." आवो कूट लेख पोते लखी, गुप्तचर मारफत पकडायेलो कहीने पोताना राजाने बताव्यो राजाए क्रोधथी सुजात शेठने मारी नाखवा माटे काईक मिष करीने चंद्रध्वज राजा पासे मोकल्यो अने तेनी साथे एक लेख लखी आप्यो. चंद्रध्वज राजा ते लेख वाची, सुजात शेठने निर्दोष जाणी विचा-

रवा लाग्यो के 'अहो ! चंपापतिए आवु अयोग्य कार्य मने केम बताव्यु ? आ श्रेष्ठी तो निःस्पृह जणाय छे' पछी ते वातनो निश्चय करीने तेणे पोतानी पुत्री ते सुजात शेठने आपी नवोढा (मुग्धा) स्त्रीना संयोगथी (वृद्ध) श्रेष्ठी रोगी थई गयो. शेठने रोगी जोइ तेनी पत्नी आत्मनिंदा करवा लागी ते सांभळी श्रेष्ठी बोल्यो-' हे स्त्री ! शोक शामाटे करे छे? एमा तारो दोष नथी, मारा कर्मनो ज दोष छे' ते सांभळी तेणीने वैराग्य थयो. दीक्षा लई अनशनवडे मृत्यु पामी देवी थइ त्याथी अहीं आवी तेणे सुजातश्रेष्ठीने कह्यु-' हे श्रेष्ठी ! तमारा धर्मवचननो अंगीकार करी हु आवा पदने प्राप्त थई छु, तेथी हवे काई कार्य होय तो कहो' सुजाते कह्यु-' मारु कलंक उतारो' पछी ते देवीए श्रेष्ठीने विमानमा बेसारी चंपानगरीना वनमा मूक्या अने चंपानगरी उपर शिला विकुर्वी चंपापतिने उद्यानमा बोलाव्यो. ते त्या आवीने सुजात श्रेष्ठीने नम्यो देवीए पूर्वनो सर्व वृत्तांत राजाने जणाव्यो. ते सांभळी राजाए क्रोधथी धर्मघोष मंत्रीने देशपार कर्यो अने सुजातशेठने मोटा उत्सव साथे घेर लाव्या अनुक्रमे सुजात श्रेष्ठीए दीक्षा लीधी.

धर्मघोष मंत्री कोई सारा मुनिओना संयोगथी दक्षु चारित्र पाळी पृथ्वीपुर नगरमा वरदत्त मंत्रीने घेर भिक्षा माटे गयो वरदत्त संतुष्ट थई पचामृतनु दान देवा उद्यत थयो. दान आपता तेमाथी घी अने दूधनु एकाद बिंदु पृथ्वी उपर पडी गयु एटले मुनि ते आहारने महाआरंभकारी होवाथी अकल्प्य जाणी आहार लीधा विना पाछा चाल्या गया वरदत्त पश्चात्ताप करवा लाग्यो, एटलामा जे पेलु बिंदु पडयु हतु तेनी उपर एक माखी आवीने बेठी ते माखीनु भक्षण करवा गरोळी आवी, तेने मारवाने काकीडो आव्यो, तेनो वध करवा बिलाडो धसी आव्यो, तेनी हिंसा करवाने कोईनो घरनो पाळेलो श्वान आव्यो, तेने मारवाने शेरीनो श्वान आव्यो, शेरीना श्वानने पाळेला श्वानना स्वामीए मार्यो, तेने मारता जोई शेरीना लोकोए आवी तेना श्वानने मार्यो, तेथी कोपने वशे श्वाननो स्वामी शेरीना लोकोने मारवा आव्यो, एटले तेमाथी तो खड्गाखड्गी अने मुष्टामुष्टि विगेरे युद्ध थई पडयु. आ बधु जोइ वरदत्ते विचार्यु के 'अहो ! आवो महाअनर्थ ज्ञानवडे जाणीने ज ते मुनिए मारो आहार स्वीकार्यो नहीं होय अहो ! आवा प्रशंसा करवा योग्य ते मुनिना ज्ञान ध्यानने धन्य छे' आवु चिंतवी ते मंत्री वैराग्यवडे स्वयंबुद्ध थयो. जातिस्मरण उत्पन्न थवाथी पूर्वभवे अध्ययन करेल सर्व सूत्रादिनु स्मरण थई आव्यु देवताए आपेलो मुनिवेष ग्रहण करी ते मुनि पृथ्वीने पवित्र करता विचरवा लाग्या आ विषे विशेष जाणवु होय तो उपदेशमालानी कर्णिकाटीकाथी जाणी लेवु

" दूध, घी के साकर विगेरे रसपदार्थनुं बिंदु पृथ्वी उपर प्रमादथी पडे नहि तेवी रीते श्रावके मुनिने आहार आपवो, अने मुनिओए धर्मघोष मुनिए जेम आहार न लीधो तेम न लेवो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ चतुःसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७४ ॥

व्याख्यान १७५ मुं

अल्पदान पण मोटुं फळ आपनारुं थाय छे

अल्पमपि क्षितौ क्षिप्त, वटबीजं प्रवर्द्धते ।
जलयोगात्तथा दानात्, पुण्यवृक्षोऽपि वर्द्धते ॥ १ ॥

भावार्थः—

" जेम अल्प एवुं पण वडनुं बीज पृथ्वीमां नाखवाथी जळना योगवडे बहु वधी पडे छे, तेम सुपात्रे दान करवाथी पुण्यरूपी वृक्ष अत्यंत वधे छे. "

विस्तारार्थः—

वडनुं बीज अल्प एटले तलना दाणाना त्रीजा भाग जेटलुं होय छे, ते जळदान-(सिंचन)वडे जेम मोटुं वडनुं वृक्ष थई पडे छे तेम दानथी पुण्यरूपी वृक्ष पण वधे छे. ते विषे मूळदेवनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

मूळदेवनी कथा

कौशल्या नगरीमां धनदेव अने धनश्रीनो पुत्र मूळदेव नामे हतो. ते कळापात्र हतो पण व्यसनथी दूषित हतो, तेथी तेना पिताए तिरस्कार करीने तेने घर बहार काढी मूक्यो हतो. अनेक देशोमां अटन करतो मूळदेव एकदा कोई शहरनी नजीक रहेला देवालयमां कोई कापडीनी साथे सूतो हतो ते वखते रात्रे संपूर्ण चंद्रमंडळनुं पान कर्यानुं स्वप्न आव्युं. प्रातःकाळे पेला कापडीए पोताना गुरु पासे जई ते स्वप्ननी वार्ता कही. गुरुए तेनुं फळ कह्युं—" हे शिष्य ! आजे कोई तने घी गोळथी परिपूर्ण एवो मांडो आपशे " कह्युं छे के—

सा सा संपद्यते बुद्धि , सा मति सा च भावना ।
सहायास्तादृशा ज्ञेया, यादृशी भवितव्यता ॥ १ ॥

"जेवी भवितव्यता होय छे तेवी बुद्धि थाय छे, तेवी मति थाय छे, तेवी भावना थाय छे अने सहायक पण तेवा ज प्राप्त थाय छे "

मूळदेव ते कापडीना गुरुने अज्ञ जाणी शहेरमां कोई प्रवीण स्वप्नपाठकनी पासे गयो अने विनयपूर्वक स्वप्ननु फळ पूछ्यु स्वप्नपाठके कह्यु–' मूळदेव ! तमने आजथी सात दिवसनी अंदर राज्य मळशे. ' आ प्रमाणे कहीने तेणे पोतानी पुत्री तेनी साथे परणावी. मूळदेवे जणाव्यु के ' मने ज्यारे राज्य मळशे त्यारे हु तमारी पुत्रीने तेडावीश ' पछी नगरमा भमता तेने कोई गृहस्थने घेरथी अडद मळ्या ते लई जग लमा भोजन करवा बेठो, तेवामा कोइ मासोपवासी मुनि अचानक त्यां आवी चढ्या. मूळदेवे घणा हर्षथी मुनिने अडद वहोराव्या. तेना महिमाथी आकाशवाणी थई के ' तु अर्धा श्लोकमा जे मागीश ते मळशे ' एटले तेणे—

गणियं च देवदत्तं, दंति सहस्सं च रज्जं च ।

आ प्रमाणेना अर्धा श्लोकथी देवदत्ता गणिका, एक हजार हाथी अने राज्य माग्यु देवे ' तथास्तु ' कह्यु

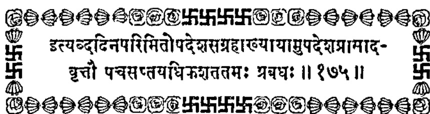
अनुक्रमे सातमो दिवस आवता कोई अपुत्र राजा मृत्यु पाम्यो, एटले तेना मंत्री ओए पाच दिव्य कर्या, अने ते प्रकारे मूळदेव राज्य पाम्यो आ खबर पेला कापडीने पडी, एटले ते वारंवार पेला देवालयमा जईने तेवा स्वप्नने माटे सूवा लाग्यो, पण तेनु स्वप्न फरीने क्याथी आवे ? (आ दृष्टांत मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर पण छे) अहीं मूळदेवे राज्य मेळवी दानादि धर्म करी आत्मधर्मने संपूर्ण रीते साध्यो.

प्रस्तुत श्लोकना भावार्थ उपर नयसार अने चंदनबाला विगेरेनी कथाओ पण छे, तेमज आ अवसर्पिणीमां पहेला दानधर्मना प्रवर्तक श्रेयासकुमारनी कथा पण तेने लगती छे आ सर्व कथा दानकुलक नामना प्रकरणमा वर्णवेली छे त्यांथी जाणी लेवी.

शिष्य प्रश्न करे छे के–सुपात्रदान, अभयदान, उचितदान, कीर्तिदान अने अनुकंपादान एम पाच प्रकारना दान छे सुपात्रमां पुण्यबुद्धिथी आपवु ते सुपात्रदान; कोई प्राणीने मृत्युथी बचाववा–भयथी मुक्त करवो ते अभयदान, माता, पिता, पुत्र, बंधु, सेवक अने राजा विगेरेने आपवु ते उचितदान, कीर्तिने माटे याचक विगेरेने आपवु ते कीर्तिदान अने दीन–दु खीने आपवु ते अनुकंपादान आ पाच दानोमां

सुपात्रदान एक ज सर्वोत्तम छे एम वारवार कहेवानु शु कारण ?" तेना उत्तरमा गुरु कहे छे के "ए पाच दानोमा पहेला वे दान मोक्ष आपनारा छे; तेमा अभयदान सर्व व्रतोनी आदिमा कहेलु छे अने सुपात्रदान सर्व व्रतोने अते कहेलु छे, बीजा त्रण दान सासारिक सुखने आपनारा छे, तेथी तेमज पहेला अने छेल्ला तीर्थंकर सुपात्रदान आपवाथी ज सुखी थया छे तेथी सुपात्रदान सर्वोत्तम कहेलु छे "

"अल्प दानना माहात्म्यथी मूळदेव, नयसार, चदनबाळा, श्रेयासकुमार अने धन सार्थवाह (श्रीऋषभदेव भगवतनो जीव) विगेरे महान् फळने पाम्या छे; तेथी छेल्लु अतिथिसविभाग व्रत सर्व श्रावकोए अगीकार करवु."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पचसप्तत्यधिकशततमः प्रबधः ॥ १७५ ॥

व्याख्यान १७६ मुं

निश्चय अने व्यवहारनयथी बार व्रतनु विवेचन

एकैक व्रतमप्येषु, द्विद्विभेदेन साधितम् ।
तद्विज्ञाय सुधीश्राद्धै, रुचि. कार्या व्रतादरे ॥ १ ॥

भावार्थः—

"ए बार व्रतोमाहेला एक एक व्रत निश्चय अने व्यवहार एवा बे बे भेदथी कहेला छे, ते बराबर जाणीने सद्बुद्धिवाळा श्रावकोए ते व्रतोने आदरवा रुचि करवी."

विशेषार्थः—

ए बार व्रतोमा एक एक व्रत बे प्रकारे एटले निश्चय अने व्यवहारनये करी कहेला छे ते आ प्रमाणे-जे बीजाना जीवने पोताना जीवनी जेम क्षुधादि वेदनाथी पोता समान जाणी तेनी हिंसा करे नहि ए व्यवहारनयनी अपेक्षाए पहेलु व्रत छे, अने आ पोतानो जीव अन्य जीवनी हिंसा करवावडे कर्म बाधी दु ख पामे छे, तेथी पोताना आत्माने कर्मादिकनो वियोग पमाडवो योग्य छे वळी आ जीव अनेक स्वाभाविक गुणवाळो छे, तेथी हिंसादिवडे कर्म ग्रहण करवानो तेनो धर्म नथी, एवी

ज्ञानबुद्धिथी हिंसाना त्यागरूप आत्मगुणने ग्रहण करवानो निश्चय करवो, ए निश्चय नयनी अपेक्षाए पहेलु अहिंसा व्रत छे.

लोकनिंदित एवा असत्य भाषणथी निवृत्त थवु ए व्यवहारथी बीजु व्रत छे अने मुनीश्वर-त्रिकाळज्ञानी भगवंते कहेल जीव अजीवनु स्वरूप अज्ञानवडे विपरीत कहेवु अने परवस्तु जे पुद्गलादिक छे तेने पोतानी कहेवी ते ज खरेखरु मृषावाद छे, तेनाथी जे विरमवु ते निश्चयनयथी बीजु व्रत छे आ व्रत सिवाय बीजा व्रतोनी विराधना करे तेनु चारित्र जाय छे, पण ज्ञान तथा दर्शन ए बे रहे छे, परंतु निश्चय मृषावादथी विराधित थता ज्ञान, दर्शन अने चारित्र त्रणे जाय छे आगममा पण कहेल छे के " एक साधुए मैथुनविरमण व्रत भाग्यु छे अने एके बीजु व्रत भाग्यु छे, तो तेमा पहेलो साधु आलोचना विगेरेथी शुद्ध थाय छे, पण बीजो स्याद्वादमार्गनो उत्थापक होवाथी आलोचनादिकवडे शुद्ध थतो नथी. "

जे अदत्त एवी परवस्तु धनादिक ले नहि-तेनु प्रत्याख्यान करे ते व्यवहारथी त्रीजु अदत्तादान विरमणव्रत छे अने जे द्रव्यथी अदत्त वस्तु न लेवा उपरांत अंतःकरणमां पुण्यतत्त्वना बेंताळीश भेद प्राप्त करवानी इच्छाए धर्मकार्य करे छे अने पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय, आठ कर्मनी वर्गणा विगेरे परवस्तु ग्रहण करवानी इच्छा करतो नथी-तेनो नियम करे छे ते निश्चयथी त्रीजु व्रत छे

श्रावकोने स्वदारसंतोष अने परस्त्रीनो त्याग तथा साधुने सर्व स्त्रीओनो त्याग ए व्यवहारथी चोथु व्रत छे अने विषयनी अभिलाषा, ममत्व अने तृष्णानो त्याग ए निश्चयथी चोथु व्रत छे अहीं एटलु समजवु के बाह्यथी स्त्रीनो त्याग कर्या छतां अंतरमां जो तेनी लोलुपता होय छे-तेनु प्रत्याख्यान करतो नथी तो तेने विषय संबंधी कर्मनो बंध थया करे छे

श्रावकोने नव प्रकारना परिग्रहनु परिमाण करवु ते अने मुनिओने सर्व परिग्रहनो त्याग करवो ते व्यवहारथी पांचमु व्रत छे अने भावकर्म ते राग, द्वेष ने अज्ञान तथा द्रव्यकर्म, आठ प्रकारना कर्म तथा देह अने इंद्रियनो त्याग ते निश्चयथी पांचमु व्रत छे, कर्मादि परवस्तु पर मूर्च्छानो त्याग करवाथी ज भावथी पांचमु व्रत थाय छे, कारण के शास्त्रकारे मूर्च्छाने ज परिग्रह कहेलो छे 'मूच्छा परिग्गहो वुत्तो' इत्यादि वचनात्

छ दिशाए जवा आववानु परिमाण करवु ए व्यवहारथी छट्ठु व्रत छे अने नारकादि गतिरूप कर्मना गुणने जाणी ते प्रत्ये उदासी भाव राखवो अने सिद्ध अवस्था प्रत्ये उपादेय भाव राखवो ए निश्चयथी छट्ठु व्रत छे

प्रथम कहेवा प्रमाणे भोगोपभोग व्रतमा सर्व भोग्य वस्तुनु परिमाण करवु ए व्यवहारथी सातमु व्रत छे, तथा व्यवहारनयने मते कर्मनो कर्ता अने भोक्ता जीव ज छे अने निश्चयनयने मते कर्मनु कर्तापणु कर्मने ज छे, कारण के मन, वचन, कायाना योग ज कर्मना कर्ता छे, तेम भोक्तापणु पण योगमा ज रहेलु छे. अज्ञाने करीने जीवनो उपयोग मिथ्यात्वादि कर्म ग्रहण करवाना साधनमा मळे छे परमार्थवृत्तिए तो जीव कर्मना पुद्गळोथी भिन्न ज छे अने ज्ञानादि गुणोनो कर्ता अने भोक्ता छे. पुद्गळो जड, चळ अने तुच्छ छे. वळी जगतना अनेक जीवोए ते भोगवी भोगवीने उच्छिष्ट थयेला भोजननी जेम मूकी दीधेला छे तेवा पुद्गळो भोगोपभोगपणे ग्रहण करवानो जीवनो धर्म नथी–आ प्रमाणे जे चिंतन करवु त निश्चयथी सातमु व्रत छे.

प्रयोजन विनाना पापकारी आरभथी विराम पामवु ते व्यवहारने आश्रीने आठमु अनर्थदडविरमण व्रत छे अने मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग एना उत्तरभेद सत्तावन जे कर्मबधना हेतु छे अने जेथी कर्मनो बध थाय छे तेने आत्मीय भावथी जाणी तेनु निवारण करवु ते निश्चयथी अनर्थदडविरमण नामे आठमु व्रत छे.

आरभना कार्य छोडी जे सामायिक करवु ते व्यवहारथी नवमु सामायिक व्रत छे अने ज्ञानादि मूळ सत्ताधर्मवडे सर्व जीवोने सरखा जाणी सर्वने विषे समता परिणाम राखवा ते निश्चयथी नवमु सामायिक व्रत छे

नियमित क्षेत्रमा स्थिति करवी ते व्यवहारथी दशमु देशावकाशिक व्रत छे अने श्रुतज्ञानवडे पड्द्रव्यनुं स्वरूप ओळखी पाच द्रव्यमा त्याज्य बुद्धि राखी ज्ञानमय जीवनु ध्यान करवु ते निश्चयथी दशमु देशावकाशिक व्रत छे

अहोरात्र सावद्य व्यापारने छोडी स्वाध्याय ध्यानमा प्रवृत्ति करवी ते व्यवहारथी अगियारमु पौषधव्रत छे अने आत्माना स्वगुणनु ज्ञानध्यानादिवडे पोषण करवु ते निश्चयथी अगियारमु पौषधव्रत छे

पौषधना पारणे अथवा हमेशा अतिथिसविभाग करी (साधुने दान दई) भोजन करवु ते व्यवहारथी बारमु अतिथिसविभाग व्रत छे अने आत्माने तेमज बीजाने ज्ञानादिकनु दान करवु, पठन, पाठन, श्रवण अने श्रावण (सभळाववु) विगेरे करवु ते निश्चयथी बारमु अतिथिसविभाग व्रत छे

आ प्रमाणे निश्चय अने व्यवहार बने भेद करी युक्त बार व्रत पाचमे गुणठाणे रहेला श्रावकोने मोक्ष आपनारा थाय छे अने निश्चय विना एकला व्यवहारथी अगीकार करेला बार व्रत स्वर्गसुखने आपनारा थाय छे, मोक्षने आपनारा थता नथी,

कारण के व्यवहारचारित्र अने साधु श्रावकना व्रत अभव्य प्राणीओने पण प्राप्त थाय छे, तेथी काई निर्जरा थती नथी, तथी निश्चयनय सहित ज ते व्रतोनु पालन करवु श्रेष्ठ छे. ते विषे कह्यु छे के–

निच्छयनय मग्गमुक्खो, ववहारो पुन्नकारणो वुत्तो।
पढमो संवरहेउ, आसवहेउ बीओ भणिओ ॥

" निश्चयनय मोक्षमार्ग छे अने व्यवहारनयने पुण्यनु कारण कहेलो छे. पहलो नय सवरनो हेतु छे अने बीजो नय आश्रवनो हेतु छे " निश्चयनय ज्ञानसत्ता रूप होवाथी मोक्षमार्ग छे अने व्यवहारनय पुण्यनो हेतु होवाथी तेनावडे शुभ अशुभ कर्मनो आश्रव थाय छे. अशुभ व्यवहारथी पापनो आश्रव थाय छे

अहीं शिष्य प्रश्न करे छे के " ज्यारे अनतर गाथामा व्यवहारनय आश्रवना हेतु रूप कहेलो छे तो अमे तेने ग्रहण करशु नहि " तेना उत्तरमा गुरु कहे छे के–" हे शिष्य ! व्यवहार विना निश्चयनयनु ज्ञान थतु नथी, अथवा श्री जिनेश्वर भगवतनी आज्ञानो भग थाय छे आगममा कह्यु छे के " जो जिनमतने अगीकार करवा इच्छो तो व्यवहार अने निश्चय ए बने नयने छोडशो नहि; कारण के एक विना शासन लोपाय छे अने बीजा विना उत्तमार्थ लोपाय छे " वळी व्यवहारनय छोडवाथी सर्व निमित्त कारण निष्फळ थाय छे, ज्यारे निमित्तकारण निष्फळ थयु तो पछी उपादानकारणनी सिद्धि पण शी रीते थाय? एवी रीते बने नय प्रमाण करवा योग्य छे " निश्चयनयनी साथे बीजो (व्यवहार) नय पण प्रमाणरूप छे. निश्चयनय सुवर्णना अलकार जेवो छे अने व्यवहारनय साधा मेळवनार लाख विगेरे पदार्थनी जेवो छे " अहीं उपनय पोतानी मेळे करी लेवो

" एवी रीते बार व्रतोमाहेना दरेक व्रत व्यवहार अने निश्चय एवा बे प्रकारे जाणी श्रावकोए ए व्रतो ग्रहण करवामा रुचि करवी ए तत्त्व छे आ सर्व विषय आगमसार प्रथमाथी उद्धरीने अहीं लखेलो छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ षट्सप्तत्यधिकशततम प्रबंध ॥ १७६ ॥

व्याख्यान १७७ मुं

आ चार व्रत बळात्कारे पण श्रावकने आपवां

प्रसह्येनाप्यसौ धर्मः, श्रावकानां प्रदीयते ।
यथा पोटिलदेवेन, बोधितस्तेतले: सुतः ॥ १ ॥

भावार्थः-

" आ चार व्रतग्रहणरूप धर्म श्रावकोने बळात्कारे पण आपवो. जेम पोटिलदेवे तेतलिपुत्रने बलात्कारे पण प्रतिबोध कर्यो हतो तेम. "

तेतलिपुत्रनी कथा

मिथिला नगरमा कनकरथ नामे राजा हतो तेने तेतलिपुत्र नामे मत्री हतो. ते त्याना नगरशेठनी पुत्री उपर मोह पाम्यो ते पुत्रीनु नाम पोटिला हतु तेने ते मत्री परण्यो कनकरथ राजा राज्यमा अत्यत लुब्ध होवाथी पोताने जे जे पुत्र थाय तेने मारी नाखतो हतो. एक समये राजानी कमलावती नामे राणी सगर्भा थई. तेणीए पोतानी विश्वासु दासीने तेतलिपुत्र मत्री पासे मोकलीने कहेवराव्यु के ' जो मने पुत्र थाय तो कोई पण रीते तमे तेनी रक्षा करजो. ' राणीनु वाक्य बुद्धिमान मत्रीए स्वीकार्युं. केटलोक काळ गया पछी दैवयोगे पोटिला अने कमलावतीए साथे पुत्री अने पुत्रने जन्म आप्यो एटले मत्रीए विश्वासु माणस मोकली कमलावतीना पुत्रनु अने पोतानी पुत्रीनु परावर्तन कराव्यु. राजाए राणीना परिजनने पूछ्यु, एटले तेमणे 'पुत्रीनो जन्म थयो छे' एम कह्यु मत्रीए राजकुमारनु कनकध्वज एवु नाम पाडयु. अनुक्रमे राजा कनकरथ मृत्यु पामता मत्री अने राणी कमलावतीए मळीने ते पुत्रनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो कनकध्वज कृतज्ञ होवाथी तेणे राज्यना सर्व कार्यमा मत्रीने ज मुख्य कर्यो

अन्यदा दैवयोगे तेतलिपुत्र मत्रीने तेनी पोटिला स्त्री उपर कोई कारणने लइने अप्रीति उत्पन्न थई, तेथी पोटिलाए कोई साध्वीने पतिना वशीकरण विषे पूछ्यु. साध्वीए धर्मदेशना आपीने तेने प्रतिबोधित करी, एटले तेणे दीक्षा लेवानी अभिलाषी थईने पति पासे आज्ञा मागी. पतिए कह्यु-' जो तु दीक्षा लईने स्वर्गे जाय तो त्याथी मने बोध आपवा आववानु कबूल करे तो हु तने व्रत लेवानी आज्ञा आपु. ' पोटि-

इन्द्रियाणि वशे यस्य, स्त्रीभिर्यो न विलुभ्यते ।
वक्तुं यश्च विजानाति, यानि देशांतराणि स ॥ १ ॥

"जेने इन्द्रियो वश होय, जे स्त्रीओथी लुब्ध थाय तेम न होय अने जे बोलवामां प्रवीण थयेल होय ते देशांतरमां जई शके छे " " हे पुत्र ! में जे लक्ष्मी उपार्जन करी छे ते तारे माटे ज छे " आ प्रमाणे कह्या छतां पण रत्नचूडे आग्रह छोडयो नहि एटले तेना पिताए आज्ञा आपी तत्काळ रत्नचूड घणां वहाणोमां विविध प्रकारना बहु किंमती करियाणां भरी तैयार थयो चालती वखते श्रेष्ठीए आ प्रमाणे शिखामण आपी-"वत्स ! तुं क्दी पण अन्यायनगर(अनीतिपुर)मां जईश नहि, कारण के त्यां अन्यायप्रिय नामे राजा छे, अविचारी नामे मंत्री छे, गृहीतभक्षक नामे नगरशेठ छे, यमघंटा नामे वेश्या छे अने बीजा धूतकार, चोर, पारदारिक (व्यभिचारी) विगेरे अनेक ठग लोको त्यां रहे छे. तेमनुं स्वरूप जाण्या विना जे त्यां जाय छे तेनुं सर्वस्व त्यांना लोको हरी ले छे, तेथी ते नगर छोडीने बीजे गमे त्यां तुं स्वेच्छाए जजे. " आ प्रमाणे पितानी शिखामण स्वीकारी शुभ दिवसे मांगलिक उपचार करी रत्नचूड वहाणमां बेसी चाल्यो

अनेक गाम, नगर, द्वीप विगेरेमां पर्यटन करतो रत्नचूड भवितव्यताना योगे अनीतिनगर ज आवी चड्यो नगरमां वसनारा धूर्त लोको तेना वहाणने आवतुं जोई हर्ष पाम्या अने तेनी सन्मुख आव्या तेमने जोई रत्नचूड शंका पाम्यो. पछी बंदरने कांठे आव्यो एटले तेणे कोई पुरुषने पूछ्युं-'भद्र ! आ द्वीपनुं नाम शुं?' ते पुरुषे कह्युं-'चित्रकूट नामे आ द्वीप छे अने आ अनीतिपुर नामनुं नगर छे.' ते सांभळी रत्नचूड विचार करवा लाग्यो के "पिताए जे स्थले जवानी ना कही हती ते ज स्थळे हुं दैवयोगे आवी चड्यो, आ वात सारी थई नहि, पण मारा वांछितनो लाभ मने अहीं थशे एम जणाय छे " कह्युं छे के-

प्रशस्तशकुना यत्रा-नुकूलपवनस्तथा ।
उत्साहो मनसश्चैतत्, सर्वं लाभस्य सूचकं ॥ १ ॥

"जे स्थळे जतां सारां शकुन थाय, अनुकूल पवन वाय अने मनमां उत्साह आवे ए सर्व लाभने सूचवे छे " आवुं विचारी रत्नचूड वहाणमांथी ऊतर्यो अने बंदर उपर उतारो कर्यो तेवामां नगरमांथी चार वणिक वेपारीओ आव्या तेओए खुशीखबर पूछीने कह्युं-'तमारुं सर्व करियाणुं अमे लइशुं अने ज्यारे तमे पोताने नगर जवा इच्छशो त्यारे तमे कहेशो ते वस्तु तमारा वहाणमां भरी आपशुं ' रत्नचूडे ते कबूल

कर्युं, एटले ते धूर्त वणिको तेनु सर्व करियाणु वहेंचीने पोतपोताने घेर लई गया. पछी रत्नचूड परिवार सहित वस्त्रादिकनो आडंबर करी अनीतिपुर जोवा चाल्यो. मार्गमा कोई कारीगरे सुवर्ण अने रूपाथी सुशोभित एवा बे उपान (मोजडी) तेने भेट कर्या तेने तांबूल आपी श्रेष्ठीपुत्रे कह्यु-"तने हु खुशी करीश " पछी आगळ चाल्यो, त्या कोई काणो धूर्त मळ्यो. तेणे रत्नचूडने कह्यु-'हे श्रेष्ठीपुत्र! मे एक हजार द्रव्यमा मारु एक नेत्र तारा पिताने घेर गीरो मूक्यु छे ते हु तारी पासेथी लईश, माटे आ तमारु द्रव्य लई ल्यो.' रत्नचूड विचारवा लाग्यो के 'अहो! आ अघटतु बोले छे, तथापि आ प्राप्त थयेलु द्रव्य तो स्वाधीन करु, पछी तेने योग्य उत्तर आपीश.' आम चिंतवी तेणे तेनु द्रव्य ग्रहण कर्यु अने कह्यु-'तु मारे उतारे आवजे.' एम कही रत्नचूड आगळ चाल्यो. तने आवतो जोई चार ठगारा परस्पर वातो करवा लाग्या एक बोल्यो-'समुद्रना जळनु प्रमाण अने गंगा नदीनी रेतीना कणनी संख्या तो ज्ञानी पुरुष जाणी शके छे, पण स्त्रीओनु हृदय कोई जाणी शकतु नथी ' बीजो बोल्यो-'स्त्रीओना हृदयने जाणनारा घणा पुरुषो छे, पण समुद्रना जळनु प्रमाण ने रेतीना कणनी संख्या जाणनार कोई नथी.' त्रीजो बोल्यो-' पूर्वाचार्याए जे कहेलु छे ते असत्य नथी, ते सर्व बाबत सर्वज्ञ पुरुषो जाणे छे.' एटले चोथो बोल्यो के 'आ श्रेष्ठीपुत्र सर्व जाणे छे ' ते साभळी बीजा बोली ऊठ्या के 'गंगानदी तो अहींथी दूर छे, पण आ समुद्रना जळनु प्रमाण तो तु श्रेष्ठीपुत्रनी पासे कराव.' आ प्रमाणे हठ करी तेओए रत्नचूडने उत्साहित कर्यो, एटले रत्नचूडे ते वात अंगीकार करी पछी ते धूर्तोए रत्नचूड साथ एवो कोलकरार कर्यो के "जो तमे समुद्रना जळनु प्रमाण करी आपो तो अमारी लक्ष्मी तमारे आधीन छे अने नहि तो अमे चारे जण तमारी लक्ष्मी लई लेशु " रत्नचूड ते वात कबूल करी आगळ चाल्यो. रत्नचूडे चिंतव्यु के 'आ बधा कार्योनो निर्वाह शी रीते थशे? माटे अनेक नररत्नोना चित्तने रंजन करवामा चतुर एवी वेश्याने घेर जाउ ' आवु विचारी ते रणघटा वेश्याने घेर गयो वेश्याए बहुमानपूर्वक अभ्युत्थान, अभ्यंग, उद्वर्त्तन, स्नान अने भोजनादि क्रिया करी ज्यारे संध्याकाळ थयो त्यारे रत्नचूड तेनी साथे वासगृहमा जई मनोहर शय्या उपर बेठो पछी ए चतुर नायिका चतुर पुरुषने योग्य एवी गोष्ठी करवा लागी, एटले श्रेष्ठीपुत्रे पोतानी वार्ता चलावी के 'अरे प्रिया! तु आ तारा नगरनी सर्व चेष्टा जाणे छे तो मारे आजे मार्गमा जे विवादो थयेला छे तेना उत्तर कहे. मारी ए चिंता दूर थया पछी हे सुंदरी! हु तारी साथे रंगभोगनी वार्ता करीश.' वेश्या बोली-"प्रिय! साभळो दैवयोगे जे कोई गृहस्थ अहीं आवी चडे छे तेनु सर्वस्व अहींना धूर्त लोको ठगी ले छे. ए द्रव्यनो एक भाग राजाने, बीजो भाग मंत्रीने,

त्रीजो भाग नगरशेठने, चोथो भाग कोटवाळने, पांचमो भाग पुरोहितने अने छठ्ठो भाग मारी माता यमघंटाने आपे छे. अहींना सर्व लोको अनाचारप्रिय छे, तो तेमना वशमां रहीने माराथी शुं थई शके? तथापि हुं तमने मारी माता पासे लई जईश त्यां वेसीने तमे तमारा बधा प्रश्नोना उत्तर सांभळजो." आ प्रमाणे कही रत्नचूडने स्त्रीनो वेश पहेरावीने ते चतुरा पोतानी अंबा पासे लई गई. मातानी समीपे प्रणाम करीने ते बेठी, एटले तेनी माता बोली-'वत्से! आ कोनी पुत्री छे?' ते बोली-'माता! आ रूपवती नामे श्रीदत्त श्रेष्ठीनी पुत्री छे. ते मने मळवा आवी छे.'

आ समये जेओए रत्नचूडनुं सर्व करियाणुं लई लीधुं हतुं ते धूर्त वेपारीओ यमघंटानी पासे आव्या. तेओए बधो वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी कुट्टिनी बोली-'आमां तमारा सर्व मनोरथो व्यर्थ थशे, कांई पण लाभ थशे नहि, कारण के तेनी इष्ट वस्तुथी वहाण पूर्ण आपवुं तमे कबूल करेलुं छे, तो इच्छा तो अनेक प्रकारनी थाय छे, तेथी ते कदी मच्छरना अस्थियी वहाण पूरी आपवा कहशे तो पछी तमे शुं करशो?' तेओ बोल्या-'तेनामां ते बुद्धि क्यांथी हशे? कारण के ते बाळक छे वळी प्रथम वयमां छे.' कुट्टिनी बोली-'कोई बाळक छतां बुद्धिमान होय छे अने कोई वृद्ध छतां मूर्ख होय छे.' ते सांभळी तेओ चारे स्वस्थाने गया.

थोडी वारे पेलो कारीगर हसते मुखे आवी वेश्याने कहेवा लाग्यो-"आ नगरमां कोई श्रेष्ठीपुत्र आवेलो छे. तेने में बे श्रेष्ठ उपानह भेट कर्यां छे. तेणे मने कह्युं छे के 'हुं तने खुशी करीश.' तेथी ज्यारे हुं तेनुं सर्वस्व लई लईश त्यारे ज खुशी थईश." ते सांभळी अक्का बोली-"अरे कारीगर! कदी जो तने ते एवुं पूछशे के 'राजाने त्यां पुत्रजन्म थयो. तेथी तुं खुशी छे के नहि?' कहे, त्यारे तुं शुं करीश? अने पछी तारी शी गति थशे?" आ प्रमाणे सांभळी ते पण चाल्यो गयो.

पछी पेलो काणो जुगारी आव्यो. तेणे पण पोतानी धूर्ततानी हकीकत वेश्या पासे जणावी. ते सांभळी यमघंटा हसीने बोली-'ते तेने धन आप्युं ते सारुं कर्युं नहि.' काणो बोल्यो-'केम?' त्यारे फरी अक्का बोली-"ते जो बीजा कोईनुं नेत्र तारी आगळ मूकशे त्यारे तो तुं एम कहीश के 'ए नेत्र मारुं नथी.' पण ते सांभळी ते तने एम कहशे के 'तें जे एक नेत्र मारा पितने त्यां गीरो मूक्युं छे तेनी जोडनुं बीजुं नेत्र तारी पासे छे ते लाव, एटले बन्ने कांटामां मूकीए. जो तोलमां सरखा थाय तो आ नेत्र तारे ग्रहण करवुं नहि तो नहि' आम कहशे तो पछी तुं शुं करीश?" द्यूतकार बोल्यो-'आवी बुद्धिनी कुशळता तमारामां ज छे, तेनामां नथी, तेथी तेनुं स्व मारा हाथमां आवेलुं ज हुं समजुं छुं.' आ प्रमाणे कही ते चाल्यो गयो.

थोडीवार पछी पेला चार रूताए आवी पोताना ... त्रीश-
यमघटा बोली-" आ प्रपचमा तमने काई लाभ ... पतीने
नथी, कारण के ते एम बोलशे के 'हु समुद्रना ...
प्रथम तेमा मळती नदीओनु जळ जुदु करी देवु ... पूछ्यु-
अशक्त छो, एटले तमे तमारु परतु मर्वस्व हारी ... ज्ञातपुत्र
ग्लान मुख करी पोताने स्थाने चाल्या गया ... गा हतो.

श्रेष्ठीपुत्र रत्नचूड आ बधा युक्तिवाळा ... प्रधान
ऊठीने रणघटा वेश्यापुत्रीनी साथे तेना ... ना पासे
स्थाने आव्यो. पछी अकाए बतावेली युक्ति ... अने ते
करियाणु लई जनारा वेपारी पासेथी अने ... धारवानी
ण बळात्कारे चार लाख द्रव्य लीधु आ ...
म्यो तेणे कह्यु-' आ पुरुषनु माहात्म्य ... मा पधार्या
मिथी पण द्रव्य लीवु ' आ प्रमाणे विम... छता मारा
टु-' हे भद्र ! हु तारा उपर मतुष्ट थयो छु, ... मिष करीने
ना पासे रणघटा गणिका मागी राजाए ... थाउ.' आवो

आ प्रमाणे लाभ मेळवी रत्नचूड ... ज्या सूरि हता
च्यो अने मातापिताना चरणमा ... एटले दूरथी गुरुनी
ळी श्रेष्ठीना मनमा अधिक हर्ष थ... मरडी मनी प्रत्य कह्यु-
रत्नचूडनी ख्याति सामळी सीम... जन् ! त्या जवाथी तेनो
ाने कह्यु-' भद्रे ! तारा उपदय... एटले राजाए आ प्रमाणे
' पछी राजानी आज्ञा मेळवीने ...
रत्नचूड नीनी पण घणी स्त्री... थपेशल ।
ा लाग्यो ... ुधा हहा ॥ १ ॥

चिरकाळ मामारिक भोग भा... थी कोमळ एवा तत्त्वने नहि जाण-
सामूळ जिनधर्म साभळी, ... ा मनुष्यजन्म व्यर्थगुमावी दे छे, ए
दीक्षा पाळी समाधिथी मृत्यु ...

आ कथानो उपनय आ ... न कह्यु-" हे व्रतधारी ! परलोक, पाप,
पिता ते धर्मदायक ... पिता घणा पापी हता. ते पाप करीने
ममजश तेथी ... , तेथी ... ने मने केम कह नहि
तेना पिताए जे ...

निषेध कर्यो ते अनीतिमार्गे जवानो निषेध समजवो प्रहाण ते संयम जाणवु, तेनाथी आ संसाररूपी समुद्र तरी शकाय छे. भवितव्यताना योगथी अथवा प्रमादथी अनीतिपुरे गमन ते अनाचारमां प्रवृत्ति जाणवी अन्यायप्रिय राजा ते मोह समजवो करियाणाने खरीद करनारा चार वणिक ते चार कषाय समजवा. प्राणीने सुमति आपनारी पूर्वे करेला कर्मनी परिणति ते अक्का समजवी तेना प्रभावथी प्राणी सर्व अशुभने उल्लंघन करी रत्नचूड जन्मभूमिए आव्या तेम धर्ममार्गमां पाछो आवे छे एम समजवु.' आ प्रमाणे बुद्धिमान पुरुषोए यथायोग्य उपनय उतारवो

"आ प्रबंधनो उपनय विचारी अज्ञानवडे थयेला विकारभावने छोडी जीव पुनः धर्ममार्गे आवे छे, अने ते मार्गे गमन करवावडे मनुष्यजन्मने सफळ करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७८ ॥

व्याख्यान १७९ मुं

आ व्रतो अल्पकाळ धारण कर्यां होय तो पण ते सुख आपे छे

अल्पकाल धृतान्येतद्, व्रतानि सौख्यदानि हि ।
अतः प्रदेशिवद् ग्राह्या-ण्येतानि तत्त्ववेतृभिः ॥ १ ॥

भावार्थ —

"आ व्रत अल्पकाळ सुधी ग्रहण कर्यां होय तो पण सुखने आपनारा थाय छे, तथा परदेशी राजानी पठे तत्त्ववेत्ताओए ए व्रत (अवश्य) धारण करवा"

परदेशी राजानी कथा

एकदा आमलकल्प नामना उद्यानमां श्रीवीरप्रभु समवसर्या ते समये नवा उत्पन्न थयेला सूर्याभदेवे स्वर्गमांथी आवी वीरप्रभुने नमी आ प्रमाणे विज्ञप्ति करी के-' हे स्वामी ! गौतम विगेरेने नवीन नाटक देखाडवा मने आज्ञा आपो ' आ प्रमाणे तेणे त्रण वार विज्ञप्ति करी, तथापि स्वामी मौन धरी रह्या एटले तेणे ते कार्यमां संमति लीधी, कारण के 'अनिषेधे अनुज्ञा' एवु वचन छे. पछी ईशानदिशामां जई

के ' पुत्र ! तारे पाप करवु नहि, पापथी नरकमा दुःख रागवु पडे छे. ' तेथी परलोक अने पाप छे ज नहि एम सिद्ध थाय छे. (१) वळी मारी माता घणी दयाळु हती, ते स्वर्गे गइ होवी जोइए, तो ते आवीने मने स्वर्गनुं सुख केम कहेती नथी ? तेम ' हे पुत्र ! तारे पुण्य करवु ' एवी भलामण केम करती नथी ? ए उपरथी सिद्ध थाय छे के परलोक नथी अने पुण्य पण नथी. (२). वळी कोई एक चोरने मे लोढानी कोठीमा घाल्यो हतो, ते समा सुराईने मरी गयो पछी कोठी जोता तेमा कोई ठेकाणे छिद्र जोवामा आव्यु नहि, तो तेनो जीव क्याथी नीकळी गयो ? (३) वळी तेना मृतशरीरमा कीडा पडला जोवामा आव्या अने तेमने पेसवानु छिद्र जोवामा आव्यु नहि, तेथी प्रवेश करनार के नीकळनार कोई जीव छे ज नहि (४) वळी बधा जीव सरखा नथी तेनु शु कारण ? एम तमे कहेशो, पण कोईनु बाण दूर जाय छे अने कोईनु बाण नजीक पडे छे तेवी रीते बधा जीव सरखा नथी, पण तेमा कांइ कर्मनु कारण नथी (५) वळी हे आचार्य ! मे एक चोरने जीवतो तुलाए चडाव्यो अने मरण पाम्या पछी पण चडाव्यो तो भार सरखो थयो, तेथी जो जीव होय तो जीवता भारे अने मरण पाम्या पछी हलको केम न थयो ? तेथी जीव सबंधी चिंता करवी ए वृथा छे (६) वळी हे आचार्य ! एक चोरने मे ककडेककडा करी जोयो, तथापि तेना शरीरना कोई प्रदेशमा जीव जोवामा आव्यो नहि (७) वळी हे प्रभु ! जेम घडा विगेरे पदार्थो प्रत्यक्ष जोवामा आवे छे तेम जीव होय तो ते केम जोवामा आवतो नथी ? (८) वळी कुंथुवाना अने हाथीना शरीरमा सरखो जीव होय तो ते कुंथुवानु शरीर नानु केम ? अने हाथीनु शरीर मोटु केम ? (९) वळी हे सूरिराज ! अमारा कुलक्रमथी जे नास्तिक मत चाल्यो आवे छे ते माराथी केम छोडी देवाय ? (१०) "

आ प्रमाणे प्रदेशी राजाना प्रश्नो सांभळी गुरुमहाराजाए उत्तर आप्यो के-" हे राजा ! तें तारी स्त्रीने परपुरुष साथे रमती जोई होय अने ते पुरुषने बांधीने कोटवाळने मारवा सोंप्यो होय ते वखते ते पुरुष कहे के ' हे राजा ! मने मारा पुत्रने मळवा माटे घर जवा दो ' तो तमे तेनु वचन मानशो ? " प्रदेशी राजा बोल्यो-' हे आचार्य ! एवा अपराधीनु वचन केम मनाय ? ' गुरु बोल्या-' त्यारे नरकमा रहेला परमाधामीओ तने मळवा आववा माटे तारा पिताने शी रीते छोडे ? १ वळी सांभळ, हे राजा ! सडाममा रहलो अत्यज (चंडाळ), सभामा रमीने नायकाओनु गायन सांभळता अने पुष्पमाळा धारण करता एवा तने बोलावे तो तु शु तेनी पासे जाय ?' राजाए कह्यु-' आचार्य महाराज ! तेवे वखत एवो आनद छोडीने तेनी पासे शी रीते जवाय ? ' गुरु कहे छे के ' त्यारे सभा सदृश स्वर्गलोकमा रहेली तारी माता

जे प्रबळ सुख भोगवता होय ते सडाम जेवा आ मनुष्यलोकमा तने मळवाने के समजाववाने शी रीते आवे? २. वळी मामळ, भोंयरामा शंख वगाडे तेनो नाद बहार संभळाय छे, पण ते स्वरने नीकळवानु छिद्र जोवामा आवतु नथी, तेवी रीते लोढानी कोठीमाहेला जीवनी गति पण जाणी लेवी ३. वळी लोढानो गोळो अग्निमा मूकवाथी ते अग्निमय थई जाय छे, पण तेमा अग्निने पेसवानु छिद्र जोवामा आवतु नथी; तेवी रीते ते चोरना शरीरमा कीडाओना प्रवेश विषे पण जाणी लेवु ४ कोमळ बाळक अने कठिन युवान तेओ बने अनुक्रमे बाण छोडे तो ते नजीक अने दूर जाय तो तेना कोमळ अने कठिन देहनो तफावत समजवो के जे देह पूर्वकर्म-वडे ज प्राप्त थयेल छे ५. जेम वायुथी भरेली धम्मण भारे थती नथी अने वायुथी रहित धम्मण तोलमा हलकी थती नथी, तेम तुला उपर आरूढ करेला चोरना जीव सहित अने जीव रहित देह माटे समजवु. ६. हे राजा! जेम अरणिना काष्ठमा अग्नि रहेलो छे, पण तेना खड खड करीने जोता ते जोवामा आवतो नथी, तेम आ शरीरनी अदर पण जीव रहेलो छे, पण ते शरीरना खड खड करवाथी जोवामा आवतो नथी. तेने सर्वज्ञ ज जोई शके छे ७. जेम वायुथी पत्र हले छे, पण वायु प्रत्यक्ष जोवामा आवतो नथी, तेम जीवप्रदेशना योगे शरीर हाले छे, पण जीव प्रत्यक्ष जोवामा आवतो नथी. ८. जेम मोटा घरमा मूकेलो दीपक आखा घरमा प्रकाश करे छे अने नानी हाडलीमा मूक्यो होय तो ते तेटलामा ज प्रकाश करे छे, एवी रीते जीव पण जेवु नानु मोटु शरीर पामे छे तेवो नानो मोटो थईने रहे छे ९ वळी तु कहे छे के कुलक्रमागत आवेलो नास्तिक मत केम छोडु? पण हे राजा! जे परपराए आवेली अधर्मबुद्धिने छोडे नहि ते लोढाने वहेनारा वेपारीनी जेम विपत्तिओनु स्थान थाय छे. ते कथा आ प्रमाणे छे–कोई चार मित्रो लाभ मेळववाने माटे देशातरे जता हता त्या मार्गमा प्रथम लोढानी खाण आवी. तेमाथी तेओए लोढु लीधु. त्याथी आगळ चाल्या एटले रूपानी खाण तेमना जोवामा आवी, तेथी त्रण जणाए तो लोढु नाखी दईने रूपु लीधु पण तेमनामाथी चोथा माणसे कदाग्रहथी लोढु छोडयु नहि. आगळ चालता सुवर्णनी खाण आवी, एटले पेला त्रण पुरुषोए तो रूपु छोडी सुवर्ण लीधु, तथापि चोथाए तो लोढु छोडयु नहि. आगळ चालता रत्नोनी खाण आवी, एटले त्रण मित्रोए तो सुवर्ण नाखी दई रत्नो लीधा पण चोथाए लोढु छोडयु नहि. परिणामे त्रण मित्रो सुखी थया अने चोथो दुराग्रही मित्र जन्म सुधी दरिद्री रहेवाथी दु:खी थयो. आ प्रमाणे लोढाना भारने वहन करनार दुराग्रहीनी जेम परपराए चाल्या आवता मिथ्यात्वने नहि छोडनार पुरुषो दु:खी थाय छे १० ”

आ प्रमाणे पोताना प्रश्नोना उत्तर अश्व उपर बेठां बेठा सांभळी प्रदेशी राजा धर्म

पाम्यो पछी अश्वथी ऊतरी गुरुने विनयपूर्वक नमीने कह्यु–' हे महाराज ! प्रभाते तमने नमीने हु मारो अविनय खमावीश.'

बीजे दिवसे प्रभातकाळे कोणिक राजानी जेम प्रदेशी राजाए मोटा उत्सवथी आवी गुरुने वदना करी अने तेमनी पासे श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्या पछी गुरुए कह्यु–" हे राजा ! पुष्पफलवाळा बगीचानी जेम प्रथम बीजाओने दान देनारा दातार थई हमणा धर्म प्राप्त करीने तमारे अदाता थवु नहि, एटले के सुकाई गयेला वननी जेवा अरमणीय थवु नहि, केमके तेम थवाथी अमने अतराय लागे अने धर्मनी निंदा थाय." प्रदेशी राजा बोल्यो–" हे स्वामी ! हु मारा सात हजार गामनी उपजना चार विभाग करीश तेमाथी एक भागवडे मारा राज्यना सैन्य तथा वाहननु पोषण करीश, बीजा भागवडे अत पुरनो निर्वाह करीश, त्रीजा भागवडे भडारनी पुष्टि करीश अने चोथा भागवडे दानशाळा विगेरे धर्मकार्य करीश " आ प्रमाणे धर्मने स्वीकारी प्रदेशी राजा घेर आव्यो अने ते श्रमणोपासक थयो

कामभोगमा अनासक्त एवा राजाने जाणी तेनी राणी सूर्यकाता तेने मारी नाख वानो उपाय चिंतववा लागी तेणीए पोताना पुत्र सूर्यकातने कह्यु के ' तारा पिता देश, मुलक अने राज्यनी बिलकुल चिंता करता नथी, ते श्रावक थईने फरता फरे छे, तेथी शस्त्र, मत्र, विष के अग्निना प्रयोगथी तु तेने मारी नाखीने राज्य लई ले कोहेला पानने काटी नाखवु ए न्याय छे ' आ प्रमाणेना पोतानी माताना वचन साभळी कुमार मौन धरी रह्यो ते जोई राणीए विचार्यु के ' आ पुत्र नमालो छे, आने में गुप्त भेद (विचार) कही नाख्यो, पण आ जरूर मत्रभेद करशे.' एवु चिंतवी तेणीए छळ शोधी भोजनमा विष नाखीने प्रदेशी राजाने भोजन कराव्यु तेनाथी राजाने असह्य वेदना उत्पन्न थई ए कृत्य पोतानी राणीनु छे एम तेना जाणवामा आव्यु, तथापि तेणे तेना पर कोप कर्यो नहि स्वयमेव पौषधागारमा जई, दर्भना सस्थारा उपर पूर्वाभिमुखे बेसी, शक्रस्तव (नमुत्थुण) भणी, मनमा पोताना धर्माचार्यने सभारी, जावजीव सुधी सर्व पापस्थानोने वोसिरावी, समाधिवडे काळधर्म पामी, पहेला देव लोकमा सूर्याभविमानने विषे चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो

मात्र ओगणचाळीश दिवस श्रावकव्रत पाळवाथी साडाबार लाख योजनना विस्तारवाळा विमानने विषे महर्द्धिक देवता थयो तेणे प्रदेशी राजाना भवमा मात्र तेर छट्ठ करी तेरमा छट्ठने पारणे सथारो कर्यो हतो

" देवपणे उत्पन्न थया पछी अवधिज्ञाने करी पोताने समकित प्राप्त थयाना स्थने जाणी ते सूर्याभदेव पृथ्वी पर आव्यो बत पासे नाटक कर्यु.

अनुक्रमे देवगतिमा चार पल्योपमनु आयुष्य भोगवी त्याथी चवी महाविदेहक्षेत्रमा मनुष्यपणे उत्पन्न थईने मोक्षे जशे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ नवसप्तत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥ १७९ ॥

व्याख्यान १८० मुं

हजु श्रावक धर्मनुं वर्णन करे छे

गृहेऽपि सवसन् कश्चित्, श्रावको निःस्पृहाग्रणीः ।
कूर्मापुत्र इवाप्नोति, केवलज्ञानमुज्ज्वलम् ॥ १ ॥

भावार्थः–

" कोई श्रावक घरमां रहेता छता पण जो निःस्पृहना अग्रेसरपणे वर्ते तो कूर्मापुत्रनी जेम ते घरमा पण उज्ज्वल केवळज्ञान प्राप्त करे छे "

कूर्मापुत्रनी कथा

दुर्गमपुरमा द्रोण नामे राजा हतो. तेने द्रुमादेवी नामे राणी हती. तेमने दुर्लभकुमार नामे पुत्र थयो हतो ते राज्य अने यौवनना मदथी बीजा घणा कुमारोने दडानी जेम आकाशमा उछाळी हमेशा क्रीडा करतो हतो. एक वखते ते नगरना उद्यानमा कोई एक केवळी समोसर्या तेमने ते वननी भद्रमुखी नामे यक्षणीए पूछ्युं–' मारा पूर्वभवना स्वामीनी शी गति थई छे ? ' ज्ञानी बोल्या–' तारा पूर्व भवनो स्वामी आ नगरना राजानो पुत्र थयो छे ' ते सांभळी पूर्वभवना रूपथी लोभाईने ते यक्षिणी कुमारने पोताना भुवनमा लई गई. देवीए पूर्वभवनु स्वरूप कही समजावता तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु तेथी तेओ परस्पर प्रेमी थया यक्षिणीए पोतानी शक्तिथी तेना देहने सुगंधी करी पोताना भोगने योग्य कर्यो. दुर्लभकुमारना मातापिताए गुरुना ज्ञानथी तेनी शोध मेळवी पछी अनुक्रमे तेमणे दीक्षा ग्रहण करी.

यक्षिणीए अवधिज्ञानवडे पोताना पतिनु आयुष्य थोडु जाणी तेने ते ज वनमा केवळीनी पासे मूकी दीधो त्या केवळीना मुखथी तेणे आ प्रमाणे देशना सांभळी– " जेम लींबडानो कीडो लींबडाना कडवा रसने पण मधुर जाणे छे, तेम सिद्धिना

पाम्यो. पछी अश्वथी ऊतरी गुरुने विनयपूर्वक नमीने कह्यु-' हे महाराज ! प्रभाते तमने नमीने हु मारो अविनय खमावीश '

बीजे दिवसे प्रभातकाळे कोणिक राजानी जेम प्रदेशी राजाए मोटा उत्सवथी आवी गुरुने वदना करी अने तेमनी पासे श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्या पछी गुरुए कह्यु-' हे राजा ! पुष्पफलवाळा बगीचानी जेम प्रथम बीजाओने दान देनारा दातार थई हमणा धर्म प्राप्त करीने तमारे अदाता थवु नहि, एटले के सुकाई गयेला वननी जेवा अरमणीय थवु नहि, कमके तेम थवाथी अमने अतराय लागे अने धर्मनी निंदा थाय. "प्रदेशी राजा बोल्यो-" हे स्वामी ! हु मारा सात हजार गामनी उपजना चार विभाग करीश तेमाथी एक भागवडे मारा राज्यना सैन्य तथा वाहननुं पोषण करीश, बीजा भागवडे अत पुरनो निर्वाह करीश, त्रीजा भागवडे भडारनी पुष्टि करीश अने चोथा भागवडे दानशाळा विगेरे धर्मकार्य करीश " आ प्रमाणे धर्मने स्वीकारी प्रदेशी राजा घेर आव्यो अने ते श्रमणोपासक थयो

कामभोगमा अनासक्त एवा राजाने जाणी तेनी राणी सूर्यकाता तेने मारी नाखवानो उपाय चितववा लागी तेणीए पोताना पुत्र सूर्यकातने कह्यु के ' तारा पिता देश, मुलक अने राज्यनी बिलकुल चिंता करता नथी, ते श्रावक थईने फरता फरे छे, तेथी शस्त्र, मत्र, विष के अग्निना प्रयोगथी तु तेने मारी नाखीने राज्य लई ले. कोहला पानने काढी नाखवु ए न्याय छे ' आ प्रमाणेना पोतानी माताना वचन साभळी कुमार मौन धरी रह्यो ते जोई राणीए विचार्युं के ' आ पुत्र नमालो छे, आने में गुप्त भेद (विचार) कही नाख्यो, पण आ जरूर मनभेद करशे.' एवु चितवी तेणीए छळ शोधी भोजनमा विष नाखीने प्रदेशी राजाने भोजन कराव्यु तेनाथी राजाने असह्य वेदना उत्पन्न थई ए कृत्य पोतानी राणीनु छे एम तेना जाणवामा आव्यु, तथापि तेणे तेना पर कोप कर्यो नहि स्वयमेव पौषधागारमा जई, दर्भना सथारा उपर पूर्वाभिमुखे रमी, शक्रस्तव (नमुथ्थुण) भणी, मनमा पोताना धर्माचार्यने समारी, जावजीव सुधी सर्व पापस्थानोने वोसिरावी, समाधिवड काळधर्म पामी, पहेला देवलोकमा सूर्याभविमानने विषे चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो

मात्र ओगणचाळीश दिवस श्रावकव्रत पाळवाथी साडाबार लाख योजनना विस्तारवाळा विमानने विषे महर्द्धिक देवता थयो तेणे प्रदेशी राजाना भवमा मात्र तेर छठ करी तेरमा छहने पारणे सथारो कर्यो हतो.

" देवपणे उत्पन्न थया पछी अवधिज्ञाने करी पोताने समकित प्राप्त थयाना वृत्तातने जाणी ते सूर्याभदेव पृथ्वी पर आव्यो अने भगवत पासे नाटक कर्युं

जिनेश्वर भगवत विचरता होय छे.' चक्रवर्तीए पुन' पूछ्यु–' स्वामी ! हाल भरत-क्षेत्रने विषे कोई चक्रवर्ती के केवली छे के नहि ?' प्रभु बोल्या–' हे चक्रवर्ती ! भरत-क्षेत्रमा अधुना कूर्मापुत्र नामे एक केवळी गृहवासमा रहेला छे. ते पोताना मातापिताने प्रतिबोध करवाने माटे ज गृहस्थावासमा रह्या छे.' पछी ते चार चारणमुनिओए पूछ्यु–' भगवन् ! अमने केवळज्ञान क्यारे थशे ?' जिनेश्वर बोल्या–' कूर्मापुत्रनी समीपे तमने केवळज्ञान थशे ' ए प्रमाणे सांभळी चारे विद्याधर मुनि कूर्मापुत्रनी पासे आव्या अने त्या मौन धरीने रह्या, एटले कूर्मापुत्र केवळीए तेमने कह्यु–' तमे भगवतना वचनथी अहीं आव्या छो, पण तमे तमारा पूर्वभवनु स्वरूप आ प्रमाणे अनुभव्यु छे.' एम कही तेमना पूर्वभवनु स्वरूप कही समजाव्यु ते सांभळता ज तेमने जातिस्मरण थयु अने तत्काळ क्षपकश्रेणी पर आरूढ थया, तेथी तेओने पण केवळज्ञान उत्पन्न थयु पछी तेओ पाछा जिनेश्वर भगवतनी पासे आवी केवली होवाथी वांद्या वगर बेठा. एटले इद्रे पूछ्यु–' भगवत ! आ चार मुनि आपने वाद्या वगर केम बेठा ?' प्रभु बोल्या–' तेओ कूर्मापुत्रना मुखथी स्वानुभूत पूर्वभवनु स्वरूप जाणी केवली थया छे.' पुनः इद्रे पूछ्यु–' भगवन् ! ते कूर्मापुत्र क्यारे दीक्षा लेशे ?' प्रभु बोल्या–' आजथी सातमे दिवसे ते द्रव्यथी सयम स्वीकारशे.'

अहीं कूर्मापुत्रे सातमे दिवसे मातपिताने प्रबोधी पोते लोच कर्यो अने मुनिवेश स्वीकार्यो. देवताओए सुवर्णकमळ रच्यु तेनी उपर बेसी धर्मदेशनाथी अनेक जीवोने प्रतिबोध पमाडी अनुक्रमे सिद्धिसुखने प्राप्त थया

सिद्धांतमा कह्यु छे के जघन्यथी बे हाथ प्रमाणवाळो पुरुष अने उत्कृष्टथी पांचसो धनुष्यना प्रमाणवाळो पुरुष सिद्धिने पामे छे

" सुवर्ण, रूपु, मणि अने रत्नोथी भरपूर, नृत्य, गीत अने युवतिओथी रमणीय एवा भुवनमा पण जेनु मन लुब्ध थयु नहि तेवा गृहस्थावासमा केवळज्ञानी थयेला कूर्मापुत्रनी अमे स्तुति करीए छीए '

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अशीत्यधिकशततम' प्रबध. ॥१८०॥

इति द्वादशस्तभ. समाप्त

सुखथी अनाण्या एवा प्राणीओ ससारना दुःखने पण सुखरूप माने छे " आवी देशना सांभळी सभामा रहेला पोताना मातापिताने कठे वळगी दुर्लभकुमार विलाप करवा लाग्यो एटले गुरुए प्रतिबोध आप्यो के " जे मनुष्य मनुष्यभव पामी धर्मने विषे प्रमाद करे छे ते प्राप्त थयेला चिंतामणि रत्नने समुद्रमा फेंकी दे छे " इत्यादि देशना सांभळवाथी देवीने समकित प्राप्त थयु अने कुमारे चारित्र ग्रहण कर्यु अनुक्रमे कुमार अने तेना मातापिता महाशुक्र नामे देवलोके देवता थया

पेली यक्षिणी त्याथी चवीने भ्रमर राजानी वेशालिका नामे राणी थई, त्या ते दपती धर्माराधन करीने स्वर्गे गया दुर्लभकुमारनो जीव देवलोकमाथी चवीने राजगृही नगरीमा महेंद्र नामना राजानी कूर्मा राणीना उदरमा पुत्रपणे उत्पन्न थयो. शुभ दिवसे शुभ लग्नमा तेनो जन्म थयो दोहदने अनुसारे तेनु धर्मदेव एवु नाम पाड्यु ते पूर्वभवे बाळकोना पोटलानी जेम बाधी आकाशमा उछाळी कदुक क्रीडा करतो हतो, तेथी आ भवमा तेनु शरीर बे हाथना प्रमाणवाळु वामन थयु अने लोकोमा कूर्मापुत्र एवु नाम प्रख्यात थयु.

कूर्मापुत्रने यौवन वयमा घणी स्त्रीओ इच्छती हती, तथापि ते मनथी विरक्त हतो एक वखते कोई मुनिना मुखथी सिद्धातना पाठ सांभळी तेने जातिस्मरण थयु अनुक्रमे ध्यानरूप अग्निथी कर्मरूपी इंधनने बाळी नाखीने तेणे केवळज्ञान प्राप्त कर्यु पछी ते महाशये विचार्यु के " जो हु हमणा चारित्रने ग्रहण करीश तो मारा मातापिता शोकथी मृत्यु पामशे, माटे तेमने प्रतिबोध करवा अनासक्तवृत्तिए (केवळज्ञान थयानु न जाणे तेम) गृहवासमा रहेवु योग्य छे " आ प्रमाणे विचारी ते गृहवासमा रह्या तेमने माटे कहेलु छे के " कूर्मापुत्रना जेवो बीजो कोण धन्य छे के जे मातापिताने प्रतिबोध पमाडवाने अर्थे केवळी थया छता पण न्यायवृत्तिथी गृहवासमा रह्या हता ! "

आ अरसामा वासीना चार जीवो स्वर्गथी चवीने वैताढ्य पर्वत उपर खेचर थया तेओए सासारिक सुख भोगवी कोइ चारणमुनिनी पासे चारित्र ग्रहण कर्यु पछी तेओ महाविदेहक्षेत्रने विषे जिनेश्वरने वादवा गया त्या प्रभु देशना आपता हता तेमने वदना करीने तेओ बेठा तेवामा सभामा बेठेला चक्रवर्तीए वैताढ्यथी आवेला ते चार मुनिओने प्रश्नना मुखथी जाणीने प्रश्न कर्यो के ' हे स्वामी ! एक साथे उत्कृष्टा विहार करता एवा जिनेश्वर भगवत केटला पामीए ? ' प्रभु बोल्या –' हे चक्रवर्ती ! आ मनुष्यक्षेत्रने विषे पाच महाविदेह क्षेत्र छे एक एक महाविदेहमा बत्रीश बत्रीश विजय छे, तेथी बत्रीशने पाचगुणा करीए त्यारे एकसो साठ विजय थाय, तेमा पाच भरत अने ऐरवतक्षेत्र मेळवता एकसो ने सीत्तेर क्षेत्रो थाय छे उत्कृष्ट काळे ए सर्व क्षेत्रोमा

जिनेश्वर भगवत विचरता होय छे.' चक्रवर्तीए पुन' पूछ्यु–' स्वामी! हाल भरतक्षेत्रने विषे कोई चक्रवर्ती के केवली छे के नहि?' प्रभु बोल्या–' हे चक्रवर्ती! भरतक्षेत्रमा अधुना कूर्मापुत्र नामे एक केवली गृहवासमा रहेला छे. ते पोताना मातापिताने प्रतिबोध करवाने माटे ज गृहस्थावासमा रह्या छे' पछी ते चार चारणमुनिओए पूछ्यु–' भगवन्! अमने केवळज्ञान क्यारे थशे?' जिनेश्वर बोल्या–' कूर्मापुत्रनी समीपे तमने केवळज्ञान थशे' ए प्रमाणे सांभळी चारे विद्याधर मुनि कूर्मापुत्रनी पासे आव्या अने त्या मौन धरीने रह्या, एटले कूर्मापुत्र केवळीए तेमने कह्यु–' तमे भगवतना वचनथी अहीं आव्या छो, पण तमे तमारा पूर्वभवनु स्वरूप आ प्रमाणे अनुभव्यु छे.' एम कही तेमना पूर्वभवनु स्वरूप कही सभळाव्यु. ते साभळता ज तेमने जातिस्मरण थयु अने तत्काळ क्षपकश्रेणी पर आरूढ थया, तेथी तेओने पण केवळज्ञान उत्पन्न थयु पछी तेओ पाछा जिनेश्वर भगवतनी पासे आवी केवली होवाथी वांद्या वगर बेठा एटले इद्रे पूछ्यु–' भगवत! आ चारे मुनि आपने वांद्या वगर केम बेठा?' प्रभु बोल्या–' तेओ कूर्मापुत्रना मुखथी स्वानुभूत पूर्वभवनु स्वरूप जाणी केवली थया छे' पुनः इद्रे पूछ्यु–' भगवन्! ते कूर्मापुत्र क्यारे दीक्षा लेशे?' प्रभु बोल्या–' आजथी सातमे दिवसे ते द्रव्यथी सयम स्वीकारशे.'

अही कूर्मापुत्रे सातमे दिवसे मातपिताने प्रबोधी पोते लोच कर्यो अने मुनिवेश स्वीकार्यो. देवताओए सुवर्णकमळ रच्यु तेनी उपर बेसी धर्मदेशनाथी अनेक जीवोने प्रतिबोध पमाडी अनुक्रमे सिद्धिसुखने प्राप्त थया

सिद्धातमा कह्यु छे के जघन्यथी बे हाथ प्रमाणवाळो पुरुष अने उत्कृष्टथी पाचसो धनुष्यना प्रमाणवाळो पुरुष सिद्धिने पामे छे

"सुवर्ण, रूपु, मणि अने रत्नोथी भरपूर, नृत्य, गीत अने युवतिओथी रमणीय एवा भुवनमा पण जेनु मन लुब्ध थयु नहि तेवा गृहस्थावासमा केवळज्ञानी थयेला कूर्मापुत्रनी अमे स्तुति करीए छीए."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अशीत्यधिकशततम. प्रबध ॥१८०॥

इति द्वादशस्तभ' समाप्त.

॥ श्री उपदेशप्रासादग्रंथे ॥

स्तंभ १२ मो

मंगलाचरण

(जिनस्तुति)

उत्कृष्टकाले विजयेष्वभूवन्, षष्ठ्युत्तराश्चद्वशतारिहता ।
दिक्क्षेत्रजा कालत्रिकेण गुण्या, विंशत्यथिशाश्च शतानि सप्त ॥ १ ॥
सीमंधराद्या विहरन्ति ये च, विदेहजा विंशतितीर्थनाथा ।
कल्याणकानि वृषभादिकाना, विंशत्यथाप्येकशतानि चात्र ॥ २ ॥
श्रीवारिषेणो वृषभाननश्च, चन्द्राननार्हत्प्रभुवर्द्धमान ।
एतच्चतु शाश्वतमूर्त्तयश्च, सत्यूर्ध्वलोकादिषु ता स्तवीमि ॥ ३ ॥
एतज्जिनव्यूहमनन्तरोक्त, शत्रुंजयाद्रेस्तु सहस्रकूटे ।
न्यस्त स्तुत तत्प्रददातु नित्य, ज्ञान समाध्युद्यममुत्तम मे ॥ ४ ॥

भावार्थ —

"उत्कृष्ट कालने विषे पाच महाविदेहक्षेत्रना १६० विजयमा एकसो ने साठ तीर्थंकरो थाय छे तेमने, तथा पाच भरत अने पाच ऐरवत मळी दश क्षेत्रमा थती दश चोवीशीना बसो ने चालीश जिन थाय तने त्रण काळनी त्रण त्रण चोवीशी लेवा माटे त्रणगुणा करवाथी सातसो ने वीश जिनेश्वर थाय छे तेमने, तथा महाविदेह क्षेत्रने विषे सीमंधर स्वामी विगेरे जे वीश तीर्थंकरो हाल विचरे छे तेमने, अने भरतक्षेत्रनी वर्तमान चोवीशीना ऋषभदेव विगेरे २४ तीर्थंकरोना एकसो ने वीश कल्याणक छे तेमने, तेम ज श्री वारिषेण, श्रीवृषभानन, श्रीचंद्रानन अने श्रीवर्धमान प्रभु ए चार नामवाळी शाश्वत मूर्तिओ ऊर्ध्व लोक विगेरेमा शाश्वता सिद्धायतनमां

१ ज्यारे मनुष्यक्षेत्रमा मनुष्यो सबंधी विशेष सख्यामा होय त्यारे उत्कृष्ट काळ कहेवाय छे श्रीअजितनाथ प्रभुना समयमा उत्कृष्ट काळ हतो, ते वखत पाच महाविदेहमा १६० प्रभु विचरता हता

रहेली छे तेमने स्तवु छु. आ त्रण श्लोकमा कहेलो १०२४ जिनेश्वरनो समूह शत्रुजय गिरि उपरना सहस्रकूटमा स्थापित करेलो छे ते मने ज्ञान, समाधि अने उत्तम उद्यम आपो." (आ १०२४ तीर्थंकरोनी नामावळी श्री जैन धर्म प्रसारक सभाए छपावेल छे)

पूर्वना बार स्थभोमा सम्यक्त्व अने बार व्रतो वर्णवेला छे तेना समकित अने व्रतवाळो पुरुष जिनभक्तिमा तत्पर होय छे, तेथी ए सबधथी आवेला श्रीजिनभक्तिना फळने हवे स्तवु छु (कहु छु).

व्याख्यान १८१ मुं

प्रथमध्यमंगळ

श्रीवीरजगदाधार, स्तुवति प्रत्यह नरः ।
तेऽर्थवाद वितन्वति, विश्वे दशार्णभद्रवत् ॥ १ ॥

" जगतना आधाररूप श्री वीरप्रभुने जे पुरुषो हमेशा स्तवे छे तेओ दशार्णभद्रनी जेम आ विश्वमा पोताना अर्थवाद(यश)ने विस्तारे छे. "

दशार्णभद्रनी कथा

दशार्ण नामना देशमा दशार्ण नगरने विषे दशार्ण नामे राजा हतो. ते पाचसें राणीओनी साथे पोताना अत.पुरमा सुखविलास भोगवतो हतो एक वखते सेवके आवीने सध्याकाळे जणाव्यु के ' ह स्वामी ! प्रातःकाळे विश्वना स्वामी श्रीवीरपरमात्मा आपणा उद्यानमा पधारशे.' ते साभळी राजा रोमाचित थईने बोल्यो–' पूर्वे प्रभुने कोईए वाद्या नथी तेवी रीते प्रभाते हु वदना करीश ' आ प्रमाणे अहकारथी पूर्ण थई प्रातःकाळे सुवर्णनी, रूपानी अने दातनी पाचसो पालखीओमा अतःपुरीओने बेसारी मोटी ऋद्धि सहित ते श्रीवीरप्रभुने वादवा माटे नीकळ्यो तेनी साथे अढार हजार हाथीओ, चोवीश लाख घोडा, एकवीश हजार रथ अने एकाणु करोड पेदल, एक हजार सुखपाल अने सोळ हजार ध्वजाओ हती. आवा मोटा आडबर साथे समवसरण समीपे आवी, हस्ती उपरथी ऊतरी पाच अभिगम साचवना–पूर्वक तेणे प्रभुने वदना करी

ए अवसरे सौधर्म इद्रे अवधिज्ञानवडे ते वात जाणी, ते राजानु अभिमान उतारवा माटे, श्री वीरप्रभुने वदना करवा माटे आवता, पोतानी दिव्य ऋद्धि विकुर्वी पाचसो ने बार बार कुभस्थळवाळा चोसठ हजार हाथीओ विकुर्व्या तेना दरेक मस्तकमा आठ आठ दतुशळ, प्रत्येक दतुशळे आठ आठ वावो, प्रत्येक वावमा आठ आठ कमळो, प्रत्येक कमळे लाख लाख पाखडीओ अने प्रत्येक पाखडीए बत्रीश

वद्द नाटको विकुर्व्यां दरेक कमळनी मध्यमा कर्णिकाना भाग उपर एक एक इन्द्र-प्रासाद कर्यो अने तेनी अंदर आठ आठ पट्टराणीओ साथे इंद्र पोते बेठो आवी महान् समृद्धि साथे इन्द्र प्रभुने वादवा आव्यो

पूर्वाचार्याए दरेक हस्तीना मुखादिकनी संख्या आ प्रमाणे कहली छे-दरेक हाथीने पांचसो ने बार मुख, चार हजार ने छन्नु दंतुशळ, बत्रीस हजार सातसो ने अडसठ वापिकाओ, ने लाख बासठ हजार एकसो ने चुमालीस कमळो, तेटला ज ते कमळोनी कर्णिका उपर प्रासादो अने वीश लाख सत्ताणु हजार एकसो ने बावन इन्द्राणीओ तथा छत्रीशसें एकत्रीश क्रोड ने चुमाळीस लाख कमळनी पांखडीओ-आ प्रमाणे एक हस्ती माटे समजी लेवु तेवा ६४००० हाथी होवाथी ते परना इन्द्र विगेरनी सर्व संख्या पोतानी मेळे गणी लेवी, अने तेमा रहेल इन्द्राणीओनी संख्या तेर हजार चारसो ने एकत्रीश क्रोड सत्योतेर लाख अने अठ्यासीश हजारनी जाणवी[१]. एक एक नाटकमा सरखे सरखा रूप, शृंगार अने नाट्यना उपकरणोवाळा एकसो ने आठ आठ दिव्यकुमारो अने एकसो ने आठ आठ दिव्य कन्याओ जाणवी आवी मोटी ऋद्धि सहित आवीने इन्द्रे पृथ्वी पर मस्तक नमावी प्रभुना चरणमा वंदना करी.

दशार्णभद्रराजा इन्द्रनी आवी समृद्धि जोई आश्चर्यथी चिंतवन करवा लाग्यो के "अहो! इन्द्रनी समृद्धिनो विस्तार केवो छे? तेनी आगळ मारी समृद्धि तो तुच्छ छे, तेथी मे वृथा अहंकार कर्यो. इन्द्रना एक हाथी जेटली पण मारी संपत्ति नथी अहो! आ इन्द्रे जरूर मारा अभिमानरूप मुखने लपडाक लगावीने वाकु करी दीधुं छे, माटे हवे हु अंतरनी समृद्धि प्रगट करु अने तेवडे पुन श्रीजिनेश्वरने वंदना करु तो पछी इन्द्र शु करवानो छे? तेनी बाह्य समृद्धिने मारा अंतरग बळथी हणी नाखु, केमके अविरति गुणस्थानके रहेलो आ इन्द्र कदापि पण आ भवमा संयमसमृद्धिमय आत्माए करी प्रभुने वांदवा समर्थ नथी, तथी ते पोतानी समृद्धिवडे मने वांदे-स्तवे एम करु" आवो विचार करी प्रभुनी देशनाथी अंतरमा प्रतिबोध पामेला दशार्ण राजाए राज्य संपत्ति विगेरने क्षणविनश्वर मानी तत्काळ प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी ते जोई विस्मय पामेला इन्द्रे ते राजर्षिने वंदना करीने कह्यु-" हे महासत्त्व! तमे आवा पराक्रमथी मने जीती लीधो छे, तो बीजाओनी तो तमारी पासे शी विसात छे? हु तमने वारवार खमाबु छु आ तमारो मूर्च्छानो त्याग कोइ अद्भुत छे हु तो विषयलंपट छु, जेथी तमने जीतवा समर्थ नथी तमे तो निःस्पृह अने मायारहित छो तमे मने धर्माशिष आपो के जेथी आगामी भवे अल्प काळमा मारा संसारनो पार आवी जाय."

१ कमळनी पांखडीओनी अने इन्द्राणीओनी संख्या केम थती ते समजातु नथी

आ प्रमाणे दशार्ण राजर्षिनी स्तुति करीने इद्र स्वर्गे गया. दशार्ण मुनि पण घणा प्रकारना तप करी कर्म खपावीने मोक्षे गया.

"एवी रीते जे अतरनी समृद्धिवाळो मुश्रावक अहकार छोडी भक्तिपूर्वक श्रीजिनेश्वर भगवतनी स्तुति करे छे ते ज आ जगतमा उत्तम छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकाशीत्यधिकशततमः प्रबधः ॥ १८१ ॥

व्याख्यान १८२ मुं

श्रीजिनभक्तिनु फळविधान कहे छे

नरत्व प्राप्य दुःप्राप्य, कुर्वन्ति भरतादिवत् ।
तीर्थंकरार्चन भक्तिं, तेषां स्यात् शाश्वतं यशः ॥ १ ॥

भावार्थ—

"जेओ दुर्लभ मनुष्यपणु प्राप्त करी भरतादिकनी जेम तीर्थंकर भगवतनी पूजा अने भक्ति करे छे तेमने शाश्वत (अक्षय) कीर्ति प्राप्त थाय छे."

अहीं भरत एटले श्रीयुगादि प्रभुना पुत्र समजवा अने आदि शब्दथी सगर राजा विगेरेनु ग्रहण करवु.

भरतादिकनी कथा

(शत्रुजय तीर्थ परना उद्धारोनु वर्णन)

श्री विनीता नगरीना उद्यानमा एक वखते भरत चक्रीए प्रथम तीर्थंकरने नमी आ प्रमाणे पूछ्यु-"हे स्वामी ! पूर्वे जे तीर्थमा तमे नवाणु पूर्व सुधी समोसर्या छो ते तीर्थ शु शाश्वत छे?" प्रभुए कह्यु-"हे भरत ! ए सिद्धाचळ गिरि पहेला आरामा एशी योजन, बीजा आरामा सीत्तेर योजन, त्रीजा आरामा साठ योजन, चोथा आरामा पचास योजन, पाचमा आरामा बार योजन अने छट्ठा आरामां सात हाथना प्रमाणवाळो थाय छे, तेथी ए तीर्थ शाश्वत प्राय छे. अवसर्पिणीमा अने उत्सर्पिणीमा तेनी हानि वृद्धि थया करे छे"

आ प्रमाणे साभळी भरत चक्री सघ लई मोटा उत्सव साथे ते तीर्थे गया अने त्या इद्रना वचनथी ते पहेला सघपतिए रत्नसुवर्णमय चोराशी मंडपोथी अलकृत त्रैलोक्यविभ्रम नाम एक प्रासाद कराव्यो ते एक कोश ऊचो, दोढ कोश विस्तीर्ण अने हजार धनुष पहोळो हतो पछी तेमा सुवर्णरत्नमय श्रीजिनबिंब स्थापित कर्युं. एवी रीत भरते ए तीर्थनो उद्धार कर्यो १

त्यारपछी अनुक्रमे श्रीऋषभदेवना सतानमा भरतेश्वरना राज्यने विषे आदित्य-यशा, महायशा अने अतिबल विगेरे त्रिखडना भोक्ताओ थया अने भरतनी जेम घणा राजाओ सघपति थइ केवळज्ञानने प्राप्त करनारा थया ईक्ष्वाकुकुळमा बीजा पण घणा राजाओ सिद्धिपदने प्राप्त थया छे पचास लाख कोटि सागरोपम सुधी सर्वार्थसिद्धिए अतरित चौद लाख विगेरे श्रेणीदंडे चक्षुर्देवर्हिदक नामना ग्रथमा कह्या प्रमाणे असख्य राजाओ आ क्षेत्रमा सिद्धिपदने पाम्या छे

भरतचक्री पछी छ कोटि पूर्व गया पछी आठमे पाटे दडवीर्य राजा थयो. तेणे सघपति थई शत्रुजयतीर्थे बीजो उद्धार कर्यो २ अनुक्रमे भरत विगेरे सात पाट थई गया पछी आ आठमो राजा पण दर्पणभुवनमा केवलज्ञानने प्राप्त थयो.

ते पछी एकसो सागरोपम गये सते महाविदेह क्षेत्रमा श्रीजिनेश्वरना मुखथी सिद्ध गिरिनु वर्णन साभळी ईशानइद्रे ते तीर्थे त्रीजो उद्धार कर्या ३ ते पछी एक कोटि सागरोपम गया पछी माहेन्द्रे चोथो उद्धार कर्या ४ ते पछी दश कोटि सागरोपम गया पछी ब्रह्मेंद्रे पाचमो उद्धार कर्या ५ अने ते पछी एक कोटि सागरोपम गया पछी भुवनपति चमरेन्द्रे छट्ठो उद्धार कर्यो. ६

श्रीआदिनाथ प्रभु थया पछी पचास लाख कोटि सागरोपम जता श्री सगरचक्री थया तेणे इद्रना वचनथी पडतो समय जाणी भरते करावेल मणिमय बिंबने भूमिमा भडार्युं अने तेणे सातमो उद्धार कर्यो ७ ते पछी अभिनदन स्वामीना मुखथी तीर्थनु वर्णन साभळी व्यतरेन्द्रे आठमो उद्धार कर्यो ८ ते पछी श्रीचद्रप्रभुना वारामा चद्रयशा राजाए नवमो उद्धार कर्यो ९ ते पछी शातिनाथना पुत्र चक्रायुधे दशमो उद्धार कर्यो १० पछी मुनिसुव्रतना [illegible]

श्रीशत्रुंजयतीर्थे जई जिनपूजा विगेरे करी ते पापने दूर करो ' ते साभळी पाडवोए अमूल्य काष्ठमय प्रासाद करावी तेमा लेप्यमय बिंब स्थापीने बारमो उद्धार कर्यो १२. ते पछी श्रीवीरप्रभुना निर्वाणथी चारसो ने सित्तेर वर्षे विक्रमादित्य राजा थया. तेणे सिद्धाचळना सघपतिनु बिरूद धारण कर्युं हतु. ते पछी सवत १०८ मा जावड शेठे तेरमो उद्धार कर्यो १३ पाडवो अने जावडशेठनी वच्चे त्रे क्रोड पचाणु लाख अने पंचोतेर हजार सघपति थया. ते पछी सवत १२१३ ना वर्षमा श्रीमाळी बाहडदेवे चौदमो उद्धार कर्यो. १४ सवत १३७१ ना वर्षमा श्रीरत्नाकरसूरिना भक्त ओसवाल श्रेष्ठी समराशा के जे बादशाहना प्रधान हता तेणे पदरमो उद्धार कर्यो १५. ते समराशा शेठे नव लाख बदीवानोने सोनैयाओ आपीने मूकाव्या हता सवत १५८७ ना वर्षमा बादशाह बहादुरशाहने मान्य शेठ करमाशाहे सोळमो उद्धार कर्यो. १६. ते साप्रतकाळे भव्यजीवोथी बदाय छे

हवे छेल्लो उद्धार दुप्पसहसूरिना श्रावक विमलवाहन राजा करशे

एकदा श्री नागपुरमा पुनड नामना श्रावके आ प्रमाणे गुरुनी देशना साभळी के " धर्मना स्थानमा स्थापित करेली लक्ष्मी शाश्वत थाय छे. वळी विशेषे करीने तीर्थयात्रानु पुण्य मोटु छे. कह्यु छे के–आरभनी निवृत्ति, द्रव्यनी सफळता, ऊचे प्रकारे सघनु वात्सल्य, दर्शन(समकित)नी निर्मळता, स्नेहीजननु हित, प्राचीन चैत्योना दर्शन, तीर्थनी उन्नति ने प्रभावनी वृद्धि, जिनवचननी मान्यता, तीर्थंकरगोत्रनो बध, सिद्धिनु सामीप्य अने देव तथा मनुष्यनी पदवीनो लाभ–ए सर्व तीर्थयात्राना फळ छे." आवी देशना साभळी सवत १२७५ ना वर्षमा ते पुनडशेठ नागपुर(नागोर)थी यात्रा माटे नीकळ्यो. तेना सघमा अढारसो मोटा गाडा, एक हजार सेजपाल, चारसो वहल, पाचसो वाजिव अने घणा देवालयो हता. स्थाने स्थाने उत्सव करतो ते सघ धोळका पासे आव्यो, एटले वस्तुपाल मत्री ते सघनी सामे आव्यो अने जे दिशामा सघनी रज पवनथी ऊडे ते दिशा तरफ चालवा लाग्यो, त्यारे सघना लोकोए कह्यु–'मत्रीश ! आ तरफ रज ऊडे छे, माटे आवी तरफ पधारो मत्री बोल्यो–" आवी पवित्र रजनो स्पर्श पुण्यथी ज प्राप्त थाय छे. ते विषे कह्यु छे के–

श्रीतीर्थपांथरजसा विरजीभवंति, तीर्थेषु वभ्रमणतो न भवेष्वटंति ।
द्रव्यव्ययादिह नरा: स्थिरसपद: स्यु:,पूज्या भवंति जगदीशमथार्चयंत:॥

" श्री तीर्थयात्राए जता सघना पगनी रज लागवाथी पुरुषो कर्मरूपी रजथी रहित थाय छे, तीर्थमा परिभ्रमण करवाथी प्राणीने ससारमा भ्रमण करवु पडतु नथी, तीर्थमा द्रव्यनो व्यय करवाथी सपत्ति स्थिर थाय छे अने जगत्पति जिनराजने

पूजवाथी जगतमा पूज्य थाय छे " आ प्रमाणे कहेतो मंत्री वस्तुपाल आगळ चाल्यो सघे गगेनरने तीरे पडाव कर्यो मरीश नरपतिने गाढ आलिंगन करीने कह्यु-' हे श्रावकवर्य ! काले प्रात काळे तमारे सवपति सार घरे भोजन करवा पधारवु सघवीए ते वात कबूल करी बीजे दिवसे प्रात काळे सर्व सघ वस्तुपालने घेर जमवा गयो ते वखते मंत्री वस्तुपाले पोतानी जाते सर्वना चरण पखाळी तिलक कर्या, तेम करता मध्याह्न समय थइ गयो ते वखते तेमना नानाभाई तेजपाले कह्यु-' हे देव ! हु बीजा माणसो पासे आ प्रमाणे ज भक्ति करावीश, माट तमे भोजन करी ल्यो, केमके बहु मोडु थयु छे, तेथी तमने परिताप थशे. ' मंत्री बोल्या, ' तेजपाल ! एवु न कहो, आवो अवसर तो पूरा पुण्यथी मळे छे ' ते वखते गुरुजीए आ प्रमाणे कहेवराव्यु-

यस्मिन् कुले यः पुरुषप्रधानः, स एव यत्नेन सरक्षणीयः ।
तस्मिन् विनष्टे सकल विनष्ट, न नाभिभगे शकटा वहति ॥ १ ॥

" जे कुळमा जे पुरुष प्रधान होय तेनु यत्नथी सरक्षण करवु, कारण के जो ते पुरुष विनाश पामे तो सघळु कुळ विनाश पामी जाय छे. जेमके धरी भागी जाय तो गाडु चाली शकतु नथी " ते साभळी मंत्रीए गुरुने आ प्रमाणे कहेवराव्यु-

अद्य मे फलवती पितुराशा, मातुराशाप्यकुरिता अद्य ।
यद्युगादिजिनयात्रिकलोक, प्रीणयाम्यहमशेषमखिन्नः ॥ १ ॥

" आजे युगादि प्रभुनी यात्राए जनारा सर्व यात्रिकोने हु अखिन्नपणे सेवा करवा वडे प्रसन्न करु छु, तेथी आजे मारा पितानी आशा सफळ थई अने मारी मातानी आशाने पण अकुर ऊगी नीकळ्या एम हु समजु छु "

आ प्रमाणे निरभिमान भक्तिवडे रजित करेलो सघ त्याथी नीकळी अनुक्रमे जिन यात्रा करवा गयो अने सारी रीते यात्रा करी आ प्रमाणे बीजा पण घणा वृत्तातो छे, ते पूर्व शास्त्रथी जाणी लेवा

" भरतादिक राजाओए अने बीजा श्रावकोए तथा सुरासुरना पति इद्रोए जेवी रीते ए महातीर्थनी भक्ति करली छे, तेवी रीते बीजा श्रावकोए पण स्वात्मशुद्धिने माटे भक्ति करवी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्र्यशीत्यधिकशततम प्रबध ॥ १८३ ॥

व्याख्यान १८३ मुं

श्रीशत्रुंजयनी यात्रानु फळ कहे छे

अन्यतीर्थेषु यद्यात्रा–सहस्रैः पुण्यमाप्यते ।
तदेकयात्रया पुण्यं, शत्रुंजयगिरौ भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थः–

" बीजा तीर्थोमा हजारो यात्रा करवाथी जेटलु पुण्य थाय तेटलु पुण्य श्रीशत्रुंजयगिरिनी एक यात्रा करवाथी थाय छे "

विस्तारार्थ –

बीजा तीर्थ एटले नदीश्वर विगेरे तीर्थो जाणवा यादववशी श्रीअतिमुक्त केवळीए कृष्णने पूज्य एवा नारदनी आगळ कह्यु छे के–

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि तिरियलोगंमि ।
तं सव्वमेव दिट्ठं, पुंडरीए वंदिए संते ॥ १ ॥

" श्रीपुंडरीक तीर्थने वादवाथी स्वर्ग, पाताल अने तिर्च्छा लोकना सर्व तीर्थो जोया (वाद्या) एम समजवु "

बीजा महापुरुषोए पण कह्यु छे के " नदीश्वरनी यात्राथी जे पुण्य थाय छे तेथी बमणु पुण्य कुंडळगिरिनी यात्राथी थाय छे, त्रगणु पुण्य रुचकद्वीपनी यात्राथी थाय छे अने चोगणु पुण्य गजदंतानी यात्राथी थाय छे तेथी बमणु पुण्य जंबूवृक्ष परना चैत्योनी यात्राथी, तेथी छगणु धातकीखडमा रहेला धातकी वृक्ष परना जिनेश्वरने पूजवाथी, तेथी बत्रीशगणु पुण्य पुष्करवरद्वीपार्धना जिनबिंबोनी पूजाथी अने सोगणु पुण्य मेरुपर्वतनी चूलिका पर रहेला जिनेश्वरनी पूजाथी थाय छे हजारगणु पुण्य समेतगिरिनी यात्राथी, लाखगणु अंजनगिरिनी यात्राथी, दश लाखगणु रैवत अने अष्टापद गिरनी यात्राथी अने क्रोडगणु पुण्य श्रीशत्रुंजय तीर्थना स्वाभाविक स्पर्शथी थाय छे अने ते पण मनवचनकायानी शुद्धिपूर्वक थाय तो अनंतगणु पुण्य थाय छे. "

आ भवमा ते महातीर्थनी यात्रा अवश्य करवा योग्य छे कह्यु छे के–

क्षेत्रानुभावतो पूज्यै , मुक्त्यद्रेर्महिमा स्मृतः ।
ध्रुवं भवौघमुक्त्यर्थं, यात्रा कार्या दयाभृते. ॥

"पूज्यपुरुषोए ए मुक्तिगिरिनो महिमा घणना अनुभावथी कहेलो छे तेथी दयाळु पुरुषोए आ भवसमुद्रथी मुक्त थवा माटे तेनी यात्रा अवश्य करवी " आ विषे कुमारपाल राजानो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे-

कुमारपाल राजानो प्रबंध

एक दिवसे पाटण नगरमां श्रीहेमचंद्राचार्ये आ प्रमाणे उपदेश कर्यो-"यौवनमां अथवा वृद्धपणमां अज्ञानपणे जे पाप कर्युं होय ते सर्व पाप सिद्धगिरिने स्पर्शवाथी विलय पामी जाय छे. वळी एक वखत भोजन करनारो, भूमि पर सुनारो, ब्रह्मचर्य पाळनारो, इंद्रियोने वश राखनारो, सम्यग् ज्ञान युक्त अने छ आवश्यक (प्रतिक्रमण) करनारो पुरुष जो सिद्धाचळनी यात्रा करे तो ते सर्व तीर्थनी यात्रानुं फळ पामे छे हे कुमारपाल राजा! आ सिद्धगिरि जेवुं बीजुं तीर्थ पण जगतमां नथी. तेनुं पुंडरीक एवुं नाम श्री ऋषभदेवना पहेला गणधरथी पडेलुं छे. ते विषे कहेलुं छे के 'चैत्र शुदि पूनमने दिवसे पांच कोटि मुनिओना परिवार साथे श्री पुंडरीक गणधर जे तीर्थे निर्मळ सिद्धिसुखने पाम्या ते पुंडरीक तीर्थ जयवंतु हो तेथी सांप्रतिकाळे चैत्र मासनी पूर्णिमाए दश, वीश, त्रीश, चाळीश अने पचास पुष्पमाळा जे चडावे छे ते अनुक्रमे एक, बे, त्रण, चार अने पांच उपवासनुं फळ पामे छे ' इत्यादि प्रमाण छे तेथी शास्त्रोक्त विधिवडे चैत्रमासनी पूर्णिमाए स्वयमेव अने पुंडरीक उद्यापन विगेरे क्रिया करवी. यात्रामां पण संघपतिपद भाग्यथी प्राप्त थाय छे. हे राजा! इंद्रादिक पदवी सुलभ छे, पण संघपतिनी पदवी दुर्लभ छे. कह्युं छे के आ संघ अरिहंत प्रभुने पण मान्य अने सर्वदा पूज्य छे, तेवा संघनो ज अधिपति थाय तेने लोकोत्तर स्थितिवाळो ज समजवो "

आ प्रमाणेना गुरुमहाराजना उपदेशथी कुमारपाल राजाने संघयात्रानो मनोरथ उत्पन्न थयो तेणे ते विचार गुरुमहाराजने निवेदन कर्यो, एटले गुरुए आचारदिनकर विगेरे ग्रंथमां कहेला विधिथी आठ स्तुतिवडे देववंदनपूर्वक शांतिक तेमज पौष्टिक क्रिया करावीने तेमने संघपतिनी पदवीए स्थापित कर्या. शुभमुहूर्ते राजाए हस्तीना कुंभस्थळ उपर सुवर्णनुं देवालय मूकावीने प्रस्थान कर्युं. ते पछी पहेला बोतेर सामंतोना देवालयो, ते पछी चोवीश मंत्रीना देवालयो अने ते पछी अढारसो व्यापारीओना जिनचैत्यो-एम अनुक्रमे सघळी आगळ चाल्या. कुमारपाल राजाए पाटणमांहेना सर्व चैत्योनी पूजा, अमारी घोषणा, कैदीखानामांथी बंदीमोचन अने संघ भक्तिपूर्वक यात्राभेरी वगडावीने प्रयाण कर्युं. रस्तामां जेमने भातुं न होय तेमने

१ आ छ 'री' समजवी, छ 'री' पाळीने यात्रा करवी ते आ प्रमाणे समजवी

मातु आपतो अने सघमा आवेला लोकोने सहोदरथी अधिक गणतो राजा धीमे धीमे प्रयाण करवा लाग्यो.

मार्गे चालता कुमारपाले गुरुने यात्रानो विधि पूछयो एटले गुरु बोल्या–

सम्यक्त्वधारी पथि पादचारी, सचित्तवारी वरशीलधारी ।
भुस्वापकारी सुकृती सदैका–हारी विशुद्धां विदधाति यात्रां ॥१॥

"समकित धारण करी, मार्गमा पगे चाली, सचित्तनो त्याग करी, शील पाळी, पृथ्वी पर शयन करी अने एक वखत आहार लई, सुकृतिपुरुष विशुद्ध यात्रा करे छे"

लोकमा पण कहेवाय छे के "यात्रामा वाहन पर बेसवाथी अर्धुं फळ नाश पामे छे, जोडा पहेरवाथी चोथा भागनु फळ नाश पामे छे, क्षौर (हजामत) कराववाथी त्रीजा भागनु फळ नाश पामे छे अने प्रतिग्रह (दान) लेवाथी यात्रानु सर्व फळ नाश पामे छे" आ प्रमाणे साभळी कुमारपाल राजाए वाहननो अने पगरखानो तत्काळ त्याग करी दीधो अने गुरुमहाराजनी साथे चालवा लाग्यो राजाने तेम करता जोई आचार्य बोल्या–"हे राजन्! अश्वादिक वाहन अने उपान विना तमारा देहने घणी पीडा लागशे." राजाए कह्यु–"पूर्वे दुरवस्थामा परवशपणाथी हु पगवडे कांई थोडु भम्यो नथी, पण ते बधु व्यर्थ गयु छे, अने आ तो पगे चालवानो हेतु तीर्थयात्रा छे तो ते अति सार्थक छे तेनाथी तो मारु अनेक भवनु भ्रमण टळी जशे" आ प्रमाणेनो उत्तर साभळी गुरु बहु प्रसन्न थया अने राजाने पगे चालवाने उत्साहित कर्या.

कुमारपाल राजा मार्गमा स्थाने स्थाने प्रभावना, प्रभुनी दरेक प्रतिमाने सुवर्णना छत्र, दरेक जिनप्रासाद उपर ध्वजारोपण, गामे गामे अने शहेरे शहेरे साधर्मिकनी पूजा, सघने भोजन, अमारीघोषणा, बे वार प्रतिक्रमण, पर्व दिवसे पौषध अने याचकोने उचित दान इत्यादि धर्मक्रिया करतो चाल्यो ज्यारे तीर्थना दर्शन थया त्यारे तेणे तीर्थने सघ सहित पचाग प्रणाम कर्या अने ते दिवसे त्या रही शत्रुजयने वधावी, तीर्थसन्मुख सुगधी द्रव्यना अष्टमगळ आलेखी, तीर्थोपवास अने रात्रि जागरण कर्युं प्रात काळे देवगुरुनी पूजापूर्वक पारणु कर्युं अनुक्रमे गिरिराजनी तळेटीमा आव्या, एटले सघ सहित चैत्यवदन करी सर्व आशातना टाळीने श्रीगिरिराज उपर चडवा लाग्या जिनप्रासादनी समीप पहोंच्या एटले तेना द्वारने सुवर्ण मोतीथी वधावी अदर प्रवेश कर्यो पछी प्रदक्षिणा करती वखते राजाए श्रीहेमचद्राचार्यने सरस अने अपूर्व स्तुति करवा माटे प्रार्थना करी आचार्य महाराजे "जय-

जतुरष्प० इत्यादि धनपालकृत्वाशिकाना पाठवडे भगवतनी स्तुति करी. ते सांभळी राजाप्रमुख बोल्या-'हे भगवन्! आप पोते समर्थ छो छतां बीजाए रचेली आ स्तुतिनो पाठ केम करो छो?' गुरु बोल्या-'राजन्! एवी अद्भुत भक्तिगर्भित स्तुति माराथी रची शकाय तम नथी' गुरुनी आवी निरभिमानता जोइ राजा विगेरे बहु खुशी थया पछी तेओ गुरुनी स्तुति करता रायादनी (रायणना) वृक्षनी नीचे आव्या एटले गुरुए कह्यु-'हे राजा! चोराशी लाख ने छप्पन हजार कोटि वर्षे एक पूर्व थाय छे ते एकने नेवाणुगणा करता ओगणोतेर कोडाकोड, पचाशी लाख क्रोड अने चुमाळीश हजार क्रोड थाय, तटली वार श्रीआदिनाथ प्रभु आ वृक्ष नीचे समो सर्या छे आ प्रमाणे सारावलीपयन्नामा कह्यु छ.'

कुमारपाल राजाए गुरुए कहेला विधि प्रमाणे प्रथम रायादनी वृक्षनी अने प्रभुनी पादुकानी सम्यक् प्रकार पूजा करीने पछी गर्भगृहमा प्रवेश कर्यो त्यां जाणे त्रण भुवननु ऐश्वर्य प्राप्त थयु होय तेम ते परमानंदथी व्याप्त थइ गया ते वखते सर्व इंद्रियोना व्यापारथी मुक्त थया होय तेम आसननु मटकु पण मार्या वगर अने आळसुनी जेम नेत्रने स्थिर करीने एक क्षणवार प्रभुना मुख उपर दृष्टि स्थापित करी, दई हर्षना अश्रुथी पूरित थई पापरूपी मर्नु तापने दूर करी स्थित थया ने पछी 'हे जगदीश! तमारु पूजन हु एक शी रीते करी शकु?' इत्यादि स्तुतिनु उच्चारण करता नव लक्ष मूल्यना नव महारत्नोवडे जीवहिंसा जे भवभ्रमण-जन्ममरण तेथी मुक्त थवाने माटे प्रभुना नव अंगे पूजा करी पछी आ प्रमाण विचारवा लाग्यो के-

धन्योऽहं मानुषं जन्म, सुलब्धं सफलं मम ।
यद्वापि जिनेंद्राणां, शासनं विश्वपावनं ॥ १ ॥

"हु धन्य छु मे प्राप्त करेलु मनुष्य जन्म आ विश्वने पावन करनार श्रीजिनेंद्रनु शासन प्राप्त थवाथी सफळ थयो छे."

पछी इंद्रमाळ पहेरवाने वखते सर्व संघ एकठो थयो ते वखते मंत्री वाग्भट्ट इंद्रमाळ पहेरवानु चार लाख द्रव्य बोल्यो, राजा कुमारपाळे आठ लाख कह्या, मंत्रीए सोळ लाख कह्या, राजाए बत्रीश लाख कह्या एम बोलता कोई एक गृहस्थे गुप्त रीते सवा क्रोड कह्या. ते सांभळी राजा चमत्कार पामीने बोल्या के-'तेने माळा परिधान करवा आपो' ते समये सामान्य [illegible] करनार ते [illegible] ट थयो. सामान्य वेषवाळा ते जगडुशाने जोई राज [illegible] 'सवा [illegible] स्वामी करीने

(मृपा) वाक्य बोले ज नहि.' राजाए तेने मिथ्या दुष्कृत आपी आलिंगन करीने कह्यु. 'तु मारा सघमा मुख्य संघपति छे.' एम सन्मान करी तेने माळा अर्पण करी. जगडुशाए-अडसठ तीर्थरूप पोतानी माताने ते माळा पहेरावी.

पछी कुमारपाळे पूजाना सुवर्णमय उपकरणो प्रासादमा मूकी पाच शक्रस्तववडे देववदना करी त्यारपछी सघ सहित श्रीपुडरीकगिरिने सर्व तरफ पटकूळ विगेरे परिधान करावी, अनुक्रमे नीचे ऊतरी पादलिप्त नगर(पालीताणा)मा आव्या.

" पछी सूरीश्वरना मुखथी आ शत्रुंजयगिरिनु पाचमु शिखर गिरनार छे अने तेने वादवाथी तेटलु ज फळ थाय छे ' एम साभळी सघ सहित सुखपूर्वक अनुक्रमे प्रयाण करता गिरनार आव्या. त्या सविस्तर स्नात्रपूजा विगेरे करी श्रीनेमिनाथनी वज्रमय अने अतिशयवाळी प्रतिमा जोई राजाए गुरुने पूछ्यु-' आ प्रतिमा क्यारे अने कोणे करावी छे ? ' एटले गुरु बोल्याः-

" भरतक्षेत्रमा अतीत चोवीशीमा त्रीजा सागर नामना तीर्थंकरना समयमा अवती नगरीने विषे नरवाहन नामे राजा थयो हतो एक वखते ते राजाए प्रभुनी देशना साभळीने पूछ्यु-" भगवन्! हु केवळी क्यारे थईश ?" प्रभु बोल्या-' राजन् ! आवती चोवीशीमा बावीशमा तीर्थंकर श्रीनेमिनाथना वारामा तु केवळी थईश. ' ते साभळी ते राजाए सयम लीधु अने तपस्या करी मृत्यु पामीने ब्रह्म देवलोकमा दश सागरोपमना आयुष्यवाळो इद्र थयो. तेणे अवधिज्ञानवडे पोतानो पूर्वभव जाणी श्री नेमिनाथनु वज्रमय बिंब कराव्यु अने तेनी स्वर्गमा पूजा करी आयुष्यने अते श्री नेमिनाथना त्रण कल्याणकना स्थानरूप आ रैवतगिरि उपर वज्रथी कोतरावी पृथ्वीनी अदर पूर्वाभिमुखे प्रासाद कराव्यो. तेमा रूपाना त्रण गर्भगृह (गभारा) रची तेमा रत्न, मणि अने सुवर्णना त्रण बिंब स्थापित कर्या अने तेनी आगळ सुवर्णनु पद्मासण करी पेलु वज्रमय बिंब स्थापन कर्युं. पछी ते इद्र स्वर्गथी चवी ससारमा भमता क्षितिसार नगरमा नरवाहन नामे राजा थयो. ते भवमा श्रीनेमिप्रभुना मुखथी पोतानु पूर्वस्वरूप जाणी ते बिंबनी पूजा करी, प्रभुनी पासे सयम लई, केवळज्ञान प्राप्त करीने मोक्षे गयो अहीं श्रीनेमिप्रभुना दीक्षा, ज्ञान अने केवळ एम त्रण कल्याणक थया अने त्यारथी अहीं चैत्य तथा लेप्यमय बिंब लोकमा पूजावा लाग्यु. श्रीनेमिप्रभुना मोक्ष पछी नवसो ने नव वर्ष गया त्यारे काश्मीर देशथी रत्न नामे एक श्रावक अहीं यात्रा माटे आव्यो तेणे जळथी भरेला कळशवडे पेला लेप्यमय बिंबने स्नात्र कर्युं, तेथी ते बिंब गळी गयु. ते वखते पोताथी तीर्थनो विनाश थयेलो जोई रत्न श्रावके बे मासना उपवास कर्या बे मासने अते अंबिकादेवी प्रगट थया पछी

अंबिकाना आदेशथी पेला भूमिगत प्रासादमांथी सुवर्णना पवासण उपरथी वज्रमय बिंब लावीने अहीं स्थापित कर्युं.

आ प्रमाणे श्रीगिरनार तीर्थनी हकीकत गुरु पासेथी सांभळी सर्व प्रकारना महोत्सव करी आत्माने कृतार्थ करतो राजा कुमारपाळ त्यां घणा दिवस रह्यो त्यां पण पेला जगडुशाए ज इंद्रमाळा पहेरी. पछी राजाए त्यांथी प्रयाण करी संघ सहित देवपट्टन (प्रभास पाटण) जई श्रीचंद्रप्रभ प्रभुनी यात्रा करी. त्यां पण जगडुशाए ज इंद्रमाळ धारण करी ते समये राजाए जगडुशाने एवा महामूल्यवाळा रत्नोनी प्राप्तिनो वृत्तांत पूछ्यो त्यारे जगडुशा बोल्या-" मधुमतीपुरी(महुवा)मां प्राग्वाट (पोरवाड) वंशी मारा पिता हंसराज रहेता हता. तेणे पोताना अंतसमये मने कह्युं के-' आ पांच रत्न ले, तेमांथी सिद्धगिरि, रैवताचल अने देवपाटणमां त्रण रत्नो अनुक्रमे आपजे अने बाकीना बे रत्नोथी तारो निर्वाह करजे ' तेना वचनथी में आ पुण्य करेलुं छे. " पछी सर्व संघ एकठो करी बाकीना बे रत्न ' आ रत्न संघपति एवा तमने घटे छे ' एम कही तेणे राजाना हाथमां मूक्या ते जोई राजा विस्मय पामीने बोल्या-' हे श्रावकशिरोमणि ! तमने धन्य छे, तमे सर्वमां प्रथम पुण्य करनारा छो, कारण के तमे त्रणे तीर्थमां इंद्रमाळ पहेरीने इंद्रपद प्राप्त कर्युं छे ' आ प्रमाणे स्तुति करी जगडुशाने पोताना अर्धासन उपर बेसारी, सुवर्णादिकथी तेनो सत्कार करी दोढ कोटि धन आपीने ते बे रत्नो लीधा, अने ते रत्नोने मध्यमणि (चगदु) रूपे नाखी बे हार करावीने श्रीशत्रुंजय अने गिरनार तीर्थ उपर प्रभुने पहेराववा माटे मोकल्या पछी पाटण जइ सर्व संघनो सत्कार करीने पोतपोताने स्थानके सौने विदाय कर्या

" कुमारपाल राजानी जेम भक्ति सहित विधिपूर्वक पापना समूहने टाळवाने माटे बीजाओए पण तीर्थयात्रा करवी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्रयोदशस्तंभे त्र्यशीत्यधिकशततमः प्रबंधः ॥१८३॥

व्याख्यान १८४ मुं

स्नान विगेरे करवानो विधि

स्नानादिसर्वकार्याणि, विधिपूर्वं विधापयन्।
हिंसाभ्यो मनसा भीरुः, सर्वज्ञसेवनापरः ॥ १ ॥

भावार्थः—

" सर्वज्ञनी सेवामा तत्पर एवा पुरुषे मनमा हिंसानो भय राखी स्नानादि सर्व कार्यो विधिपूर्वक करवा. "

स्नानविधि आ प्रमाणे—

प्रथम जळ झीलवानुं पात्र जेनी नीचे मूकेलु होय तेवा अने प्रनालियावाळा बाजोठ उपर पूर्व अथवा उत्तराभिमुखे बेसवु स्नान करवानी जमीन पाच वर्णनी नीलफूल, कुंथुवा, कीडी, मकोडा विगेरे ज्या न होय तेवी तेम ज जे जमीन पोली के पोची न होय, जेमा छिद्र विगेरे काई न होय अने ज्या तडको आवेलो होय तेवा उत्तम भूभाग उपर स्नान करवा बेसवु अने स्नान करवानी जमीनमा नीचेनी शिलाओ शब्द करती होय अर्थात् पथ्थर डगमगतो न होय त्या स्नान करवा बेसवु वळी ते स्थाननी नीचे रहेला जीवोनी रक्षा माटे प्रथम पुजणीवडे प्रमार्जी चारे तरफ चक्षुवडे वारवार जोई तेवा स्थानमा बेसी जो पोताना पचरकाणनो काळ पूर्ण थयेलो जाणवामा आव्यो होय तो त्रण नवकार गणी पचरकाण पारवु. जो उपवासनु पच्चरकाण कर्यु होय तो दतधावन विगेरे कर्या विना पण तेनी शुद्धि ज छे, कारण के तपनु महाफळ छे. लौकिक शास्त्रमा पण कह्यु छे के—

उपवासे तथा श्राद्धे, न कुर्याद्दतधावन।
दतानां काष्ठसयोगो, हति सप्तकुलानि च ॥ १ ॥

" उपवास अने श्राद्धने दिवसे दतधावन (दातण) करवु नहि. ते दिवसे दातने काष्ठनो सयोग सात कुळने हणे छे. "

स्नान करवानु पाणी वस्त्रथी गळेलु, प्रासुक (उष्ण) करेलु, अचित्त थयेलु, परिमित अने थोडु, तेम ज शरीर पलळे तेटलु ज लेवु. वळी जळना रेला चालवाथी त्रस विगेरे जीवोनो नाश न थाय तेवी रीते नहावु. द्रव्यथी बाह्य मळनो नाश करवा

चक्रिकाना आदेशथी पेला भूमिगत प्रासादमांथी सुवर्णना पद्मासन उपरथी वज्रमय बिंब लावीने अहीं स्थापित कर्युं.

आ प्रमाणे श्रीगिरनार तीर्थनी हकीकत गुरु पासेथी सांभळी सर्व प्रकारना महोत्सव करी आत्माने कृतार्थ करतो राजा कुमारपाळ त्यां घणा दिवस रह्यो त्यां पण पेला जगडुशाए ज इन्द्रमाळ पहेरी. पछी राजाए त्यांथी प्रयाण करी संघ सहित देवपट्टन (प्रभास पाटण) जई श्रीचंद्रप्रभ प्रभुनी यात्रा करी. त्यां पण जगडुशाए ज इन्द्रमाळ धारण करी ते समये राजाए जगडुशाने एवा महामूल्यवाळा रत्नोनी प्राप्तिनो वृत्तांत पूछ्यो त्यारे जगडुशा बोल्या-" मधुमतीपुरी(महुवा)मां प्राग्वाट (पोरवाड) वंशी मारा पिता हंसराज रहेता हता. तेणे पोताना अंतसमये मने कह्युं के-' आ पांच रत्न ले, तेमांथी सिद्धगिरि, रैवताचल अने देवपाटणमां त्रण रत्नो अनुक्रमे आपजे अने बाकीनां बे रत्नोथी तारो निर्वाह करजे ' तेना वचनथी में आ पुण्य करेलुं छे " पछी सर्व संघ एकठो करी बाकीना बे रत्न 'आ रत्न संघपति एवा तमने घटे छे' एम कही तेणे राजाना हाथमां मूक्या ते जोई राजा विस्मय पामीने बोल्या-' हे श्रावकशिरोमणि ! तमने धन्य छे, तमे सर्वमां प्रथम पुण्य करनारा छो, कारण के तमे त्रणे तीर्थमां इन्द्रमाळ पहेरीने इन्द्रपद प्राप्त कर्युं छे ' आ प्रमाणे स्तुति करी जगडुशाने पोताना अर्धासन उपर बेसारी, सुवर्णादिकथी तेनो सत्कार करी दोढ कोटि धन आपीने ते बे रत्नो लीधा, अने ते रत्नोने मध्यमणि (चगदु) रूपे नाखी बे हार करावीने श्रीशत्रुंजय अने गिरनार तीर्थ उपर प्रभुने पहेराववा माटे मोकल्या पछी पाटण जई सर्व संघनो सत्कार करीने पोतपोताने स्थानके सौने विदाय कर्या

" कुमारपाळ राजानी जेम भक्ति सहित विधिपूर्वक पापना समूहने टाळवाने माटे बीजाओए पण तीर्थयात्रा करवी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्र्यशीत्यधिकशततमः प्रबंध. ॥ १८३ ॥

शाश्वत प्रतिमानी पूजा करे छे, त्यारे मनुष्य तो तेम करवाने अवश्य योग्य छे, तेथी जे मनुष्य भावपूर्वक यतनाथी द्रव्यस्नान करे छे तेने महाफळ प्राप्त थाय छे. भावस्नान विषे लखे छे के-निर्मळ बुद्धिना कारणभूत ध्यानरूप जळवडे कर्मरूप मळने दूर करवो ते भावस्नान कहेवाय छे "

स्नान कर्या पछी बाजोठ नीचे मूकेली कुंडीमा आवेलु जळ तडकावाळी जग्याए पूजणीवडे पृथ्वी पूजीने कोई दक्ष माणस पासे परठाववु

स्नान कर्या छता पण जो शरीर पर गडगूमड थवाथी रुधिर के परु स्रवतु होय तो,तेणे प्रभुनी अगपूजा करवी नहि, कारण के तेथी आशातना थाय छे ऋतुवती स्त्रीए चार दिवस सुधी देवदर्शन करवु नहि अने सात दिवस सुधी पूजा करवी नहि ते विषे कह्यु छे के-

तद जिणभवणे गमणं, गिहपडिमाच्चण च सज्झायं ।
पुप्फवइथ्थियाण पडिनिसिद्ध जाव सत्तादिण ॥ १ ॥

" ऋतुवाळी स्त्रीने माटे सात दिवस सुधी जिनभवनमा गमन, गृहप्रतिमानी पूजा अने स्वाध्यायनो निषेध करेलो छे. "

केटलाएक मूढ लोको ऋतुवाळी स्त्रीओने पठन-पाठननो निषेध करता नथी तेओ स्वकल्पनाथी कहे छे के ' श्रीवीरप्रभुना परिवारनी साध्वीओ ऋतु प्राप्त थाय तो पण पोतानी वाचना छोडी देती नहोती, कारण के ऋतुस्राव थवो ए देहनो स्वाभाविक धर्म छे ' आ विषे गुरु कहे छे के ' ए वचन कहवु योग्य नथी, कारण के ए सर्वे साध्वीओ छठ्ठे अने सातमे गुणठाणे वर्तती होय छे, तेथी तेमने ए दोष सभवतो नथी एम साभळ्यु छे '

उपर प्रमाणे श्रावकनो स्नानविधि समजवो. आद्य श्लोकमा आदि (विगेरे) शब्द छे, तेथी ते पछी जे करवानु छे तेनो विधि आ प्रमाणे-

स्नान कर्या पछी शुभ वस्त्रवडे अग लूछवु. पछी स्नानवस्त्र छोडी बीजु पवित्र वस्त्र पहेरवु जळथी आर्द्र पगवडे भूमिनो स्पर्श करवो नहि, तेम काष्ठनी पादुका तो सर्वथा पहेरवी नहि. पग लूछी पवित्र स्थाने आवी, उत्तराभिमुखे नगर माथेला वे श्वेत वस्त्र पहेरवा कह्यु छे के-

---

१ अन्य स्थाने जिनपूजानो पाच दिवस निषेध करेलो छे

२ काष्ठनी पावडी पहेरीने चालवाथी जीवहिंसा वधारे थाय छे

माटे अने श्री जिनेश्वर भगवतना परम पवित्र देहनो स्पर्श करवा माटे स्नान कर वानु छे अने भावथी क्रोधादि मळनो नाश करवा माटे स्नान करवानु छे गृहस्थने देवपूजा करवा माटे ज द्रव्यस्नान करवानु कहेलु छे ते द्रव्यस्नान भावशुद्धिनु हेतु रूप होवाथी ज तने समत करलु छे, बीजा कोइ पण कारणे स्नान करवानी अनुमति आपेली नथी आ प्रमाणे कहवाथी द्रव्यस्नानथी पुण्य थाय छे एम जेओ कहे छे तेना कथननो निराम करेलो छे एम समजवु

तीर्थस्नानथी पण जीवनी अशमात्र पण शुद्धि थती नथी ते विषे काशीखडना छठा अध्यायमा पण कहेलु छे के-

मृदो भारसहस्रेण, जलकुंभशतेन च ।
न शुद्धयति दुराचारा, स्नातास्तीर्थशतैरपि ॥ १ ॥
जायते च म्रियते च, जलेष्वेव जलौकस ।
न च गच्छति ते स्वर्ग-मविशुद्धमनोमला. ॥ २ ॥
परदारपरद्रव्य-परद्रोहपराङ्मुखा ।
गगाप्याह कदागत्य, मामय पावयिष्यति ॥ ३ ॥

" हजारो भार माटी थी अने सेंकडो जळना घडाथी सेंकडो तीर्थमा स्नान करे तो पण दुराचारी पुरुषो शुद्ध थता नथी १ जळना जीवो जळमां ज उत्पन्न थाय छे अने जळमा ज मृत्यु पामे छे, पण तमना मननो मेल गयेलो न होवाथी तेओ स्वर्गे जता नथी २ गगा कहे छे के परस्त्री, परद्रव्य अने परद्रोहथी विमुख रहेनार मनुष्यो आवीने मने क्यारे पवित्र करशे ? ३ "

अहीं कोइ शका करे के 'द्रव्यस्नान अप्काय जीवोनी हिंसानु कारण छे तो गृहस्थे पूजा वखते पण ते शामाटे करवु जोइए?' तेना उत्तरमा कहेवानु के-"समवसरणमां रहेला प्रभुना पवित्र देहने मलमूत्रना बिंदु जेना शरीर पर लागेला होय छे एवो कोई पण मनुष्य स्पर्श करतो नथी, कारण के ते आशातनानो हेतु छे तेवी रीते अहीं पण स्त्रीनी शय्या, लघुनीति, वडीनीति तेम ज दुर्गंधी वातनो स्पर्श विगेरे थवाथी मलिन थयेलु शरीर जिनपूजामा भावशुद्धि करनारु थतु नथी, कारण के हु 'अपवित्र छुं, हुं अपवित्र छु' एवु वारवार पूजकने स्मरण थया करे छे अने शुद्धि करवाथी हु शुद्ध छु, प्रभुनी पूजाने योग्य छु' एम विचार करता पूजकने भावनी शुद्धि थाय छे देव ओ स्वच्छ देहवाळा होय छे, तथापि स्वर्गनी वापिकामा स्नान करी, पवित्र थईने

जिनेश्वरनी सख्यानु स्मरण करवापूर्वक ते सख्या प्रमाणे पुष्पो लई हार करवो. जो छूटा पुष्प होय तो भगवंतना आठ अंग उपर आठ प्रकारना कर्मना नामोचारपूर्वक ते ते कर्मोना अभावनी याचना करीने आठ पुष्पो मूकवा अने नवमा अग उपर नवमा तत्त्वनी मागणी करवापूर्वक नवमु पुष्प चडाववु. आ प्रमाणेनी भावना स्वबुद्धिथी जाणी लेवी

अहीं कोई शका करे के 'जेम मनुष्यनी आगळी छेदवाथी मनुष्यने दुःख थाय छे तेम वृक्षनु अवयव पुष्प छेदवाथी वृक्षने दुःख थाय तेथी महादोष थाय, माटे पुष्प चडाववा योग्य नथी. जिनेश्वर भगवत छकायना पीयर (रक्षक) छे ते एवो उपदेश केम करे?' आना उत्तरमा गुरु कहे छे के 'अरे जिनागमना अज्ञ प्राणी! तु साभळ आरामिके (माळीए) आजीविका माटे विधिपूर्वक लावेला पुष्प मूल्य आपीने लेवामा आवे छे, तेमा श्रावकने दोष नथी, कारण के जीवोनी दयामाटे ते लेवामा आवे छे ते विचारे छे के जो कोई मिथ्यात्वी तेनी पासेथी पुष्प लई होमकुड विगेरेमा नाखशे तो ते पुष्पना जीवोनो सत्वर वध थई जशे, तेम व्यभिचारी पुरुष लई जशे तो स्त्रीना कठमा, मस्तक उपर अथवा पोताना उरस्थळ पर राखशे, अथवा पुष्पनी शय्या करी तेनी उपर सूशे, अथवा तेना दडा करी रमशे, त्या स्त्रीपुरुषना प्रस्वेद विगेरेथी पुष्पना कोमळ जीवो एक क्षणमा नाश पामी जशे वळी स्त्रीओना कठ विगेरेमा रहेला पुष्पना हार जोई कोईने शुभ भावना नहि थाय, पण ऊलटो पापनो बध थशे, तेथी उत्तम गृहस्थो पुष्पोने देखी एवी भावना करे छे के "जो आ पुष्पने कोई पापी पुरुष लेशे तो ते क्रीडामात्रमा सहजमा तेने तत्काळ हणी नाखशे, माटे तेमने अभय करवा सारु हु मूल्य आपी ग्रहण करु. हु जो एनी उपेक्षा करीश तो मने कसाइना हाथमा जता बकराने न छोडाववानी जेम महान दोष लागशे." आ प्रमाणेनी विचारणाथी पुष्पो खरीद कर्या बाद जो ते पुष्पमा तेना वर्ण जेवा ज वर्णना एळ के कीडा प्रमुख[1] जणाय तो ते पुष्पने अगोचर स्थाने मूकी देवा के जेथी ते जीवोनी हिंसा न थाय.

त्यारपछी त्रस जीवरहित पुष्पोनो पूर्वे कहेल रीति प्रमाणे हार बनावी श्रावके भगवतना कंठमा स्थापन करवो. तेम करवाथी स्त्रीना कठमा रहेला हारनी जेम अशुभ भावना थती नथी, पण ऊलटो पुष्पना जीवने अभय आप्यानो अने आत्माने परमेश्वरना परमगुणनी प्राप्तिनो एम उभय लाभ थाय छे. उत्तम जीवोए एम ज धारवु के आ प्रमाणे प्रभुने चडाववाथी जेटला काळनु ते पुष्पना जीवोए आयुष्य बाध्यु हशे तेटलो काळ छेदन, भेदन, क्लेदन[2], शुचिकारोपण[3], मर्दन अने पचेंद्रियादि जीवोनो स्पर्श ए सर्व दुःख सहन करवानो अभाव थवाथी ते सुखपूर्वक जीवशे

१ नवमु सत्त्व-मोक्षतत्त्व. २ कपावु ते ३ सोयथी विंधावु ते

भावार्थ:-

" श्री तीर्थंकरनी भक्तिना भावथी शोभित एवा श्रावक अंतरमां दयापूर्वक जिनपूजाने अवसरे पुष्पादिक सर्व सामग्री मेळववी. "

पुष्प लाववानो विधि आ प्रमाणे-

पुष्प लाववा माटे प्रथम माळीने कहेवु के " जे पुष्प नाचे उपाडी लावेला होय, शरीर परना वस्त्रमा बांधीने लावेल होय, कांखमा राख्या होय, पृष्ठ भागे, वस्त्रने छेडे के पेट उपर राख्या होय, जीर्ण थई गया होय, पांखडी विगेरे तोडी नाखेला होय, अने रजस्वला स्त्रीए स्पर्श करेला होय तेवा पुष्प अमारे काम आवता नथी, तेथी तेवा दोष रहित शुद्ध पुष्प तारे प्रतिदिन लावी आपवा, हु तने वांछित मूल्य आपीश " आ प्रमाणे तेने कहेवाथी ते निर्दोष पुष्प लावी आपे तो ठीक, नहि तो पछी पूजा वखत आप्त अने सुग न चडे तेवा वेशवाळा दश पुरुष पासे मगाववा, अथवा पोते ज पोताना अगने फर्स्मे नही तेम छाती आगळ राखीने लाववा ते विषे शास्त्रमा कह्यु छे के " जे पुष्प, पत्र के फळ हाथमाथी पडी गयेलु, पृथ्वी पर रहेलु, पगे चपायेलु, माथा उपर धरेलु, नठारा वस्त्रमा लीधेलु, नाभिनी नीचे धरेलु, दुष्ट लोकोए अडकेलु, घणा जळथी हणायेलु अने कीडाए दूषित करेलु होय ते जिनेश्वरना भक्तोए जिनेश्वर भगवननी पूजामा प्रयत्नमा त्याग करवु अर्थात् वापरवु नहि " वळी कह्यु छे के " एक पुष्पना बे भाग करवा नहि अने पुष्पनी कळी पण छेदवी नहि, कारण के पांखडी के डाळलीना भागवाथी हत्या जेटलु पाप थाय छे " पछी-

आमसूत्रतंतुभिः शिथीलग्रंथिना गूंथनीयो हार ।

' काचा सूतना ततुओथी शिथिल ग्रंथीवडे हार गूथवो ' पचपरमेष्ठीना गुणनु स्मरण करता एकसो ने आठ पुष्पनो हार करवो अथवा करावचो, अथवा जिनेश्वर भगवतना १००८ लक्षणनी सख्या समारीने एक हजार ने आठ पुष्पनो हार करवो, अथवा वर्तमान चोवीशीना चोवीश तीर्थंकर, त्रण चोवीशीना बोंतेर तीर्थंकर, विहरमान वीश तीर्थंकर, उत्कृष्ट काळ विचरता एकसो सीतेर तीर्थंकर, पाच भरत ने पाच ऐरवत ए दश क्षेत्रनी दश चोवीशीना बसो चालीश जिनेश्वर अथवा त्रण काळनी त्रण त्रण चोवीशी ग्रहण करवा माटे त्रगणा करता सातसो ने वीशनी सख्या थाय तेटला तीर्थकरोने समारीने ते प्रमाणे पुष्पोना हार करवा एवी रीते अनेक प्रकारनी

१ आमा वटली सख्या नेवडाय छे तेथी ते बाद करता ७२०-१६०-७० एम ९०० थाय छे एटला नामो नेवडाता नथी

जिनेश्वरनी सख्यानु स्मरण करवापूर्वक ते सख्या प्रमाणे पुष्पो लई हार करवो. जो छूटा पुष्प होय तो भगवतना आठ अग उपर आठ प्रकारना कर्मना नामोच्चारपूर्वक ते ते कर्मोना अभावनी याचना करीने आठ पुष्पो मूकवा अने नवमा अग उपर नवमा तत्त्वनी मागणी करवापूर्वक नवमु पुष्प चडाववु. आ प्रमाणेनी भावना स्वबुद्धिथी जाणी लेवी

अहीं कोई शका करे के 'जेम मनुष्यनी आगळी छेदवाथी मनुष्यने दुःख थाय छे तेम वृक्षनु अवयव पुष्प छेदवाथी वृक्षने दुःख थाय तेथी महादोप थाय, माटे पुष्प चडाववा योग्य नथी. जिनेश्वर भगवत छकायना पीयर (रक्षक) छे ते एवो उपदेश केम करे?' आना उत्तरमा गुरु कहे छे के 'अरे जिनागमना अज्ञ प्राणी! तु साभळ आरामिके (माळीए) आजीविका माटे विधिपूर्वक लावेला पुष्प मूल्य आपीने लेवामा आवे छे, तेमा श्रावकने दोप नथी, कारण के जीवोनी दयामाटे ते लेवामा आवे छे ते विचारे छे के जो कोई मिथ्यात्वी तेनी पासेथी पुष्प लई होमकुड विगेरेमां नाखशे तो ते पुष्पना जीवोनो सत्वर नध थई जशे, तेम व्यभिचारी पुरुष लई जशे तो स्त्रीना कठमा, मस्तक उपर अथवा पोताना उरस्थळ पर राखशे, अथवा पुष्पनी शय्या करी तेनी उपर सूशे, अथवा तेना दडा करी रमशे, त्या स्त्रीपुरुषना प्रस्वेद विगेरेथी पुष्पना कोमळ जीवो एक क्षणमा नाश पामी जशे वळी स्त्रीओना कठ विगेरेमा रहेला पुष्पना हार जोई कोईने शुभ भावना नहि थाय, पण ऊलटो पापनो बध थशे, तेथी उत्तम गृहस्थो पुष्पोने देखी एवी भावना करे छे के "जो आ पुष्पने कोई पापी पुरुष लेशे तो ते क्रीडामात्रमा सहजमा तेने तत्काळ हणी नाखशे, माटे तेमने अभय करवा सारु हु मूल्य आपी ग्रहण करुं. हु जो एवी उपेक्षा करीश तो मने कसाइना हाथमा जता बकराने न छोडाववानी जेम महान दोप लागशे" आ प्रमाणेनी विचारणाथी पुष्पो खरीद कर्या बाद जो ते पुष्पमा तेना वर्ण जेवा ज वर्णना एळ के कीडा प्रमुख जणाय तो ते पुष्पने अगोचर स्थाने मूकी देवा के जेथी ते जीवोनी हिंसा न थाय.

त्यारपछी त्रस जीवरहित पुष्पोनो पूर्वे कहेल रीति प्रमाणे हार बनावी श्रावके भगवतना कंठमा स्थापन करवो. तेम करवाथी स्त्रीना कठमा रहेला हारनी जेम अशुभ भावना थती नथी, पण ऊलटो पुष्पना जीवने अभय आप्यानो अने आत्माने परमेश्वरना परमगुणनी प्राप्तिनो एम उभय लाभ थाय छे. उत्तम जीवोए एम ज धारवु के आ प्रमाणे प्रभुने चडाववाथी जेटला काळनु ते पुष्पना जीवोए आयुष्य बाध्यु हशे तेटलो काळ छेदन, भेदन, छेदन, शुचिकारोपण, मर्दन अने पचेंद्रियादि जीवोनो स्पर्श ए सर्व दुःख सहन करवानो अभाव थवाथी ते सुखपूर्वक जीवशे.

---

१ नवमु सत्त्व-मोक्षतत्त्व. २ कपावु ते ३ सोयथी विंधावु ते

शुद्ध पुष्पोनी रकाबी भरी प्रभुनी पासे लावी श्रावक आ प्रमाणे कहे के "हे स्वामी ! तमे पण जगतना हितकारी छो, आ पुष्पोना जीवोने हु हिंसकोनी पासेथी छोडावी लाव्यो छु, तेथी तेमने अने मने अभय आपो." आ प्रमाणेना शुभभावपूर्वक पुष्पपूजा करतां कांई पण दोष लागतो नथी अवधिज्ञान अने सम्यक्त्वथी युक्त तेम ज तेमनी अरिहत प्रत्ये भक्ति करेली छे तेवा देवो पण जळ तथा स्थळना नीपजेला पुष्पोथी जिनबिंबने पूजे छे श्रीराजप्रश्नीयसूत्रमा तथा जीवाभिगमसूत्रमा कह्यु छे के "नदापुष्करणी नामे देवतानी वाविका छे, तेमा यावत् हजार पाखडीना कमळो ऊगे छे ते वाविकामा प्रवेश करीने देवताओ ते कमळो ग्रहण करे छे ग्रहण करीने ते वाविकामाथी नीकळे छे अने ज्या शाश्वता जिनमदिर छे त्या जाय छे इत्यादि" तथा समवायागसूत्रमा चोत्रीश अतिशयना अधिकारमा पण कह्यु छे के "प्रभु केवळज्ञान पामे छे त्यारे वायुवडे एक योजन क्षेत्रने साफ करी मेघवृष्टिवडे ते जमीन ऊडती रज रहित करे छे पछी तेनी उपर जळ तथा स्थळना उत्पन्न थयेला देदीप्यमान पुष्कळ पचवर्णी पुष्पोना जानुप्रमाण पगर भरे छे."

अहीं कोई "जळस्थळना उपजेला पुष्पोनी जेवा पुष्पो" एम कहे छे, पण ते योग्य नथी कारण के इव विगेरे उपमावाचक शब्दो मूल सूत्रमा ग्रहण करेला नथी. वळी राजप्रश्नीय सूत्रमा पण जिनप्रतिमानी आगळ पुष्पना पुज करवा सबधी पाठ छे त्या पण जळस्थळमा उत्पन्न थयेला सचित्त पुष्पोनो पुज करे छे एम कह्यु छे तेम ज ज्ञातासूत्रमा समकितधारी द्रौपदीए करेल जिनपूजानो विधि पण सूर्याभदेवना जेवो ज वर्णवेलो छे काई पण न्यूनाधिक कहेल नथी, तेथी जो देवताओनो करेलो पुष्पनो पुज विकुर्वेलो कहीए तो द्रौपदीए करेल जिनेश्वर पासेनो पुष्पपुज विकुर्वेलो शी रीते थाय ? एथी एक ज सूत्रपाठमा पूर्वापर विरोधवाळो अर्थ न करवो. एक ठेकाणे साधे त्या बीजे ठेकाणे तूटे एवो न्याय न करवो जोईए जो के देवताओमा अनेक जातनु सामर्थ्य छे, तथापि सिद्धातमा कपोलकल्पित मति चलाववी युक्त नथी. वळी नारकी सिवा त्रेवीश दडकमा रहला जीव पुष्पपणु पण [1]प्राप्त करे छे अने पुष्पना जीवो ईशान देवलोक सुधी जइ शके छे पुष्पपूजा विषे कुमारपाल राजाना पूर्व भवनु वृत्तात दृष्टातरूपे छे ते आ प्रमाणे–

कुमारपाल राजाना पूर्वभवनु वृत्तात

एक समते राजा कुमारपाले श्रीहेमचद्रसूरीने पोताना पूर्वभव विषे पूछ्यु, ते

१ पुष्पना जीवोनी ईशान देवलोक पर्यंत गति शी अपेक्षाए कही छे ते समजी शकातु नथी तेनी गति एटले सुधी होती नथी एमा उपजवानी वात बराबर छे

वखते सूरिश्रीए सिद्धपुरमा सरस्वती नदीने तीरे अट्ठम करी सूरिमत्रना बीजा पीठनी अधिष्ठात्री देवीनी आराधना करी पछी देवीए आवीने कुमारपालनो पूर्वभव कह्यो, एटले सूरिए राजा तथा नगरजनो समक्ष आ प्रमाणे तेना पूर्वभवनु वृत्तात कह्यु. "हे राजन्! पूर्वभवे मेवाडना सीमाडामा जयकेशी नामे राजा हतो तेने नरवीर नामे एक पुत्र हतो. ते सात व्यसनने सेवनारो थवाथी पिताए तेने नगरमाथी काढी मूक्यो. ते पर्वतनी श्रेणीमा कोई पाळनो स्वामी पल्लीपति थयो. एक वखते जयतिक नामना सार्थपतिनो तेणे तमाम सार्थ लूटी लीधो. सार्थपति नासीने मालवाना राजाने शरणे गयो अने तेनु सैन्य लावी ते पाळने घेरी लीधी. नरवीर त्याथी नाठो. तेनी सगर्भा स्त्रीने सार्थवाहे हणी. तेना उदरमाथी नीकळी बाळक पण पृथ्वी पर पडी मरी गयु पाळ भागी नाखी माळवपतिए ते सार्थवाहने बे हत्या करनारो जाणी देशमाथी तिरस्कार करीने काढी मूक्यो. तेथी तेने वैराग्य उपजता तापस थई तपस्या करी मृत्यु पामी जयसिंह राजा थयो, परतु पूर्वभवमा करेली बे हत्याना पापथी ते अपुत्र रह्यो

नरवीरने देशातर जता मार्गमा यशोभद्रसूरि मळ्या सूरिए कह्यु–' अरे क्षत्रिय! तु क्षात्रकुळमा जन्मी जीवहिंसा केम करे छे? तु क्षत्रिय छे, तेथी आ व्रण पाळु सद्दरी ले, कारण के तमारा शस्त्रो आर्त्त (पीडित) जनना रक्षण माटे छे. निरपराधी जीवोने जरा पण प्रहार करवा माटे नथी. ' ते लज्जा पामी बोल्यो–' हे स्वामी! क्षुधातुर माणस शु पाप नथी करतो? केमके क्षीण पुरुषो प्राये निर्दय होय ज छे. ते उपर पचतत्रमा गगदत्तनी कथा प्रसिद्ध छे. ' आ प्रमाणे कह्या पछी गुरुना उपदेशथी ते व्यसन रहित थयो

त्याथी फरतो फरतो नरवीर नवलाखतैलग नामना देशमा आवेल एकशिला नगरीमा आव्यो त्या उढेर नामना श्रेष्ठीने घेर भोजनवस्त्रनी आजीविका उपर सेवक थईने रह्यो. ते नगरीमा उढेर श्रेष्ठीए श्रीवीरप्रभुनु एक चैत्य करावेलु हतु. अन्यदा पर्युषण पर्व आव्ये सते उढेर श्रेष्ठी ते चैत्यमा कुटुब सहित पूजा करवा गयो, त्या मोटी विधिथी पूजा कर्या पछी साथे आवेला नरवीरने उढेर शेठे कह्यु–' आ पुष्प ले अने प्रभुनी पूजा कर ' नरवीर ते साभळी विचारवा लाग्यो के ' आवा परमेश्वर कोई दिवसे मे जोया नथी आ प्रभु अपूर्व जणाय छे वळी आ प्रभु रागादि चिह्नथी रहित होवाथी साचा परमेश्वर जणाय छे तो एवा प्रभुनी पूजा बीजाना आपेला पुष्पथी शा माटे करु?' आ प्रमाणे विचारी पोतानी पासे मात्र पाच कोडी हती तेना पुष्प लीधा अने नेत्रमा आनदना अश्रु लावी, प्रसन्न थई त्रिकरण शुद्धिवडे

१ स्त्रीहत्या ने बाळहत्या २ सिद्धराज जयसिंह

शुद्ध पुष्पोनी रकाबी भरी प्रभुनी पासे लावी श्रावक आ प्रमाणे कहे के "हे स्वामी ! तमे त्रण जगतना हितकारी छो, आ पुष्पोना जीवोने हुं हिंसकोनी पासेथी छोडावी लाव्यो छुं, माटे तेमने अने मने अभय आपो " आ प्रमाणेना शुभभावपूर्वक पुष्पपूजा करवाथी कांई पण दोष लागतो नथी आवश्यकविधान अने सम्यक्त्वथी युक्त तेम ज जेमनी अरिहंते प्रशंसा करेली छे तेवा देवो पण जळ तथा स्थळना नीपजेला पुष्पोथी जिनबिंबने पूजे छे श्रीराजप्रश्नीयसूत्रमां तथा जीवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे के " नंदापुष्करणी नामे देवतानी वापिका छे, तेमां यावत् हजार पांखडीना कमळो ऊगे छे. ते वापिकामां प्रवेश करीने देवताओ ते कमळो ग्रहण करे छे ग्रहण करीने ते वापिकामांथी नीकळे छे अने ज्यां शाश्वता जिनमंदिर छे त्यां जाय छे इत्यादि " तथा समवायांगसूत्रमां चोत्रीश अतिशयना अधिकारमां पण कह्युं छे के "प्रभु केवळज्ञान पामे छे त्यारे वायुकुमार एक योजन क्षेत्रने साफ करी मेघकुमार छिडके ते जमीन ऊडती रज रहित करे छे पछी तेनी उपर जळ तथा स्थळना उत्पन्न थयेला देदीप्यमान पुष्कळ पंचवर्णी पुष्पोना जानुप्रमाण पगर भरे छे "

अहीं कोई " जळस्थळना उपजेला पुष्पोनी जेवा पुष्पो" एम कहे छे, पण ते योग्य नथी कारण के इव विगेरे उपमावाचक शब्दो मूळ सूत्रमां ग्रहण करेला नथी वळी राजप्रश्नीय सूत्रमां पण जिनप्रतिमानी आगळ पुष्पना पुंज करवा संबंधी पाठ छे त्यां पण जळस्थळमां उत्पन्न थयेला सचित्त पुष्पोनो पुंज करे छे एम कह्युं छे तेम ज ज्ञातासूत्रमां समकितधारी द्रौपदीए करेल जिनपूजानो विधि पण सूर्याभदेवना जेवो ज वर्णवेलो छे कांई पण न्यूनाधिक कहेल नथी, तेथी जो देवताओनो करेलो पुष्पनो पुंज विकुर्वेलो कहीए तो द्रौपदीए करेल जिनेश्वर पासेनो पुष्पपुंज विकुर्वेलो शी रीते थाय ? माटे एक ज सूत्रपाठमां पूर्वापर विरोधवाळो अर्थ न करवो. एक ठेकाणे सांधे त्यां बीजे ठेकाणे तूटे एवो न्याय न करवो जोईए जो के देवताओमां अनेक जातनुं सामर्थ्य छे, तथापि सिद्धांतमां कपोलकल्पित मति चलाववी युक्त नथी. वळी नारकी विना त्रेवीश दंडकमां रहेला जीव पुष्पपणुं पण प्राप्त करे छे अने पुष्पना जीवो ईशान देवलोक सुधी जई शके [1]छे पुष्पपूजा विषे कुमारपाल राजाना पूर्व भवनुं वृत्तांत दृष्टांतरूपे छे ते आ प्रमाणे-

कुमारपाल राजाना पूर्वभवनुं वृत्तांत

एक वखत राजा कुमारपाले श्रीहेमचंद्रसूरीने पोताना पूर्वभव विषे पूछयुं, ते

१ पुष्पना जीवोनी ईशान देवलोक पर्यंत गति शी अपेक्षाए कही छे ते समजी शकातुं नथी तेनी गति एटले सुधी होती नथी एमां अपनवानी वात बराबर छे

श्रीजिनचैत्य कारापण विधि

जिनचैत्य करावनारे चैत्य चणाववाने माटे इंटो तथा चुनो पोतानी जाते पकाववो नहि, तेम कोईनी पासे पकाववो पण नहि तैयार माल खरीद करवो, लाकडा पण सूका लेवा, वृक्षोनु छेदन करावबु नहि. ए विषे प्राचीन ग्रंथने आधारे पोतानी मेळे ज विचारी लेवु मूळ श्लोकमा मान विगेरे शब्द छे, तेथी कीर्ति, दम विगेरे दोषो ग्रहण करवा अने ते दोषोथी रहितपणे पुण्यवान जीवे जिनचैत्य कराववु. ते विषे सम्प्रति राजा विगेरेना घणा दृष्टांतो छे, तमाथी सम्प्रति राजानी कथा आ प्रमाणे.—

सम्प्रति राजानी कथा

सम्प्रति राजा त्रण खंड पृथ्वीनो विजय करीने सोळ हजार राजाओना परिवार सहित अवंती नगरीए आव्यो अने पोतानी माताना चरणमा पड्यो. ते वखते मातानु मुख श्याम थई गयु ते जोई राजाए पूछ्यु-'हे माता ! हु घणा देश साधीने आव्यो, ते छता तमे हर्ष केम पाम्या नहि?' माता बोली-हे पुत्र ! तें राज्यना लोभथी संसार ज वधार्यो छे अने मस्तक उपर पापना व्यापारनो बोजो उपाडीने अहीं आव्यो छे तेथी अत्यारे हर्षनो अवसर नथी, मने तो जिनचैत्य विगेरे पुण्यना काम करीने आवे तो ज हर्ष थाय, ते सिवाय हर्ष थाय नहि. हे वत्स ! मे आर्यसुहस्तीसूरिनी पासेथी सामळ्यु छे के-श्री जिनप्रासाद करावयाथी मोटु पुण्य थाय छे कहु छे के-

> काष्ठादिनां जिनावासे, यावत परमाणवः ।
> तावति वर्षलक्षाणि, तत्कर्त्ता स्वर्गभाग्भवेत् ॥

" श्री जिनप्रासादमाहेना काष्ठ विगेरेमा जेटला परमाणु होय तेटला लाख वर्ष सुधी ते प्रासादनो करावनार स्वर्गना सुख पामे छे "

लौकिकमा परमाणुनु लक्षण एवु कहेलु छे के " घरना छापरामा रहेला सूक्ष्म छिद्रोमाथी आवता सूर्यना तडकामा जे सूक्ष्म रज जोवामा आवे छे तेना त्रीशमो भाग (व्यवहारथी)परमाणु कहेवाय छे. "

वळी कयु छे के " विवेकी पुरुषने नवो जिनप्रासाद करावयामा जे पुण्य थाय तेथी आठगणु पुण्य जीर्णोद्धार करावयामा थाय छे " " अग्नि, जळ, चोर, याचक, राजा, दुर्जन तथा भागीदारो विगेरेथी उगरेलु जेनु धन जिनभुवन विगेरेमा वपराय छे ते पुरुषने धन्य छे " माता कहे छे-"हे वत्स ! मे आ प्रमाणे ते सूरि पासेथी सामळ्यु छे. वळी चैत्य करावामा मोटुं पुण्य छे तेनु ए पण कारण छे के चैत्यपरिमितक्षेत्रने

प्रभुनी पूजा करी पछी पूर्ण रुचिवडे भक्तिथी ते बोल्यो-' हे स्वामी ! तमे दयाळु होवाथी आ समारथी मने उद्धर्यो छे, कारण के इन्द्रने पण दुर्लभ एवी भक्ति करवानो आजे मने अवसर आप्यो छे आ प्रमाणे वारवार कहेतो ते उद्धर शेठनी साथे त्यां पधारेला यशोभद्रसूरिनी पासे आव्यो त्यां गुरुनी देशना सामळी देशना थई रह्या पछी शेठनी साथे तेणे पण उपवास कर्या अनुक्रमे मृत्यु पामी तु आ त्रिभुवनपाल राजानो पुत्र थयो छे. उद्धर शेठ उदयन मंत्री थयो छे अने यशोभद्रसूरि हता ते हु थयो छु अहींथी आयुष्य पूर्ण करी छेवटे व्यंतर जातिमा महर्द्धिकपणु प्राप्त करी, त्यांथी चवी, भरतक्षेत्रमा भद्दिलपुर नगरमा शतानद राजानी धारणी नामे राणीथी शीतबलनामे पुत्र थईश, अने ते ज भवमां श्री पद्मनाभ प्रभुनो अगियारमो गणधर थई मोक्ष पामीश."

आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव सामळी कुमारपाल प्रसन्न थया पछी पोताना प्रिय दूतने गुरुनी रजा लइ ते देशमा मोकल्यो ने दूत त्यां जई उद्धर शेठना पुत्रना मुखथी ते प्रमाणे सर्व वृत्तांत सामळी पाछो आव्यो अने ते वृत्तांत राजा कुमारपालने जणाव्यु ते सांभळी राजाए विशेष प्रसन्न थई सर्व सघनी समक्ष हेमाचार्य गुरुने हर्षथी कलिकालसर्वज्ञ एवु बिरुद आप्यु.

आ वृत्तांत पूजा माटे विधिपूर्वक पुष्पसामग्री मेळववामा शिक्षारूप छे.

"पूर्वभवमा अनुचर हतो ते राजापणाने प्राप्त थयो अने पूर्वे स्वामी हतो ते प्रधान पणाने पाम्यो, तेथी थोडा के घणा पुष्पोनी गणत्री नथी, परतु अधिक भावयुक्त पूजा करवाथी महाफळ थाय छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पचाशीत्यधिकशततमः प्रबध ॥ १८५ ॥

व्याख्यान १८६ मुं

अभिमान दोष लाव्या विना जिनचैत्य कराववु

भव्येऽहनि शुभे क्षेत्रे, प्रासादो विधिपूर्वकम् ।
मानादिदोषमुक्तेन, कार्यते पुण्यशालिना ॥ १ ॥

भावार्थ.–

" शुभ दिवसे सारा क्षेत्रमा अभिमान विगेरे दोषो रहित एवा पुण्यशाळी पुरुषे जिनचैत्य कराववु " तेनो विधि आ प्रमाणे–

अप्पा उद्धरिओ च्चिय, उद्धरिओ तहय तेण नियवसो ।
अन्ने य भव्वसत्ता, अणुमोयता य जिणभवण ॥ १ ॥

" जिनभुवनना करावनारे पोताना आत्मानो, पोताना वंशनो अने तेनी अनुमोदना करनार बीजा भव्य प्राणीओनो उद्धार कर्यो एम समजवु " आ प्रमाणेनी देशना साभळी सप्रति राजाए बीजा नेवु (८९) हजार जीर्णोद्धार कराव्या. एकदर सर्वमळीने सवालाख जिनचैत्य थया

एक वखते गुरुना मुखथी आ प्रमाणे साभळ्यु के " सर्व लक्षणवाळी अने सर्व अलकारोथी युक्त एवी प्रासादमा रहेली प्रतिमाने जोईं जेम जेम मन हर्ष पामे तेम तेम निर्जरा थाय छे. तेथी तेवा जिनबिंबो मणि, रत्न, सुवर्ण, रूपु, काष्ठ, पाषाण अने मृत्तिकाना अथवा चित्रमां कराववा. " वळी " मेरु गिरि जेवो बीजो गिरि नथी, कल्पवृक्ष जेवु बीजु वृक्ष नथी, तेम ज जिनबिंब निर्माण करवा जेवो बीजो कोई मोटो धर्म नथी " " जो धन खरचवानी शक्ति होय तो पाचसो धनुष्य प्रमाणवाळी प्रतिमा कराववी, तेवी शक्ति न होय तो एक आगळनु पण बिंब करावेलु होय तो ते भक्तना सुखने अर्थे थाय छे " कह्यु छे के " जे पुरुष श्री ऋपभदेवथी वीरभगवत सुधी गमे ते प्रभुनु अगुष्ठप्रमाण पण बिंब करावे छे ते स्वर्गमा प्रधान एवी विशाळ समृद्धिना सुख भोगव्या पछी प्राते अनुत्तर पद[मोक्ष]ने प्राप्त करे छे. " आ प्रमाणे गुरुमहाराजनो उपदेश साभळी सप्रति राजाए शिल्पग्रथोमा लख्या प्रमाणे सीत्तेर भाग प्रमाण बराबर सवाक्रोटी जिनबिंब कराव्या

एक वखते आर्यसुहस्तीसूरि के जेमने पूर्वभवे जोया हता तेमने जोई राजाए जातिस्मरणवडे पूर्वभव जाण्यो, तेथी गुरूने ओळखी, नमस्कार करी पोतानो पूर्वभव पूछयो. एटले गुरुए श्रुतज्ञानना बळथी कह्यु–" हे राजन् ! पूर्वे तु भिक्षुक हतो एक वखते मोटी किंमतना अलकारयुक्त राजा, मत्री, श्रेष्ठी विगेरेने मोटी समृद्धि साथे अमारा चरणने वदना करता जोई तने विचार थयो के–' हु पण आ सूरिराजना चरणकमळने सेवु ' पछी तें अमारा शिष्य पासे भोजन माग्यु त्यारे ते मुनिए कह्युं–' जो तु अमारा जेवो थाय तो अमे तने भोजन आपी शकीए. ' एटले तें दीक्षा लीधी, पण गळा सुधी अन्न खाधु, तेथी तने तत्काळ अजीर्ण थई आव्यु. ते समये तें अनेक मुनिओना मुखथी धर्मवाक्यो साभळ्या, तेथी तें तेनी अनुमोदना करी अने तारु आयुष्य पण पूर्ण थई गयु एटले त्याथी मृत्यु पामी एक दिवसनी दीक्षाने प्रभावे तु त्रण खडनो राजा थयो "

चैत्य करावनारे मसागरजनना व्यापारमांथी दूर करीने धर्मव्यापारमां जोडी दीधु छे साभळ्यु छे के "जेटला क्षेत्रमा चैत्य होय तेटला क्षेत्रमा चूला मांडवा नहि, तेमज रांधवु, पीसवु, विग्यसेरन करवु, कुतकीडा करवी अने सेत्र खेडावया विगेरे अधर्म कार्य करवा नहि, चैत्यक्षेत्रने तरा कार्यथी दूर राखव लोकोना स्थानको पापक्रियानी प्रवृत्तिवाळा होय छे, तेथी आ स्थान जेवु करवु नहि, पुण्यबुद्धिए धर्मक्रियानु ज ते स्थान करवु ' वळी हे वत्स ' चैत्य करावनार कुन्तलादेवीनी जेम मत्सर करवो नहि

कुतलानी कथा

अवनीपुरमां जितशत्रु नामे राजाने कुन्तला नामे पट्टराणी हती ते अर्हत धर्ममां निष्ठावाळी हती तेना उपदेशथी तेनी बीजी सपत्नी [शोक्यो] पण धर्मवाळी थई हती ते सर्वो कुतलाने बहु मान आपती हती एक वखत बीजी सर्व सपत्नीओए जिनेश्वर भगवतना नवीन चैत्य कराव्या, ते जोईने अत्यन्त मत्सरभाववाळी कुतलाए पोतानो जिनप्रासाद तेओनाथी अधिक कराव्यो तथा पूजा नाट्य विगेरे पण विशेष पणे करावया लागी अने सपत्नीओना प्रासाद विगेरे उपर द्वेष राखवा लागी सरल हृदयनी सपत्नीओ तो तेना कार्यनु नित्य अनुमोदन करवा लागी कुतला ए प्रमाणेना मत्सरभावमा मग्न थई सती दुर्दवयोगे कोई मरत व्याधि उत्पन्न थवाथी मृत्यु पामी अने चैत्यपूजाना द्वेषथी शुनी [कुतरी] थई पूर्वना अभ्यासथी पोताना चैत्यना द्वार आगळ ज बेसी रहेवा लागी एक वखते कोई केवळी भगवत त्यां पधार्या, तेमने कुतलानी सपत्नीओए पूछ्यु-' कुतला कई गतिमा गई छे ? ' ज्ञानीए जे यथार्थ हतु ते कयु ते साभळी ते राणीओने सवेग उत्पन्न थयो. पछी पेली शुनी थयेली कुतलाने तेओ स्नेहथी खावानु आपती सती कहेवा लागी के " हे पुण्यवती बेन ! तें धर्मिष्ठ थईने व्यर्थ द्वेष शामाटे कर्यो के जेथी तने आवो भव प्राप्त थयो ?" ते सामळी कुतलाने जातिस्मरण ज्ञान थयु, तथी ते परम वैराग्य प्राप्त करी प्रभुनी प्रतिमा सन्मुख पोतानु पाप आलोची अनशन अगीकार करी मृत्यु पामीने वैमानिक देवी थइ तथी हे वत्स ! उत्तम कार्य करीने ते सबंधी मत्सरभाव करवो नहि "

आ प्रमाणे माताना मुखथी शिक्षा पामी सप्रति राजाए घणा चैत्यो नवा करावया माड्या एकदा सप्रति राजाए गुरुना मुखथी साभळ्यु के पोतानु आयुष्य सो वर्षनु छे, तेथी तेणे एवो नियम लीधो के प्रतिदिन एक एक जिनप्रासाद उपर कळश चडेलो सामळ्या पछी अन्न जमवु आवा नियम प्रमाणे सो वर्षना ३६००० दिवसो थाय ते प्रमाणे छत्रीश हजार जिनचैत्यो तेणे नवा कराव्या

एक वखते राजाए गुरुना मुखथी आ प्रमाणे देशना सामळी

अप्पा उद्धरिओ च्चिय, उद्धरिओ तह्य तेण नियवंसो ।
अन्ने य भवसत्ता, अणुमोयता य जिणभवण ॥ १ ॥

" जिनभुवनना करावनारे पोताना आत्मानो, पोताना वशनो अने तेनी अनुमोदना करनार बीजा भव्य प्राणीओनो उद्धार कर्यो एम समजवु " आ प्रमाणेनी देशना साभळी सप्रति राजाए नीजा नेवु (८९) हजार जीर्णोद्धार कराव्या. एकदर सर्वमळीने सवालाख जिनचैत्य थया

एक वखते गुरुना मुखथी आ प्रमाणे साभळ्यु के " सर्व लक्षणवाळी अने सर्व अलकारोथी युक्त एवी प्रासादमा रहेली प्रतिमाने जोई जेम जेम मन हर्ष पामे तेम तेम निर्जरा थाय छे. तेथी तेवा जिनबिंबो मणि, रत्न, सुवर्ण, रूपु, काष्ठ, पाषाण अने मृत्तिकाना अथवा चित्रमा करावत्रा. " वळी " मेरु गिरि जेवो बीजो गिरि नथी, कल्पवृक्ष जेवु बीजु वृक्ष नथी, तेम ज जिनबिंब निर्माण करवा जेवो बीजो कोई मोटो धर्म नथी. " " जो धन खरचवानी शक्ति होय तो पाचसो धनुष्य प्रमाणवाळी प्रतिमा करावची, तेवी शक्ति न होय तो एक आगळनु पण बिंब करावेलु होय तो ते भक्तना सुखने अर्थे थाय छे " कह्यु छे के " जे पुरुष श्री ऋषभदेवथी वीरभगवत सुधी गमे ते प्रभुनु अगुष्ठप्रमाण पण बिंब करावे छे ते स्वर्गमा प्रधान एवी विशाळ समृद्धिना सुख भोगव्या पछी प्राते अनुत्तर पद[मोक्ष]ने प्राप्त करे छे " आ प्रमाणे गुरुमहाराजनो उपदेश सामळी सप्रति राजाए शिल्पग्रथोमा लख्या प्रमाणे सीत्तेर भाग प्रमाण बराबर सवाक्रोटी जिनबिंब कराव्या

एक वखते आर्यसुहस्तीसूरि के जेमने पूर्वभवे जोया हता तेमने जोई राजाए जातिसरणवडे पूर्वभव जाण्यो, तेथी गुरुने ओळखी, नमस्कार करी पोतानो पूर्वभव पूछयो. एटले गुरुए श्रुतज्ञानना बळथी कह्यु–" ह राजन् ! पूर्वे तु भिक्षुक हतो एक वखते मोटी किंमतना अलकारयुक्त राजा, मत्री, श्रेष्ठी विगेरेने मोटी समृद्धि साथे अमारा चरणने वदना करता जोई तने विचार थयो के–' हु पण आ सूरिराजना चरणकमळने सेवु.' पछी तें अमारा शिष्य पासे भोजन माग्यु त्यारे ते मुनिए कह्यु–' जो तुं अमारा जेवो थाय तो अमे तने भोजन आपी शकीए ' एटले तें दीक्षा लीधी, पण गळा सुधी अन्न खाधु, तेथी तने तत्काळ अजीर्ण थई आव्यु. ते समये तें अनेक मुनिओना मुखथी धर्मवाक्यो साभळ्या, तेथी तें तेनी अनुमोदना करी अने तारु आयुष्य पण पूर्ण थई गयु एटले त्याथी मृत्यु पामी एक दिवसनी दीक्षाने प्रभावे तु त्रण खडनो राजा थयो "

मेषादिघातेस्तनुते कृपाघ्नो, दुर्गादिपूजां नवरात्रपर्वसु।
मात्राज्ञया पिष्टकुर्कुटं घ्नन्, यशोधरः सांव दधौ भवौघम् ॥ १ ॥

भावार्थ –

" निर्दय लोको नवरात्रिना दिवसोमा बकरा प्रमुखनो घात करी दुर्गा विगेरेनी पूजा करे छे, परंतु यशोधरे मातानी आज्ञाथी मात्र लोटनो बनावेलो कुकडो हण्यो हतो तो पण तेने माता सहित घणा भव भटकवु पडयु हतु " तेनी कथा आ प्रमाणे–

राजपुर नगरमा मारीदत्त नामे राजा हतो. तेने चंडमारी नामे गोत्रदेवी हती. राजा मारीदत्त ते गोत्रदेवीनी प्रतिदिवस पुष्पादिकथी पूजा करी स्तवना करतो हतो आश्विनमास आवे त्यारे शुक्ल पडवेथी मांडी नवमी सुधी कंदमूल, दूध, घी अने फळादिकनो ज आहार करी तेनी आगळ बेसी रहतो हतो लौकिकमा कहवाता नवरात्रिना पर्वमा ते ज्यारे तेनी आराधना करतो हतो त्यारे गोत्रदेवीनी तृप्ति माटे होमबलिदान अर्थे एक लाख बकरा विगेरे जीवोने हणतो अने बे माणसोनो पण वध करतो, तेमा आठमने दिवसे तो जीवनो होम विशेष करतो हतो

एक वखते ते नगरमा गुणधर नामे आचार्य चातुर्मास रह्या हता तेमने अभयरुचि नामे एक महात्मा (साधु) शिष्य हतो अने अभयमति नामे एक संयम, तप अने क्रियामा तत्पर साध्वी शिष्या हती महा तपोधन अने शीलरूप पवित्रताथी युक्त अभयरुचि मुनि एक दिवस चार प्रकारनो अभिग्रह करी नगरमा आहार माटे फरता हता, तेवामा राजपुरुषो तेने पकडीने राजा पासे लई गया राजाए अभयरुचि मुनिने पूछ्युं–" शास्त्रोपदेशक मुनि ! तमारा शास्त्रमा नवरात्रिना दिवसोमा गोत्रदेवीनी पूजानु फळ शु कह्यु छे अने होमक्रिया केवी रीते करवानु वर्णवेलु छे ? " संयमी अभयरुचि बोल्या–" राजेंद्र ! मे पूर्वभवे एक पिष्टनो कुकडो मात्र मार्यो हतो, ते पाप हु सात भव सुधी घणु दु ख भोगवतो भटक्यो हतो तो तमारी शी गति थशे ? " राजाए तेमना सात भवनु स्वरूप पूछ्यु, एटले अभयरुचि बोल्या–

अवंतिनगरीमा यशोधर नामे राजा हतो तेने चंद्रवती नामे माता हती अने नयनावळी नामे स्त्री हती तेने गुणधर नामे पुत्र थयो हतो. एक वखते संसारथी उद्वेग पामेला अने वैराग्यमा तत्पर यशोधर राजाए पोतानी राणी नयनावळीने कह्यु– ' प्रिये ! हु दीक्षा लईश ' दैवयोगे ते ज रात्रिए राजाने स्वप्नु आव्यु के ' मातसा माळना गोख उपरथी तेनी माताए तेने पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो ' प्रभाते ते वात पोतानी माताने जणावी. माताए यशोधरने कह्यु–' वत्स ! एवा माठा स्वप्नना

निवारण माटे तु चामुडादेवीने बकरा विगेरेनु बलिदान आप.' राजाए कह्यु–' प्राण जाय तो पण हु तेवुं कार्य करु नहि ' ते साभळी माताए अनेक उपालभ आपी तेने शरमावी दीधो अने बळात्कारे एक पिष्टनो कुकडो करीने तेने आप्यो के जेने हणीने तेणे शक्तिने चडाव्यो

राणी नयनावळी कोई गायन करता कुवडा पुरुषने जोई तेनी उपर मोह पामी, तेथी तेणीए प्रपच करी राजानी आज्ञा मेळवीने ते पुरुषने पोताना आवास पासे राख्यो. रात्रे राजा सूई गया पछी वखत मेळवी राणी तेनी साथे स्वेच्छाए विलास करवा लागी. एक समये राजाए ते वात जाणी अने नजरे पण दीठी, तथापि तेणे क्षमा राखी अने मौन रह्यो. बीजे दिवसे प्रभातकाळे गुणधर पुत्रने राज्य आपी पोते दीक्षा लेवा उजमाळ थयो. ते जोई राणीए चिंतव्यु के " जरूर मारु चरित्र स्वामीना जाणवामा आव्यु छे, तेथी हु तेने भोजनमा विष आपी मारी नाखु, नहि तो ते पुत्रने मारी वात कहीने आ कुवडा पुरुषना सुखथी मने भ्रष्ट करशे. " आवो विचार करी तेणीए भोजनमा विष नाखी राजाने खवराव्यु अने विष चडवाथी राजा आकुळव्याकुल थयो एटले तेणीए गळे अगूठो दईने तेने मारी नाख्यो त्यारपछी थोडा दिवसे तेनी माता पण मृत्यु पामी.

राजा त्याथी मरीने मयूर थयो अने तेनी माता श्वान थई दैवयोगे कोई वनचरे ते बनेने पकडी क्रीडा माटे गुणधर राजाने भेट कर्या. राजा तेथी खुशी थयो मयूरने पाजरामा पूर्यो अने श्वानने बाधीने राख्यो.

एक वखते मयूरे नयनावळीने पेला कुवडा नरनी साथे जोई, तेथी तत्काळ ते मयूरने जातिस्मरण थई आव्यु. पछी ज्यारे नयनावळी ते मयूरने हाथवडे पकडवा जती ते वखते ते मयूर द्वेषथी तेणीने चाचनो बहु प्रहार करतो हतो. एक वखते राजमाता नयनावळीए चचूनो प्रहार करता ते मोरने आभूषणथी मार्यो, तेथी ते गोख उपरथी पडी गयो ते वखते राजानी पासे बेठेला पेला श्वाने कटीथी तेने पकड्यो तेने छोडाववा राजाए घणी महनत करी, पण श्वाने छोड्यो नहि एटले राजाए श्वानने सोगठाथी मार्यो. तेथी बने मृत्यु पामी गया

पछी मयूर मृत्यु पामीने नोळीयो थयो अने श्वान सर्प थयो. त्या पण तेओ युद्ध करीने मरण पाम्या. त्याथी ते बने सिप्रा नदीमा मत्स्य थया चद्रवतीमत्स्यना जीवने माछीओए मारी नाख्यो अने त्यारपछी केटलेक वखते यशोधरमत्स्य नयनावळी तथा गुणधरने अर्पण कर्यो नयनावळीए तेने रधाव्यो. त्या तेने जातिस्मरणज्ञान थयु.

" आ प्रमाणे मिथ्यात्वना पवने जाणीने मारीदत्त प्रमुख जैनोए तेनो त्याग कर्यो अने तेम कराथी तेओ पाछळथी आत्मधर्मने पाम्या "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ अष्टाशीत्यधिकशततम प्रबंध ॥ १८८ ॥

व्याख्यान १८९ मुं

चैत्य शब्दनो अर्थ

प्राहु जिनौकस्तद्बिंब चैत्यशब्देन सूरय ।
अतस्तद्भावतो वंद्य वहात्मना गुणप्रदम् ॥ १ ॥

भावार्थ –

" विद्वान् सूरिओ चैत्य शब्दनो अर्थ जिनालय अने जिनबिंब कहे छे, एथी घणा आत्माने गुण प्राप्त करी आपनार चैत्य भावथी वंदन करवा योग्य छे " १

पोताना अने पारका शास्त्रना शब्दार्थने नहि जाणनारा केटलाएक लोको चैत्य शब्दनो अर्थ ज्ञान, मुनि, यत विगेरे कल्पनाथी कहे छे, पण ते असत्य छे, कारण के कोशप्रमुख शब्दशास्त्रथी चैत्य शब्दनो अर्थ प्रतिमा ज थाय छे ते आ प्रमाणे– व्याकरणमा चिति संज्ञाने एवो धातु छे ते उपरथी " जेनाथी काष्ठादिकनी प्रतिकृति (प्रतिमा) जोई संज्ञा उत्पन्न थाय के ' आ अरिहंतनी प्रतिमा छे ' ते चैत्य कहेवाय छे, एम व्युत्पत्ति थाय छे तथा धातुपाठवृत्तिमा " चित् चयने " ए धातुनो चैत्य एवो प्रयोग थाय छ तथा नाममालामा लखे छे के " चैत्य विहारे जिनसद्मनि " " चैत्य शब्द विहार अने जिनालयमा प्रवर्ते " ते ग्रंथनी स्वोपज्ञ वृत्तिमा "चीयते इति चिति तस्मात चैत्य" एवी व्युत्पत्ति करी ' भावे यण् ' प्रत्यय आव्यो छे एम लख्यु छे वळी अमरकोशमा " चैत्यमायतन प्रोक्त " एम कहेलु छे हैम अनेकार्थ संग्रहमा " [illegible] चैत्यमुद्देशपादप " चैत्य एटले जिनालय, जिनबिंब अने [illegible] अर्थ कह्या छे. पण कह्यु छे के चेईयट्ठे निज्जरट्ठि [illegible] । तेनी [illegible]

[illegible] जेनी नीचे केवळज्ञान [illegible]

के–चैत्य जे जिनप्रतिमा–तेनो अर्थ एटले प्रयोजन ते निर्जरानो अर्थे कर्मक्षयनी इच्छाए वैयावृत्यने योग्य क्रियावडे उपष्टंभन करे (कीर्ति विगेरेनी इच्छा विना निरपेक्षपणे). एवो अर्थ श्री प्रश्नव्याकरणनी वृत्तिमा कह्यो छे. ते ज सूत्रमा आश्रवद्वारमा पण चैत्य शब्द कहेलो छे त्या एम समजवु के समारना हेतुरूप कीर्ति विगेरेनी अपेक्षाए जे चैत्यादि कराववा तेनो आश्रवमा अतर्भाव थाय छे, अथवा कुदेवना चैत्य विगेरे कराववा ते आश्रव कहेवाय छे.

[1] सूत्रमा सर्व स्थले जिनादिकनी वदना करवामा उत्सुक एवो भावुक हृदयमा एवु विचारे छे के–यतोह कल्लाण मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवासामि । " हु कल्याणकारी, मगलमय, देवताना चैत्यनी जेम विनयथी सेवा करुं. " आ सूत्रपाठनो अर्थ केटलाएक अज्ञानी एवो करे छे के " देव एटले धर्मदेव–साधु, तेने चैत्य एटले छेल्लु ज्ञान (केवळज्ञान) थयु होय त्यारे देवता तेने जेवी रीते स्तवे छे तेम हु स्तवु छु." आ तेमनो कल्पित अर्थ युक्तिवाळो नथी. तेनु खडन आ प्रमाणे–पाचमा अग श्री भगवतीसूत्रमां तामलि श्रेष्ठीए आवी रीते चिंतव्यु के "मारा सगासबधीने अढार जातिना शाक करी जमाडु, कल्याणकारी मगलकारी देवताना चैत्यनी जेम विनयवडे सेवा करु. " आ स्थाने पूर्वे कहेल अज्ञानीनो अर्थ शी रीते घटे ? कारण के ए श्रेष्ठी मिथ्यात्वी हतो ते जैनधर्मनी प्रशसा करवा योग्य वार्ता शी रीते जाणे ? एथी आबाळगोपाळ प्रसिद्ध एवो ज अर्थ करवो ते आ प्रमाणे–" देव एटले स्वाभीष्ट ईश्वर, तेनुं चैत्य एटले बिंब तेनी जेम हु पूजा करु वा स्तुति करु. " आ अर्थ सर्व रीते घटित छे.

[1] कोई मिथ्यात्वी एम बोले के " जीवनी विराधना धर्मने माटे पण जे करे तेने मदबुद्धि कहेलो छे " दशमा अग श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रमा कह्यु छे के ' प्रतिमाने घडवा के पूजवाने काळे जे जीवहिंसा करे ते मदबुद्धि पुरुष छे. " आवो अर्थ तेओ करे छे, पण तेनो ए अर्थ अयुक्त छे अहीं मदबुद्धि तो जेओ यज्ञादि कार्यमा जीवअजीवने नहि जाणनारा धर्मबुद्धिथी बकरा प्रमुखनो वध करे छे ते ज समजवा, अरे मुग्ध! जो तु ए अर्थने अहीं जिनचैत्यादि शुभ क्रियामा लगाडे छे तो तने पूछवानु के नदी ऊतरवामा, विहार करवामा, धर्मक्रिया करवामा, गुरुवदना करवा माटे जवामां अने उपाश्रयप्रमुख धर्मस्थल करावत्रामा सर्वत्र जीववध थाय छे के नहि ? जो थाय छे तो तु पण मदबुद्धि थई गयो ते विषे कह्यु छे के " जतनापूर्वक प्रवृत्ति करता जे विराधना थाय ते सूत्र अनुसारे चालवाना कारणथी कर्मक्षयरूप निर्जरानु कारण थाय छे अने तेथी आत्मस्वरूपनी शुद्धि थाय छे." आ गाथानो अर्थ बराबर धारवो.

१ आ अर्थ सदेहवाळो छे ते पाठनु स्थान जोई यथार्थ अर्थ विचारवो

वळी कोई एवी शका करे के "पाषाणनी प्रतिमानी पूजादिक करवामा शो लाभ छे ? कारण के पूजादिक करवाथी काई ते तृप्त के सतुष्ट थती नथी अने जे तृप्त के सतुष्ट नहि थाय तेवा देव पासेथी फळनी प्राप्ति पण थती नथी." तेना उत्तरमा कहेवानु के अचेतन एवा चिंतामणि रत्न विगेरेथी पण फळप्राप्तिनो विरोध नथी अर्थात् फळप्राप्ति थाय छे. ते विषे वीतरागस्तोत्रमा कह्युं छे के:-

अप्रसन्नात्कथ प्राप्य, फलमेतदसगति ।
चिंतामण्यादय कि न, फलत्यपि विचेतना ॥ १ ॥

"प्रसन्न न थाय तेवानी पासेथी फल शी रीते मळे ? एम मानवु असगत छे, कारण के अचेतन एवा चिंतामणि विगेरे पण शु फळ नथी आपता ?"

श्रीजिनप्रतिमामा वीतरागना स्वरूपनो अध्यारोप करीने पूजाविधि करवा योग्य छे. ते विषे श्रीभगवती अगमा चारणश्रमणना अधिकारमा कह्यु छे के "हे भगवत् ! विद्याचारण मुनिनो तीरछो गतिविषय केटलो कह्यो छे ?" भगवत कहे छे- "अहींथी एक उत्पादे (एक पगले) मानुषोत्तर पर्वते जईने समवसरण करे अने त्या रहेला चैत्यने वादे; बीजे उत्पादे त्याथी नदीश्वर द्वीपे समवसरे अने त्या रहेला चैत्यने वादे; त्यांथी पाछा वळता एक उत्पादे अहीं आवे अने अहींना चैत्यने वादे." "हे भगवत ! विद्याचारण मुनिनो ऊर्ध्वलोकमा गतिविषय केटलो छे ?" भगवत कहे छे- "हे गौतम ! एक उत्पादे अहींथी नदनवनमा समवसरे, त्याना चैत्यने वादे, बीजे उत्पादे पाडुकवने पहोंचे, त्याना चैत्यने वादे पाछा एक उत्पादे अहीं आवे ने अहींना चैत्यने वादे." तेमा ते द्वीपादिकने विषे शाश्वत चैत्य लेवा. अहीं बहुवचन छे, तेथी चैत्य शब्दवडे जिनबिंब ज जाणवा. इत्यादि अनेक युक्तिथी चैत्य शब्दनो अर्थ ज्ञान थतो नथी अने तेथी ज कोषकारे कह्यु छे के 'चैत्य एटले जिनालय अथवा जिनबिंब.' ते युक्तियुक्त सिद्ध थाय छे आ प्रसगमा वधारे कहेवानी हवे जरूर नथी.

हवे ते जिनबिंब भावथी वादवा योग्य छे. वदनानु फळ श्रीपद्मचरित्रमा आ प्रमाणे कहेलु छे-" चैत्यनु एटले दर्शन करवा जवानु मनमा चिंतवन करवाथी चोथभक्तनु फळ थाय छे, त्या जवा माटे ऊठवाथी छट्ठनु फळ थाय छे, जवानो आरभ करवाथी अट्ठमनुं फळ थाय छे, थोडु जवाथी दशम(चार उपवास)नु फळ थाय छे, जरा वधारे चालवाथी पाच उपवासनु फळ थाय छे, मार्गना मध्यमा आववाथी पक्ष उपवासनु फळ थाय छे, जिनभुवनने देखवाथी मास उपवासनु फळ थाय छे, जिनभवनने प्राप्त थयेलो मनुष्य छमासी तपनु फळ मेळवे छे, तेना द्वार पासे पहोंचता सवत्सर तपनु फळ मळे छे, प्रदक्षिणा करवाथी सो वर्षना उपवासनु फळ मळे छे, जिन-

बिंबने पूजवाथी हजार वर्षना तपनु फळ मळे छे अने जिनेश्वरनी स्तुति करवाथी अनंतु फळ मळे छे." वळी कह्यु छे के "जिनबिंबनु प्रमार्जन करवाथी सोगणु, विलेपन करवाथी सहस्रगणु, पुष्पमाळा चडाववाथी लाखगणु अने गीतवादित्रथी अनंतगणु पुण्य थाय छे"

आ जिनबिंबनुं दर्शन घणा जीवोने अनेक प्रकारनु गुणकारी छे ते विषे श्रीदशवैकालिकनी निर्युक्तिमा कह्यु छे के "जिनप्रतिमाना दर्शनथी प्रतिबोध पामेला, मनकना पिता अने दशवैकालिकना कथक एवा शय्यंभव गणधरने हु वादु छु तेमनो संबंध आ प्रमाणे छे"–

श्री शय्यंभवसूरिकथा

श्री जंबूस्वामीनी पाटे प्रभवसूरि थया हता तेमणे श्रुतज्ञानवडे पोताना पदने योग्य एवा कोइ मुनि पोताना शिष्योमा के पोताना गच्छमा दीठा नहि पछी तेमणे पोतानी श्रुतदृष्टिथी जोयु, एटले राजगृही नगरीमा शय्यंभव नामनो एक श्रेष्ठ ब्राह्मण पोताना पदने योग्य जोवामा आव्यो पछी गुरु त्या आव्या ते शय्यंभव ब्राह्मण अनेक ब्राह्मणोने एकठा करी यज्ञकर्म करावतो हतो तेमने बोध करवाने माटे वे चतुर साधुने यज्ञस्थळे मोकल्या साधुओ त्या जई आ प्रमाणे श्लोकना वे पद बोल्या–"अहो कष्टमहो कष्ट, तत्त्वं न ज्ञायते परं" "अहो! कष्टनी वात छे के महाकष्ट करे छे, पण परम तत्त्वने जाणता नथी" आ प्रमाणेना वे पद कही तेओ सत्वर पाछा वळ्या ते सामळी शय्यंभव विप्रे विचार्युं के 'आ साधु जरूर मृषाभाषी न होय, माटे यज्ञाचार्यने तत्त्व पूछु' आवु विचारी तेणे यज्ञाचार्यने तत्त्व पूछ्यु तेमणे कह्यु–"यज्ञ ज तत्त्व छे." तथापि संशयने पामेलो शय्यंभव ते साधुनी पछवाडे सत्वर चाल्यो अने प्रभवसूरि पासे जई तेणे सूरिने ते विषे पूछ्यु एटले सूरि बोल्या–' भद्र! जो तु भय देखाडीश तो ते यज्ञाचार्य ज तने तत्त्व कहेशे.' तेणे पाछा आवी खड्ग खेंचीने यज्ञाचार्यने कह्यु–' तत्त्व कहो, नहि तो आ खड्गवडे तमारा शिरनो छेद करी नाखीश.' पछी यज्ञगुरुए भय पामी यज्ञना स्तंभ नीचे स्थापित करेली श्रीशांतिनाथजिननी मूर्ति तेने काढी बतावी मूर्ति जोई ते विचारमा पड्यो के अहो! आ मूर्ति निरुपम छे पछी ते मूर्ति लई ते शय्यंभव ब्राह्मण सूरिनी पासे आव्यो अने ते देवनु स्वरूप पूछ्यु सूरिना एक ज उपदेशथी प्रतिबोध पामीने शय्यंभवे परपरागत मिथ्यात्व छोडी आशातना वगरनी भूमि उपर मूर्ति स्थापित करी, दीक्षा लई अनुक्रमे द्वादशांगीनु अध्ययन कर्युं. सूरिए तेने पोताना पट उपर स्थापित कर्या

शय्यंभवे दीक्षा लीधी त्यारे तेनी पत्नी सगर्भा हती तेणे गर्भस्थिति पूर्ण थता मनक नामना पुत्रने जन्म आप्यो मनक आठ वर्षनो थयो एटले बाळकोनी साथे

क्रीडा करता बाळको तेनो अपितृक (नबापो) कही तिरस्कार करवा लाग्या. मनके लज्जा पामी पोतानी माताने ते विषे पूछ्यु माताए गद्गद्स्वरे कह्यु–" वत्स ! तारा पिताए कोई जैनगुरु पासे दीक्षा लीधी छे हु शु करु ? कोई श्वेतांबरीए काईक कहीने तेने धूती लीधा छे अधुना ते मुनीश्वर थयेला छे अने पाटलीपुत्र नगरमा हाल विचरे छे. " ते साभळी मनक तत्काळ मातानी आज्ञा लई पिताने जोवा उत्सुक जई ते नगरमा आव्यो अने मार्गे चाल्या जता मुनिओना समूहमा जईने पूछ्यु–' शय्यभव मुनि कोण छे ? ' तेवु पूछता ज शय्यभवसूरिए श्रुतज्ञानना उपयोगथी तेने पोतानो पुत्र जाणी लीधो. पछी उपाश्रयमा लावी तेने दीक्षा दीधी, परतु तेनु आयु मात्र छ मासनु ज अवशिष्ट रहेलु जाणी द्वादशागीमाथी उद्धार करी दशवैकालिक नामे सूत्र रची तेने भणाव्यु ते सूत्रनु अध्ययन करी आयुष्य पूर्ण थयु एटले मृत्यु पामीने ते देवता थयो तेना मृत्यु वखते सूरिने अश्रुपात थई आव्यो. ते जोई बीजा मुनिओ कहेवा लाग्या–" हे स्वामी ! ज्यारे तमारा जेवा मोहरूप राक्षसथी ग्रस्त थइ अश्रुपात करशे तो पछी धीरता क्या रहशे ? " सूरीश्वर बोल्या–" हु मोहवश थई अश्रुपात करतो नथी, पण आ मारो पुत्र अल्प समयनु चारित्र पाळी स्वर्ग गयो तो जो तेनु आयुष्य लाबु होत तो ते तेथी पण अधिक महत्पद प्राप्त करत. आवा हेतुथी मने खेद थयो हतो." ते जाणी सर्व मुनिओने विस्मय ने विषाद साथे थया तेओए गुरुने कह्यु के " आपना पुत्र हता तो ते अमने जणाववु तो हतु, अमे तेनी वैयावच्च करत. " गुरुए कह्यु–' तेवु जणाववाथी तेना आत्मानु कार्य सिद्ध न थात '

युगप्रधान शय्यभव सूरि चिरकाळ भव्यश्रेणीने प्रतिबोध आपी प्राते स्वर्गे गया.

"प्राज्ञ पुरुषोए चैत्य शब्दवडे जिनेन्द्र मूर्ति कहल छे ते सत्य छे, केम के शय्यभव मुनि चैत्यने जोई ते शब्दमा रहेल धातुनो अर्थ चित्तमा धारी उत्तम गति पाम्या छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकोननवत्यधिकशततम. प्रबन्ध ॥ १८९ ॥

व्याख्यान १९० मुं

जिनपूजाविधि

कल्याणकानि पचापि, स्मर्त्तव्यान्यर्चणक्षणे ।
पचैवाभिगमा धार्या, विध्यनुल्लङ्घ्य पूजनम् ॥ १ ॥

भावार्थ –

" पूजा वखते पाच कल्याणकनु स्मरण करवु, पाच अभिगम धारवा अने पूजाना विधिनु उल्लंघन करवु नहि "

विशेषार्थ –

पूजा वखते पाच कल्याणकनु स्मरण करवु ते आ प्रमाणे–पूजा कर्या पहेला बे हाथ जोडी मनमा धारवु प्रभु समर्प। च्यवनकल्याणक आ प्रमाणे विचारवु–"हे जिनेंद्र ! तमे अमुक विमानमाथी चवी अमुक माताना उदरमा अवतर्या अमारा जेवा जीवोने तारवा तमे मनुष्यस्वरूप धारण कर्यु छे अहो ! अमारा मोटा भाग्य छे " आ प्रमाणे चिंतवी प्रभुना देह उपरथी निर्माल्य विगेरे दूर करवा अने ते पण ज्या कुंथुआ विगेरे जीवो उत्पन्न न थाय तेवे स्थळे मूकवा

पछी मोरपीछवडे प्रभुना अगने प्रमार्जी सुगधी जळथी भरेल कळश हाथमा लई प्रभुने स्नान करावबु ते वखते जन्मकल्याणक मननी सर्व स्वरूप भाववु पछी शुभ वस्त्रथी अग लूछवु अने नवणनु जळ ज्या जीवहिंसा तथा आशातना न थाय तेवे स्थळे नाखवु

अग लूछ्या पछी प्रभुनी सन्मुख ऊभा रही दाढी मूछ विगेरेथी रहित एवु प्रभुनु अग जोई ' अहो ! आ जिनेश्वरे आटला साधुओ साथे ससार छोडी, केशोनु लूचन करी दीक्षा लीधी ' इत्यादि दीक्षाकल्याणक सबधी भावना भाववी.

पछी अगपूजा करी छत्र, चामर, भामडळ, आसन विगेरे सर्व समृद्धि जोई आठ प्रातिहार्ययुक्त एवा केवळज्ञान कल्याणकनी हृदयमा भावना करवी.

पछी चैत्यवदनादिकने समये पर्यकासनवाळी अथवा कायोत्सर्गादि अवस्थावाळी प्रतिमा जोई "अहो ! आ प्रभु पर्यकासने अथवा काउस्सग्ग मुद्राए चिदानदमय सिद्धि पदने प्राप्त थया छे" एम मोक्षकल्याणकनी भावना करवी आ प्रमाणे पाच कल्याणकनु स्मरण करवु.

प्रभुनी आगळ पाच अभिगम धारवा ते आ प्रमाणे–

१ प्रभुना मदिरमा गमन करता पुष्पे, ताबूल, सोपारी, बदाम, छरी, कटारी घडी, मुगट अने वाहन विगेरे सचित्त अचित्त द्रव्यनो त्याग करवो २ मुगट सिवाय बाकीना आभूषणादि अचित्त द्रव्यनो त्याग करवो नहि ३ एकवडा अने पहोळा

१ पुष्प ताबूलादि पोताना उपयोगना समजवा २ मुगट–पाघडीनी उपर शिरपेचनी बधाय छे ते समजवो

वस्त्रनो उत्तरासंग करवो. ४ प्रभुना दर्शन थतां ज मस्तके अंजलि जोडी 'जिनाय नमः' एम कही नमस्कार करवो अने ५ मनमां एकाग्रता करवी.

विधिनुं उल्लंघन कर्या वगर प्रभुनी पूजा करवी एम कह्युं छे ते विधि पूर्वसूरिओए आ प्रमाणे कहेलो छे–"स्नान करी, घरदेरासरनी नजीक जई प्रथम भूमिनुं प्रमार्जन करवुं. पछी योग्य वस्त्र पहेरी मुखकोश बांधवुं १. पुरुषे पूजाविधिमां स्त्रीनुं वस्त्र पहेरवुं नहि अने स्त्रीए पुरुषनुं वस्त्र पहेरवुं नहि, कारण के ते वस्त्र कामरागने वधारनार छे. २. शल्य वगरना शुद्ध स्थानमां बुद्धिमान पुरुषे देवालय कराववुं अने ते घरमां जतां डाबी तरफ जमीनथी दोढ हाथ ऊंचुं करवुं ३. चार विदिशा अने दक्षिणदिशा छोडीने करवुं अने पूजके पूजा करवा माटे पूर्वाभिमुखे अथवा उत्तराभिमुखे बेसवुं. ४ दिशाओना फळ आ प्रमाणे कहेला छे.–पूर्वदिशा सामे बेसवाथी लक्ष्मी मळे छे, अग्नि दिशामां संताप थाय छे, दक्षिणमां मृत्यु थाय छे, नैर्ऋत्यदिशामां उपद्रव थाय छे, पश्चिमदिशामां पुत्रनुं दुःख थाय छे, वायव्यदिशामां संतति थती नथी, उत्तरमां महालाभ थाय छे अने ईशानमां धर्मवासना वधे छे. ५–६. विवेकी पुरुषोए प्रथम प्रभुना चरण, जानु, हाथ, खभा अने मस्तक उपर अनुक्रमे पूजा करवी. ७. चंदन सहित केशर विना पूजा करवी नहि अने पोताना शरीर पर ललाटे, कंठे, हृदये अने उदरे एम चार स्थाने तिलक करवां ८ प्रभाते सुनाम(वासक्षेप)थी, मध्याह्ने पुष्पोथी अने संध्याकाळे धूपदीपथी विवेकी पुरुषोए प्रभुनी पूजा करवी ९. कदी जो ए प्रमाणे त्रिकाळ जिनपूजा न थई शके तो श्रावके त्रिकाल देववंदना करवी. ते विषे आगममां कह्युं छे के "हे देवानुप्रिय! आजथी जावजीव सुधी त्रिकाळ एकाग्रचित्ते चैत्यवंदना करवी. आ अशुचि, अशाश्वत अने क्षणभंगुर एवा मनुष्यावतारमां सार ए ज छे तेथी दिवसना प्रथम पहोरे ज्यांसुधी चैत्यने अने साधुने वंदना न कराय त्यांसुधी जलपान न करवुं, मध्याह्ने ज्यांसुधी चैत्यवंदना न थाय त्यांसुधी भोजन न करवुं अने तेवी रीते ज अपराह्न माटे पण जाणी लेवुं."

अर्हंतना दक्षिण भागे दीपक मूकवो, तेम ज ध्यान अने चैत्यवंदन पण दक्षिण भागे करवां. डाबी बाजुए धूप मूकवो. वळी कह्युं छे के "प्रातःकाळे करेली जिनपूजा रात्रिना पापने हणे छे, मध्याह्नकाळे करेली जिनपूजा जन्मथी मांडीने करेला पापने हणे छे अने रात्रे करेली जिनपूजा सात जन्मना पापने हणे छे." वळी कह्युं छे के

१ पगना अंगूठा २ प्रथमना चारे अंगयुग्म जाणवा ३ पुष्पोथी कहेवावडे अष्टप्रकारी पूजा समजवी

"हे राजा! खड्ग तेने आपीए के जेने खड्ग राखवानो अभ्यास होय, जिणहाने तो तोला, वस्त्र ने कपास आपीए." शेठे तेना उत्तरमा कह्यु के–

असिधर धणुधर कुंतधर, सत्तिधराबि वहुअ ।
सत्तुसल्ल जे रणसूर नर, जणणि ते विरल पशुअ॥ १ ॥

"हे शत्रुशल्य! खड्गधारी, धनुष्यधारी, भालाधारी अने शक्तिधारी तो घणा छे, पण जे रणमा शूरा रहे तेवा पुरुषने कोई विरल माता ज जन्म आपे छे." वळी कह्यु छे के "अश्व, शस्त्र, शास्त्र, वाणी, वीणा, नर अने नारी ते पुरुषविशेषने प्राप्त करीने ज योग्य अथवा अयोग्य थाय छे." आवा वचनथी हर्ष पामी राजाए तेने कोटवाळ बनाव्यो. ते वात साभळीने ज चोर मात्रे चोरी करवी तजी दीधी.

एक वखते कोई सौराष्ट्र देशना जैनी चारणे 'शेठनु मन पजामा केवु छे' एनी परीक्षा करवा माटे कोई ऊंटडीनी चोरी करी. ग्रामरक्षकोए तेनी शोध करता ते ऊंटडी पेला चारणना घरमा जोई एटले ते चारणने बाधी सुभटो जिणहा शेठ-(कोटवाळ)नी पासे सवारनी देवपूजाने वखते लाव्या शेठ पूजा करता हता, तेथी पुष्पना डींटने तोडवानी सज्ञावडे तेणे सेवकोने पोतानो अभिप्राय जणाव्यो. ते वखते अवसर जाणी चारण बोल्यो–

जिणहाने जिणवरह, न मिलें तारोतार ।
जिण करे जिनवर पूजीए, ते किम मारणहार॥ १ ॥

"जिनदास शेठ ने जिनेश्वर एक रूप थया नथी, नहि तो जे हाथे जिनवरनी पूजा थाय ते हाथ बीजाने मारवानी सज्ञा केम करे?" वळी चारणे कह्यु के–

चारण चोरी किम करे, जे खोलडे न समाय ।
तु तो चोरी ते करे, जे त्रिभुवनमां न माय॥ २ ॥

"हे शेठ! विचार तो कर के पोताना खोरडामा माय नहि तेवा ऊंटनी चोरी चारण केम करे? पण तें तो त्रण भुवनमा न माय तेवी चोरी करी छे" आवा चारणना वाक्यथी जिनदास शेठ लज्जा पामी विचारवा लाग्यो–'अहो! में जिनेश्वर भगवतनी आज्ञा लोपी आटला काळ सुधी मे मात्र द्रव्यपूजा ज करी, पण जे तत्त्व आ चारणे कही बताव्यु तेनो मे कदी पण आदर कर्या नहि, मने धिक्कार छे!' पछी ते चारणने गुरुनी जेम मानी शेठे कह्यु–'हे उपकारी पुरुष! तमे सम्यक् प्रकारे मारो आ भवकूपमाथी उद्धार कर्यो छे.' त्यारपछी ज्यारे जिनदास शेठ पूजा करवा

"जे प्राणी त्रिकाळ जिनपूजा करे छे ते सम्यक्त्वने शुद्ध करे छे अने श्रेणिकराजानी जेम तीर्थंकरनामकर्मनो बंध करे छे "

आ जिनपूजानो विधि द्रव्यथी अने भावथी एम बे प्रकारे छे चैत्यवंदनभाष्य अथवा प्रवचनसारोद्धारनी टीकामा कहेल 'दहतिग अहिगमपणग", इत्यादि गाथामा बतावेला चोवीश मूळ द्वार अने तेना ४ हजार ने चुमोतेर उत्तरभेद, द्रव्यभावपूजानी विधिमा योजवा योग्य छे तेना उत्तरभेद जो पूजा करनारे पोताना नामनी जेम कंठे करी गखेल होय तो ते पूजकने पूजामा मोटु फळ प्राप्त थाय छे विधिपूर्वक करेलु स्नपूजनादि सर्व अनुष्ठान अतिशय प्रशंसनीय छे अने सातिचार करवामा आवे तो अपायादिकनी पण प्राप्ति थाय छे अविधिए करेल चैत्यवंदनादिकनु आगममा प्रायश्चित्त पण कहेलु छे महानिशीथसूत्रना सातमा अध्ययनमा आ प्रमाणे सूत्र छे "अविधिथी चैत्यवंदना करे तेने तेनु प्रायश्चित्त बतावयु, कारण के अविधिथी चैत्यवंदना करनारो बीजाने अश्रद्धा उत्पन्न करे छे " आ कारण माटे देवपूजा वखते विधिमां सावधान रहेवु मुख्य वृत्तिए ते वखते मौन राखवु जो मौन रही शकाय नहि तो पाप हेतुवचननो तो सर्वथा त्याग करवो, कारण के जे वखते निसिही कहेली छे ते वखते जे गृहादिकना व्यापारनो निषेध करेलो छे तेथी ते समये पापहेतु कोई संज्ञा पण न करवी ते विषे धोळकाना निवासी जिनदास श्रेष्ठीनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

धोळकामा जिनदास नामे निर्धन श्रेष्ठी रहेतो हतो एक वखते घीना कुडला अने कपासना बोजा उपाडी खेद पामेला ते शेठे भक्तामरस्तोत्रनु स्मरण कर्यु, तेथी संतुष्ट थयेल शासनदेवीए तेने वशीकरण रत्न आप्यु एक वखते मार्गमा तेने दुष्कर्मथी विख्यात थयेला त्रण चोर मळ्या एटले तेणे बीजा बाण भागी नाख्या अने चोरनी संख्या प्रमाणे त्रण बाण राख्यां ते चोर ज्यारे तेने उपद्रव करवा आव्या त्यारे पेला रत्नना प्रभावे त्रण बाण मारीने त्रणेने तेणे मारी नाख्या।

ते अरसामा पाटण नगरमा भीमदेव राजा राज्य करतो हतो तेणे आ अद्भुत वृत्तांत सांभळी ते शेठने बोलाव्यो अने बहुमानपूर्वक देशनी रक्षा माटे खड्ग आपीने तेने पोलिसनो अधिकारी बनाव्यो ते वखते शत्रुशल्य नामे सेनापति ईर्ष्याथी बोल्यो के-

साभो तास सम्मापिए, जसु खांडे अभ्यास ।
जिणहाकु समप्पिए, तुल चेलउ कपास ॥ १ ॥

१ कष्ट विगेरेनी २ एम बतावना माटे के चोर त्रण छे, तेथी वधारे बाण नकामा आमा तेणे पोतानु पराक्रम सूचव्यु छे ३ खड्ग

विधि उपर चित्रकारनुं दृष्टांत

साकेतपुर नामना नगरमा सुरप्रिय नामे एक यक्ष हतो. ते सत्यदेव तरीके ओळखातो हतो. प्रतिवर्षे तेनी यात्रा (मेळो) भराती, ते वखते तेनी मूर्तिने चितरवामा आवती हती, पण चितर्या पछी ते यक्ष चित्रकारने मारी नाखतो हतो अने जो चितरावे नहि तो ते लोकोने मारतो हतो. एवी रीते ते यक्षे घणा चित्रकारोने मृत्यु पमाडी दीधा. आथी त्रास पामीने साकेतनगरना सर्व चित्रकारो पलायन करी बीजे गाम जता रह्या. ते वात सामळीने राजाए प्रजानो नाश थवाना भयथी सुभटो मोकली ते चित्रकारोने पाछा बोलाव्या अने ते बधाना नामनी चिट्ठीओ करीने एक घडामा भरी. पछी तेमाथी प्रतिवर्षे एक चिट्ठी कुमारी कन्या पासे कढावे अने तेमा जेनुं नाम नीकळे ते यक्षनी मूर्ति चितरे. आ प्रमाणे ठराव करवामा आव्यो.

एक वखते कौशाबी नगरीथी कोई चित्रकारनो पुत्र पोतानी चित्रकळानी कुशळता सिद्ध करवाने माटे त्या आव्यो अने जेने एक ज पुत्र छे एवी कोई चित्रकारनी वृद्धा स्त्रीने घेर ऊतर्यो. ते वर्षे ते वृद्धाना पुत्रना नामनी चिट्ठी पेला घडामाथी नीकळी एटले यमराजना आमत्रणपत्रनी जेम ते वात साभळीने डोशी करावातवडे उरस्थळने कूटवा लागी अने घणु रुदन करवा लागी ते जोई पेला चित्रकारकुमारे वृद्धाने पूछ्यु-'माता! केम रुओ छो?' वृद्धाए सत्य हकीकत कही एटले कौशाबीथी आवेल चित्रकारकुमार बोल्यो-'माता! स्वस्थ थाओ, हु पण तमारो पुत्र ज छु, तेथी तमारा पुत्रने बदले हु जईश.' वृद्धा बोली-'हे वत्स! तु मारो प्राहुणो छे, तने मरवा माटे केम मोकलाय?' एम युक्तिपूर्वक डोशीए तेने घणु समजाव्यो, पण ते समज्यो नहि अने ते वृद्धाना पुत्रना वारामा गयो

त्या जई प्रथम तो तेणे छट्ठ तप कर्यु पछी स्नान करी, अगे विलेपन करी वे धोयेला वस्त्र पहेर्या पछी सुदर एवा चदन, कस्तूरी, कपूर अने अगरथी मिश्र करेला रगना नवा कचोळा भरी, नवी पींछीओ करी, मुख उपर अष्टपुट वस्त्र बाधी, ते चित्रकार निर्भय अने स्वस्थचित्त थई यक्षने चितरवा लाग्यो. ज्यारे ते चितरी रह्यो त्यारे यक्षने नमस्कार करी तेना पगमा पड्यो अने आ प्रमाणे विनयपूर्वक बोल्यो-"हे यक्षदेव! तमारा योग्य चित्र करवाने कोई पण समर्थ नथी, तेथी में जे काई अयुक्त कर्युं होय तेने माटे क्षमा करजो" इत्यादि स्तुतिवचनो कही पुनः यक्षना चरणमा पड्यो. आ प्रमाणे करवाथी ते यक्ष प्रसन्न थयो अने बोल्यो-'हे चित्रकारपुत्र! तारी जे इच्छा होय ते मागी ले' ते बोल्यो-" हे तात! आ नगरमाथी मरकीनु निवारण करो अने सर्व चित्रकारोने अभयदान आपो, एटलु परहित थवाथी ज हु खुशी छु"

बेसे त्यारे विधिपूर्वक अने भावसयुक्त पूजा करतो हतो अन्यदा अविधिए करेल पूजानु प्रायश्चित्त साधुनी पासे लईने ते निर्मळ थयो

" मंदबुद्धिवाळा पुरुषो जेम प्रायश्चित्त न आवे तेम ज प्रवृत्ति करे छे आज्ञा पूर्वक विधिथी ज भव्य पुरुषोनी भक्ति सभवे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ नवाधिकशततम' प्रबंध' ॥ १९० ॥

व्याख्यान १९१ मुं

'अविधिथी करवा करता न करवुं सारु' एम कहेनारा प्रत्ये शिक्षा

" अविधिए करवा करता न करवु सारु " एम जे कहे छे ते उत्सूत्रवचन कहे छे, कारण के 'नहि करवाथी भारेकर्मी अने करवाथी लघुकर्मी थाय छे. " सूत्रमा पण तेवु ज कहेलु छे–

अविहिकया वरमकय, उस्सुयवयण भणंति समयन्नु ।
पायच्छित्त अकए गुरु अवितहकए लहुअ ॥ १ ॥'

"अविधिथी करवा करता न करवु सारु" एवु जे वचन ते उत्सूत्रवचन छे एम समयज्ञ पुरुषो कहे छे, कारण के क्रिया कर्या विना गुरु प्रायश्चित्त आवे छे अने अविधिए क्रिया करवाथी लघु प्रायश्चित्त आवे छे " तेथी सर्वदा धर्मक्रिया करवी पण ते करता करता सर्व शक्तिथी विधिपूर्वक करवानो यत्न करवो कह्यु छे के–

धन्नाण विहिजोगो, विहिपक्खाराहगा सया धन्ना ।
विहिबहुमाणा धन्ना, विहिपक्खादुसगा धन्ना ॥ १ ॥

"विधिनो योग धन्य पुरुषोने थाय छे, विधिपक्षनु आराधन करनारा सर्वदा धन्य छे, विधिनु बहुमान करनारा पण धन्य छे अने विधिपक्षने दोष नहि आपनारा पण धन्य छे " खेती, वेपार, आहार, पौषध अने देवतादिकनु सेवन ते जो विधिथी कर्यु तो अवश्य फळ आपे छे ते विषे एक दृष्टात छे ते आ प्रमाणे–

यक्ष बोल्यो-" हे परोपकारी ! आजथी आ नगरीना लोकोने अने चित्रकारोने मोटो भय नहि रहे अने तेमनु कल्याण थशे, पण तुं तारा माटे काइक मागी ले " युवान चित्रकार बोल्यो-" हे नाथ ! जो मारी उपर संतुष्ट हो तो मने एवु वरदान आपो के कोई मनुष्यना शरीरनो एक भाग जोवाथी हु तेनु आखु रूप यथार्थ चित्री शकु " यक्षे 'तथास्तु' एम कही वर आप्यो अने पछी ते अंतर्धान थई गयो. चित्रकारकुमार वरदाननी प्राप्ति थवाथी मनमा हर्ष पामतो थको पाछो कौशाबी नगरीए आव्यो.

एक दिवसे कोई दूत शतानीक राजानी सभामा आव्यो तेणे दूर देशना समाचार कह्या. ते समये राजाए तेने पूछ्यु-' अरे दूत ! बीजा राज्योथी मारा राज्यमां शी न्यूनता छे ते कहे.' दूत बोल्यो-' हे स्वामी ! तमारा राज्यमा बधु छे, पण एक चित्रसभा नथी, तो देवसभा जेवी एक चित्रसभा करावो ' तेनु आ वचन सांभळी राजाए पोताना राजमहेलनी पासे सुधर्मा सभा जेवी एक सभा करावी. पछी ते सभा सर्व चित्रकारोने चित्र करवा वहेंची आपी यक्षना वरदानने प्राप्त करनार पेला चित्रकारने अंत पुरनी नजीकनो भाग आप्यो तेणे त्यां मृगावती राणीनी दिव्य आकृतिमाथी देदीप्यमान एवो तेना पगनो अंगूठो जाळीआमाथी चित्रकारना जोवामा आव्यो मात्र अंगूठाना जोवाथी ते चित्रकारे मृगावतीनु सर्व रूप यथार्थ आळेखी लीधु तेनु रूप चितरती वखते तेना साथळ उपर मषीनु एक टीपु पड्यु चित्रकार तेने लूछी नाख्यु तो पण फरी वार पड्यु एम त्रण वार पडवाथी चित्रकारे जाण्यु के देवीने आ अंग उपर आवु लांछन हशे पछी तेणे त्यां लांछन कर्यु अने जेवी मृगावती हती तेवी ज आळेखी दिव्य प्रभावथी तेमा काईपण न्यूनाधिकपणु थयु नहि चित्रकार तेने आळेखीने बपोर थवाथी भोजन करवा माटे घेर गयो तेवामा शतानीक राजा चित्रसभा जोवा माटे त्यां आव्यो ते चित्रसभा जोई राजा घणो खुशी थयो तेवामा त्यां राणी मृगावती सर्वांगे चितरेली तेना जोवामा आवी ज्यां जघानो भाग जुए त्यां ते ठेकाणे मषीनु लांछन जोइ राजाने कोप चड्यो 'अरे आ शु ! आ चित्रकारे मारी राणीनी जंघा परनु लांछन शी रीते जाण्यु ? जरूर ए पापीए मारी स्त्रीने भोगवी हशे, नहि तो जंघानु लांछन शी रीते जाणे ?' पछी क्रोधथी सेवकोने आज्ञा करी के 'हे सेवको ! आ चित्रकारने शूळीए चडावी दो.' ते सांभळी सर्व चित्रकारोए एकठा थई राजाने विनति करी के 'हे स्वामी ! आने क्या अपराधथी आप हणो छो ?' राजाए कह्यु-'तेणे मृगावती राणीनी जंघा परनु लांछन शी रीते जाण्यु ?' चित्रकारो बोल्या-'हे स्वामी ! यक्षना वरदानथी ते चित्रकार कोईना रूपनो एक भाग जोयो होय तो तेनु स्वरूप यथास्थित आळेखी शके छे तेणे राणी मृगावतीना पगनो जोयलो ते उपरथी तेणे मृगावतीनु आखु रूप आळेख्यु छे ! ते सांभळी

राजाए तेनी प्रतीति करवा माटे कोई कुब्जा दासीनु मुख गोखमाथी बताव्यु, एटले ते अनुसारे तेणे कुब्जानु यथार्थ स्वरूप आळेखी दीधु. तथापि राजाए ते चित्रकारना जमणा हाथनो अगूठो छेदी नाख्यो. चित्रकारे फरी वार पेला यक्षनी आराधना करी, यक्षे प्रसन्न थई डावा हाथवडे चित्र करवानी सिद्धि आपी. त्यारथी ते चित्रकार डाबा हाथे चित्र करवा लाग्यो

एक वखते ते चित्रकारे मनमा विचार्यु के "मारा ज्ञानने धिक्कार छे के जेथी हु निरपराधी छता राजाए मारा जमणा हाथनो अगूठो छेदी मने वृथा हेरान कर्यो. तेथी जो आ राजाने मूळमाथी उखेडी नाखु तो ज मारु नाम चित्रकार, जो के हु अशक्त छु पण बुद्धिमान छु, तेथी ए शक्तिसपन्न राजाने मूळमाथी उखेडी नाखीश, कारण के बुद्धिवाननी आगळ इद्र पण शी गणत्रीमा छे?" आ प्रमाणे चितवी ते चित्रकारे पट उपर मृगावतीनु रूप चितर्यु. पछी पोतानो परिवार लई कौशाबी नगरीमाथी बहार नीकळयो अने अवतिनो राजा प्रचड शासनवाळो चंडप्रद्योत शतानीक राजानो बळवान् शत्रु छे एम जाणी ते अवतीए गयो

चडप्रद्योत राजानी आगळ मृगावतीनु सुदर चित्र मूकी, नमन करी ते ऊभो रह्यो. चडप्रद्योत पटमा आळेखेली मृगावतीने जोइने मोह पामी गयो अने मनमा तेणीना रूपनु वर्णन करवा लाग्यो–'अहो! रभाथी पण अधिक रूप! चमत्कारी लावण्य! अने अति सुदर आकृति!' पछी राजाए चित्रकारने पूछ्यु–"हे चित्रकार! तें पोतानी कळानी कुशलता दर्शावता माटे आ सुदरीनु रूप आळेख्यु छे? वा कोईनी नकल करी छे? सत्य होय ते कहे" चित्रकार बोल्यो–"राजेंद्र! मे कोई स्त्रीना रूपनी आ प्रतिकृति आळेखेली छे, परतु तेणीनु जेवु रूप छे तेवु रूप आळेखवाने ब्रह्मा पण समर्थ नथी तो मारा जेवो मनुष्य तो कोण मात्र!" चडप्रद्योते कह्यु–'त्यारे कहे ते कई स्त्रीनु रूप छे?' चित्रकार बोल्यो–"हे राजन्! शतानीक राजानी स्त्री मृगावतीनु आ रूप छे. इद्रनी इद्राणीथी पण ते रूपमा अधिक छे. ते आप जेवा महाराजाने ज योग्य छे, पण विधिना विपरीतपणाथी ते राजाने मळी छे हवे दैवनी अनुकूळताथी ते तमारी पत्नी थशे" आ प्रमाणे कही चित्रकार पट उपर चितरेली मृगावती तेने आपीने पोताने स्थानके गयो.

अहीं चडप्रद्योते ते विषयमा निश्चय कर्यो के आ मृगावती शतानीक राजाने समजावीने अथवा बळात्कारे मारे ग्रहण करवी. पछी तेणे शतानीकनी उपर एक पत्र लखी केटलीक शिखामण दईने वज्रजघ नामना दूतने मोकल्यो. तेणे कौशाबीमा आवी शतानीकने नमी चडप्रद्योतनो आ प्रमाणे सदेशो कह्यो–"हे राजेंद्र! मारा स्वामीनो

सदृशो मामळो वृक्षने जेम मणि शोभे नहि तेम तारी पासे मृगावती शोभती नथी, तेथी तेने मारी तरफ मोकली दे, कारण के मणि चरणमां शोभे नहि, मुगटमां ज शोभे. वळी जो जीवितनी अने राज्यनी इच्छा होय तो मृगावतीने अहीं मोकलीने तेनी रक्षा कर, कारण के विचक्षण पुरुषोए एक अंशनो नाश करीने पण सर्व अंशनो नाश थतो अटकाववा योग्य छे " आ प्रमाणेना दूतना वचन सांभळी शतानीक राजा क्रोधायमान थई रक्तलोचनवाळो थयो सतो दूत प्रत्ये बोल्यो–"हे दूत ! शुं तारो स्वामी विकळ थई गयो छे ? के तारा स्वामीने जीवित उपर शुं कंटाळो आव्यो छे ? अथवा मारे हाथे मृत्यु पामीने शुं नरकमां जवानी तेनी इच्छा छे ? के जेथी ते मृगावतीनी मागणी करे छे "

आ प्रमाणे कही दूतनो अत्यंत तिरस्कार करी 'तुं दूत होवाथी अवध्य छे' एम कही तेने पाछळनी बारीएथी काढी मूक्यो. शतानीके अपमान करी काढी मूकेलो ते लोहजंघ दूत चंडप्रद्योतनी पासे आव्यो अने शतानीके जे कह्युं हतुं ते बधुं निवेदन कर्युं पछी चंडप्रद्योते चौद राजाओ सहित पोतानुं लश्कर लई कौशांबी तरफ प्रयाण कर्युं तेनुं सैन्य चालतां दिशाओमांथी एटली रज ऊडी के सूर्य निस्तेज थई गयो, तेम ज ते सैन्यना भारवडे पृथ्वी कंपवा लागी एवी रीते अविच्छिन्न प्रयाण करतो चंडप्रद्योत अल्प दिवसमां कौशांबी नगरीनी नजीकमां आव्यो. राजा शतानीक तेने आवेलो जाणी अत्यंत भयभीत थई गयो तेने एवो भय लाग्यो के जेथी तेने अतिसारनो महाव्याधि थयो अने थोडा वखतमां ते यमद्वारमां पहोंची गयो. अहो ! कोईनाथी पण मरणनुं उल्लंघन थई शकतुं नथी. कह्युं छे के " दिव्य ज्ञानना धरनारा, त्रण जगतने वंदन करवा योग्य, अनंत वीर्यवाळा अने देवेंद्र तथा असुरेंद्र जेमना चरणमां नमी रह्या छे एवा जिनेश्वरो, पराक्रमी चक्रवर्तीओ, बलवान् वासुदेवो, बलभद्रो अने प्रतिवासुदेवो पण यमराजना मुखमां अशरण थईने प्रवेश करे छे खरेखर विधि अनुल्लंघ्य छे पाताळमां रहनारा भुवनपति देवताओ, स्वेच्छाचारी व्यंतरो, ज्योतिष्क विमानमां वसनारा चंद्रथी मांडी तारा सुधीना देवताओ अने सौधर्म विगेरे देवलोकमां सुखे रहेनारा वैमानिक देवताओ ते सर्व पण यमराजना निवासमां जईने वसे छे तो पछी शेनो शोक करवो ? "

चंडप्रद्योतना भयथी शतानीक राजा मृत्यु पाम्यो एटले मृगावतीए विचार्युं के "मारो पुत्र बाळक छे अने अल्प बळवाळो छे, तथी कांईक प्रपंच करीने शीलनी तथा पुत्रनी रक्षा करुं " आवुं विचारी तेणीए अवंतिपतिने जणाव्युं के " हवे हुं तमारे आधीन छुं पण मारो पुत्र हजु बाळक छे तेथी आसपासना सीमना राजाओ मार . लई लेशे, माटे मारा नगरनी फरतो मजबूत किल्लो करावी आपो अने आ

नगरी जळ तथा अन्न विगेरेथी भरपूर करावी दो." राजाए मृगावती परना मोहथी अवंतिथी ईंटो मगावीने कौशाबी फरतो मजबूत कोट करावी दीधो अने ते नगरी अन्न तथा जळथी पूर्ण करी दीधी. पछी राणीए पोताना मत्रीओने बोलावीने कह्यु–" आ किल्लो बार वर्ष सुधी कोईथी लई शकाय नहि तेवो थयो छे, माटे हवे मारा शीलनी रक्षा माटे दुर्गरोध करो अर्थात् दरवाजा बध करी दो " मत्रीओए ते प्रमाणे कर्युं

हवे प्रद्योतन राजाए मृगावतीने तेडावी एटले मृगावतीए कहेवराव्यु के–" हे राजा! हु चेटक राजानी पुत्री होवाथी स्वप्ने पण एवु अकार्य नहि करु." ते साभळी चडप्रद्योत विलखो थई विचारवा लाग्यो के " अहो! आणे छळ करीने मारु सर्वस्व लई लीधु, हवे ते युद्ध करवा सज्ज थयेली छे, तेथी हाल पाछो मारे नगरे जई सज्ज थईने फरी आवु " आम निश्चय करी राजाए पोताने नगरे जई आवी पुनः तेनी नगरीने मोटा सैन्यवडे घेरी लीधी ते समये मृगावतीए चिंतव्यु के " आ समये जो श्रीवीरप्रभु अहीं पधारे तो सारु " तेना पुण्यबळथी श्रीवीरप्रभु ते ज अरसामा त्या पधार्या. मृगावती महान् समृद्धि सहित वादवा गई. त्या चडप्रद्योत पण आव्यो. ते अवसरे अनुकूळ वखत जोई मृगावतीए पोताना पुत्रने चडप्रद्योतने खोळे सोंपी, तेनी तेने ज भलामण करी पोते प्रभु पासे दीक्षा लीधी अने ते ज भवे केवळज्ञान पामीने मुक्तिपदने प्राप्त थई.

आ दृष्टांतमां पाछळनी कथा तो प्रसगोचित लखवामा आवी छे. बाकी अहीं तो तेना आरभना भाग उपरथी एटली ज शिखामण लेवानी छे के "यक्ष दुष्ट हतो, पण विधिवडे पूजवाथी प्रसन्न थयो हतो तेथी पूज्य सर्वज्ञ प्रभुए मान्य करेलो अत्यंत शुद्ध विधि ज जिनपूजाने विषे जोडवो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकनवत्यधिकशततमः प्रबधः ॥ १९१ ॥

व्याख्यान १९२ मु

देवद्रव्य ओळववाथी जे दोष लागे छे ते कहे छे

अक्षतादिकद्रव्यस्य, भक्षको दु:खमाप्नुयात् ।
तत्ततो यत्नतो रक्ष्य, देवद्रव्य विवेकिना ॥ १ ॥

भावार्थ –

"अक्षत विगेरे देवद्रव्यने भक्षण करनारा दुःख पामे छे, तेथी विवेकी पुरुषोए देवद्रव्यनुं यत्नथी रक्षण करवुं" आनो स्पष्टार्थ नीचेनी शुभंकर श्रेष्ठीनी कथाथी जाणवो

शुभंकर श्रेष्ठीनी कथा

कांचनपुर नामना नगरमां शुभंकर नामे धनाढ्य श्रेष्ठी वसतो हतो ते नित्य जिनपूजा अने गुरुवंदना करतो हतो एक वखते ते जिनमूर्ति आगळ नमीने ऊभो रह्यो ते समये कोई देवताए भगवंतनी आगळ दिव्य अक्षतना त्रण ढगला पूज करी राखेला ते तेना जोवामां आव्या. ते राख्या चगरना छतां अत्यंत सुगंध आपता हता ते जोईने जीभना स्वादने वश थएला शुभंकर शेठे पोताने घेरथी नेनाथी त्रगणा बीजा चोखा मगावीने त्यां मूक्या अने ते दिव्य चोखा पोताने घेर लई जई तेनी खीर करावी. ते वखते सुगंध सर्वत्र प्रसरी रही

तेवामां कोई मासक्षपणी सत्क्रियावान् मुनि ते श्रेष्ठीने घेर भिक्षा माटे आवी चड्या श्रेष्ठीए ते खीरमांथी थोडी तेमने वहोरावी मुनि परमार्थ जाण्या सिवाय ते क्षीर झोळीमां लई आगळ चाल्या ते मुनि सुडतालीश दोषथी रहित एवा आहारने लेनारा होवाथी शुद्ध उदरवाळा हता, परंतु आ अयोग्य आहारनी सुगंध मात्र ग्रहण करवाथी ते मुनि विचारवा लाग्या के–' अहो ! आ श्रेष्ठीनो अवतार जमारांथी श्रेष्ठ छे, कारण के ते आवुं अति मनोहर भोजन यथेच्छपणे नित्य खाय छे ' अनुचित आहारना गंधमात्रथी मुनिनुं चारित्रध्यान दूर चाल्युं गयुं, तेथी आवुं दुर्ध्यान करता गुरु पासे आव्या नहीं त्यां विचारवा लाग्या के " आवा मनोज्ञ आहारनी गुरु समक्ष आलोचना करवानी शी जरूर छे ? केम के आजे अति मनोहर आहार मळ्यो छे, तेथी कदी स्वादना लोभे गुरु पोते ज बधो खाई जाय तो पछी हुं शुं करुं ? माटे आलोचना करवाथी सर्युं " आवो माठो विचार करी गुरुने बताव्या सिवाय ते मुनि सत्वर भोजन करवा बेठा भोजन करतां चिंतव्युं के " अहो ! आनो स्वाद देवताने पण दुर्लभ छे आजे खरेखरी जन्मनी सार्थकता थई आटला वखत सुधी में देहनुं दमन वृथा कर्युं अने शरीरने फोगट शोषित कर्युं. आवो आहार जेने नित्य मळे छे तेनो जन्म ज सफळ छे " आवी रीते चिंतवता सता ते आहार जमी सुखे सूई रह्या तेमने एवी निद्रा आवी के आवश्यक क्रियाना समये पण ऊठ्या नहि. एटले सूरिए विचार्युं के–' आ शिष्य सर्वदा सुविनीत छतां आजे ज प्रमादी थयो छे तेणे अशुद्ध आहार करेलो लागे छे. ' तेवामां प्रातःकाळ थवाथी पेलो

श्रावक गुरुने वादना आव्यो. त्या ते मुनिने सूतेला जोई तेणे कारण पूछ्यु, एटले सूरि बोल्या–' हे श्रावक ! काले आ मुनि आहार करीने सूता छे ते उठाड्या पण ऊठता नथी.' ते साभळी श्रेष्ठी बोल्यो 'हे पूज्य ! काले मारे घेरथी ज तेमणे आहार वहोर्यो छे.' गुरु बोल्या–'हे शेठ ! तमे वहोरावेलो आ हार सर्व दोषथी रहित हतो के नहि ?' शेठे कह्यु–' दोष तो मारा जाणवामा आव्या नथी, पण मे जे चोखा रधाव्या हता ते मारा घरना त्रगणा चोखा मूकी जिनमदिरना चोखा लावीने राध्या हता' आ प्रमाणे मत्य वृत्तात तेणे भद्रिकभावे कही दीधो ते साभळी गुरु बोल्या– ' हे श्रावक ! तें ए कार्य योग्य कर्यु नहि, कारण के सिद्धातमा कह्यु छे के " जिन-प्रवचननी शुद्धि करनार अने ज्ञानदर्शन गुणनु प्रभावक एवा जिनद्रव्यनु जो श्रावक भक्षण करे तो ते अनतससारी थाय छे, तेम ज श्रावक जो तेना जिनद्रव्यनु रक्षण करे तो परित्तससारी थाय छे." ते विषे एक दृष्टात छे ते साभळः—

कोई नगरमा एक द्रव्यवान् शेठ रहेतो हतो. ते पोताना एक पाडोशीने निरतर पीडा करतो हतो, तेथी ते निर्धने विचार्यु के 'कोई पण प्रकारे आ धनाढ्य श्रेष्ठी मारा जेवो निर्धन थाय तेम करु. एकदा ते श्रेष्ठी नवु घर चणावतो हतो ते जोई पेला निर्धने जिनचैत्यनी ईंटोना खड लावी गुप्त रीते तेमा चणी दीधा. देवद्रव्यनो उपयोग थवाथी ते धनाढ्य श्रेष्ठी अनुक्रमे ते घरमा रहेवाथी निर्धन थई गयो. अन्यदा पेला निर्धने कह्यु– ' मने विडबना करवानु फळ तें आवु प्राप्त कर्यु, आ बधु मारु कृत्य जाणजे.' पछी ते श्रेष्ठीए मामवाक्यथी तेने सतुष्ट कर्यो एटले तेणे पोतानु करेलु कृत्य जणाव्यु. ते जाणी श्रेष्ठीए घरनी भीतमाथी पेला ईंटोना खड काढी नखाव्या अने तेना प्रायश्चि-त्तमा एक नवु चैत्य कराव्यु पछी ते पाछो सुखी थयो

आ प्रमाणेनी कथा कहीने सूरिए कह्यु–' हे श्रेष्ठी ! तें देवद्रव्य भक्षण कर्यु छे, तेथी तने मोटु पाप लाग्यु छे ' ते साभळी भय पामेलो ते श्रेष्ठी बोल्यो–' मने पण गई काले ज घणा द्रव्यनी हानि थई छे ' सूरि बोल्या–' हे शेठ ! तारु तो बाह्य धन गयु, पण आ मुनिनु तो अतरग धन गयु हवे तेनी आलोचनामा तारे एटलु करवु योग्य छे के तारा घरमा अत्यारे जेटलु द्रव्य छे ते वडे जिनचैत्य कराववु.' श्रेष्ठीए ते प्रमाणे कर्यु पछी आचार्ये पेला मुनिने रेचक पाचक औषधो पाईने तेनो कोठो शुद्ध कर्यो अने जे पात्रमा तेणे आहार लीधो हतो ते पात्रने छाण तथा रक्षानो लेप करी त्रण दिवस सुधी तडके राख्यु, त्यार पछी ते ग्रहण करवा योग्य थयु. ते मुनिए सूरि पासे ते पापनी आलोचना करी अने तपस्यावडे शुद्ध थई सयमवडे आत्मसाधन कर्यु.

आ कथा उपरथी सार ए ग्रहण करवो के " श्रावके अधिक द्रव्य आपीने पण देवद्रव्य लेवु नहि, तेम ज श्रावकोने परस्पर देवद्रव्य धीरवु के आपवु नहि."

वळी देवद्रव्य संबंधी ज दोष कहे छे

दीपं विधाय देवानां, पुरतो गृहमेधिना ।
तेन दीपेन नो गेहे, कर्त्तव्यः कज्जलध्वजः ॥ १ ॥

भावार्थः—

" श्रावके देव समक्ष दीपक करीने ते दीपकवडे घरमां अग्नि पण सळगाववो नहि."

देवदीपक संबंधी कथा

इन्द्रपुर नामना नगरमां देवसेन नामे एक धनाढ्य श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने घेर एक ऊंटडी हमेशा आवती हती. घरवाळ तेने मारीने पोताने घेर लई जतो हतो, छतां पुन: ते ऊंटडी पेला शेठने घेर आवती हती. एक वखते शेठे गुरुने पूछयुं-' आ ऊंटडी मारे ज घेर प्रीतिथी आवे छे तेनुं शु कारण ? ' सूरि बोल्या-" आ ऊंटडी पूर्वभवे तारी माता हती. ते प्रतिदिन जिनेश्वरनी आगळ दीवो करीने पछी ते दीवावडे घरनां काम करती अने धूपना अंगारावडे चूलो सळगावती हती. ते पापथी आ भवे ते ऊंटडी थई छे. पूर्वभवे तारी माता होवाथी तने पुत्रने अने पोताना घरने जोई ते तारे घेर आववाथी खुशी थाय छे. हवे तुं तेनी पासे जई तेने पूर्वभवना नामथी बोलावी तेना कानमां देवद्रव्यने विनाश करवानी हकीकत कहीश तो ते जातिस्मरण अने बोध पामशे." शेठे गुरुना कहेवा प्रमाणे कर्युं एटले ते तत्काळ जातिस्मरण ज्ञान पामी, पछी गुरुनी साक्षीए सचित्त विगेरेनो नियम लई, मनना पश्चात्तापवडे पूर्वना पाप बाळी दई ते ऊंटडी देवपणाने प्राप्त थई.

आटला माटे ज पूर्वसूरिओए कह्युं छे के "जिनेश्वर भगवाननी पूजाभक्तिने निमित्ते दीप, धूप करीने पछी जे मूढ तेनावडे मोहथी पोतानुं कार्य करे छे ते बहु वार तिर्यंच पणु पामे छे" माटे देवसंबंधी दीपकथी संसारी लेख वांचवा नहि, (घरना) सावद्य नाणांनी परीक्षा करवी नहि अने ते दीपवडे पोताना कामनो बीजो दीपक पण सळगाववो नहि. उपलक्षणथी देवसंबंधी केशरचंदनमांथी पोताने ललाटे तिलक करवुं नहि अने देवजळथी पोताना हाथ पण धोवा नहि, पण जो कोई स्नानादिक माटे जळ लावीने चैत्यमां मूके तो तेनावडे हाथ धोवामां दोष नथी. ए प्रमाणे सर्व कार्यमां विवेक करवो.

हवे चैत्यद्रव्य शीघ्र आपी देवुं ते विषे कहे छे.

चैत्यायत्तीकृतं द्रव्यं, दातव्यं शीघ्रमेव च ।
वृद्धिश्च देवद्रव्यस्य, निष्पाद्या शुद्धबुद्धिभिः ॥ १ ॥

" चैत्य निमित्ते बोलेलु के आपवा कहेलु द्रव्य मत्वर आपी देवु अने शुद्ध बुद्धिथी देवद्रव्यनी वृद्धि करवी. "

आनो भावार्थ एवो छे के देवद्रव्य एक क्षण पण राखवु नहि. बीजानु करज होय ते आपवामा पण विवेकी पुरुषो ज्यारे सर्वथा विलब करता नथी तो पछी देवद्रव्य आपवामा तो केम ज विलब करे ? जो सद्य आपवाने असमर्थ होय तो प्रथमथी ज पखवाडीआ के अठवाडीआ पछी आपवानो स्फुट रीते अवधि करवो. पछी ते अवधिनु उल्लघन थाय तो पूर्वोक्त देवद्रव्यना उपभोगना दोषनो प्रसग आवे विलब करवाथी सारा श्रावकने पण दुर्गति प्राप्त थाय छे. ते विपे नीचेनु दृष्टात जाणवु.

ऋपभदत्त श्रेष्ठीनी कथा

महापुर नगरमा ऋपभदत्त नामे परम आर्हत् श्रेष्ठी रहेतो हतो. एक वखते पर्वदिवसे ते चैत्यमां गयो त्या श्रावको जीर्ण चैत्यना उद्धार माटे एक टीप करता हता. तेमां ऋपभदत्त पासे द्रव्य नहि होवाथी उधारे आपवानु कही काइक द्रव्य नोंधाव्यु. पछी अनेक कामनी व्यग्रताने लीधे तत्काळ ते आपी शक्यु नहि अन्यदा दैवयोगे तेना घरमा चोरनी धाड पडी. तेनु सर्वस्व लुटाई गयु. तेमा शेठे भय बताववा शस्त्र हाथमा लीधु एटले चोरोना शस्त्रघातथी हणाईने ते मृत्यु पाम्यो अने ते ज नगरमा रहेनारा कोई निर्दय, दरिद्री अने कृपण एवा महिपवाहकने घेर पाडो थयो. ते भिस्ती निरतर प्रत्येक घेर ते पाडा पासे जळ विगेरेनो भार वहन कराववा लाग्यो. ते नगरनी बाघणी ऊचा टेकरा उपर होवाथी ते पाडाने अहोरात्र जळादि भार लईने ऊचे चडवु पडतु हतु तेथी, निरतर क्षुधातुर रहेवाथी अने ते साथे चाबुक विगेरेना प्रहारथी ते महाव्यथा पामतो हतो.

एक वखते कोई नवु चैत्य बधातुं हतु तेना किल्लाने माटे ते जळ वहन करवा गयो. त्या चैत्यपूजा विगेरे जोई तेने जातिस्मरण ज्ञान थयु, तेथी ते हृदयथी चैत्यभक्ति करवा लाग्यो. पछी ज्ञानीना वचनथी तेने पोताना पितानो जीव जाणी तेना पूर्वभवना पुत्रे द्रव्य आपीने छोडाव्यो अने पूर्वभवे देवु रहेल देवद्रव्य हजारगणु आपीने तेने अनृणी कर्यो. पाडो अनशन करी स्वर्गे गयो ए प्रमाणे देवद्रव्य आपवामा विलब करवा विपे दृष्टात जाणवु

देवद्रव्यनी वृद्धि डाह्या माणसोए निर्दोप वृत्तिथी करवी. एटले ते द्रव्यथी पदर कर्मादान तथा नठारा व्यापार कर्या सिवाय शुभव्यवहारादिकथी ज देवद्रव्य वधारवु. कह्यु छे के " प्रभुनी आज्ञा विनाना कार्यवडे देवद्रव्य वधारता छता पण केटलाक मूढ जीवो मोहवडे अज्ञानी होईने भवसागरमा डूबे छे "

श्रावकोने तो देवद्रव्य व्याजे पण देवु नहि, तेम श्रावके लेवु पण नहि. श्रावक सिवाय बीजाने कांईक अधिक किंमतनु घरेणु विगेरे राखीने व्याजवडे तेनी वृद्धि करवी योग्य छे. सम्यक्त्वसत्तरीनी टीकामा सकाशनी कथा प्रसगे ते प्रमाणे कहेल छे

देवद्रव्य विनाश पामतु जोइ जे कोई तेनी रक्षा न करे तेने पण दोष लागे छ कह्यु छे के " श्रावक जो देवद्रव्य खाय अथवा ते खवाई जता तेनी उपेक्षा करे तो ते बुद्धिहीन थाय अने पापकर्मवडे लेपाय. " वळी देवद्रव्य भक्षण करवु ते उत्कृष्टी आशातनामा गणाय छे प्रतिमाने धूपधाणु विगेरे अथडाई जवु अथवा श्वास लागवो के वरासनो छेडो अडी जवो इत्यादि जघन्य आशातना कहेवाय छे अहीं कोई शका करे के ' त्यारे तो प्रभुनी प्रतिमा उपर वाळाकुची घसवाथी पण अवज्ञा (आशातना) थवी जोइए ' आ कहेवु बरावर नथी, केम के आशातना केम थाय छे तेनो अभिप्राय जाण्या विनानी आ शका छे. लोकप्रसिद्धिथी पण एम छे के अपमान के तिरस्कारनी बुद्धिथी जे क्रिया करवी ते आशातना छे, पण सत्कार के हित विगेरे बुद्धिथी जे उचित क्रिया कराय ते आशातना नथी एथी ज इंद्रे करेलु स्नात्र ते पूजा छे अने कमठे करेलु स्नात्र ते आशातना छ लोकमा पण राजा विगेरेना चरणने सेवक तेलवडे मर्दन करे, मुष्टिथी ताडन करीने चापे ते अपमान कहेवातु नथी, एवी रीते अहीं पण वाळाकुची घसवी, वस्त्रथी मर्दन करवु (लुछवु) अने जलस्पर्श करवो (जळ नाखवु) विगेरथी आशातनानो सभव नथी एक ज जातनु आचरण अभिप्रायना जुदापणाथी अमृतरूप अने विषरूप थाय छे.

धोया वगरना वस्त्रथी पूजन करवु, प्रमादथी बिंबनु पृथ्वी पर पडी जवु विगेरे मध्यम आशातना छे अने प्रतिमाने पग लगाडवो, बळखा विगेरेनो छांटो लगाडवो, देवद्रव्य ओळववु, बिंबनु भागवु अने तेनी हेलना करवी इत्यादि उत्कृष्ट आशातना छे

कदी कोई श्रावक ज्ञातिसबध आमत्रण करे अने ते श्रावक देवद्रव्यनो भक्षक होय छता तेने घेर कदी खावु पडे तो जेटली किंमतनु भोजन कर्यु होय तेटलु द्रव्य जिनालयमा मूकी देवु, तो तेथी भोजन करनार निष्पाप थाय एम वृद्धवचन छे

" पोताना द्रव्यनी जेम यत्नवडे देवद्रव्यनी रक्षा करवी अने तेवी ज रीते वृद्धि करवी एम करवाथी जिनाज्ञानु आराधक थवाय छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विनवत्यधिकशततम प्रबध ॥ १९२ ॥

व्याख्यान १९३ मुं

देवद्रव्य अल्प पण लेवाथी दोष लागे छे

देवस्वभक्षणे दोषः, अहो कोऽपि महात्मनः ।
सागरश्रेष्ठिनो ज्ञात, धार्यं देवस्वरक्षके ॥ १ ॥

भावार्थः–

"देवद्रव्यनु भक्षण करवामा अहो ! केटलो दोष ! ते उपर महात्मा सागरश्रेष्ठीनु दृष्टांत देवद्रव्यना रक्षकोए धारी राखवा योग्य छे"

सागरश्रेष्ठीनी कथा

साकेतनगरमा सागर नामे श्रेष्ठी हतो. तेने सुधर्मी (सारी निष्ठावाळो) जाणी, बीजा श्रावकोए चैत्यद्रव्य सोंपीने कह्यु–"आ द्रव्यमाथी चैत्यनु काम करनारा सुतार विगेरे माणसोने तमारे पगार चुकववो" लोभथी पराभव पामेलो ते शेठ सुतार विगेरे मजूरोने रोकड्ड द्रव्य न आपता आटो, गोळ विगेरे चीजो देवद्रव्यथी संग्रह करीने आपवा लाग्यो अने तेनो जे लाभ आवे ते पोते राखवा लाग्यो, एवी रीते करता एक रूपीआनो एशीमो भाग काकणी कहेवाय छे तेवी एक हजार कांकणी एकठी करी, परतु एवी रीतना द्रव्यसचयथी तेणे घोर दुष्कर्म बाध्युं. अतकाळे आलोचना कर्या वगर मृत्यु पामीने ते समुद्रमा जलमनुष्यपणु पाम्यो.

समुद्रमा रहेला जळचर जतुओना उपद्रव टाळवा माटे जातिवत रत्नना इच्छकोए तेने मासादिकथी लोभावी वज्रनी घटीमा नाखीने पीली नाख्यो अने तेना अगमाथी नीकळेल अडगोळी ग्रहण करी जळमनुष्य मृत्यु पामीने त्रीजी नरके गयो. त्याथी नीकळी पाचसो धनुष्यना प्रमाणवाळो महामत्स्य थयो त्या माछीए करेली कदर्थनावडे मरण पाम्यो मरीने चोथी नरके गयो एवी रीते एक, बे विगेरे भवने अतरे साते नरकमा बे बे वार उत्पन्न थयो.

देवद्रव्यनी एक हजार काकणी द्रव्य खाधेल होवाथी त आतरे आतरे अथवा आतरा विना हजार वार श्वान थयो तेम ज एक हजार भव डुकरना, एक हजार भव बकराना, एक हजार भव गाडरना, एक हजार भव मृगलाना, एक हजार भव शशलाना, एक हजार भव सावरना अने एक हजार भव शृगालना कर्या तेवी ज रीते हजार हजार वखत मार्जार, उदर, गरोळी, घो अने सर्प थयो. पाच थावर तथा विक

१ साडाचार रुपीआ २ मनुष्य आकृतिनो मत्स्य

लेंद्रियमां हजारो भव करी पछी लाखो भव संसारमां भम्यो तेमां पण प्राये करीने घणा भवमां शस्त्रघात वगेरेनी पीडा सहन करीने ज मृत्यु पाम्यो.

एवी रीते घणा दुष्कर्मो क्षीण थवाथी रत्नपुरमां कोटिध्वज एवा वसुदत्त शेठने घेर पुत्र थयो. ते गर्भमां आवता ज तेना पितानुं सर्व द्रव्य नष्ट पामी गयुं. जन्मने दिवसे पिता मृत्यु पाम्यो अने पांच वर्षनो थयो एटले माता मृत्यु पामी आथी लोकोए तेनुं निष्पुण्य एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे भिखारीनी पेठे राकनी जेम ते मोटो थयो एकदा तेना मामा तेने दयाथी पोताने घेर लई गया. त्यां रात्रे चोरोए तेनुं घर लूंटी लीधुं पछी ते अभागीओ ज्यांज्यां जाय त्यांत्यां अग्नि विगेरे उपद्रव थवा लाग्या एटले लोको तो आवे एटले महाउत्पात आव्यो एम कहेवा लाग्या एवी अमंगल निंदाथी उद्वेग पामीने ते दशांतर गयो. अनुक्रमे ताम्रलिप्ती नगरीए पहोंची विनयधर नामना कोई धनाढ्य शेठने घेर ते सेवक थइने रह्यो. ते ज दिवसे तेना घरमां लाय लागी, एटले तेणे तेने घरबहार काढी मूक्यो तेथी कटाळीने ते पोताना पूर्वकर्मने निंदवा लाग्यो कह्युं छे के "प्राणी कर्म स्वतंत्रपणे करे छे, पण तेना उदयने वखते तो परतंत्र थाय छे जेम झाड उपर माणस स्वेच्छाथी चडे छे, पण पडे छे त्यारे परवश थइने पड छे."

अन्यदा ते कोई महेभ्यने वहाणे चढ्यो अने ते धनाढ्य श्रेष्ठीनी साथे कुशळक्षेम परद्वीप पहोंच्यो त्यारे तेणे चिंतव्युं के 'अहो! मारुं भाग्य जाग्युं जणाय छे के जेथी आ वहाण भाग्युं नहीं, अथवा मारुं दुर्दैव मने भूली गयेल लागे छे हवे अहींथी पाछा वळतां जो दैव मने भूली जाय तो बहु सारुं' आवो मनोरथ करतो ते पाछो वळ्यो, तेवामां तेना दुर्दैवथी तेना मनोरथ सहित ते वहाण भागी सो कटका थई गयुं आयुष्यने बळे तेने पाटीयुं हाथ लाग्युं तेनावडे तरीने ते समुद्रने तीर कोई गाममां आव्यो अने ते गामना ठाकोरनी सेवा करवा लाग्यो दुर्दैवयोगे ते ठाकोरना घर उपर चोरलोकोए धाड पाडी अने ते निष्पुण्यने ठाकोरनो पुत्र जाणी बांधीने पोतानी पाळमां लई गया ते ज दिवसे बीजी पाळना स्वामीए ते पाळने भागी, एटले तेओए ए अपशकुनीआने त्यांथी पण काढी मूक्यो कह्युं छे के "गमे तेटला उपायो करो, पण भाग्यविना फळ प्राप्त थतुं नथी. जुओ! राहु चंद्रना अमृतनुं पान करे छे तोपण तेना अंग पल्लवित थतां नथी" एवी रीते ते निष्पुण्य नवसो ने नवाणुं स्थानोमां फर्यो अने ते बधे ठेकाणे चोर, अग्नि तथा जळना उपद्रवो थवाथी तेने काढी मूकवामां आव्यो आथी महादुःख पामतो सतो ते एक अटवीमां आव्यो त्यां सेलक नामना यक्षनुं तेणे आराधन करवा मांड्युं एकवीश उपवास कर्या एटले ते यक्ष संतुष्ट थइ बोल्यो-" हे भद्र! दररोज संध्याकाळे मारी आगळ सुवर्णना हजार

पींछावाळो एक मोटो मयूर आवीने नृत्य करशे अने प्रतिदिवस तेनी कळामाथी कनकना पींछाओ अहीं पडशे ते तारे लई लेवा " ए प्रमाणे प्रतिदिन लेता तेनी पासे नवसो पींछा एकठा थया. सो बाकी रह्या एटले दुष्कर्मथी प्रेरायेला एवा तेणे चिंतव्यु के 'हवे एकसो पींछा लेवा माटे आ जगलमा मारे क्या सुधी रोकावु? तेथी आजे मोर आवे त्यारे एक मुष्टिथी बधा पींछा लई लउ.' पछी ते दिवसे मोर आव्यो एटले तेना बधा पींछा एक मुष्टिथी लेवा माटे जेवो ते प्रवर्त्यो तेवो ज ते मयूर कागडो थई ऊडी गयो अने पूर्वे ग्रहण करेला पींछाओ पण नष्ट थई गया. कह्यु छे के "दैवने उल्लघन करीने जे कार्य करवामा आवे ते कार्य सफळ थतु नथी बपैयो सरोवरनु जळ पीवे तो ते गळाना छिद्रमाथी नीकळी जाय छे." पछी तेणे चिंतव्यु के 'मने धिक्कार छे! मे वृथा उद्यम कर्यो '

आ प्रमाणे खिन्न थयो सतो ते आमतेम भमवा लाग्यो. तेवामा कोई एक ज्ञानी मुनि तेना जोवामा आव्या. तेने जोता ज वदन करीने तेणे पोताना पूर्वभवनु स्वरूप पूछ्यु. मुनिए तेना पूर्वभवनु स्वरूप यथार्थ कही आप्यु ते सामळी तेणे देवद्रव्यना उपभोगनु प्रायश्चित्त माग्यु मुनिए कह्यु-'प्रथम उपभोगमा लीधेला देवद्रव्यथी अधिक द्रव्य पाछु आपवु अने देवद्रव्यनी रक्षा करवी; तेथी दुष्कर्मनो नाश थशे ' पछी तेणे लीधेला देवद्रव्यथी हजारगणु द्रव्य देवभक्तिमा आपवु अने ते पूरु थता सुधी वस्त्र, आहार विगेरे निर्वाह उपरात काई पण द्रव्य एकठु करवु नहि ' एवो मुनि पासे नियम लीधो त्यारपछी ते जे व्यापार करे तेमा घणु द्रव्य उपार्जन करवा लाग्यो अने ते देवद्रव्यमा आपवा लाग्यो एवी रीते थोडा दिवसमा तेणे पूर्वे वापरेली हजार काकणीने स्थाने दश लाख काकणी देवद्रव्यमा आपी अने देवनो अनृणी थयो. पछी अनुक्रमे घणु द्रव्य मेळवी पोताना नगरमा आव्यो. त्या ते मुख्य शेठीओ कहेवायो पछी नवा चैत्य कराववा, देवद्रव्यनु रक्षण करवु, योग्य युक्तिथी ते वधारवु इत्यादि वडे अद्भुत पुन्य उपार्जन करी तेणे तीर्थंकरनामकर्म बाध्यु अवसरे दीक्षा लई पहेलु अरिहत स्थानक तपवडे आराधी अर्हन्नामकर्म निकाचित कर्यु त्याथी काळ करी सर्वार्थसिद्ध विमानमा देवता थई त्याथी चवी महाविदेह क्षेत्रमा अर्हंतनी समृद्धि भोगवी सिद्धिपदने प्राप्त थयो

"देवद्रव्य ग्रहण करवाथी अत्यत दोष लागे छे, एम पूर्व सूरिओए कहेलु छे तेने जाणीने श्रावक देवद्रव्यनी किंचित् पण स्पृहा करता नथी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्रिनवत्यधिकशततम' प्रबधः ॥ १९३ ॥

व्याख्यान १९४ मुं

चैत्य कराववां ते सावद्य छे, एम कहेनाराने शिक्षावचन

सावद्यवचन नोच्य, मुनिभिर्धर्मज्ञायकैः ।
तद्वास्येन महद्दुःख, सावद्याचार्यवद्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ –

"धर्मना जाण एवा मुनिओए सावद्य वचन बोलवु नहि, सावद्य वचन कहेवाथी सावद्याचार्यनी जेम महा दुःखने पामे छे." आ अर्थ स्पष्ट छे, तेमा सूचवेल सावद्याचार्यनु दृष्टात नीचे प्रमाणे छे–

सावद्याचार्यनी कथा

एक वखते श्रीवीरप्रभु गौतमस्वामीने मिथ्या बोलवाना फळ विषे पूर्वना दृष्टात युक्त कहेता हता के–"हे गौतम! पूर्वे अनतकाळ अगाउ जे अनती चोवीशी थई गई तेमा वर्तमान अवसर्पिणी जेवी आजथी अनतमी अवसर्पिणीमाहेनी एक चोवीशीमा मारा जेवा धर्मश्री नामे छेल्ला तीर्थंकर थया हता. तेमना तीर्थमा सात आश्चर्य थया हता ते माहेना असयती पूजारूप आश्चर्यमा अनेक असयतीओ श्रावक पासेथी द्रव्य लई पोतपोताना करावेला चैत्यमा वसता हता अने तेना मालेकपणे वर्ती आनद मानता हता त्या कुवलयप्रभ नामे एक तपस्वी मुनि आव्या तेमने पेला चैत्यवासीओए नमीने कह्यु–' तमे अहीं एक चातुर्मास रहो, जेथी तमारा उपदेशवडे अनेक चैत्यो थशे ' तेमणे कह्यु–" अहीं जे जिनालयो छे ते बधा सावद्य छे, तेथी तेवा सावद्य कार्यने माटे हु उपदेश करीश नहि " आवु दृढतापूर्वक सत्य वचन कहेवाथी तेमणे जिननामकर्म उपार्जन कर्यु अने आ ससाररूप समुद्र एकभवावशेष कर्यो, अर्थात् एक भव ज करवो पडे तेवो करी दीधो पेला वेषधारीओए तेमनु सावद्याचार्य एवु नाम पाड्यु, तथापि तमन क्रोध थयो नहि तेथी मुनिओए ' चैत्यादि कराववामा महालाभ छे ' एम कहेवु. पण ' आ चैत्य, उपाश्रय के कूवु पाणी करो ' एम कहेवु नहि एवो उपदेश करवो, पण आदेश करवो नहि. आ प्रमाणे साधुए विवेक राखवो

एक वखत पेला वेषधारीओमा परस्पर शास्त्र सबधी विवाद कोई बोल्या क ' जो गृहस्थनो अभाव होय तो साधु चैत्यनी रक्षा करे, सबधी बीजो पण आरभ करे, तो पण साधुने दोष लागे नहि. ' लई जनार छे, माटे बीजु काई न करे केटला

मोक्षे लई जनार छे माटे करे.' तेमनो आ विवाद भाग्यो नहि. एटले ते सर्वेए मळीने कुवलयप्रभसूरिने बोलाव्या. तेमणे जे सत्य मुनिनो आचार हतो ते कही बताव्यो.

एक वखते कोई साध्वीए ते आचार्यने प्रदक्षिणा करी, पगमा श्रद्धाथी मस्तक मूकी स्पर्श करवापूर्वक वंदना करी. ते पेला लिंगीओए नजरोनजर जोयु त्यारपछी एक वखते व्याख्यानमा महानिशीथ सूत्रनी आ गाथा आवी के–"जे मुनि कारण प्राप्त छता निरागीपणे स्त्रीना हस्तनो स्पर्श करे तो हे गौतम ! तु निश्चये जाणजे के तेना मूळगुणनी हानि थई छे " आनो भावार्थ एवो छे के जे गच्छमा निरागी साधु पण कोई कारण प्राप्त थया छता पण स्त्रीनो स्पर्श करे तो तेना मूळगुणनी हानि थाय छे. आ प्रमाणेनी गाथा कही तेनो अर्थ विस्तारता सूरिए विचार्यु के 'प्रथम आ लिंगधारीओए तेमना चैत्यो मात्र मान्य कहेवाथी मारु नाम सावद्याचार्य तो पाडेलु छे. हवे आ गाथानो अर्थ सामळीने तो वळी काई निरूप करशे, पण जे थवानु होय ते थाओ. आ गाथानो अर्थ तो यथार्थ कहेवो, केम के जो अन्यथा कहुं तो महादोष लागे.' आम विचारी ते गाथानी यथार्थ व्याख्या करी. ते साभळी पेला लिंगधारीओए तेमने अडीने साध्वीने वंदन करता जोयेल ते वृत्तात कहीने कह्यु के 'त्यारे तो तु पण मूळगुणहीन साधु ज छे.' ते वखते सूरि अपकीर्तिना भयथी बोल्या के–"अयोग्यने उपदेश आपवो ज योग्य नथी. कह्यु छे के "काचा घडामा नाखेलु जळ जेम ते घडानो विनाश करे छे तेम अल्पमति पासे कहेलु सिद्धातनु रहस्य विनाश पामे छे." तेओ बोल्या–" तु ज मिथ्याभाषी छे, माटे अमारा दृष्टिमार्गथी दूर जा." सूरि बोल्या–"स्याद्वाद मतमा उत्सर्ग अने अपवाद एवा बे मार्ग छे, ते तमे जाणता नथी कह्यु छे के एकातवाद ते मिथ्यात्व छे अने अनेकातवाद ते स्याद्वाद मार्ग छे." लिंगधारीओए ते वचन मान्य कर्यु, परतु ए वाक्य बोलवाथी लागेलु पाप आलोच्या वगर मृत्यु पामीने ते सूरि व्यतर थया

ते देव त्याथी च्यवीने प्रतिवासुदेवना पुरोहितनी पुत्री के जेनो पति परदेश गयेलो छे तेनी कुक्षिमा अवतर्यो कलकथी भय पामेला तेना मातापिताए तेने देशमाथी काढी मूकावी. परदेश जईने ते कोई कुभारने घेर दासीपणे रही त्या चोरी करी मास विगेरे खावा लागी, एटले राजानी आज्ञा लई चोरीने माटे तेने वधकारकने सोंपी. तेणे प्रसव थता सुधी तेने जीवती राखी. प्रसव थयो एटले बाळकने छोडीने ते नासी गई अनुक्रमे ते बाळक पाचसो कसाईओनो अधिपति थयो. त्याथी मृत्यु पामी छठ्ठा नरकने छेल्ले पाथडे उत्पन्न थयो त्याथी एकोरूक नामना अतरद्वीपमा सर्प थयो त्याथी मृत्यु पामी पाडो थयो. पछी पाछो मनुष्य थयो ते पछी वासुदेव थयो. मरीने नरके गया पछी गजकर्णी मनुष्य थयो मरीने सातमी नरके गयो.

त्याथी नीकळीने पाडो थयो त्याथी कोई ब्राह्मणनी विधवा स्त्रीनी कुक्षिमा उपन्यो. त्या गर्भपात करवा माटे माताए खाधेला क्षार औषधोथी गलतकोढवाळो थई ते गर्भमाथी नीकळ्यो ते भवमा सातमो वर्ष, बे मास अने चार दिवस जीवी व्यंतर थयो पछी क्रमाटनो अधिपति थयो मरीने सातमी नरके गयो त्याथी नीकळीने चक्र थयो एवी रीते अनंतकाळ भमी महाविदेह क्षेत्रमा मनुष्यपणु पाम्यो ते भवमा लोकनी अनुवृत्तिए जिनेश्वरने प्रणाम करता ते प्रतिबोध पाम्यो पछी दीक्षा लई पार्श्वनाथ प्रभुना समयमा सिद्धिपदने प्राप्त थयो.

आ प्रमाणे श्री वीरप्रभुना मुखथी साभळी गौतमे पूछ्युं-" हे स्वामी ! ते सूरिए एवु महापाप शु कर्युं हतु ? तेणे मैथुन सेव्यु नहोतु." प्रभु बोल्या-" हे गौतम ! ते सूरिए 'उत्सर्ग तथा अपवादवडे सिद्धातनी मर्यादा छे' एम कहीने पोतानो मिथ्या वचन करवाथी महापाप उपार्जन कर्युं हतु, कारण के स्याद्वाद मार्गमा पण सचित्त जळनो भोग, अग्निनो समारभ अने मैथुन एटला तो उत्सर्गवडे निषिद्ध करेला छे, तेथी तेमा उत्सर्ग अपवाद बनेनी स्थापना करवी योग्य नहोती."

अहीं उत्सर्ग अने अपवादना सयोगवडे छ भागा थाय छे, ते आगळ लखवामां आवशे वळी ते सूरिए साध्वीनो स्पर्श थता पण सकोच्या नहोता; इत्यादिवडे अनत भव भमवा पड्या हता हवे उत्सर्ग अने अपवादनु स्वरूप कहे छे

"कष्ट विगेर आवी पडता जो हृदयमा धैर्य न रहे तो अपवादमार्ग सेवे.बाकी केटलाक तो तेवे प्रसगे पण उत्सर्ग मार्ग सेवे छे " भावार्थ एवो छे के कष्ट आवी पडे ते वखते कार्तिक श्रेष्ठीनी जेम कोई निषिद्ध एवा अपवाद मार्गने आचरे छे अने कोई पुरुष कामदेव श्रावकनी जेम उत्सर्ग मार्गने ज सेवे छे ते बनेना सयोगे छ भागा थाय छे ते आ प्रमाणे-१ उत्सर्ग, २ अपवाद, ३ उत्सर्गस्थाने अपवाद, ४ अपवाद स्थाने उत्सर्ग, ५ उत्सर्ग-उत्सर्ग, ६ अपवाद-अपवाद

१ उत्सर्गनो दाखलो—

न किंचिविअणुण्णाय पडिसिद्ध वा जिणवरिंदेहिं ।
मुत्तुण मेहुणभाव न त विणा रागदोसेहिं ॥ १ ॥

" प्रभुए मैथुनसेवन सिवाय बीजी कोई पण बाबतनी [एकाते] आज्ञा दीधी नथी, तेम एकाते निषेध कर्यो नथी, मात्र मैथुन सेवननो ज एकाते निषेध करेलो छे, कारण के ते रागद्वेष विना थतु ज नथी १."

२ अपवादनो दाखलो—

सवथ्थसयमं सयमाओ अप्पाणमेवरखिज्जा ।
मुंचइ अइवायाओ पुणो विसोहि तथा विरइं ॥ २ ॥

"सर्वथा सयमनु रक्षण करवु सयमथी पण आत्माने बचाववो. जो आत्मा बच्यो होय तो आलोयणा विगेरेथी तेनी शुद्धि थई शके छे अने पाछी विरति प्राप्त थाय छे."

३ उत्सर्गमा अपवादनो दाखलो—

उस्सग्गे अववाय आयारमाणो विराहओ भणिओ ।
अववाये पुण पत्ते उस्सग्गनिसेवउ भयणा ॥ ३ ॥

"उत्सर्गने ठामे अपवाद सेवे तो ते विराधक थाय छे अने अपवाद प्राप्त थये मते उत्सर्ग सेवे तो विराधक थाय, किंवा न थाय–भजना छे. ३"

४ अपवादमा उत्सर्गनो दाखलो पण उपली गाथामाथी ज समजी लेवो

५ उत्सर्ग–उत्सर्गनो दाखलो श्रीमहानिशीथ सूत्रमा कहेल छे ते आ प्रमाणे—

जपुण गोयमा तं मेहुणं एगतेण निच्छयओ वाढ तहा आउ
तेउ समारभं च सव्वपयारेहि संजय विवज्जेजा ।

"भगवत कहे छे के हे गौतम ! जे कारण माटे वळी ते मेथुन एकाते निश्चयथी अत्यतपणे वर्जवु, तेम ज सयमीए अप्काय तेउकाय जीवनो समारभ पण सर्व प्रकारे वर्जवो"

६ अपवादे अपवादनो दाखलो—कोई साध्वी नदीमा डुबी जती होय ने साधु तेना अगने स्पर्शीने बहार काढे तो तेनी शुद्धि अल्प आलोचनाथी थाय छे अथवा मेघ वर्षतो होय तेवे समये कोई वेश्या उपाश्रयमा पेसी गई, पछी रात्रे पण त्याथी गई नहि एटले गुरुनी आज्ञाथी कोई वृद्ध साधुए तेने स्तभ साथे बांधी लीधी प्रातःकाले राजा पासे फर्याद थता राजाए गुरुने पूछ्यु, एटले गुरुए कह्यु–' राजन् ! सप्तागलक्ष्मीथी भरेला राजाना भडारमा चोर पेसे तो तेने राजा बधन विगेरे करे के नहि ? तेवी रीते अमारा शिष्यो ते ज्ञानादि रत्नना भडार छे तेनु हरण करवाने माटे आवेल आ वेश्याने अमे बाधी लीधी हती ' ते साभळी मन्य न्याय जोई राजा खुशी थयो अने अत्यत सतोष पाम्यो

उपर प्रमाणे उत्सर्ग अपवादना छए भागा चित्तमा अवधारी–विचारीने बोलवु ते विषे भाकृतरूपमाळामा कह्यु छे के " आ प्रमाणे छ भागा होवाथी कोई

मुनिने आश्री मीडमा नारीनो प्रसंग थई गयो तो ते आलोयण लेवाथी छूटशे, पण जो तेनु स्थापन करशे तो अनत ससार वधारशे." जो के प्रवचनमा उत्सर्ग-अपवादने विषे अनेकातनी स्थापना छे, तथापि मैथुनसेवन विगेरे तो एकाते निषिद्ध करेलु छे, तेथी तेमा अपवादनु स्थापन करवाथी सूत्रनु उल्लघन थाय छे अने उन्मार्ग प्रगट थाय छे तेथी जिनाज्ञानो भग थता अनतससारीपणुं प्राप्त थाय छे वळी जे पोताना हीन आचार विगेरे दोष गोपववा माटे जिनागमनी अनेक युक्तिओ लईने पोतानु पाप गोपवे छे अने पोताना गुण प्रगट करे छे ते मायावी उपर कहेला सावद्याचार्यनी जेम बहुलससारी ज थाय छे

" जे मुनि चैत्यक्रियामा पाप छे एम कहे ते अनतससारी थाय छे, कारण के ते उत्सूत्रवचन छे. जुओ, सावद्याचार्ये तीर्थंकरनामकर्मना दळीआ उपार्जन करेल ते पण नाश पाम्या आवु उत्सूत्र प्ररूपणानु ताडव छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ चतुर्नवत्यधिकशततम. प्रबध' ॥ १९४ ॥

व्याख्यान १९५ मुं

नवकार गणवानो काळ अने तेनु फळ कहे छे

तुर्ये यामे त्रियामाया, ब्राह्मे मुहूर्ते कृतोद्यमः ।
सुचेन्निद्रा सुधी पचपरमेष्ठिस्तुति पठेत् ॥ १ ॥

भावार्थ —

"रात्रिना चोथा पहोरे ब्राह्ममुहूर्तमा (चार घडी रात्रि बाकी होय ते वखते) सद्बुद्धि वाळा पुरुषे ऊठवानो उद्यम करी निद्रा छोडी देवी अने पचपरमेष्ठीनी स्तुति करवी."

भावार्थ एवो छे के निद्राना वशपणाथी कदी रात्रिना चोथे पहोरे ऊठी न शकाय तो पदर मुहूर्तनी रात्रिमा जघन्यपणे चौदमा ब्राह्ममुहूर्तमा तो ऊठवु पछी शय्यानां वस्त्र तजी दई बीजा शुद्ध वस्त्र पहेरवा. पछी पवित्र भूमि उपर ऊभा रही अथवा बेसी वा पद्मासन करी श्रावके ईशानदिशा तरफ रहीने जाप करवो जापना त्रण प्रकार छे' १ उत्कृष्ट, २ मध्यम अने ३ जघन्य तेमां पद्मादि विधिवडे करवामा आवे ते उत्कृष्ट अने जपमाळाथी करवामा आवे ते मध्यम छे. पद्मादि विधि आ प्रमाणे-चित्तनी

एकाग्रता थवाने माटे हृदयमा अष्टदळ कमळ स्थापित करवु, तेनी मध्य कर्णिकामा प्रथम पद, पूर्वादि चार दिशाओमा बीजु, त्रीजु, चोथु अने पाचमु ए चार पद अने अग्नि विगेरे चार विदिशाओमा बाकीना चार पदनी स्थापना करवी. पछी ते क्रम प्रमाणे जाप करवो ते उत्कृष्ट जाप कहेवाय छे जपमाळा (नवकारवाळी) विगेरेथी जे जाप करवो ते तेथी न्यून मध्यम जाप कहेवाय छे उत्कृष्ट जापनु मोटु फळ छे. ते विषे योगशास्त्रमा कह्यु छे के-

त्रिशुद्ध्या चिंतयन्नस्य, शतमष्टोत्तर मुनि· ।
भुंजानोऽपि लभत्येव, चतुर्थतपसः फलं ॥ १ ॥

"त्रिकरण शुद्धिवडे एकसो आठ वार उपर बताव्या प्रमाणे (अष्टदळकमळनी स्थापना करीने) जाप करनार मुनि भोजन करता छता पण चतुर्थतप(उपवास)-नु फळ पामे छे "

हवे जघन्य जापनु स्वरूप कहे छे-

विना मौन विना सख्या, विना चित्तनिरोधन ।
विना स्नान विना ध्यान, जघन्यो जायते जप· ॥

"मौन विना, सख्या विना, मननो रोध कर्या विना, स्नान विना अने ध्यान विना जे जाप करवामा आवे ते जघन्य जाप कहेवाय छे "

जप करवाथी आ लोक आश्री फळ शु थाय ते कहे छे. "वींछी सर्प विगेरे डसेल होय अथवा दानव (व्यतरादि तुच्छ देवो) तरफथी उपद्रव थयो होय तो पच नमस्कार [नवकार मत्र] ध्यावाथी सर्व दुःखमाथी मुक्त थवाय छे " अहीं एटलु विशेष समजवानु छे के वींछी विगेरेनु विष उतारवा माटे पश्चानुपूर्वीए एकवीश विगेरे वार नवकारमत्रनो जाप करवो इत्यादि आम्नाय छे ते गुरुगमथी जाणी लेवो. नवकारमत्रना जापवडे राक्षसना उपद्रवथी रक्षा थवा विषे नीचे प्रमाणे कथा छे—

नवकारना जाप उपर कथा

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमा बल नामे राजा राज्य करतो हतो एक वखते नवीन मेघ वर्षवाथी नदीमा पूर आव्यु एटले ते जोवाने माटे लोको एकठा मळ्या. तेवामा जळनी अदर एक मोटु बीजोरु पाणी उपर तरतु जोवामा आव्यु. कोई तरीआ पुरुषे जळमा पडीने ते लई लीधु अने ते राजाने अर्पण कर्युं सुगधी अने मधुर रसवाळु ते बीजोरानु फळ राजाए चाख्यु, एटले बहु हर्षित थई राजाए तेने पूछ्यु-' आ

माग्यु छे. जैनधर्मथी वासित अतःकरणवाळा तमारा जेवा गुरुना दर्शन विना मे एटलो वखत फक्त विनोद माटे ज अनेक जीवोनी हिंसा करी अने करावी छे. हवे हु हिंसा करीश नहि अने करावीश पण नहि. फळ ग्रहण करवाना मिषथी तमे अहीं आवीने मारा हृदयमा अनेकात धर्मने दृढ कराव्यो छे, पण अविरतिना उदयथी देवताने श्रावकधर्म उदय आवतो नथी, तथापि तमारा दर्शनथी मारा अत'करणमां समकित गुण उदयमा आव्यो छे, तेथी सर्व मारु थशे हे पूज्य गुरु ! तमारे हवे अहीं आववानो प्रयास लेवो नहि हु दररोज प्रभाते तमारा दर्शन माटे आवीश अने ते वखते वृक्ष उपरथी जे फळ पक्व थईने ताजु ऊतरेलु हशे ते तमारी आगळ भेट करीश." आ प्रमाणे कही तेणे एक क्षणमा श्रेष्ठीने एक फळ सहित तेने घेर मूकी दीधो श्रेष्ठीए राजा पासे जई ते फळ राजाने आप्यु तेने जोई राजाए पूछ्यु–' हे भद्र ! तु अक्षत-शरीरे शी रीते आव्यो ?' शेठे कह्यु–' हे स्वामी ! नवकारमत्रना महिमाथी शु शु सिद्ध नथी थतु ? ', राजा बोल्यो–' मने ते महामत्र शिखवो.' ते बोल्यो–' समय आवशे त्यारे शीखवीश.'

अन्यदा कोई ज्ञानी आचार्य त्या समोसर्या श्रेष्ठी राजाने लईने तेमने वादवा गयो. पछी श्रेष्ठीए गुरुने कह्यु–' हे पूज्य ! अमारा राजाने नवकारमत्रनु फळ सभळावो ' गुरुए आ प्रमाणे नवकारमत्रनु फळ कह्यु–" नवकारनो एक अक्षर सात सागरोपमनु पाप टाळे छे, नवकारनु एक पद पचास सागरोपमनु पाप टाळे छे अने समग्र नवकार पाचसो सागरोपमनु पाप टाळे छे जे प्राणी एक लाख नवकार गणे अने नवकारमत्रनी विधिथी पूजा करे ते तीर्थंकरनामगोत्रने बाधे छे तेमां जरा पण सदेह नथी जे कोई आठ करोड, आठ लाख, आठ हजार, आठसो ने आठ नवकार गणे ते त्रीजे भवे सिद्धिपदने पामे छे ' हमेशा नवकारनी छुटी पचास माळा गणे तो साडा पाच वर्षे एक कोटी जाप थाय छे अने बाधेली छ माळा गणे तो पाच वर्षे एक कोटी जाप थाय छे ' तेनी सख्यानी धारणा बरावर करवी.

आ लोक सबधी फळ आ प्रमाणे छे–अवळी रीते (पश्चानुपूर्वीवडे) एक लाख नवकार गणवाथी तत्काळ सासारिक क्लेशनो नाश थई जाय छे. जो मात्र हाथवडे जाप विगेरे करवामा अशक्त होय तो तेणे सूत्र वा रत्नादिकनी जपमाळा (नवकारवाळी) हृदयनी समश्रेणीए राखी, पहेरवाना वस्त्रने फरसे नहि तेम, मेरुनु उल्लघन कर्या

१ आ गणत्रीमा पदप्रमाण जाप गणेलो होवो जोइए. तेम गणवाथी ज सख्यापूर्ति थाय छे

नगर-इत्यादि विधिवडे जाप करवो पृथ्वी प्रमार्जी, कटासणे बेसी अने मुखे राखी जो जाप कर्यो होय तो ते जाप स्वाध्यायनी गणनामा आवे छे जापना धमा कह्यु छे क " अगुलीना अग्र भागवडे, मेरुनु उल्लघन करीने अने व्यग्रचित्ते जाप कर्यो होय तेनु फळ प्राये अल्प थाय छे "

" जाप करतां थाकी जवाय तो ध्यान करवु, ध्यान करता थाकी जवाय तो जाप करवो अने बन्नेथी थाकी जवाय तो स्तोत्रपाठ करवो एम गुरुए कहेलु छ अनानुपूर्वीवडे नवकार गणवाथी क्षणमा छमासी तप विगेरेनु पुण्य प्राप्त करे छे "

आ प्रमाणे नवकारमत्रना जापनु फळ मुनिमहाराजना मुखेथी सांभळी राजा श्रावक थयो पछी नवकारमत्रने गणवामा तत्पर रहतो सतो ते स्वर्गे गयो.

" जेमा श्री जिनेश्वर भगवत अग्रे विराजे छे एवो नवकारमत्र आ लोक अने पर लोकमा सुखदायक छे. आ प्रमाणे जाणीने जे श्रावक नवकारमत्रना पदने जपे छे ते गुणवत प्राणी आखा विश्वने वदन करवा योग्य थाय छे "

|| इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-वृत्तौ पचनवत्यधिकशततमः प्रबधः ॥ १९५ ॥ ||

पचदशज्ञातरूपाभि अस्माभि त्रयोदश स्तभ सपूर्ण ।

॥ श्री उपदेशप्रासादग्रंथे ॥

स्तंभ १४ मो

व्याख्यान १९६ मुं

तीर्थंकरनामकर्मने उपार्जन करवाना हेतुओ कहे छे

सर्वे तीर्थंकरास्तु स्युरितस्तृतीयजन्मनि ।
विंशत्या सेवितैः स्थानैस्तीर्थकृन्नामहेतुभिः ॥

भावार्थः—

" सर्वे तीर्थंकरो तीर्थंकरनामकर्मना हेतुरूप वीशस्थानक तपना सेववाथी त्यार पछीना त्रीजे भवे तीर्थंकर थाय छे. "

विशेषार्थः—

सर्व एटले पूर्वे अतीत काळे थई गयेला अनंता तीर्थंकरो ते सर्वे पाछले त्रीजे भवे वीश स्थानकनी आराधनावडे तीर्थंकर थया छे, एटले जे जीव तीर्थंकरनामगोत्रने बांधे छे ते ए वीश स्थानकमाथी एक बे त्रण विगेरे स्थान अथवा सर्व स्थान सेववाथी तीर्थंकरनामकर्म उपार्जे छे ते जीवो एटले पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेदवाळा जीवो समजवा. तेमा नपुंसक कृत्रिम समजवा, स्वभावथी नपुंसकवेदी समजवा नहि. श्रीमद्रबाहुस्वामीए कह्यु छे के " निश्चये मनुष्यगतिमां वर्ततो स्त्री, पुरुष अथवा नपुंसकवेदी विशुद्ध लेश्यावाळो कोई पण जीव घणा प्रयासे वीश स्थानकमाहेला कोई पण पदने आराधवाथी जिननाम उपार्जे छे." ते वीश स्थानक श्रीज्ञातासूत्रमां आ प्रमाणे कहेला छे.

अरिहंत, सिद्ध, प्रवचन, आचार्य [गुरु], स्थविर, उपाध्याय [बहुश्रुत] अने तपस्वी एटले साधु, आ सात पद तथा आठमु ज्ञान, नवमु दर्शन, दशमु विनय, अगियारमु चारित्र, बारमुं शील [ब्रह्मचर्य], तेरमुं निरतिचार क्रिया, चौदमु तप, पंदरमुं दान, सोळमु वैयावृत्य, सत्तरमु समाधि, अढारमु अपूर्व ज्ञाननु ग्रहण, ओगणीसमुं श्रुतभक्ति अने वीशमु शासननी प्रभावना—आ वीशे स्थानक आराधवाथी जीव तीर्थंकरपणु पामे छे.

अरिहंत नामादि चार निक्षेपावडे मेरवा, तथा निष्पन्न थयेला गुणवाळा, मळथी रहित, पाछु फरीने संसारमा आववु न पडे तेवी गतिने पामेला, सर्व पतावी, उद्योगमात्र पूर्ण करी, निश्चिंत थईने सुखे सुनार गृहस्थनी जेम फरीने करवा पडे तेवी रीते संसारना सर्व कार्य समाप्त करी, परम सुखनो अनुभव करवाने माटे शाश्वतपणे जे प्राप्त थयेला छ ते सिद्ध जाणवा तेवा सिद्धनु ध्यान करवु. प्रवचन एटले संघ सर्वश्रुतना आधारभूत चार प्रकारनो समजवो. गुरु एटले बार सो ने छनु गुणथी अलंकृत एवा आचार्य महाराज जाणवा. स्थविर एटले वृद्ध ते त्रण प्रकारना छे. जेमनी वय साठ वर्षनी थइ होय ते वयस्थविर, दीक्षा लीधा वीश वर्ष थया होय ते पर्यायस्थविर अने जे समवायाग सूत्रना अर्थ पर्यंत जाणनार होय ते श्रुतस्थविर-एम त्रण प्रकारना स्थविर जाणवा. बहुश्रुत एटले ते समयमां वर्तता एवा घणा श्रुतने जाणनार अथवा उप एटले जेनी समीपे रहीने अध्ययन थाय ते उपाध्याय अथवा वाचक जाणवा अनशन विगेरे विचित्र प्रकारना उग्र तप करनार मुनि ते साधु जाणवा आ सात स्थाननु वात्सल्य करवु एटले तेमना यथार्थ गुणनु वर्णन करवु अने तेमना पर भक्तिराग राखवो हमेशा ज्ञाननो उपयोग धारण करवो ते आठमु स्थानक तत्त्व उपर श्रद्धा राखवी ते सम्यक्त्वदर्शन, विनय, आवश्यक क्रियामा वर्तवु ते चारित्र, शीलव्रत, तेरमु क्षणलव नामे स्थान, एटले प्रतिक्षणे प्रतिलवे वैराग्यभावयुक्त क्रिया करवी ते. तप अनेक प्रकारनो समजवो. त्याग (दान) स्थान ते गौतम विगेरने यथायोग्यपणे अन्नादि आपवु बाल, ग्लान विगेरेनी सेवा ते वैयावृत्य नामे सोळमु स्थान तेने विषे श्रीप्रश्नव्याकरणमा कह्यु छे के " कई रीते वळी ए व्रतने आराधे ते कहे छे-उपधि, भात, पाणी विगेरेना संग्रहमा तथा दानमा कुशळ एवो मुनि अत्यंत बाळ, दुर्बळ, वृद्ध, क्षपक, प्रवर्तक, आचार्य, उपाध्याय, साधर्मी, तपस्वी, कुळ, गण, संघ ने चैत्य-ए सर्वे मळी तेर पदनी दश प्रकारनी वैयावच्च अविश्रांतपणे बहु रीते करे " अहीं कोई शंका करे के जिनप्रतिमाने उपधि विगेरेनु दान देवानो संभव नथी तो चैत्यनु वैयावृत्य शी रीते करे ? तेना समाधानमां कहेवानु के " कोई यक्ष मारी वैयावृत्य करे छे तेथी तेणे आ कुमारोने हण्या छे " आवु हरिकेशी मुनिनु वचन छे ते प्रमाणे चैत्यनी अवज्ञा करता होय तेमने निवारवाथी पण चैत्यनु वैयावृत्य थाय छे, सत्तरमु समाधिस्थान एटले दुर्ध्यान छोडी चित्तनी स्वस्थता करवी ते. स्वस्थता चारित्र, विनय विगेरेथी थाय छे. अपूर्व ज्ञान ग्रहण-करवानो आदर ते अढारमु स्थान छे श्रुतनु बहुमान करवु ते ओगणीशमु स्थान छे अने प्रवचननी प्रभावना करवी, तीर्थनो उद्योत करवो ते वीशमु स्थान छे ए स्थानवडे जीव मेळवे छे

ए तपनो विधि संप्रदायथी आ प्रमाणे छे-" वीश स्थानकनु तप करवु होय तो वीश उपवास करवाथी ते तपनी एक पंक्ति समाप्त थाय छे. जो उपराउपर वीश उपवास करवानी शक्ति न होय तो आंतरे आंतरे उपवास करी छ मासनी अंदर तो एक पंक्ति पूर्ण करवी ज जोइए. एवी एकंदर वीश पंक्तिवडे ए तप पूर्ण थाय छे, एटले तेमां एकंदर चारसो उपवास थाय छे. ए प्रमाणे शक्तिने अनुसारे वीश वीश छठ्ठ, अठ्ठम विगेरेथी मांडीने वीश वीश मासक्षपण करवा सुधीनु तप प्राज्ञ पुरुषो करे छे. ते तपमां जे दिवसे तप करे ते दिवसे पांच नमोथ्थुणना पाठवाळु उत्कृष्ट चैत्यवंदन अवश्य विधिवडे करवु जोइए. तेनी एक एक पंक्तिमां एक एक दिवसवडे भक्तिपूर्वक एकेक स्थानक आराधीने एकंदर वीशे स्थानकनी आराधना करवी. प्रथम दिवसे " नमोऽर्हद्भ्यः " ए पदनो बे हजार जाप करवो अने अर्हंतनी भक्ति स्तवन विगेरेथी विशेषपणे करवी. बीजा दिवसोमां प्रथम कहेला सिद्ध विगेरे स्थानो क्रिया, ज्ञान तथा ज्ञानाभ्यासना आदर विगेरेथी आराधवा. केटलाएक तो एक एक पंक्तिथी (वीशे दिवस) एक एक स्थान एम वीश पंक्तिवडे वीश स्थानक आराधे छे. सांप्रतकाळे ते जप करवाना पद संप्रदायथी जाणी लेवा. जो संपूर्ण तप करवाने अशक्त होय तो एक स्थान, बे स्थान अथवा बधा स्थानो स्फुरायमान भक्तिवडे श्रेणिक राजा विगेरेनी जेम यथाशक्ति सेववा. एवी रीते साधु, साध्वी, श्रावक के श्राविका आ स्थानकोने आराधवाथी तीर्थंकरपणानी उत्तम संपत्तिने पामे छे "

जिनेंद्रना भवनी पूर्वे त्रीजा भवमां तीर्थंकरगोत्र बांध्या पछी क्यां जाय ते कहे छे-"तीर्थंकरपदने उपार्जन कर्युं छे जेणे एवा जीव वैमानिक देवता थाय छे, परंतु कोई जीव पूर्वे आयुष्य बांध्यु होय छे तो ते नरकभूमिमां पण जाय छे." आनो भावार्थ एवो छे के अरिहंतपद सम्यक्त्व छते ज बंधाय छे, तेथी ते जीव मरण पामीने वैमानिक देवता थाय छे, पण सम्यक्त्व अने जिनपदनी प्राप्ति थया अगाउ कोई जीवे नारकीनु आयुष्य बांध्यु होय अने पछी तीर्थंकरपदनी प्राप्ति थाय तो ते दशारसिंह (कृष्ण), सत्यकी अने श्रेणिक विगेरेनी जेम नरके पण जाय छे अने त्यांथी नीकळीने तीर्थंकर थाय छे जीर्णसंग्रहणीमां कह्यु छे के " पहेली त्रण नारकीथी नीकळेला जीव ते पछीना भवमां तीर्थंकर थाय छे, बाकीनी चार नारकीमांथी नीकळेला थता नथी. चोथी नारकीमांथी नीकळी सामान्य केवळी थाय छे, पण जिनेंद्र थता नथी पांचमी नारकीमांथी नीकळी सर्वविरतिरूप साधुपणु पामे छे पण केवळज्ञान पामता नथी. छठ्ठी नारकीमांथी नीकळी पांचमुं गुणठाणु (श्रावकपणुं) पामे, पण मुनिपणु पामता नथी सातमी नारकीमांथी नीकळी सम्यक्त्व-सम्यग्दर्शन पामे छे

पण त्रीजो गुण पामता नथी " आ अर्थने ज विशेषे करीने कहे छे-" पहेली नारकी मांथी नीकळी चक्रवर्ती थाय छे बीजी नारकीमाथी नीकळी वासुदेव बळदेव थाय छे त्रीजीमाथी नीकळी जिन थाय छे चोथी नारकीमाथी नीकळी भवान्त करे छे अर्थात् केवळज्ञान पामी मोक्षे जाय छे पाचमीमाथी नीकळी मनुष्यपणु ने साधुपणु पामे छे, छट्ठी नारकीमांथी नीकळेलाने अनतरभवे मनुष्य थवानी भजना छे कोई मनुष्य थाय छे अने कोई नथी पण थता जे मनुष्य थाय छे ते पण सर्व सयमना लाभथी रहित थाय छे, देशविरति थई शके छ. सातमी नारकीथी नीकळेला निश्चये नरपणु पामता ज नथी, पण तिर्यंचयोनिमा अवतरे छे त्या समकित पामी शके छे. (आ प्रसगे लख वामा आव्यु छे)"

अहीं प्रश्न थाय छे के चार देवनिकायमा कया निकायमाथी आवेला जिन थाय ? तेना उत्तरमा कहेवानु के-वैमानिक निकायमाथी ज आवीने जिन थाय. कह्युं छे के " बळदेव ने चक्रवर्ती सर्व देवनिकायमाथी आवीने थाय छे अने अरिहत तथा वासुदेव ए मात्र विमानवासीमाथी आवीने ज थाय छे वासुदेवना चरित्र(वासुदेव हिंडि)मां तो नागकुमारमांथी नीकळी अनतरभवे ऐरवतक्षेत्रे आ अवसर्पिणी काळमा जिन थयेला वर्णव्या छे तत्त्व ज्ञानी जाणे.

" जेणे स्फुरायमान तीर्थंकरनामकर्म मेळव्यु होय छे ते ते कर्मना उदयथी अहीं मनुष्यगतिमा जगत्पति जिनेश्वर थाय छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ षण्णवत्यधिकशततम' प्रबध' ॥ १९६ ॥

व्याख्यान १९७ मुं

तीर्थंकरोनु च्यवनकल्याणक वर्णवे छे

देवभव च तत्सौख्य मुक्त्वा च्युत्वेह सत्कुले ।
श्रीमतो भूपतेर्भार्याकुक्षावुत्पद्यते जिन ॥ १ ॥

भावार्थ—

" देवतानो भव अने देवगति सबधी सुख मूकी त्याथी चवीने कोई पण राजानी राणीनी कुक्षीमा जिनेश्वरनो जीव उत्पन्न थाय छे. "

विशेषार्थ –

जे जीव तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे ते देवभव संबंधी सुख मूकी त्याथी चवीने आ मनुष्यक्षेत्रने विषे कर्मभूमिमा उत्तम कुळनी अदर धनाढ्य राजानी शील विगेरे गुणोथी सपन्न एवी राणीनी कुक्षीमा अवतरे छे. जो के दरेक देवतानु ज्यारे छ मासनु आयुष्य बाकी रहे छे त्यारे तेने आ प्रमाणे चिह्न थाय छे–पुष्पनी माळा म्लानि पामे, कल्पवृक्ष कपे, लक्ष्मी तथा लज्जानो नाश थाय, वस्त्र मेला देखाय, दीनपणु आवे, आलस थाय, काम–राग नवे, अग भागे, दृष्टिमा भ्रम थाय, शरीर कपे अने अरति उपजे, तथापि तीर्थंकर थनारा देवता तो पुण्यना उत्कर्षपणाथी ऊलटा विशेष काति विज्ञानादियुक्त थाय छे. कह्यु छे के " तीर्थंकर थनारा देवतानु ते ज च्यववा सुधी वधतु जाय छे बीजा देवताओनी जेम तेमने च्यवन सबधी दूषित चिह्नो थता नथी. " बीजा देवताओमाथी केटलाएक उपर कहेला चिह्नो ज्यारे जुए छे त्यारे आ प्रमाणे चिंतवे छे–" अहो ! अमारु आवु सुख चाल्यु जशे ! दुर्गंधथी भरेलु गर्भ विगेरेनु दुःख प्रगट थशे ? अरे ! आ अमारी देवागनानो स्वामी कोण थशे ? " आ प्रमाणे चिंतवीने तेओ आक्रद करे छे अने शोकमग्न थाय छे. जेओ परमार्थने जाणनारा सुलभबोधि होय छे तेओ पोताना आत्मानी तेवा प्रकारनी विडबना करता नथी. केटलाएक तो भावीभाव मानीने आ प्रमाणे चिंतवे छे के ' क्यारे अमे मनुष्यपणु पामीने जिनमार्गने अनुसरशु ? '

अहीं एटलु विशेष जाणवानु के च्यववानो काळ एक समयनो होवाथी सूक्ष्म छे अने छद्मस्थपणाना ज्ञाननो उपयोग जघन्यथी पण अतर्मुहूर्त्तनो होय छे, तेथी च्यवती वखत खबर पडती नथी.

हवे च्यवनकल्याणकनो महिमा कहे छे–तीर्थंकरनो जीव चववानो होय छे त्यारे पृथ्वी उपर अशिव उपद्रव विगेरे शमी जाय छे अने नारकीना जीव पण क्षणवार सुख मळवाथी हर्ष पामे छे ज्यारे तीर्थंकररूप सूर्य उदय थवाने सन्मुख थाय छे त्यारे इद्रो आसनकपथी ते हकीकत जाणीने हर्ष पामे छे पछी तत्काळ सिंहासन उपरथी ऊठी, विनयथी पादुका छोडी दई, श्रीजिनेश्वरनी दिशानी सन्मुख सात आठ पगला चाले छे पछी पचाग प्रणिपातवडे श्रीजगदीश्वरने नमी अजलि जोडी शक्रस्तवनवडे स्तुति करे छे श्रीआवश्यकनी वृत्तिमा श्रीऋषभप्रभुना गर्भावतारना सबधमा श्रीहरिभद्रसूरि कहे छे के " शक्रेंद्र आसनकपथी प्रभु चव्या एम जाणी सत्वर त्या आवे अने यावत् जिनेश्वरनी माताने कहे के तमारो पुत्र धर्मचक्रवर्ती थशे " केटलाएक कहे छे के ' बत्रीशे[1] इद्र आवीने ते प्रमाणे

---

[1] अहीं बत्रीश इद्र व्यतर सिवायनी त्रण निकायना जाणवा

कहे ' एवी रीते प्रथम कल्याणकना उत्सवनी पद्धति बहुश्रुत विद्वानो पासे जाणी लेवी.

हवे गर्भरामसा जिनेश्वर आवता तेमनी माताने जे थाय ते कहे छे—

ते अवसरे स्वर्गभवन जेवा वासगृहमा स्वर्गनी शय्या जेवी शय्या उपर मृगाक्षी जिनमाता सूता होय छे तेओ निरोगी अने समधातुपणामा प्रसन्न चित्तथी रात्रे साक्षात्नी जेम चौद स्वप्न जुए छे त चौद स्वप्ननु वर्णन प्रख्यात छे, तेथी अहीं लखता नथी. बीजा उत्तम पुरुषोनी माता केटला स्वप्नो जुए छे, ते विषे कहेलुं छे के चक्रवर्तीनी माता जिनेश्वरनी मातानी जेम ते ज चौद स्वप्नो जुए छे, पण ते जिनमातानी अपेक्षाए काईक न्यून कांतिवाळा जुए छे जेनो पुत्र एक ज जन्मने विषे चक्री अने तीर्थंकर थवानो होय तेनी माता ते चौद स्वप्नो बे वार जुए छे, एम पूर्वाचार्योए कहेलु छे शांतिनाथ प्रभुना शीलवती माता अचिराए रात्रिना शेष भागे व वार चौद स्वप्नो जोया हता एम वृद्ध शत्रुंजयमाहात्म्यमा कहेलु छे. वासुदेवनी माता ए चौद स्वप्नमाथी कोई पण सात स्वप्न जुए छे, बलदेवनी माता तेमांथी चार स्वप्न जुए छे, माडलिक राजानी माता तेमाथी एक स्वप्न जुए छे, प्रति वासुदेवनी माता तेमाथी त्रण स्वप्न जुए छे अने कोई महात्मा मुनिनी माता तेमाथी एक स्वप्न जुए छे, जेम मेघकुमार विगेरेनी माताए जोयु हतु तेम स्वबुद्धिथी जाणी लेवु.

हवे प्रस्तुत विषयना सबंधमा कहे छ के " त्रण ज्ञानवाळा श्री जिनेश्वर भगवत पण गर्भरूपे आवीने रहे छे अहो ! जगतनो प्रवाह जिनेश्वरोए पण उल्लघन कर्यो नथी " स्वर्गथी चवीने जो के गर्भमा गुप्तपणे रहे छ तो पण आखा विश्वमा प्रगट थाय छे अने इद्रादि तेमनी स्तुति करे छे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ सप्तनवत्यधिकशततम' प्रबधः ॥ १९७ ॥

व्याख्यान १९८ मु

जन्मकल्याणक वर्णन

सर्वे जिन त्रण ज्ञानवाळा आवीने उपजे छे ते विषे कहे छे —

स्वर्गाद्वा नरकाद्वा ये, यस्मादायांति तीर्थपा ।
ज्ञानत्रय ते तत्रैत्य, बिभ्रते गर्भगा अपि ॥ १ ॥

भावार्थः—

"तीर्थंकर स्वर्गथी के नरकथी आवे पण ते गर्भमाथी ज त्रण ज्ञानने धारण करनारा होय छे."

अहीं मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान ए त्रण ज्ञान समजवा. ते त्रण ज्ञान बीजा देवताओ करता तीर्थंकर थनारा देवताओने अनतगुण श्रेष्ठतर होय छे अने तेवा त्रण ज्ञान साथे ज ते गर्भमा आवीने अवतरे छे ज्यारे जिनेश्वर गर्भमा अवतरे त्यारे ते गर्भना प्रभावथी मातानु शरीर स्वच्छ पुद्गळमय तथा सुगधमय थाय छे. बीजी माताओनी जेम गर्भस्थळ विभत्स देखातु नथी. जिनेश्वरने उत्पन्न थवा योग्य गर्भस्थान कस्तूरी वरास करता पण अत्यत सुगधी होय छे. त्या प्रभुनो जीव मुक्ताफळनी अथवा हीरानी जेम उत्पन्न थाय छे. ते स्थानके अशुभ पुद्गलनी स्थिति के सचय थतो नथी माता जे आहार ले छे ते पण शुभ रूपे परिणाम पामे छे प्रभुना प्रभावथी, मेघे ग्रहण करेल क्षार जळ पण जेम मधुर थाय छे तेम सर्व पुद्गळ निर्मळ थई जाय छे. वळी प्रभु गर्भमा आवी गया पछी ते माताना गर्भमा पुनः बीजो जीव उत्पन्न थतो नथी अर्थात् त्यारपछी गर्भस्थिति ज थती नथी. तेथी स्तुतिने अगोचर दिव्य रूप एवा योनिक्षेत्रमा बीजी असख्यात स्त्रीओने तजी दईने प्रभु उपजे छे अर्थात् पुण्यना पात्ररूप, उभय कुळ शुद्ध, धर्मध्यानमा तत्पर, अनत धर्मकार्यना प्रभावे जेणे स्त्रीपणु प्राप्त करेल छे, जे अगणित पुण्य लावण्यवती छे अने जे बाल्यवयथी शीलधर्मनी धुराने धरनारी होय छे तेवी स्त्रीने ज जिनेश्वर मातारूपे स्वीकारे छे अने ते जिनमाता पण एवा प्रभाविक पुत्रने प्रगट करवा माटे प्रबळ पुण्याढ्या होवाथी ज जगत्पतिजननीनु बिरूद धारण करे छे. ते विषे श्रीभक्तामरस्तोत्रमा कहेलु छे के –

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदशुजाल ॥

"हे स्वामी! सेंकडो स्त्रीओ सेंकडो पुत्रने जन्म आपे छे, पण तमारा जेवा पुत्रने कोई बीजी माता जन्म आपती नथी दृष्टात के सर्व दिशाओ नक्षत्रोने तो धारण करे छे, पण स्फुरायमान किरणोवाळा सूर्यने तो पूर्वदिशा ज धारण करे छे."

अहीं कोई शंका करे के बीजा जीवनी जेम प्रभुने पण गर्भमां दु:ख थतुं हशे, पण ते शंका अहीं लाववी नहि कह्युं छे के "गर्भमां आवेला जिनेंद्र त्यां कांई पण दु:ख पामता नथी अने प्रसवादिकमां पण तेमने के माताने किंचित् पण दु:ख थतुं नथी." बीजा जीवोने गर्भमां अत्यंत दुःख थाय छे एम शास्त्रोमां कहेलुं छे ते आ प्रमाणे-"हे गौतम! सोयने अग्निमां तपावी रोमेरोमे प्रवेश करावनारी जीवने जेवुं दु:ख थाय तेथी आठगणुं दु:ख प्राणीने गर्भमां थाय छे अने गर्भमांथी नीकळतां योनियंत्रमां पीलाती वखत तेथी लाखगणुं अथवा कोटिगणुं दु:ख थाय छे" भावार्थ एवो छे के कोई देवता साडात्रण करोड सोयने अग्निमां तपावी प्राणीना साडात्रण करोड रूवाडामां एक साथे समकाळे वींधे, ते वडे तेने जेवुं दुःख थाय तेथी आठगणुं दुःख जीवने गर्भमां थाय छे एवा सर्वप्रकारना दु:खजाळथी मुक्त तीर्थंकरनो गर्भ होय छे एम कहेलुं छे, तेनुं तत्त्व तो केवली जाणे

जिनेश्वर पोतानो च्यवनसमय जाणी शकता नथी, कारण के ते काळ अतिसूक्ष्म छे कह्युं छे के-जिनेश्वर भगवंत अतीत, अनागत काळना असंख्याता समयनी वात जाणे, पण च्यवननी वात न जाणे, कारण के च्यवननो काळ एक समयनो होवाथी अतिसूक्ष्म छे एटले प्रभु च्यवीश एम जाणे, च्यवनक्षण न जाणे, च्यव्या पछी चव्यो एम जाणे. आ प्रमाणे प्रभुना गर्भोत्पत्तिकाळनो महिमा वर्णव्यो हवे जिन जन्मनो उत्सव वर्णवे छे

जगत् सर्व हर्षवंत होय अने निमित्त-शकुनादिक सारा थता होय ते समये अर्ध रात्रे पृथ्वी जेम निधानने प्रसवे तेम जिनमाता जिनने जन्म आपे छे. ते समये सर्व दिशाओ हर्षित थइ होय तेम प्रसन्न देखाय छे अने ज्यां निरंतर अंधकार रह्यो छे तेवा नरकमां पण क्षणमात्र प्रकाश थाय छे ते विषे ठाणांगसूत्रमां कह्युं छे के "अरिहंतना जन्म वखते, दीक्षा लेते वखते, ज्ञानप्राप्तिने समये अने मोक्षे जाय त्यारे-ए चार वखते सर्व लोकमां उद्योत थाय"

जन्मसमये तत्काळ छप्पन दिक्कुमारीओ आसन [illegible] अवधिज्ञानवडे प्रभुनो जन्म जाणी त्यां आवे छे ते छप्पन दिक् [illegible] प्रमाणे छे-

भोगंकरा विगेरे अधोलोकवासी आठ [illegible]

चार हजार सामानिक देवता, चार महत्तरा, सोळ हजार आत्मरक्षक देवो अने सात प्रकारना कटकनो परिवार लई, पोतपोताना विमानमा बेसी, अरिहंतना जन्मगृह समीपे आवी, विमानमाथी ऊतरे छे पछी जिनेश्वरने तथा जिनमाताने त्रण प्रदक्षिणा करी भगवत तथा भगवतनी मातानी आ प्रमाणे स्तुति करे छे–' हे विश्वदीपिका ! तमे त्रिभुवनने तारवाने समर्थ एवा श्रीअर्हंत प्रभुनी माता थया छो, एथी तमे कृतार्थ छो. ' इत्यादि स्तुति करीने कहे छे के ' हे माता ! तमे बीशो नहि, अमे अमारी जेवा असख्य जीवोना स्वामी एवा तमारा पुत्रनो जन्मोत्सव करवाने माटे आवेल छीए ' आम कहीने संवर्त्तक वायुवडे प्रभुना जन्मगृहथी एक योजनप्रमाण क्षेत्रने रज, अस्थि, केश तथा तृणादिकथी रहित करी स्वकार्य जणावी गायन करती ऊभी रहे छे.

बीजी पण दिक्कुमारीओना आगमननी पद्धति एवी रीते ज छे तेना कार्यमा जे काई विशेष छे ते कहीए छीए. मेघकरा विगेरे आठ ऊर्ध्वलोकवासी दिक्कुमारीओ, जेओ आ समभूतला पृथ्वीथी पाचसो योजन ऊचा नदनवनमा पाचसो योजन ऊचा शिखर उपर रहेनारी छे ते त्याथी पूर्ववत् आवी, सुगधी मेघने विकुर्वी, प्रथम साफ करेला योजनप्रमाण क्षेत्रने सुगधी जलधारावडे शीतळ करे छे पछी जानुप्रमाण ऊची पचवर्णी पुष्पनी वृष्टि एक योजनप्रमाण क्षेत्रमा करे छे तथा चारे तरफ धूपना धूमथी आकुळ करे छे.

पछी नदोत्तराप्रमुख आठ पूर्वरुचकनिवासी दिक्कुमारीओ त्या आवी जिनने तथा जिनमाताने नमी हाथमा दर्पण लई गाती गाती ऊभी रहे छे. समाहारा विगेरे आठ दक्षिणरुचकवासी दिक्कुमारीओ हाथमा पूर्ण कळश राखी प्रभुनी दक्षिण तरफ गीत गाती ऊभी रहे छे. इलादेवी विगेरे आठ दिक्कुमारीओ पश्चिम रुचकथी आवी, हाथमा पखा लई, प्रभुनी पश्चिमे ऊभी रहीने गायन करे छे अलंबूसा विगेरे आठ दिक्कुमारीओ उत्तर रुचकथी आवी प्रभुनी उत्तरे रही चामर वींजे छे चित्रा विगेरे चार दिक्कुमारीओ विदिशाना रुचकथी आवी प्रभुने तथा माताने नमी हाथमा दीपिका लई चारे विदिशाओमा गाती सती ऊभी रहे छे अने रूपा विगेरे चार दिक्कुमारीओ मध्य रुचकमा रहेनारी परिवार सहित आवी प्रभुनु नाळ चार आगळ वर्जीने वधेरे छे अने ते नाळने पृथ्वीमा नाखी ते खाडाने उत्तम रत्नोथी पूरी दे छे. पछी अरिहंतना अगने आशातना न थाय एवी बुद्धिथी ते स्थान उपर पीठ बाधी दूर्वाना अकुर वावे छे पछी पश्चिम सिवाय त्रणे दिशाओमा कदलीना त्रण घर

१ समभूतलाथी ९०० योजन पर्यंत तीर्च्छालोक छे त्यारपछी ऊर्ध्वलोक गणाय छे, तेथी आने ऊर्ध्वलोकवासी गणी छे. २ थई गयेली, वर्तती अने हवे पछी थनारी

विकुर्वी ते प्रत्येकमा एकेक सिंहासनवाळु चतुःशाल विकुर्वे छे. ते पछी जिनने संपुटमा लई जिनमाताने हाथनो टेको आपी आगळ करी दक्षिण दिशाना घरमा जाय छे. त्यां भद्रासन उपर बेसारी दिव्य तैलथी अभ्यंग करी सुगंधी द्रव्यथी अगने उद्वर्तन करे छे. ते पछी पूर्वना कदलीगृहमा पूर्वनी जेम लावी सिंहासन बेसारी सुगंधी पुष्पथी वासित जळवडे नवरावे छे, पछी तेमने अलंकारथी भूषित करे छे. त्यारपछी उत्तर तरफना कदलीगृहमा लई जई सिंहासन उपर जिनमाताने उत्संगमां प्रभु आपी बेसारे छे पछी गोशीर्ष चंदनना काष्ठ सेवकदेवता पासे मगावी, अरणि काष्ठना मथनवडे अग्नि उत्पन्न करी, तेमां चंदन काष्ठनो होम करी रक्षा पाडे छे ते पछी जिन तथा जिनमाता बन्नेना हाथ उपर प्रेतप्रमुखनो दोष हणवा माटे रक्षापोटली बांधे छे पछी गोळ बे पाषाण अफळावी ' तमे पर्वतना जेवा आयुष्य वाळा थाओ ' एम आशिष आपे छे. पछी तेमने जेम लाव्या हता तेम लई जई, जन्मगृहमा शय्या पर बेसारी, तेमनी समीपे भक्तिथी गीतगान करे छे

आ देवीओ भुवनपति जातिनी छे एम बहुश्रुत पुरुषोए निश्चय करेलो छे, कारण के श्रीठाणागसूत्रमा केटलीएक दिक्कुमारीओनु वर्णन करतां तेमनी स्थिति एक पल्योपमनी कहली छे समान जातिने लीधे आ देवीओनु आयुष्य पण तेटलु ज समजवु छे आ देवीओ अपरिगृहीता छे, तेथी तेमने दिक्कुमारी कहे छे

आ प्रमाणे दिक्कुमारीओए करेलो प्रभुनो जन्मोत्सव श्रीजंबूद्वीपपन्नतिमांथी लईने अहीं संक्षेपथी लख्यो छे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टनवत्यधिकशततम प्रबंध. ॥ १९८ ॥

व्याख्यान १९९ मुं

हवे इंद्रकृत जन्मोत्सव वर्णवे छे

सिंहासन सुरेंद्रस्य, कपते युधि भीरुवत् ।
अवधिनाऽर्हतां जन्म, ज्ञात्वा तदुत्सव चरेत् ॥ १ ॥

भावार्थ —

" प्रभुना जन्मसमये इंद्रनु आसन रणभूमिमा भीरु जन कंपे तेम कंपायमान थाय छे, तेथी इंद्र अवधिज्ञानवडे प्रभुनो जन्म जाणी तेमना जन्मनो उत्सव करे छे. "

विशेषार्थः—

इद्रकृत जिनजन्मोत्सवनो प्रकार आ प्रमाणे छे-इद्र अवधिज्ञानवडे प्रभुनी उत्पत्ति जाणी सिंहासनथी ऊभा थई, सात आठ पगला प्रभुनी दिशा तरफ चाली, विनयथी शक्रस्तववडे स्तुति करी, पाछा आवी, पूर्वाभिमुख सिंहासन पर बेसी आ प्रमाणे चितवे के 'अहीं त्रिकाळ उत्पन्न थता इद्रोनो एवो आचार छे के तेमणे अरिहत प्रभुनो जन्माभिषेक करवो.' आम निश्चय करी पायदळ सेनाना नायक हरिणगमेषी देवने बोलावी कहे के 'तु सुघोषा घटा वगाड अने आपणा स्वर्गना सर्व देवताओने अमारु प्रस्थान जणाव.' पछी ते देव इद्रनी आज्ञा माथे चढावी योजनप्रमाण मडळवाळी सुघोषा घटाने त्रण वार वगाडे. ते वगाडता ज बत्रीश लाख विमाननी बत्रीश लाख घटाओ दिव्य प्रभावथी एक साथे वागे तेमनो ध्वनि शांत थता ते देव आ प्रमाणे उद्घोषणा करे के-" हे देवताओ! तमे इद्र साथे जिनेश्वर भगवतना जन्मकल्याणकना उत्सव माटे तत्पर थई चालो सत्वर सज्ज थई जाओ." आ प्रमाणेनी उद्घोषणा साभळी सर्व देवताओ पोतपोताना वाहन तैयार करी जिनभक्ति माटे जवाने उत्सुक थाय पछी इद्र पालक नामना यान विमानना स्वामी देवने विमान सज्ज करवा आज्ञा करे ते देव जबूद्वीप जेवडु (लाख योजननु) पाचसो योजन ऊचु पालक नामनु विमान सज्ज करी त्या लावे श्रीठाणागसूत्रमा कह्यु छे के "चार वस्तु लोकने विषे समान छे-सातमी नरकनो अप्रतिष्ठान नरकावासो, जबूद्वीप, पालक नामनु यान विमान अने सर्वार्थसिद्ध महाविमान-आ चारे वाना लक्षयोजनप्रमाणना छे." आ उपरथी पालक विमान प्रमाणागुळ निष्पन्न लक्ष योजननु जाणवु. ते विमानमा पश्चिम सिवाय त्रण दिशाए त्रण त्रण पगथीआंवाळु एकेक द्वार होय छे. मध्यमा अनेक रत्नमय स्तभोथी पूर्ण प्रेक्षागृहमडप होय छे. तेनी मध्ये रत्नपीठिका उपर इद्रनु सिंहासन होय छे. तेनाथी वायव्य कोणमा, उत्तरमा अने ईशान कूणमां चोराशी हजार सामानिक देवताना ८४००० सिंहासन होय छे पूर्व दिशामा इद्रनी आठ अग्रमहिषी(इद्राणी)ना आठ सिंहासन होय छे. अग्निकोणमा बार हजार अभ्यतर पर्षदाना देवोना १२००० सिंहासन होय छे. दक्षिणमा मध्य पर्षदाना सोळ हजार देवोना १६००० सिंहासन होय छे अने पश्चिममा सात कटकना स्वामीना सात सिंहासन होय छे. बीजा वलयमा इद्रना आत्मरक्षक देवताना चोराशी चोराशी हजार सिंहासन चारे दिशामा होय छे सर्व सरवाळे त्रण लाख ने छत्रीश हजार आत्मरक्षक देवताओना तेटला ज सिंहासनो होय छे.

आ प्रमाणे विमान तैयार थया पछी हर्ष पामतो इद्र अर्हतनी सेवाने योग्य रूप

करी, विमानने प्रदक्षिणा दइ, पूर्व दिशाना त्रण सोपानवाळा मार्गे तेमा प्रवेश क पूर्वाभिमुखे बेसे सामानिक देवताओ उत्तरदिशाना सोपानमार्गे प्रवेश करी आसने बेसे अने बीजाओ दक्षिणदिशाना सोपानमार्गे प्रवेश करी पोतपोताने स्थाने बेसे.

आ प्रमाणे तैयार थयेलु विमान चालता तेनी आगळ आठ मगळिक तथा एक सहस्र योजन ऊचो अने नानी नानी हजार ध्वजावाळो महेंद्रध्वज विगेरे चाले दुदुभिना ध्वनि साथे ते विमान आकाशमाथी उत्तर बाजुने मार्गे ऊतरे कह्यु छे के-"जिनजन्मोत्सवादि प्रसगे इद्र, तेनी प्रशसा करनारा घणा जीवोने समकितनो लाभ थवा माटे, ते मार्गे थईने नीकळे छे." पछी असख्य द्वीपसमुद्रना मध्ये मध्ये थईने त्वर चालतु ते विमान नदीश्वर द्वीपमाहेना रतिकर पर्वत उपर आवे. त्यां ते विमानने सक्षेपीने सौधर्मेंद्र प्रभुना नगरमा अने तेमना जन्मगृहमा आवे त्या साथे लावला लघु विमानवडे प्रभुना घर फरती त्रण प्रदक्षिणा करी, इद्र ईशानदिशामा पृथ्वीथी चार आगुळ ऊचु ते विमान मूकी घरमा प्रवेश कर पछी जिनेश्वर भगवतने माता सहित नमस्कार करी त्रण प्रदक्षिणा दईने कह के ' हे जगत्पूज्य ! तमने नमस्कार हो हे माता ! तमे धन्य छो तमे पूर्वे पुण्य करेला छे के जेथी तमारी कुक्षीमा आ जगत्पति उत्पन्न थया छे. हे माता ! मने आज्ञा आपो माराथी जरा पण भय पामशो नहि अमे तमारा पुत्रनो जन्मोत्सव करीशु ' आ प्रमाणे कही प्रभुनी माताने अव स्वापिनी निद्रा आपी प्रभुनी प्रतिकृति तेमना पडखामा मूके प्रभुनु प्रतिबिंब पडखामा मूकवानो हेतु एवो छे के-' इद्र पोते जन्मोत्सवमा व्यग्र होय ते प्रसगे कोई कुतुहली दुष्ट देव वखते जिनमातानी निद्रा हरी ले अने ते काळे पुत्रने पासे न जोवाथी माता अथवा तेमनो परिवार दु खी थाय तेथी तेओ दुःखथी खेद पामे नहि तेवा हेतुथी इद्रनो आ उद्यम छे '

पछी इद्र पाच रूप करी एक रूपे धोयेला, पवित्र अने धूपित करेला हाथमा प्रभुने ग्रहण कर, एक रूपे छत्र धरे, बे रूपे बे बाजु चामर वींजे, अने पाचमा रूपे हाथमा वज्र लइ सेवकनी जेम प्रभुनी आगळ चाले तेनु विमान पछवाडे खाली चाल्यु आवे इद्र अनेक देवोना परिवार परवरेलो होय छे, छता पोते ज पाच रूप विकुर्वे छे ते त्रिजगत् गुरुनी परिपूर्ण सेवा करवानी इच्छाथीज विकुर्वे छे पछी अनेक देवताओथी परवर्यो सतो इद्र मदरगिरिना शिखर उपर जई पाडुक वनमा पाडुक बल्ला शिलानी उपर अभिषेक करवानु शाश्वत सिंहासन छे तेनी उपर पूर्वाभिमुखे प्रभुने उत्सगमा लईने बेसे

१ मदरगिरि ते मेरुपर्वत.

एवी रीते ईशान इन्द्र पण लघुपराक्रम नामे पोताना सेनापतिदेव पासे महाघोषा नामनी घंटा वगडावे पछी पुष्पक नामना देवतानी पासे पुष्पक नामनु विमान तयार करावी तेमा बेसी शक्र इन्द्रनी जेम आवे ते दक्षिण बाजुना मार्गे आकाशमांथी ऊतरी नंदीश्वरद्वीप उपरना उत्तरपूर्व वचेना रतिकर पर्वत उपर आवे. त्या ते विमाननो संक्षेप करी मेरुगिरि उपर आवी शक्र इन्द्रनी जेम प्रभुनी स्तुति करी श्रीजिनेश्वर भगवतने सेवे. एवी रीते बाकीना इन्द्रोनु पण मेरुपर्वत उपर आगमन शक्र इन्द्रनी जेम जाणी लेवु आ उत्सवमा सर्व इन्द्रोनु एकी साथे आगमन थाय छे बधा मळीने चोसठ इन्द्रो आवे छे. ते आ प्रमाणे–वैमानिकना दश इन्द्रो, भुवनपतिना वीश इन्द्रो, व्यंतरोना बत्रीश इन्द्रो अने सूर्य तथा चंद्र–एम चोसठ इन्द्रो जाणवा ज्योतिष्कना जोके असंख्याता इन्द्रो आवे छे तथापि जातिनी अपेक्षाए सूर्य ने चंद्र ए बे ज गणेला छे. समवायांगसूत्रमां तो व्यंतरना ३२ इन्द्रो सिवायना बत्रीश इन्द्रो आवे एम कहेलु छे तेमा नवमा दशमा कल्पनो एक इन्द्र अने अगियारमा बारमा कल्पनो एक इन्द्र होवाथी वैमानिकना दश इन्द्रो जाणवा.

वैमानिक इन्द्रोनो परिवार आ प्रमाणे छे–पहेला कल्पे चोराशी हजार सामानिक देवता, बीजे एशी हजार, त्रीजे बोंतेर हजार, चोथे सीत्तेर हजार, पांचमे साठ हजार, छठ्ठे पचास हजार, सातमे चाळीश हजार, आठमे त्रीश हजार, नवमा इन्द्रना वीश हजार अने दशमा इन्द्रना दश हजार सामानिक देवता होय छे अने तेथी चार चारगणा अंगरक्षक देव होय छे इत्यादि तेमनो परिवार जाणवो पहेला बीजा सिवाय बाकीना देवलोकनी घंटाओना नाम आ प्रमाणे छे–त्रीजे, पांचमे, सातमे अने दशमे कल्पे सुघोषा नामनी घंटा छे अने तेनो वादक हरिणगमेषी देव अने चोथे, छठ्ठे, आठमे अने बारमे[1] घंटा तथा सेनानीना नाम विगेरे पूर्वे कहेला ईशान इन्द्रनी प्रमाणे छे, एटले घंटा महाघोषा नामे अने वगाडनार लघुपराक्रम नामे सेनापति छे. वैमानिक दश इन्द्रोना विमानना नाम अनुक्रमे पालक, पुष्पक, सौमनस, श्रीवत्स, नंद्यावर्त, कामगम, प्रीतिगम, मनोरम, विमळ अने सर्वतोभद्र छे अने विमानना नाम प्रमाणे ते विमानना अध्यक्षदेवता छे

भुवनपतिमा चमरेंद्रने ओघस्वरा नामे घंटा, द्रुम नामे सेनानी अने पालक विमानथी अर्ध प्रमाणवाळु विमान छे तथा तेनो ध्वज पण महेंद्रध्वजथी अर्ध प्रमाणवाळो होय छे. एवी रीते बलींद्र ने महौघस्वरा नामे घंटा अने महाद्रुम नामे सेना-

१ नवमा दशमानो ने अग्यारमा बारमा देवलोकनो इन्द्र एकेक होवाथी तेनी घंटा दशमा ने बारमा देवलोकमा ज होय छे इन्द्रनी सभा पण त्या ज होय छे

पति छे बाकीना दक्षिण निकायना नव इद्रनो भद्रसेन नामे सेनापति छे उत्तरना नव इद्रोनो दक्ष नामे सेनापति छे तेमना विमान अने ध्वज चमरेंद्रनी प्रमाणवाळा होय छे, तथा नागकुमारादि नवे निकायमा घटा मेघस्वरा, हसस्वरा, क्रौंचस्वरा, मजुस्वरा, मजुघोपा, सुस्वरा, मधुस्वरा, नदिस्वरा अने नदिघोषा नामे अनुक्रमे छे

दक्षिण बाजुना व्यतरेंद्रोनी घटा मजुस्वरा नामे छे अने उत्तर बाजुना इद्रोनी घटा मजुघोषा नामे छे तेमना विमान एक हजार योजन विस्तारवाळा अने ध्वज एकसो पचवीश योजन ऊचा होय छे. ज्योतिषीमा चद्रनी सुस्वरा नामे घटा अने सूर्यनी सुस्वरनिघोषा नामे घटा छे बाकीनु व्यतरेंद्र प्रमाणे छे भुवनपति, व्यतर अने ज्योतिष्कना इद्रोने विमान रचनार खास देवता होता नथी, पण तेना आभियोगिक देवता विमान रचे छे

हवे सौधर्म इद्र सर्व समृद्धि साथे उत्सगमा ऊचा करेला ने हाथमा प्रभुने लईने बेसे त्यारपछी अच्युत इद्र पोताना आभियोगिक देवताओने कहे के 'हे देवताओ ! तमे अर्हतना जन्मने योग्य एवी सामग्री तैयार करो ' तेवी आज्ञा थता ते देवताओ सुवर्णना, रूपाना, रत्नना, सुवर्णरत्नना, रूपारत्नना रूपासोनाना, सोना रूपा अने रत्नना तेम ज मृत्तिकाना प्रत्येके एक हजार ने आठ आठ कलश विकुर्वे ते साथे पखा, चामर, तेलना दाबडा, पुष्पचगेरी तथा दर्पण विगेरे वस्तु पण प्रत्येक जातिनी एक हजार ने आठ आठ रचे पछी आभियोगिक देवता ते कुभ विगेरे लईने क्षीरसागर तथा गगादि तीर्थना जळ तथा कमळ विगेरे लावे ते विषे श्रीजबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमा कह्यु छे के " क्षीरसागरमाथी क्षीरोदक ग्रहण करे, ग्रहण करीने त्या उत्पन्न थयेला कमळ तथा सहस्रदळ कमळ ले, ते लई पुष्करोदधिमाथी अने यावत् भरत, ऐरवतमाहेना मागधप्रमुख तीर्थोएथी जळ तथा मृत्तिका ग्रहे " पछी ते देवताओ नदनवन विगेरेमाथी गोशीर्षचदनादि लई सर्व एकठु करी अच्युत इद्र पासे रजू कर एटले अच्युतेंद्र पुष्पमाळाथी शोभित कठवाळा अने कमळथी ढाकेला मुखवाळा आठ हजार ने चोसठ कळशोथी भवसागरनो पार पामवाने माटे पोताना परिवार सहित अर्हत प्रभुने पूर्वे वर्णवेला जळपुष्पादिकथी अभिषेक करे. ते वखते ईशान इद्र विगेरे इद्रो ऊभा रहीने प्रभुने सेवे केटलाएक देवता प्रभु आगळ गायन कर, केटलाएक नृत्य करे अने केटलाएक अश्व तथा गजेंद्रना जेवी गर्जना करे एवी रीत अभिषेक करी प्रभुने नमीने अच्युत इद्र गधकाषायिक वस्त्र वडे प्रभुनु अग लुछे पछी प्रभुने अलकार धारण करावी तेमनी आगळ सुवर्णना रूप्यमय चोखाथी अष्टमगळ आळेखे पछी बत्रीश प्रकारनु नाटक

करी, प्रभुनी समीपे पुष्पनो प्रकर धरी, धूप करीने एकसो आठ काव्यवडे प्रभुनी स्तवना करे श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिमा ते विषे कह्यु छे के "प्रभुने धूप करी सात आठ पगला पाछा ओसरी दश आगळीना नख एकठा थाय तेम अजलि जोडी मस्तके प्रणाम करे. पछी अपुनरुक्त एवा १०८ विशुद्ध श्लोक गुथवावडे स्तुति करे यावत् कहे के-हे सिद्ध, बुद्ध, निष्कर्म, तपस्वी, रागद्वेष रहित, निर्मम, धर्मचक्रवर्ती एवा प्रभु ! तमने नमस्कार हो 'इत्यादि स्तुति भक्ति करीने विनयथी प्रभुनी आगळ ऊभो रहे."

एवी रीते सौधर्मेन्द्र सिवाय त्रेसठ इद्रो अनुक्रमे ए विधिथी प्रभुनो अभिषेक करे पछी ईशान इद्र पाच रूप विकुर्वी एक रूपे प्रभुने उत्सगमा लई शक्र इद्रने स्थाने बेसे, एक रूपे छत्र धरे, बे रूपे बे बाजु चामर वींजे अने एक मूर्त्तिए त्रिशूल लई प्रभुनी आगळ किंकरनी जेम ऊभो रहे एटले शक्र इद्र पूर्वनी जेम सर्व सामग्री तैयार करे तेमा एटलु विशेष के चार वृषभना रूप विकुर्वी प्रभुनी चारे दिशामा राखी तेना आठ शींगडामाथी निकळती जळनी आठ धारा ऊची उछळी एकठी थई प्रभुना मस्तक उपर पडे तेम करे. पछी शक्रेंद्र अच्युतेंद्रनी जेम परिवार साथे कृत्रिम ने अकृत्रिम-एम बने प्रकारना कुभवडे प्रभुने अभिषेक करे, यावत् १०८ श्लोकवडे स्तवना करी 'नमस्कार थाओ' पर्यंत कहे

वृद्धोना मुखथी कळश विगेरेनी सख्या आ प्रमाणे पण साभळवामा आवे छे-एक एक जातिना बनेला आठ आठ हजार कुभ होवाथी तेने आठगुणा करता चोसठ हजार कुभ थाय. एटला कुभवडे एक एक अभिषेक थाय छे. एवी रीते चोसठ इद्र, तेमना त्रायस्त्रिंश देवता, लोकपाल, इद्राणीओ अने त्रणे पर्षदाना देवो विगेरेना मळीने बसो ने पचास अभिषेक थाय छे तेथी चोसठ हजार कुंभने बसो ने पचास अभिषेक होवाथी तेटला गुणा करता एक कोटी अने साठ लाख कळशवडे अभिषेक थाय छे. कलशना प्रमाण विषे पूज्य पुरुषो कहे छे के "दरेक कळश पचवीश योजन ऊचो, बार योजन पहोळो अने एक योजनना नाळवाळो होय छे तेवा एक कोटी अने साठ लाख कळशवडे अभिषेक थाय छे."

सौधर्म इद्र प्रभुना जन्म सबधी अभिषेक थई रह्या पछी आ प्रमाणे स्तुति करे-"हे कृपाळु परमेश्वर! मारा जेवा अनत इद्रो तमने पूजे तो पण तमारी वीतरागपणारूप पूज्यताने तेम ज बाल्यावस्थामा रहेली एवी धीरताने कही शकवाने पण कोई समर्थ नथी अमे आ ससारना विकारथी भरेला छीए, तेथी जेमनो महिमा अकळित छे एवा तमारा एक अगुष्ठमात्र अवयवनी पूजा करवाने पण शी रीते समर्थ थई शकीए?

तथापि नि:स्पृह एवा तमारी अमारा आत्माना हितमाटे करेली भक्ति अमने ज जना लाभ माटे थाय छे हे भगवन् ! अमारी इच्छाने अनुसरी तमे अहीं आव्या, आश्चर्यना विचारमा मग्न थइ अमे चितवन करीए छीए क अमोए जे इद्रपणु कर्युं छे ते आजे ज सफळ थयु छे अलोकाकाशने लोकाकाशमा क्षेपवा समर्थ जिनेश्वरना आश्रयबळथी अमे अमारु चित्त ससारभावमाथी खेंची शकीए छीए

आ प्रमाणे स्तुति करी कृतार्थ थयेल सौधर्म इद्र, पाच रूप प्रभुनी सेवामा तत्पर थई, प्रभुने जन्मगृहमा लावी मातानी पासे मूकी, तेमनी प्रतिकृति तथा अवस्वापिनी निद्रा सहरी ल अने बे रेशमी वस्त्र तथा बे कुडल प्रभुने ओशीके मूकी, एक रत्नमय उल्लोच बाधी, प्रभुना अगूठामा क्षुधानी शाति माटे अमृतनु सक्रमण करे स्तनपान नहि करनारा तीर्थकरो ते अगूठो मुखमा नाखवाथी तृप्त थाय छे. पछी इद्रनी आज्ञाथी धनद, जृभक देवताओ पासे बत्रीस कोटी सुवर्णनी वृष्टि प्रभुना घरमा करावे. शक्र इद्र उद्घोषणा करावे क ' जे कोई प्रभुनु के तेमनी मातानु विरूप चिंतवशे तेनु मस्तक आयक वृक्षनी मजरीनी जेम फूटी जशे. ' पछी बधा देवो नदीश्वरद्वीपे जई अष्टाह्निक उत्सव करे ते पछीनु कार्य कल्पसूत्र विगेरेथी जाणी लेवु

" मदरगिरिना शिखर उपर अच्युत विगेर चोसठ इद्रोए जेमनो जन्माभिषेक कर्यो त वखते जे प्रभु बालक छता कळशमांहेना जळना प्रवाहथी जरा पण क्षोभ पाम्या नहि ते श्रीजिनेश्वर भगवत जय पामो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ नवनवत्यधिकशततम प्रबधः ॥ १९९ ॥

व्याख्यान २०० मु

श्रीजिनेश्वर भगवतना छद्मस्थपणानु वर्णन

जगदुत्कृष्टसौंदर्या, बाल्येऽप्यबालबुद्धय ।
जितेंद्रिया स्थिरात्मानो, यौवनोद्योतिता अपि ॥ १ ॥

भावार्थ.—

" जगतमा सर्वोत्कृष्ट सौंदर्यवाळा अने बाल्यवयमा पण अबाळ बुद्धिवाळा प्रभु

१ अलोकव्योम ये लोकव्योम्नि क्षेप्तु क्षमा जिना । तदाश्रयबलाच्चित्त कृषामि भवभावत ॥

यौवनवयथी प्रकाशित थया छता पण जितेंद्रिय अने स्थिर आत्मावाळा होय छे " तेओ संसारना सुखमा आसक्त थता नथी. कह्यु छे के–

बहिराग दर्शयतोऽप्यंतः शुद्धा प्रवालवत् ।
प्राप्तेऽपि चक्रभृद्राज्ये, न व्यासक्ता भवंति ते ॥ १ ॥

" तेओ बहारथी राग दर्शावे छे, पण अतःकरणमा प्रवाळानी जेम निर्मळ होय छे कदी चक्रवर्तीनु राज्य मळे तथापि तेओ तेमा आसक्त थता नथी. "

हवे लोकांतिक देवतानु कृत्य कहे छे–तीर्थंकरो पोतानी दीक्षानो अवसर ज्ञानथी जाणे छे, तथापि ते समये लोकांतिक देवता आवी नमस्कार करीने आ प्रमाणे विज्ञप्ति करे छे–' हे जगद्गुरु ! तमे जय पामो अने त्रण लोकना उपकार माटे धर्मतीर्थ प्रवर्तावो. '

हवे वर्षीदाननो विधि कहे छे–दीक्षा लेवाना दिवसने एक वर्ष बाकी रहे एटले तीर्थंकर प्रभु चार प्रकारना धर्ममा दानधर्मने मुख्य मानी वार्षिक दान आपे छे. ते दान आपवानो प्रकार आ प्रमाणे होय छे–ज्यारे भगवत वर्षीदान आपवानो विचार करे ते अवसरे आसनकपथी शक्रइद्र अवधिज्ञानवडे ते विचार जाणे पछी त्रणे काळमा उत्पन्न थता इद्रोनो एवो आचार छे के ' प्रभुने दीक्षा अवसरे वार्षिक दान आपवाने माटे त्रणसो ने अठ्यासी कोटी तथा एंशी लाख सुवर्ण तेमने पूरु पाडवु ' एवो निश्चय करी कुबेरने तेटलु द्रव्य पूरवा आज्ञा आपे. पछी धनदनी आज्ञाथी जृंभक देवताओ तेटलु द्रव्य प्रभुना घरमा क्षेपन करे. अहीं वृद्ध पुरुषोना मुखथी एम पण सांभळ्यु छे के एंशी रतिनो एक सोनैयो थाय छे, तेमा प्रभुनु पोतानु अने पितानु नाम होय छे एक दिवसना दानमा आपेला सोनैयानु तोल नव हजार मण थाय छे. चाळीश मणनु एक गाडु भराय छे, तेथी बसो ने पचवीश गाडा भराय तेटला सुवर्णनु दान दररोज आपे छे एटले हमेशा एक कोटी ने आठ लाख सुवर्णनु दान आपे छे वार्षिक दानमा जोईए तेटला सोनैया इद्रनी आज्ञाथी वैश्रमण[1] लोकपाळ आठ समयमा[2] तैयार करी तीर्थंकरना गृहमा स्थापन करे छे.

दानना छ अतिशय छे ते आ प्रमाणे–दान देती वखत प्रभुना हाथमा सौधर्म इद्र द्रव्य आपे छे के जेथी दान आपता प्रभुने श्रम न थाय. जो के जिनेंद्र भगवान् तो अनत बळवाळा होय छे, तथापि भक्तिनी बुद्धिथी इद्र ए प्रमाणे करे छे. १. ईशान

१ वैश्रमण, धनद, कुबेर ए त्रणे पर्यायी नाम इद्रना एक लोकपालना छे २ आठ समयमा करी शकवानु छद्मस्थने माटे अशक्य लागे छे

इद्र हाथमा सुवर्णनी यष्टिरा लइने पासे ऊभा रहे छे, ते चोसठ इद्रो सिवाय देवोने दान लेता निवारे छे अने दान लेनारनु जेवु भाग्य होय छे तेवु ज तेना वाक्य उच्चरावे छे, (मागणी करावे छे) २ चमरेंद्र अने बलीद्र प्रभुनी मुष्टिमा सोनैयामा दान लेनारा पुरुषोनी इच्छानुसार न्यूनाधिकता करे छे. जो इच्छाथी अधिक होय तो न्यून करे छे अने इच्छाथी न्यून होय तो अधिक छे ३ बीजा भुवनपतिओ भरतखडमा उत्पन्न थयेला मनुष्योने दान लेवा माटे लावे छे. ४. वाणव्यतर देवताओ दान लईने जनारा माणसोने पाछा निर्विघ्न स्वस्थाने पहोंचाडे छे ५ ज्योतिष्क देवताओ विद्याधरोने वार्षिक दाननो समय जणावे छे ६

आ समये तीर्थंकरना पिता त्रण मोटी शाळाओ करावे छे एक शाळामा भरत खडमा उत्पन्न थयेला जे मनुष्यो आवे तेने अन्नादि आपे छे, बीजी शाळामा वस्त्र आपे छे अने त्रीजी शाळामा आभूषण आपे छे.

चोसठ इद्रोने प्रभुने हाथे दान लेवानो एवो महिमा छे के ते दानना प्रभावथी तेमने बे वर्ष सुधी कलह उत्पन्न थतो नथी चक्रवर्ती जेवा राजाओना भडार दानमा आवेला सोनैयाना प्रभावथी बार वर्ष सुधी अक्षय रहे छे रोगीओने दान लेवाथी बार वर्ष पर्यंत नवीन रोग उत्पन्न थतो नथी. ते काले सर्व ठेकाणे एवी उद्घोषणा थाय छे के ' मने इच्छित वर मागी लो '

अहीं कोई ढूढक मतवाळा कहे छे के ' जो प्रभु दान दे तो दान देवानु फळ अवश्य भोगववु पडे, ते सिवाय फळना बधनो अभाव थाय माटे तीर्थंकरो दान आपता नथी ' पण तेमनु ए कहेवु अयुक्त छे, कारण के छठ्ठा अग(ज्ञातासूत्र)मां श्रीमल्लिनाथना अध्ययनमा प्रगट रीते तेवा अक्षरो छे वळी जिनेश्वर भगवत कीर्ति माटे दान आपता नथी ते विषे कह्यु छे के—

धर्मप्रभावनाबुद्ध्या, लोकाना चानुकपया ।
जिना ददति तद्दान, न तु कीर्त्यादिकाक्षिण ॥ १ ॥

" धर्मनी प्रभावना करवानी बुद्धिथी अने लोको उपरनी अनुकपाथी तीर्थंकर भगवत दान आपे छे, कीर्ति विगेरेनी इच्छाथी आपता नथी "

हवे दीक्षा कल्याणकनु वर्णन कहे छे—

प्राप्यानुज्ञां ललौ दीक्षा, पित्रादेस्तदनु प्रभु. ।
शक्रभूपादिभिर्भक्त्या, कृतनिष्क्रमणोत्सव ॥ १ ॥

"दान दीधा पछी मातापितानी अनुज्ञा लईने जेमनो शक्र इन्द्र तथा राजा विगेरेए भक्तिथी निष्क्रमणोत्सव करेलो छे एवा प्रभु दीक्षा ले छे " इन्द्र अने राजा विगेरेए करेलो दीक्षामहोत्सव आ प्रमाणे होय छे दीक्षाने दिवसे स्वजनो बधु नगर ध्वजश्रेणी विगेरेथी अलकृत करावे छे ते अवसरे चोसठ इन्द्रो आसनकपथी प्रभुनो दीक्षासमय जाणी त्या आवे छे पछी पूर्वे कह्या प्रमाणे आठ जातिना कळश तथा पूजाना उपकरणो आठ आठ हजार करावे छे. प्रभुनो स्वजनवर्ग पण आठे प्रकारना कळश कारीगरो पासे करावे छे. ते मनुष्यकृत कळशनी अदर दिव्य कळश प्रवेश करे छे एटले दिव्यशक्तिथी ते घणा शोभे छे. पछी इन्द्रो तथा स्वजनो देवताओए लावेला तीर्थजळ औषधि तथा मृत्तिका विगेरेथी प्रभुने अभिषेक करे छे. पछी गधकषायी वस्त्रवडे प्रभुना अग लूछे छे पछी यथास्थाने प्रकाशित आभूषणो पहेरावी लक्ष्य मूल्यना सदश वस्त्र धारण करावे छे पछी सेंकडो रत्नमय स्तभवाळी एक पालखी स्वजनो कारीगर पासे करावे छे. देवताओए करेली दिव्य पालखी ते पालखीमा मिश्र थई जवाथी अधिक शोभे छे पछी छट्ठ विगेरे तपथी अलकृत एवा प्रभु ते पालखीमा सिंहासन उपर पूर्वाभिमुखे वेसे छे. प्रभुनी दक्षिण बाजुए कुळनी वडील स्त्री बेसे छे, वाम बाजु हसना चित्रवाळु वस्त्र हाथमा लई धात्रमाता बेसे छे पृष्ठ भागे एक तरुण स्त्री छत्र धरीने बेसे छे ईशानकूणमा एक रमणी पूर्ण कळश लईने वेसे छे पछी स्वजननी आज्ञाथी सरखेसरखा वेश अने शरीरवाळा सहस्र पुरुषो ते शिविकाने उपाडे छे ते वखत शिबिकानी दक्षिण तरफनी उपरली बाहा शक्र इन्द्र वहन करे छे, उत्तर तरफनी उपरली बाहा ईशान इन्द्र वहन करे छे, दक्षिण तरफनी नीचली बाहा चमरद्र वहन करे छे अने उत्तर तरफनी नीचली बाहा बलींद्रवहन करे छे. (पछी देवो ते बाहा ग्रहण करे छे एटले सौधर्मेन्द्र ने ईशानेन्द्र बे बाजु चामर वींझे छे) बाकीना देवताओ पचवर्णनी पुष्पवृष्टि विगेरे करता जाय छे.

आ प्रमाणे अनेक प्रकारना महोत्सवथी प्रभु दीक्षा लेवा नीकळे छे. ते समये सर्वे मनुष्यो भगवतनी आ प्रमाणे स्तुति करे छे-" हे जगत्प्रभु ! तमे सर्व कर्मरूप शत्रुओने जीती सत्वर केवलज्ञानने प्राप्त करो. " इत्यादि स्तुति कराता प्रभु वनमा जाय छे. त्या अशोक विगेरे वृक्षनीचे शिविका मूके छे एटले प्रभु तेमाथी उतरी आभूषणो उतारे छे ते समये कुळनी वडेरी स्त्री हसलक्षण पटशाटकमा ते ग्रहण करीने आ प्रमाणे हितशिक्षा आपे छे-" हे वत्स ! तमे ऊचमा ऊच गोत्रना उत्तम क्षत्रिय छो, तेथी चारित्रमा प्रमाद करशो नहि, प्रमाद न करवाथी तमारु वाछित शीघ्र सिद्ध थशे." पछी भगवान् एक मुष्टिथी दाढी मूछना अने चार मुष्टियी मस्तकना केशनो लोच करे छे. पाच इन्द्रिय तथा चार कपाय एम नव प्रकारनो भावलोच करे छे अने केशना स्वा-

१ बने बाजु छेडावाळा

गरूप दशमो द्रव्यलोच करे छे शक्र इन्द्र ते केश लइ प्रभुने जणावी क्षीरमा क्षेपन करी आवे छे पछी लक्ष्य मूलनुं देवदूष्य वस्त्र इन्द्र प्रभुना स्कंध उपर छे ते समये इन्द्रना वाक्यथी देवता तथा नरनारीओनो घोंघाट शांत थई जाय एटले प्रभु 'नमो सिद्धाण' एम कही सामायिकनो पाठ भणे छे आ 'भंते' ए पद जिनेश्वर भगवंत बोलता नथी, कारण के तेमने बीजा भगवंत (पूज्य) होता नथी 'नमो सिद्धाण' ए पद तो आचार माटे मात्र भणे छे. कारण के तेमना पण सर्व अर्थ सिद्ध थया छे, एम तत्त्वार्थवृत्तिमा अपेक्षाए जणाव्युं छे

चारित्र आदर्या पछी तरत ज प्रभुने चोथुं ज्ञान उपजे छे. संयम लीधा पछी प्रभु ते ज दिवसे विहार करे छे द्रव्यादि कोई वस्तुनो प्रतिबंध राखता नथी. अहीं सचित्त विगेरे वस्तु ते द्रव्य, ग्रामगृहादि ते क्षेत्र, मास वर्ष विगेरे काळ अने रागद्वेष विगेरे भाव समजवो ते चारनो प्रतिबंध प्रभुने नथी

पछी प्रभु प्रथम पारणुं जेने त्यां करे छे त्यां देवता पांच दिव्य विस्तारे छे ते पांच दिव्य आ प्रमाणे–सुगंधी जळनी वृष्टि, पुष्पवृष्टि, सुवर्णवृष्टि, आकाशमां दिव्य दुंदुभिनो ध्वनि अने 'अहोदान अहोदान' एवी उद्घोषणा ते वखते हर्ष पामेला देवताओ मनुष्यजन्मनी अनुमोदना करे छे अने उत्कृष्टथी साडाबार करोड सोनैयानी अने जघन्यथी साडाबार लाख सोनैयानी वृष्टि करे छे

"शक्रादि देवताओ एवी रीते प्रभुनी सेवा करवा माटे दीक्षा कल्याणक विगेरेमा मुख्य भाग ले छे तेमना हस्तमां अने मस्तक पर अर्हत प्रभु विराजे छे"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ द्विशततम: प्रबंध. ॥ २०० ॥

व्याख्यान २०१ मुं

प्रभुने केवळज्ञाननी उत्पत्ति

आद्येऽथ शुक्लध्यानस्य ध्याते भेदद्वयेऽर्हताम् ।
घातिकर्मक्षयादाविर्भवेत्केवलमुज्ज्वलम् ॥ १ ॥

भावार्थ –

"शुक्ल ध्यानना पहेला बे भेद ध्याता अर्हन् प्रभुने घातिकर्मनो क्षय थवाथी उज्ज्वल केवलज्ञान प्रगट थाय छे"

आठ प्रकारना कर्ममळने शोधे ते शुक्ल अथवा शोकनो नाश करे ते शुक्ल कहेवाय छे. शुक्ल एवु जे ध्यान ते शुक्लध्यान. तेना पहेला बे भेद ध्याता जिनेश्वर भगवतने केवळज्ञान उत्पन्न थाय छे तेमा प्रथम भेद पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार नामे छे. तेमा एक द्रव्यनी अदर उत्पाद, व्यय अने ध्रुव ए पर्यायना विस्तारवडे जुदा जुदा भेदथी जे विचार करवो एटले विविध प्रकारना नयने अनुसारे जीव अजीव भिन्न करीने वितर्क करवो अर्थात् गुणपर्यायनो विचार करवो ते प्रथक्त्ववितर्कप्रविचार, एटले आत्मसत्तानु ध्यान करवु ते शुक्ल ध्याननो प्रथम भेद छे. ए भेद आठमा गुणठाणाथी माडीने अगियारमा गुणठाणा सुधी लभ्य थाय छे. शुक्ल ध्याननो बीजो भेद एकत्ववितर्कअविचार नामे छे, जेमा जीवना गुणपर्याय आत्मामा एकपणे रहे छे-भिन्नपणे रहेता नथी एवु ध्यान करे छे. तेम ज ' मारो जीव सिद्धस्वरूपमय होवाथी एक ज छे ' एम चिंतवन करे छे ते विषे पूज्य पुरुषो लखे छे के " एक द्रव्यने अवलंबी रहेला अनेक पर्यायमाहेथी एक पर्यायनो ज आगम अनुसारे विचार करवो अने मन विगेरे योगमाहे पण एकथी बीजानो विचार जेमा नथी ते एकत्ववितर्कअविचार नामे शुक्लध्याननो बीजो भेद छे. आ ध्यान योगनी चपलता रहित एक पर्यायमा चिरकाळ पर्यंत टके छे तेथी पवन विनाना मकानमा दीपकनी जेम तेनी स्थिरता थाय छे. आ बीजो भेद बारमे गुणठाणे सभवे छे. ए ध्यानथी घनघाती चार कर्मनो क्षय करी जीव निर्मळ एवा केवळज्ञानने मेळवे छे. सयोगी केवली गुणठाणे ध्यानातरिका थाय छे. ते ज्ञानवडे अनत धर्मवाळा सर्व पदार्थ जाणी शकाय छे. कह्यु छे के " आ त्रण जगतमा एवी कोई वस्तु नथी के जे श्रीजिनेश्वर भगवत जाणता नथी अने देखता नथी. एथी ज ते अर्हंत त्रण जगतने पूज्य थाय छे "

तीर्थंकरपद पण केवलज्ञान उत्पन्न थया छता ज भोग्य थाय छे कह्यु छे के–

यत्तृतीयभवे बद्ध, तीर्थकृन्नामकर्म तत् ।
प्राप्तोदय विपाकेन, जिनानां जायते तदा ॥ १ ॥

" जिनेश्वर भगवते त्रीजे भवे जे तीर्थंकरनामकर्म बाधेलु छे ते तेमने विपाकपणे त्यारे ज उदय आवे छे." हवे प्रभुने केवलज्ञान थया पछी देवता शु करे छे ते कहे छे–" ते समये इद्र आसनकपथी प्रभुने केवळज्ञान थयु जाणी त्या आवी ज्ञानोत्पत्ति महोत्सव करे छे. "

ज्यारे प्रभुने केवळज्ञान उत्पन्न थाय छे त्यारे चोसठ इद्रो आवी प्रभुना ज्ञानकल्याणकनो महोत्सव करे छे ते आ प्रमाणे–वायुकुमार देवो एक योजन प्रमाण भूम डळने शोधे छे पछी मेघकुमार देवता ते भूमिने सुगधी जळथी सिंचन करे छे. छ

आवेला होय छे तेमनी आगळ एक एक रत्नमय पादपीठ होय छे तेनी उपर चरण धरे त्यारे ते उल्लासवाळु थयु होय तेम शोभे छे. प्रत्येक सिंहासन उपर त्रण छत्रो होय छे ते तथा मोतीनी श्रेणीओथी अलकृत होय छे प्रत्येक ... बने बाजु बने चामरधारी देवता ऊभा रहे छे सिंहासननी आगळ चारे ... सुवर्णकमळ उपर सूर्यना तेजने जीते तेवु एक एक धर्मचक्र आवेलु होय छे. ते प्रभुनु त्रिभुवनना धर्मचक्रीपणाने सूचवनारु तथा मत्सरी जनना मदने टाळनारु छे. तथा चार दिशाए हजार हजार योजन ऊचा, नानी नानी घटिकाओवाळा चार महाध्वज होय छे तेमा पूर्वमा धर्मध्वज, दक्षिणमा मानध्वज, पश्चिममा गजध्वज अने उत्तरमा सिंहध्वज कहेवाय छे

अहीं जे धनुष्य तथा कोश विगेरेनु मान कह्यु छे ते ते समयना तीर्थंकरना आत्मागुळ प्रमाणे जाणवु मणिपीठ, चैत्यवृक्ष, सिंहासन, छत्र, चामर तथा देवछदो विगेरे व्यतरदेवताओ रचे छे आ समवसरण चारे निकायना देवताओने साधारण छे, कारण के सर्वे मळीने करे छे बाकी कोई महान उत्तम देवता धारे तो ते एकलो पण आखु समवसरण रची शके छे

त्या वैमानिक देवता हर्षथी सिंहनाद अने दुदुभिना शब्दो करे छे सूर्योदय वखते प्रभु सुवर्णना कमळ उपर चरण मूकता मूकता आवीने पूर्वद्वारवडे समवसरणमा प्रवेश करे छे पछी चैत्यवृक्षने प्रदक्षिणा करी, पादपीठ उपर चरण मूकी " नमो तीर्थाय " एम कही सिंहासन उपर बेसे छे तीर्थ एटले श्रुतज्ञान अथवा चतुर्विध सघ अथवा प्रथम गणधर समजवा के जेनावडे आ ससारसागर तरी शकाय छे अर्हतने श्रुतज्ञानपूर्वक अर्हतपणानी प्राप्ति छे, माटे ते तीर्थशब्दे श्रुतज्ञानने नमे छे लोकमा अर्हत पूज्य होवाथी अने पूज्य जेने पूजे ते तो अवश्य पूजनिक होवाथी लोकमा चतुर्विध सघरूप तीर्थ पूजाय छे. कृतकृत्य थयेला अर्हत प्रभु पण तीर्थने नमे छे अने पछी धर्म कहे छे तेम सर्व लोक तीर्थने नमे छे पछी सिंहासन उपर बेसीने प्रभु देशना आपे छे भगवतना एकेक वचनवडे घणा जीवोना सशय छेदाय छे जो सशयोनो छेद अनुक्रमे थाय तो सशय करनार प्राणीओ असख्य होवाथी असख्यातकाळे पण तेमना सशयनो छेद थईने अनुग्रह थई शके नहि, परतु प्रभुनी शब्दशक्ति विचित्र छे तेथी एक वाक्यमा एक साथ घणा प्राणीओना सशयना उत्तर आपी शके छे आवी शक्तिने पुष्टि आपनारु एक लौकिक दृष्टात छे ते आ प्रमाणेः—

सगधर नामना गाममा धन, कण तथा सुवर्णथी भरपूर सुढण नामे एक ... रहेतो हतो तेने पुष्पवती विगेरे पदर स्त्रीओ हती ते बधी स्नेहवाळी हती

एक वखते बुढण गायो चारवा वनमा गयो. मध्याह्नकाळ थयो एटले ते भोजन करवा बेठो. ते समये वननी शोभा जोवाने उत्सुक थयेली तेनी स्त्रीओ तेनी पासे आवी पछी ते सर्वे अनुक्रमे पुष्पवतीने आ प्रमाणे पूछवा लागी. पहेलीए कह्यु-'आजे आटली वधी खीचडी केम राधी छे ?' बीजी बोली-'आजे छाशमा मीठाश केम थोडी छे ?' त्रीजी बोली-'पेली दाढी मूछवाळी स्त्री घेर छे ?' चोथी बोली-'आजे तमारे शरीरे शाति छे ?' पाचमी बोली-'आजे ककोडानु शाक आखु केम राध्यु छे ?' छठी बोली-'आ कुतरी केम घुरके छे ?' सातमी बोली-'ते भेंश गाभणी थई छे ?' आठमी बोली-'आ आगळ देखाती स्त्री थाकी गई छे के नहि ?' नवमी बोली-'आजे सदाव्रतमा भोजन आपे छे ?' दशमी बोली-'आजे आ जलप्रवाहमा घणु जळ केम वहे छे ?' अगीआरमी बोली-'तमारो चोटलो समार्यो छे ?' बारमी बोली-'कानमा कुडळ पहेर्या छे के नहि ?' तेरमी बोली-'आ गह्वरमा भय केम लागतो नथी ?' चौदमी बोली-'आ फळ लेशो ?' पदरमी बोली-'आ बकरीओ गणी छे के नहि ?' आ प्रमाणे अनुक्रमे पूछती ते बधी स्त्रीओने सर्वमा मान्य एवी पुष्पवतीए एक शब्दमा ज उत्तर आप्यो के 'पाली नथी' एटले पहेलीए पूछ्यु के खीचडी आटली बधी केम राधी छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के धान्य मापवानी पाली मारी पासे नथी, तेथी वधारे रधाई गई छे धान्यनु माप करनारा लोको ते मापवाना पात्रने पाली कहे छे बीजीए पूछ्यु के छाशमा मीठाश थोडी केम छे ? तेना उत्तरमा पण 'पाली नथी' एम कह्यु एटले छाश करवानो वारो नथी, तेथी कालनी छाश होवाथी मीठाश ओछी छे, अथवा बोरडी, बावल विगेरे जे तिर्यंचनो चारो छे तेने लोकमां पाली अथवा पालो कहे छे ते न मळवाथी छाशमा मीठाश ओछी छे. त्रीजीए पूछ्यु के पेली डाढीमूछवाळी स्त्री घेर नथी ? शु ते नापितने घेर गई छे ? तेने उत्तरमा कह्यु के आजे हजामतनी पाली नथी, एटले घेर छे चोथीए पूछ्यु के आजे तमने शरीरे शाति छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के पाली नथी, एटले एकातरो ताव आवतो हतो तेनी आजे पाली [वारो] नथी तेथी शाति छे. पाचमीए पूछ्यु के ककोडानु शाक आखु केम कर्यु छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के पाली नथी, एटले ते सुधारवानी छरी नथी छठीए कह्यु के आ कुतरी केम घुरके छे ? तेना उत्तरमा पण कह्यु के पाळी नथी, एटले ते कुतरीने कोईए पाळेली नथी, तेथी ते घुरके छे. सातमीए पूछ्यु के आ भेंश गाभणी छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के पाली नथी. गाय भेंश विगेरेने गर्भ रहेवाना समयने लोको पाली कहे छे ते नथी आठमी स्त्रीए पूछ्यु के पेली स्त्री शु मार्गमा थाकी गई छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के पाली नथी, अर्थात् ते पगपाळे चालती नथी, रथमा बेसीने आवी

छे, तेथी थाकली नथी नवमी स्त्रीए पूछ्युं के आजे सदाव्रतमा भोजन अपाय तेना उत्तरमां कह्यु के 'पाळी नथी ' एटले आजे दान देवानो वारो नथी. लाक सदाव्रत अमुक दिवस अपाता होय छे. दशमीए पूछ्युं के आ प्रवाहमांथी जळ केम वहे छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के 'पाली नथी. ' एटले तेनी पाळ नथी, तेथी बहार जळ वहे छे अगीआरमीए पूछ्युं के चोटलो तैयार करेलो छे ? उत्तरमा पण कह्यु के 'पाली नथी ' अहीं पाली कहेता जू समजवी, मस्तकमां जू पडी नथी, तेथी कशपाश तैयार छे बारमीए पूछ्युं के कानमां पहर्या छे के नहि ? तेना उत्तरमां कह्यु के 'पाली नथी ' अहीं कानमा छिद्र पड चीने उछेर तो कान पाळ्यो रहे छे ते पाळ्या विना कुंडल शी रीते पहेराय तेरमीए पूछ्युं के आ शहेरमा भय केम नथी? तेना उत्तरमा कह्यु के 'पाली नथी. एटले आ वननी समीपमां चोर लोकोनी पाली नथी, तेथी भय नथी. चोर लोकोन रहेवाना स्थानने पाल कहे छे चौदमीए पूछ्युं के आ फळ ग्रहण करशो ? तेन उत्तरमा कह्यु के 'पाली नथी ' एटले मारे खोळो नथी. तेथी शेमा फळ लेवाय पदरमीए पूछ्युं के आ बकरीओ गणी छे ? तेना उत्तरमा कह्यु के 'पाली नथी अहीं पाली एटले भात [छेडो अथवा आडश करेली] नथी, तेथी एटली ब बकरीओनी गणना शी रीत थाय ? आ प्रमाणे पुष्पवतीए सर्वे स्त्रीओना प्रश्नो उत्तर एक शब्दमा आप्यो अने त बधी समजी गई, तेथी तेनो पति पण खुशी थयो ज्यार एक साधारण माणसमा उत्तर आपवानी आवी शक्ति होय छे, तो पछी जिने द्रना एक वचनथी सर्वना संशयनो अभाव केम न थाय ?

" अर्हतनु एक वचन समकाळे अनेक लोकोनी संशयश्रेणीने एक साथे हरी छ, ते उपर बुद्धण आहरनी स्त्रीओनु दृष्टात साभळीने विचारवु के तेमां शु आश्चर्य छे कांई पण आश्चर्य नथी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ एकाधिकद्विशततमः प्रबंध ॥ २०१ ॥

व्याख्यान २०२ मुं

प्रभुनी देशना समये जे थाय ते कहे छे

जिनवाक्यात्प्रबुद्धा, ये दीक्षा गृह्णति ते मुदा ।
तेषु गणिपदार्हास्तान्, यच्छति त्रिपदीं जिना ॥ १ ॥

भावार्थः–

"जे श्रीजिनेश्वरभगवतनी वाणीथी प्रतिबोध पामे छे ते हर्षथी दीक्षा ले छे तेमाथी जे गणिपदने योग्य होय तेमने श्री भगवत त्रिपदी आपे छे." तेओ त्रिपदीनु अध्ययन करी मुहूर्तमात्रमा बुद्धिबीज प्राप्त करीने द्वादशागी रचे छे पछी जिनेश्वर भगवत तेमने गणधरपद आपे छे. महाबुद्धिवाळा गणधरो सूत्र गूथे छे. अरिहतभगवत तो प्राये अर्थ प्रकाशे छे. गणधरो भव्यजनना उपकार माटे ज सूत्र रचे छे एम समजवु. जेम कोई पुरुष आम्रवृक्ष उपर चडी नीचे रहेला लोकोना उपकार माटे उपरथी फळनी वृष्टि करे छे अने नीचे ऊभा रहेला लोकोमाथी कोई ते पडता फळोने वस्त्रमा झीली ले छे अने पछी तेवडे पोताने अने बीजाओने प्रसन्न करे छे. तेम श्रीजिनेश्वर-भगवत ज्ञानरूप कल्पवृक्ष उपर रही भव्य प्राणीओना हित माटे अर्थनी वृष्टि करे छे. तेमाथी काईक गणधरो बुद्धिरूप वस्त्रमा झीली ले छे. पछी तेनावडे द्वादशागीनी रचना करी तेओ पोताना आत्मानो अने बीजाओनो अनुग्रह करे छे. जेम फळ जुदा जुदा पडथा होय ते नीचे रहेला सर्वनो एक सरखो उपकार न करे पण भेळा करीने आपवाथी सर्वनो उपकार करे तेम जुदा जुदा अर्थने एकत्र सूत्ररूपे गूथवाथी ते सर्वनो उपकार करे छे.

हवे समवसरणमां प्रभुना केटला रूप थाय छे ते कहे छे–" पूर्व दिशाए प्रभु मूळ रूपे विराजे छे अने बीजी त्रण दिशाओमा देवताओ प्रभुना महिमाथी भगवतनी जेवा ज त्रण बीजा रूप रचे छे " जो के बाकीनी दिशाओमा देवता अर्हतना प्रतिबिंब रचे छे तो पण ते रूप एवा होय छे के जोनारने ते कृत्रिम छे के अकृत्रिम छे तेनी खबर पडती नथी, कारण के ते मूळस्वरूपथी किंचित् पण भिन्न होता नथी. ते रूप कृत्रिम छता जिनेश्वरनी जेवा ज थाय छे, ए जिनेश्वरनो ज प्रभाव छे. अन्यथा सर्व देव एकठा थाय अने सर्व शक्ति वापरे तो पण प्रभुना अगूठा जेवु रूप पण तेमनाथी थई शके नहि ते विषे श्री भक्तामरस्तोत्रमा कह्यु छे के—

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूतः।
तावंत एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति॥

"हे त्रिभुवनमा अद्वितीय तिलकरूप प्रभु ! शातरागरुचिवाळा जे परमाणुओथी तमे निर्माण थयेला छो ते परमाणु पृथ्वीमा तेटला ज छे जेथी तमारी समान बीजु कोई रूप पृथ्वी पर छे नहि " प्रभुना रूपनु वर्णन श्री आवश्यकनिर्युक्तिमा पण करेलु छे. तेमा कह्यु छे के " अर्हतनु स्वरूप वाणीथी अगोचर छे (कही शकाय

तेम नथी) तेथी अनंतगुणहीन गणधरनुं स्वरूप होय छे तेमनाथी शरीर अनंतगुणहीन होय छे तेनाथी अनंतगुणहीन अनुत्तर विमानना शरीर होय छे तेथी अनुक्रमे ऊतरता ऊतरता व्यंतर देवता सुधीनुं शरीर अनंतगुणहीन होय छे तेमनाथी चक्रवर्तीनुं तेमनाथी वासुदेवनुं, तेमनाथी बलदेवनुं अने तेमनाथी मंडलिक राजानुं शरीर अनंत अनंत गुणहीन समजवुं बाकी रहेला राजाओ अने सर्व लोकोना शरीरमा परस्पर छ स्थान पडे छे आ प्रमाणे—अनंत भागहीन, असंख्यात भागहीन, संख्यात भागहीन, संख्यात गुणहीन, असंख्यात गुणहीन अने अनंत गुणहीन होय छे " श्री तीर्थंकरनुं स्वरूप सर्वने वैराग्य उत्पन्न करनारु होय छे, रागादि वधारनारु होतुं नथी.

हवे समवसरणमा पर्षदाना स्थान कहे छे—"देशना सांभळवानी स्पृहावाळी अने मन–वचन–कायाना प्रशस्त योगथी प्रकाशित एवी बार पर्षदा समवसरणमा पोतपोताने स्थानके बेसे छे ते पर्षदाने बेसवाना स्थान आ प्रमाणे छे—ज्येष्ठ अने बीजा गणधरो होय छे ते प्रभुनी समीप अग्निकूणमा सर्वनी आगळ बेसे छे. केवळी, भगवंतने त्रण प्रदक्षिणा करी तीर्थने नमस्कार करी पोतानुं गौरव साचवीने पदस्थ एवा गणधरोनी पाछळ बेसे छे तेओ प्रभुने वांदता नथी, तेना कारणमा कह्युं छे के—

कृतकृत्यतया तादृक्–कल्पत्वाच्च जिनेश्वरान् ।
न नमस्यति तीर्थं तु, नमंत्यर्हन्नमस्कृतम् ॥

" तेओ [केवळी] कृतार्थपणाने पामेला होवाथी तेम ज पोतानो तेवो आचार छे तेथी तीर्थंकरने वांदता नथी, पण अर्हंत नमेला एवा तीर्थने वांदे छे " ते विषे श्री ऋषभस्तोत्रमा धनपाळे पण कहेलुं छे के " हे प्रभु ! तमारी सेवावडे मोहनो छेद थाय ए तो निश्चय छे, पण ते [केवळी] अवस्थामा तमने वंदना थती नथी, तेथी हुं मारा हृदयमा खेद पामुं छुं " केवळीनी पृष्ठ भागे लब्धिवाळा अने लब्धि विनाना सर्व साधुओ अर्हंत, तीर्थ तथा गणधर विगेरेने नमी अनुक्रमे विनयथी बेसे छे. तेमनी पछवाडे वैमानिक देवतानी देवीओ अर्हंत विगेरेने नमीने बेसे छे अने तेमनी पछवाडे साध्वीओ बेसे छे आ त्रण पर्षदा पूर्वद्वारवडे समवसरणमा प्रवेश करी अर्हंतने प्रदक्षिणा करी अग्निकूणमा बेसे छे भुवनपति, ज्योतिषी अने व्यंतरनी देवीओ ए त्रण पर्षदा दक्षिणद्वारे पेसी नैर्ऋत्यकूणमा ऊभी रहे छे भुवनपति, ज्योतिषी अने व्यंतरदेवता पश्चिम द्वार पेसी वायव्यकूणमा बेसे छे वैमानिक देवता, नर, अने नारीओ उत्तरद्वार पेसी अर्हंत विगेरेने नमी ईशानकूणमा बेसे छे चार प्रकारनी अने साध्वीओ ऊभी रहीने देशना सांभळे छे सर्व देवता, नर तथा नारीओ

अने माधुओ बेसीने साभळे छे आवश्यकनी वृत्तिमा आ प्रमाणे कहेलु छे अने तेनी चूर्णीमा लखे छे के ' माधुओ उत्कटिक आसने बेसीने साभळे छे अने साध्वीओ तथा वैमानिक देवतानी देवीओ ऊभी रहीने साभळे छे '

प्रभुना प्रभावथी बाल, ग्लान अने जरापीडित वृद्ध लोकोने पण पगथीआ चडता किंचित् पण श्रम के व्याधि थतो नथी. कोईने वैरभाव पण प्रकट थतो नथी. बीजा गढमा पोताना जातिवैरने पण भूली जई बधा तिर्यंचो साथे बेसीने देशना साभळे छे.

हवे देशना थई रह्या पछी जे थाय छे ते कहे छे-श्री जिनेश्वर भगवत पहेली पोरषी पूर्ण थता सुधी धर्मदेशना आपे छे ते समये लोको चोखावडे प्रभुने वधाववानो विधि करे छे अहीं लोको एटले चक्रवर्तीथी माडीने सामान्य राजा पर्यंत जे देशना साभळवा आवेल होय ते अथवा श्रावक के नगरजन समजवा तेओ शालिवडे वधापन विधि करे छे वधापननो विधि आ प्रमाणे-कलमशालिना चोखा अत्यत सुगधी, फोतरा वगरना, उज्वळ अने अखडित चार प्रस्थ अथवा एक आढकप्रमाण, शुद्ध जळथी धोईने राधवावडे अर्धा फुलेला होय तेवा रत्नना थाळमा भरी सर्व शृगार धारण करेली सुवासिनी स्त्रीना मस्तक पर धारण करावे तेमा देवताओ सुगधी द्रव्य नाखे, जेथी ते बलि अत्यत सुगधी थाय पछी अनेक प्रकारना गीतवाद्य साथे ते बलि प्रभु पासे श्रावकों लई जाय पूर्व द्वारवडे तेनो समवसरणमा प्रवेश करावे. ते बलिनु पात्र आवे त्यारे भगवत क्षणवार देशना देता विरमे पछी चक्रवर्ती प्रमुख श्रावको ते बलि साथे त्रण प्रदक्षिणा दई प्रभुना चरण पासे आवे. त्या पूर्व दिशामा ऊभा रही सर्व दिशाओमा प्रौढ मुष्टिवडे ते बलि फेंके, तेमाथी अर्ध भूमि पर पडे ते पहेला आकाशमाथी ज देवताओ ग्रहण करे, बाकीना अर्धमाथी अर्धभाग ते बलिना कर्ता जे आगेवान होय ते ले अने तेथी अवशिष्ट रहे ते बीजा लोको जेम मळी शके तेम लई ले ते बलिनो एक कणमात्र माथे मूकवाथी सर्व रोग शमी जाय छे अने छ मास सुधी नवो रोग थतो नथी. आ प्रमाणे बलिनो विधि पूर्ण थाय छे

पछी श्री जिनेश्वर पहेला गढमाथी ऊतरी बीजा गढमा ईशानकुणमा देवछदा उपर आवी अनेक देवताओथी परिवृत थई सुखे बेसे छे बीजी पोरषीमा राजा विगेरेए लावेला सिंहासन उपर अथवा प्रभुना पादपीठ उपर बेसी गणधर धर्मदेशना आपे छे बीजी पोरषी पूर्ण थाय एटले सौ स्वस्थानके जाय छे. पुनः पाछली (चोथी) पोरषीए प्रभु सिंहासन उपर बेसी देशना आपे छे. ज्या आगु समवसरण प्रथम न थयु होय त्या चार प्रकारना देवताओ मळीने उपर कह्या प्रमाणे समवसरण करे छे अने कोई महर्द्धिक देवता प्रभुने नमवाने आवे तो ते एकलो पण समवसरण करी शके छे.

तेम नथी) तेथी अनंतगुणहीन एवु गणधरनु स्वरूप होय छे तेमनाथी शरीर अनंतगुणहीन होय छे तेनाथी अनंतगुणहीन अनुत्तर विमानना देवता शरीर होय छे तेथी अनुक्रमे ऊतरता ऊतरतां व्यंतर देवता सुधीनु शरीर अनंतगुणहीन होय छे तेमनाथी चक्रवर्तीनु, तेमनाथी वासुदेवनु, तेमनाथी देवनु अने तेमनाथी मंडलिक राजानु शरीर अनंत अनंत गुणहीन समजवु बाकी रहेला राजाओ अने सर्व लोकोना शरीरमा परस्पर छ स्थान पडे छे आ प्रमाणे—अनंत भागहीन, असंख्यात भागहीन, संख्यात भागहीन, गुणहीन, असंख्यात गुणहीन अने अनंत गुणहीन होय छे." थी तीर्थंकरनु स्वरूप सर्वने वैराग्य उत्पन्न करनारु होय छे, रागादि वधारनारु होतु नथी

हवे समवसरणमा पर्षदाना स्थान कहे छे—"देशना सांभळवानी स्पृहावाळी अने मन-वचन-कायाना प्रशस्त योगथी प्रकाशित एवी बार पर्षदा समवसरणमां पोतपोतान स्थानके बेसे छे ते पर्षदाने बेसवाना स्थान आ प्रमाणे छे—ज्येष्ठ अने बीजा गणधरो होय छे ते प्रभुनी समीप अग्निकूणमा सर्वनी आगळ बेसे छे, केवळी, भगवंतने त्रण प्रदक्षिणा करी तीर्थने नमस्कार करी पोतानु गौरव साचवीने पदस्थ एवा गणधरोनी पाछळ बेसे छे तेओ प्रभुने वांदता नथी, तेना कारणमा कह्यु छे के—

कृतकृत्यतया तादृक्-कल्पत्वाच्च जिनेश्वरान् ।
न नमस्यति तीर्थं तु, नमंत्यर्हन्नमस्कृतम् ॥

" तेओ [केवळी] कृतार्थपणाने पामेला होवाथी तेम ज पोतानो तेवो आचार छे तेथी तीर्थंकरने वांदता नथी, पण अर्हंते नमेला एवा तीर्थने वांदे छे " ते विषे श्री ऋषभस्तोत्रमां धनपाळे पण कहेलु छे के " हे प्रभु ! तमारी सेवावडे मोहनो छेद थाय ए तो निश्चय छे, पण ते [केवळी] अवस्थामा तमने वंदना थती नथी, तेथी हुं मारा हृदयमा खेद पामु छु " केवळीनी पृष्ठ भागे लब्धिवाळा अने लब्धि विनाना सर्व साधुओ अर्हंत, तीर्थ तथा गणधर विगेरेने नमी अनुक्रमे विनयथी बेसे छे, तेमनी पछवाडे वैमानिक देवतानी देवीओ अर्हंत विगेरेने नमीने बेसे छे अने तेमनी पछवाडे साध्वीओ बेसे छे आ त्रण पर्षदा पूर्वद्वारवडे समवसरणमा प्रवेश करी अर्हंतने प्रदक्षिणा करी अग्निकूणमा बेसे छे भुवनपति, ज्योतिषी अने व्यंतरनी देवीओ ए त्रण पर्षदा दक्षिणद्वारे पेसी नैर्ऋत्यकूणमा ऊभी रहे छे भुवनपति, ज्योतिषी अने व्यंतरदेवता पश्चिम द्वारे पेसी वायव्यकूणमां बेसे छे वैमानिक देवता, नर अने नारीओ उत्तरद्वार पेसी अर्हंत विगेरेने नमी ईशानकूणमा बेसे छे चार प्रकारनी देवीओ अने साध्वीओ ऊभी रहीने देशना सांभळे छे. सर्व देवता, नर तथा नारीओ

अहीं आ प्रमाणे भावना छे–आ समारंभमा जीवोनी चार पंक्तिओ छे तेमा पहेली पंक्तिमां सर्वे एकेंद्रियप्रमुख जीवो छे के जे अविरतिनी पंक्तिना छे तेमा एकेंद्रिय जीवो पांच आश्रवथी विरत थया नथी, तेथी तेनवडे उत्पन्न थता कर्मनो बंध ते प्राप्त करे छे, माटे तेओ विरत कहेवाय नहि. जेम सूतेला, प्रमादी अने मूर्छित विगेरे जीवो शक्तिचेतनाना अभाववडे कदी हिंसादि करता नथी, तथापि ते व्रती कहेवाय नहि, कारण के तेमनामा विरतिना परिणामनो अभाव छे तेवी ज रीते मूगा विगेरे असत्य बोलता नथी, तथापि ते सत्यवादी न कहेवाय. ठूठा ने पागळाओ अदत्त ग्रहण करता नथी, तथापि अदत्तादानना त्यागवाळा न कहेवाय कृत्रिम, अकृत्रिम नपुसक एवा तिर्यंच ने मनुष्य मैथुन सेवे नहि, तथापि ते ब्रह्मचारी न कहेवाय अने पशु, दरिद्री विगेरे विशेष धनवस्त्रादिकना अभाववाळा होवा छता ते काई निर्ग्रंथ न कहेवाय तेओ काई विरतिनु फळ प्राप्त करता नथी. तेवी रीते एकेंद्रिय जीवने पण सम्यक्त्वादिना अभावथी अविरत जाणवा. कह्यु छे के "एकेंद्रियने बीजु सास्वादन गुणठाणु पण न होय " एवी ज रीते विकलेंद्रिय अने समूर्छिम पचेंद्रिय विगेरे जीवोमा पण अविरतिपणु जाणवु, कारण के त्या सास्वादन गुणठाणु होय छे पण ते गुणठाणानी स्थिति उत्कृष्ट मात्र छ आवलिका सुधीनी ज छे.

हवे एकेंद्रिय जीवोमा काईक विशेष हिंसादि आश्रव छे ते दर्शावे छे–वृक्षप्रमुख पोतपोताना आहार तरीके जळ, पवन विगेरे सचित्त वस्तुने ग्रहण करे छे, तेथी तेमने जळ अने पवननी विराधना स्पष्टपणे छे कह्यु छे के " ज्या जळ होय त्या वनस्पति होय, ज्या वनस्पति होय त्या अग्नि होय अने तेउकाय, वायुकाय तो सघाते ज होय छे अने त्रसजीव प्रत्यक्ष होय छे. " वनस्पति विगेरने पण आहार ग्रहण करवामा सूक्ष्म वृत्तिए विराधना रहेली छे अने बादरवृत्तिवडे तो केटलाएक कथेर, बोरडी विगेरे वृक्ष मरुदेवादिकना जीवनी जेम कदली विगेरेने हणे छे थोर विगेरे वृक्षो पोताना मूळना क्षार तथा कटुरस विगेरेथी पृथ्वीकाय विगेरे छ कायनी हिंसा करे छे. कीडामार तथा किंपाक विगेरे मनुष्य तथा पशुप्रमुखने मारे छे. भेडा-गारी विगेरेना वृक्षो मनुष्यने उचाटन करे छे केटलीक वनस्पति मनुष्यने पशु करे छे ने पशुने मनुष्य करे छे वास ने शर विगेरे वृक्षो धनुष्य ने बाणरूपे थई घणा

१ अपर्याप्तावस्थामा होय छे, परतु अल्पकालीन होवाथी ते विवक्ष्यु नथी

२ मरुदेवा मातानो जीव निगोदमाथी नीकळी प्रत्येक वनस्पतिकायमा केळना वृक्षमा उत्पन्न थयो हतो त्या समीपे रहेला कथेरना वृक्षना काटा वारवार भोंकावाथी थती वेदना सम्यग् भावे सहन करवाथी अकाम निर्जरावडे मनुष्यपणाने पाम्या ने ते ज भवमा मोक्षे गया

हवे समवसरण विना पण नियमा प्रभुनी सहचारी संपत्ति होय ते कहे छे–"समवसरण न होय त्यारे पण प्रभुनी पासे अवश्य आठ प्रतिहार्य होय छे" ए आ प्रतिहार्यनु वर्णन प्रथम स्तभमा लखवामा आव्यु छे

" आ प्रमाणे अनत गुणरत्नथी सुशोभित एवा अर्हतनु वर्णन शास्त्ररूप समुद्र माथी उद्धरीने अहीं कहलु छे तेने अनुसार प्रवृत्ति करीने धार्मिक जनोए पो आत्मानु हित करवु "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ द्व्यधिकद्विशततमः प्रबधः ॥ २०२ ॥

व्याख्यान २०३ मु

श्री जिनेंद्रभगवान् समवसरणमां बेसी देशना आपे छे ते विषे कहे छे

बहवोऽविरता जीवास्तेभ्योऽल्पास्तु सुदृष्टयः ।
स्वल्पतरास्ततः श्राद्धा साधवोऽल्पतमास्तथा ॥ १ ॥

भावार्थ –

"जगतमा घणा जीवो तो अविरत छे तेमनाथी बहु अल्प जीव सम्यक्त्वधारी होय छे, तेमनाथी अति अल्प देशविरति (श्रावक) होय छे अने तेमनाथी अतिशय अल्प सर्वविरति (साधुओ) होय छे "

अविरत एटले बार प्रकारनी विरतिए रहित एवा जीव घणा छे, कारण के समस्त विश्वमा मिथ्यात्वी जीव ज घणा होय छे तमनु पण अहीं ग्रहण करवानु छे ते बार अविरति आ प्रमाणे–मन अने पाच इंद्रियोनो अनियम–ए छ तथा छ कायना जीवनो वध–ए छ मळी बार प्रकारनी अविरति छे तेवा अविरति जीवोथी सम्यक्त्वधारी जीवो अल्प होय छे तेमनाथी देशविरति श्रावको अति अल्प होय छे तेओ अगियार अविरतिना नियमथी रहित, मात्र बारमा त्रसकायने हणवाना नियमवाळा [पच्च ण करवावाळा] होवाथी विरतिना एक देशने धरनारा होय छे, तेथी ते देशवि वाय छे तेमनाथी सर्वविरति साधुओ अतिशय अल्प होय छे.

वृक्षोने बाह्यथी एकेंद्रियपणु छे, पण भावथी पचेंद्रियपणानो सद्भाव छे. तेम ज तेमने दश सज्ञावडे कर्मनो बध थाय छे ते दश सज्ञाना नाम आ प्रमाणे–१ आहार, २ भय, ३ परिग्रह, ४ मैथुन, ५ क्रोध, ६ मान, ७ माया, ८ लोभ, ९ लोक ने १० ओघ. ए जीवनी दश सज्ञा छे वृक्षआश्री ते आ प्रमाणे– वृक्षोने जळादिनो आहार ते आहारसज्ञा, लज्जाळु वेल विगेरे भयवडे सकोचाय छे ते भयसज्ञा, पोताना ततुओवडे वेलाओ वृक्षने वींटाय छे ते परिग्रहसज्ञा, स्त्रीना आलिंगनथी कुरुवक वृक्ष फळे छे ते मैथुनसज्ञा, कोकनदनो कद कोई मार्गे अथडाय छे त्यारे हुकारो करे छे ए क्रोधसज्ञा, रुदति वेल झर्या करे छे ते मानसज्ञा, लता पत्रपुष्पफळादिकने ढाके छे ए मायासज्ञा, बीली तथा पलाशना वृक्ष द्रव्य उपर मूळीआ नाखे छे ए लोभसज्ञा, रात्रे कमल सकोच पामी जाय छे ए लोकसज्ञा अने वेलडीओ मार्गने तजीने वृक्ष उपर चडे छे ते ओघसज्ञा आवी रीते दश सज्ञा होय छे. आ प्रमाणे वनस्पतिने आश्रीने अविरतिदोष बताव्यो. ते ज प्रमाणे पृथ्वीकायना जीवोने माटे पण जाणी लेवु.

हडताल, सोमल, क्षार विगेरेथी विकलेंद्रिय, तिर्यंच तथा मनुष्योनो वध प्रत्यक्ष जोवामा आवे छे ए हिंसा अने कूवामा रहेलो पारो अश्व उपर बेसीने आवेली स्त्रीनु मुख जोई उछळीने तेनी पाछळ दोडे छे ए कामचिह्न स्पष्ट छे. बाकी पूर्वनी जेम जाणवुं.

जळ पण क्षार प्रमुखना विरोधपणाथी मीठा जळना अने पृथ्वीकाय विगेरेना जीवोने हणे छे नदीओना पूर वखते मनुष्य तथा पशुप्रमुखनो मोटो वध थाय छे

अग्नि ताप तथा शोषण विगेरेथी जळना जीवोने हणे छे ते सर्व तरफ धारवाळा शस्त्ररूप होवाथी सर्वने दहन करवानी शक्ति छे, तेथी ते तेने जे प्राप्त थाय ते सर्वने हणी नाखे छे

एवी रीते वायु पण उष्ण थई शीत प्रमुख वायुना जीवोने हणे छे अने दीपक विगेरेमा रहेला अग्निना जीवोने हणे छे वळी लू लागवा विगेरेथी मनुष्यप्रमुखनु मृत्यु थतु पण जोवामा आवे छे एवी रीते एकेंद्रिय जीवने पाच आश्रवादिनु अविरतपणु रहेलु छे विकलेंद्रियमा पण तेवु ज अविरतिपणु रहेलु छे ते आ प्रमाणे—

पूरा, शख विगेरे बेइद्रिय जीवो जीवनो ज आहार करे छे. जू, कीडी, माकड अने खजूरा प्रमुख तेइद्रिय जीवो पण जीवनो आहार करे छे. कानखजूरा कानमा पेसी अति उद्वेग करावे छे चोइद्रि वींछी, भमरी विगेरे जीवो एळ प्रमुखने मारे छे. डास मच्छरादि जो हाथीना कानमा पेठा होय तो हाथीने मारे छे अने सिंहना नाकमा पेठा होय तो सिंहने हणे छे

पचेंद्रिय जीवोमा मत्स्य विगेरे जलचर प्राणी मत्स्यनो ज आहार करनारा छे व्याघ्र, सिंह तथा सर्पप्रमुख थळचर प्राणी पण मासनो आहार करनारा छे बाज,

जीवोने मारे छे. मनुष्यप्रमुखना जीवोने उत्सर्गथी अविरत परिणाम होवाने लीधे अचेतन थयेला शरीर विगेरथी पण बंध थाय छे. जिनपूजाने योग्य पुष्प, आभूषण विगेरना तथा मुनिना पात्ररूप थयेला पदार्थना जीवने तेनुं शरीर उपकरणरूप थया छतां पुण्यबंध थतो नथी, कारण के तेना हेतुरूप विवेकनो अभाव छे. रीते महारंभनी प्रवृत्तिना हेतुरूप गाडां, हळ विगेरे जे जीवोना शरीरोथी थाय छे, जीवोने हिंसाना हेतुभूत जाणी लेवा. आ प्रमाणे हिंसा बतावी. हवे असत्यादि बतावे

एकेंद्रियादि जीवोने सत्य अध्यवसायनो अभाव होवाथी असत्य लागे छे. ते लोकोने असत्य बोलाववाना हेतुरूप थाय छे, तेथी पण तेने असत्यनुं पाप जोवामां आवे छे. जेम कटलीएक औषधिने योगे सत्य ने असत्य पण छे. जेवी रीते काजळी विगेरमां कन्या विगेरे असत्य बोले छे ते प्रमाणे समजवुं. ज मोहनवल्ली विगेरे मोह उत्पन्न करीने लोकोने विपरीत मार्ग विगेरे बतावे छे, इत्यादि अनेक रीते असत्यनो प्रकार कहेलो छे.

हवे अदत्तादान बतावे छे–वृक्षआश्री सर्व जीवो सचित्त आहार ग्रहण करे छे ते आहारमां रहेला जीवो संबंधी जीवादत्त लागे छे. वळी वनस्पतिमां बीजाना अदत्तादाननुं हेतुपणुं स्पष्ट जणाय छे. कोकास सूत्रधारे (सुतारे) रचेल काष्टना शुक, पारेवा विगेरए राजाना कोठारमांथी अदत्तादानरूप शालि विगेरे ग्रहण कर्यानी हकीकत शास्त्रमां समजाय छे. ते काष्ठना शुकादिने अदत्तादाननुं पाप पूर्वे कहेल नामना मनुष्य विगेरेनी जेम लागे छे. वळी औषधना अंजनवडे लोक परधनने ग्रहण करवानी प्रवृत्ति करता जोवामां आवे छे इत्यादि.

एवी रीते मैथुननुं पाप पण विरतिभावना अभावथी तेने लागे छे. तेवी जातना पुष्पना आराम विगेरे मनुष्य प्रति कामरागना हेतुरूप छे. अफीण विगेरे केफी वस्तुओथी प्राणीने मैथुननी प्रवृत्ति विशेष थाय छे, तथा लोकमां कमलकंद, आम्रमंजरी, जाइना फूल, चंपाना फूल अने बपोरीयाना फूल ए पांच कामदेवना पांच बाण कहेवाय छे, कारण के ते मैथुनरागना जनक छे. केटलाएक वृक्षोने तो साक्षात् कामसंज्ञा देखाय छे. ते विषे कह्युं छे के " स्त्रीना चरणघातथी अशोक वृक्ष (आसोपालव) खीले छे, मधु(मदिरा)नो कोगळो नाखवाथी बकुलनुं वृक्ष (बोरसळी) प्रफुल्लित थाय छे, आलिंगन करवाथी कुरबकनुं वृक्ष विकास पामे छे अने स्त्रीना जोवाथी तिलक वृक्ष फळीओवडे शोभतुं थई जाय छे. "

तेम ज ते वृक्षोने विरतिना अभावे परिग्रह पण छे. केटलाएक वृक्षो मूर्छाथी द्रव्यना निधिने मूळवडे वींटाई वळे छे, तेथी तेमने परिग्रहनुं पाप स्पष्ट छे. वळी

अने तिर्यंचनो अनतमो भाग ए बधा अव्रती छे, तथापि तेमनो मिथ्यात्वदोष गयेलो होवाथी ते प्रथमना भेद करता बहु श्रेष्ठ छे. केटलाएक देवताओ के जेओ समकिती छे तेओ आ भेदमा आवे छे, तो पण पूर्वे कहेला जीवोथी आ पंक्ति बहु अल्प छे

उपर कहेला जीवो करता असख्यातमा भागना जीवो विरत अविरत एटले देश विरतिमय त्रीजी पंक्तिमा छे. आ पंक्तिमा केटलाएक गर्भज मनुष्य तथा गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंचनो असख्यातमो भाग आवे छे एटले असख्याता तिर्यंचो चडकोशिक सर्प, ममलीका विहारवाळी समळी, बळभद्रनो भक्त मृग तथा मेघकुमारना पूर्वभवी हाथी विगेरे जेओ जातिस्मरणथी श्रावकधर्मने प्राप्त थयेला होय ते आ पंक्तिमा आवे छे, बीजा आवता नथी ते विषे एवु वचन छे के " समकिती अने देशविरति जीवो पल्योपमना असख्यातमा भागे छे " पल्योपमना असख्याता भागमा जेटला समय होय छे तेटला देशविरति लभ्य थाय छे. तेनो असख्यातमो भाग ते सर्वविरति मनुष्यमय चोथी पंक्ति छे, कारण के उत्कृष्टा पदर कर्मभूमिमा बे हजार क्रोडथी नव हजार क्रोड सुधी ज मुनिवरो प्राप्त थाय छे, अधिक होता नथी.

आ चार पंक्तिओमा पहेली पंक्ति विना आगळनी त्रणे पंक्तिओ अति अल्प छे अने अनुक्रमे अल्पतम तेम ज दुर्लभ छे. सम्यक्त्ववाळा जीव चारे गतिओमा लभ्य थाय छे देशविरति तो तिर्यंच तथा मनुष्य बे गतिमा प्राप्त थाय छे अने सर्वविरति जीव तो एकली मनुष्यगतिमा ज मळे छे.

"आ प्रमाणे भगवतनी वाणी साभळीने भव्य जीवो विरति प्राप्त करवा प्रयत्न करे छे अने तेथी धन्य पुरुषो लोकोत्तर अने अक्षय एवी सिद्धिगतिने प्राप्त करे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्र्यधिकद्विशततमः प्रबधः ॥ २०३ ॥

व्याख्यान २०४ मुं

ग्रहण करेलु व्रत जीवना भेदे चार प्रकारे परिणमे छे

शालिकणसंबधोऽत्र, धार्यो व्रताभिलाषिभिः ।
भवेज्जीवविशेषेण, चतुर्द्धा व्रतविस्तर· ॥ १ ॥

भावार्थ·–

"...ी अभिलाषावाळा पुरुषोए शालिकणनो सबध हृदयमा धारवो, कारण के ...डे व्रतनो विस्तार चार प्रकारे परिणमे छे."

गीध विगेरे खेचर प्राणीओ पण बहुधा हिंसा करनारा होय छे. वळी थळचरादि सर्वने तेरा तो स्पष्ट ज छे एमनी हिंसादि जनित गति पण अशुभ थाय छे. कह्यु छे के' तथा विकलेंद्रिय मरयाना वपना आयुष्यवाळा तिर्यंच अने मनुष्यमा अवतरे छे

असंज्ञी जीव पहली नरक जाय छे, भुजपरिसर्प बीजी नरक सुधी जाय छे, त्रीजी नरक सुधी जाय छे, सिंह चोथी नरक सुधी जाय छे, उरपरिसर्प पाचमी सुधी जाय छे, स्त्री छट्ठी नरक सुधी जाय छे अने मनुष्य तथा मत्स्य सातमी नरक जाय छे एम क्रमे उत्कृष्टपण त्या सुधी जाय छे एवी रीते अनता जीवो पक्तिमा ज प्रवेश कर छे

मनुष्यमा भिल्ल, कसाई, माछी, कुभार तथा यवनादि अधर्मीओ तथा राजा, मंत्री प्रमुख उत्तम छता जैनधर्मथी विमुख होय तो अविरत ज छे.

तथा द्वीपायन विगेरे देवता धरेला छता हिंसादिक आश्रवना करनारा होवाथी अविरत छे देवताओ सुवर्णादिकना लोभनी बुद्धिथी असत्य बोले छे. अदत्त एवा पारका निधानप्रमुखना अधिष्ठायक थाय छे, मैथुनमा पारकी देवागनानी कामना राखे छे अने परिग्रहमा तो विमान विगेरेनी अपरिमित लक्ष्मी तेमनी मालेकीमा होय छे, तेथी देवता पण अवती छे

तेवी रीते परमते ईश्वर [शिव]ने जगतना सहारक कह्या छे, तेथी ते तेम ज कृष्ण, ब्रह्मा विगेरे पण आश्रवपरायण छ लौकिक ऋषिओ पण शाप, अनुग्रह अने स्त्री परनी आसक्ति विगेरथी अविरतिनी पक्तिमा ज आवे छे. विश्वामित्रने नह्मर्षि न कहेवाथी तेने क्रोध उत्पन्न थयो, तेथी तेणे वसिष्ठनी स्त्री अरुधतीने तथा तेना पुत्रोने मारी नाख्या, एम अन्यमतिना शास्त्रोमा कहल छे एवी रीते विषयी पाराशरे कामविह्वल थई दिवसे पण धुमर विकुर्वी मत्स्यगंधा नामनी माछीनी पुत्रीने सेवी हती, इत्यादि अनेक वृत्तात अन्यमतिओना ग्रथमाथी जाणी लेवा वळी अभव्य एवा तिर्यंच तथा मनुष्यो केटलाएक द्रव्यथी देशविरति तथा सर्वविरति लागे छे, पण त अविरति ज छे

नारकीना जीवो पण क्रोधे धमधम्या थका वैक्रियशक्तिवडे अनेक प्रकारना शस्त्रो विकुर्वी तेनाथी तमज वज्रतुड जीवो विगेरेथी परस्पर महावदना उत्पन्न करे छे तेओ पण अविरतिनी पक्तिमा ज आवे छे एवी रीते चराचर [त्रस ने थावर] जीवो घणे भाग प्रत्याख्यान वगरना ज होय छे, तथी सौथी मोटी पक्ति अविरति जीवोनी छे.

हवे बीजी पक्ति अविरत सम्यग्दृष्टि जीवोनी छे श्रेणिक राजा, सत्यकि तथा [कृष्ण]प्रमुख केटलाएक मनुष्यो, देवता तथा नारकीनो असख्यातमो भाग

अने तिर्यंचनो अनतमो भाग ए बधा अव्रती छे, तथापि तेमनो मिथ्यात्वदोष गयेलो होवाथी ते प्रथमना भेद करता बहु श्रेष्ठ छे. केटलाएक देवताओ के जेओ समकिती छे तेओ आ भेदमा आवे छे, तो पण पूर्वे कहेला जीवोथी आ पक्ति बहु अल्प छे.

उपर कहेला जीवो करता असख्यातमा भागना जीवो विरत अविरत एटले देशविरतिमय त्रीजी पक्तिमा छे आ पक्तिमा केटलाएक गर्भज मनुष्य तथा गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंचनो असख्यातमो भाग आवे छे एटले असख्याता तिर्यंचो चडकोशिक सर्प, मृमलीका विहारवाळी समळी, बळभद्रनो भक्त मृग तथा मेघकुमारना पूर्वभवी हाथी विगेरे जेओ जातिस्मरणथी श्रावकधर्मने प्राप्त थयेला होय ते आ पक्तिमा आवे छे, बीजा आवता नथी ते विषे एवु वचन छे के " समकिती अने देशविरति जीवो पल्योपमना असख्यातमा भागे छे " पल्योपमना असख्याता भागमा जेटला समय होय छे तेटला देशविरति लभ्य थाय छे तेनो असख्यातमो भाग ते सर्वविरति मनुष्यमय चोथी पक्ति छे, कारण के उत्कृष्टा पदर कर्मभूमिमा बे हजार क्रोडथी नव हजार क्रोड सुधी ज मुनिवरो प्राप्त थाय छे, अधिक होता नथी.

आ चार पक्तिओमा पहेली पक्ति विना आगळनी त्रणे पक्तिओ अति अल्प छे अने अनुक्रमे अल्पतम तेम ज दुर्लभ छे. सम्यक्त्ववाळा जीव चारे गतिओमा लभ्य थाय छे देशविरति तो तिर्यंच तथा मनुष्य बे गतिमा प्राप्त थाय छे अने सर्वविरति जीव तो एकली मनुष्यगतिमा ज मळे छे.

"आ प्रमाणे भगवतनी वाणी साभळीने भव्य जीवो विरति प्राप्त करवा प्रयत्न करे छे अने तेथी धन्य पुरुषो लोकोत्तर अने अक्षय एवी सिद्धिगतिने प्राप्त करे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ त्र्यधिकद्विशततमः प्रबधः ॥ २०३ ॥

व्याख्यान २०४ मुं

ग्रहण करेलु व्रत जीवना भेदे चार प्रकारे परिणमे छे

शालिकणसवधोऽत्र, धार्यो व्रताभिलाषिभिः ।
भवेज्जीवविशेषेण, चतुर्द्धा व्रतविस्तरः ॥ १ ॥

भावार्थ –

" व्रतनी अभिलाषावाळा पुरुषोए शालिकणनो सबध हृदयमा धारवो, कारण के जीवना विशेषवडे व्रतनो विस्तार चार प्रकारे परिणमे छे "

शालिना कण संबंधी प्रबंध

जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां मगध नामनो देश छे तेमां राजगृह नामनुं नगर छे ते नगरमां धन नामनो श्रेष्ठी वसे छे तेने धारणी नामे रूपवती स्त्री छे ते बुद्धिथी धनशेठने धनपाल, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित नामे च थया ते यौवनवयने पाम्या एटले तओने धन शेठे कोई धनाढ्यनी एकेक कन्या परणावी तेमां पहेलीनुं नाम उज्झिका, बीजीनुं नाम भक्षिका, त्रीजीनुं नाम रक्षिका अने चोथीनुं नाम रोहिणी हतुं. तेमनी साथे सुख भोगवता तेओ देवतानी जेम गतकाळने पण जाणता नहोता

एक वखते श्रेष्ठीए प्रात काले धर्मध्यान करी गृहचिंता करवा मांडी. तेने विचार थयो के 'आ चार पुत्रवधूमांथी मारा गृहनो निर्वाह कई वधू करशे? तेनो निर्णय करवा माटे हुं तेमनी परीक्षा करुं ' आवुं विचारी प्रात'कालनी क्रिया करी भोजन कर्या पछी पोताना वधुपुत्रादिकनी समक्ष ते चारे वधूओने बोलावी अने तेमने पांच पांच अखंड शालिकण आप्या अने ज्यारे हुं मागुं त्यारे पाछा आपवा कह्युं पहेली पुत्रवधू मंद बुद्धिवाळी हती तेणीए एकांतमां जइने चिंतव्युं के 'मारा ससरानी बुद्धि विपरीत थई लागे छे के जेथी तेणे सर्व जननी समक्ष मात्र पांच शालीना दाणा मारा हाथमां आप्या, माटे हुं तो तेने फेंकी दउं छुं मारे तेनुं शुं प्रयोजन छे? ज्यारे मागशे त्यारे हुं बीजा लावी आपीश ' आम विचारी तेणीए ते दाणा नाखी दीधा बीजी वधूए विचार्युं के 'ससराए आपेला आ दाणा शामाटे फेंकी देवा? ए तो हुं खाई जाउं. ज्यारे मागशे त्यारे बीजा लावी आपीश' आम विचारी ते खाई गई त्रीजीए विचार्युं के 'ससराए आ दाणा आप्या छे तेमां काइ प्रयोजन हशे, माटे ते राखी मूकुं ' आवुं चिंतवी तेणीए ते दाणा पोताना आभूषणना दाबडामां गोपवी राख्या अने प्रतिदिन ते तपासवा लागी चोथी बुद्धिशाळी वधूए एकांते जई विचार्युं के ' मारा ससरा बृहस्पति जेवा बुद्धिमान् छे तेमणे सर्व जननी समक्ष मने पांच शालिना दाणा आप्या छे तेमां काईक विशेष हेतु हशे, माटे हुं आ दाणानो वधारो करुं ' आ प्रमाणे हृदयमां विचारी तेणीए ते दाणा पोताना पियरमां भाइओ उपर मोकली दीधा अने संदेशो कहे वराव्यो के ' तमे आ दाणा तमारा मारा क्षेत्रमां घरना दाणानी जेम गणी जुदा वावजो ' तेनना स्नेहाथी भाईओए वर्षाकाळमां ते पांच दाणा सारी जग्याए वाव्या ते उगी नीकळ्या एटले तेमांथी एक प्रस्थ [बे शेर] जेटला दाणा प्रथम वर्षे थया. बीजे वर्षे आढक प्रमाण थया त्रीजे वर्षे द्रोण प्रमाण थया चोथे सो खारी [कळशी] अने पांचमे वर्षे लाख पाली [माणा] थया

पाच वर्ष वीती गया पछी एक दिवसे श्रेष्ठीए स्वजनोनी समक्ष चारे वधूओने बोलावी. प्रथम ज्येष्ठाने कह्यु–'मारा आपेला पाच शालिकण लावो ' तेणीए घरमाथी बीजा पाच शालिना दाणा लावीने आप्या ते जोई श्रेष्ठी बोल्या–' वत्से ! आ शालिना दाणा में आप्या हता ते नथी ' ते बोली–' तात ! ते तो में फेंकी दीधा हता. ' ते सामळी श्रेष्ठीए रोप करीने कह्यु–' आ पापी वधूए घणु अघटित काम कर्यु छे के मारा आपेला दाणा फेंकी दीधा छे, तेथी ए वहु तो घरनु वासीदु करनारी तथा छाणकचरो विगेरे फेंकी देवा सबधी कामने योग्य थाओ ' पछी शेठे बीजी वहु पासे शालिकण माग्या के ' वत्से ! तमने आपेला शालिकण लावो. ' ते बोली– ' पिताजी ! हु तो ते खाई गई छु ' श्रेष्ठी बोल्या–' आ स्त्री घरना रसोडानु काम करनारी थाओ. ' पछी त्रीजी वधू पासे माग्या, एटले तेणीए तत्काळ साचवी राखेला ते शालिकण लावीने आगळ धर्या श्रेष्ठीए कह्यु–' आ वहु घरमा धनधान्यनु रक्षण करनारी थाओ ' पछी श्रेष्ठीए चोथी वधूने कह्यु–' वत्से ! शालिकण लावो. ' ते बोली–' पिताजी ! गाडा लावी आपो एटले लावु ' श्रेष्ठीए कह्यु–' गाडानु शु काम छे ? ' वहु बोली–' मारा भाई पासे वावरावीने में ते शालिकण घणा वधार्या छे. ' पछी श्रेष्ठीए गाडा लावी आप्या एटले ते गाडा भरीने लावी. ते जोई सर्व लोकोनी समक्ष श्रेष्ठीए तेना वखाण करी तेने घरनी स्वामीनी बनावी अने कह्यु के ' जे आ वधूनी आज्ञा मानशे नहि तेनु मारे प्रयोजन नथी ' सर्वेए श्रेष्ठीनु ए वचन स्वीकार्यु. पछी श्रेष्ठी निश्चित थई धर्मकार्यमा सावधान थया.

हे शिष्यो ! आ कथानो भावार्थ सामळो. उपरोक्त कथामा जे राजगृह नगर कह्यु छे ते मनुष्यभव समजवो धनश्रेष्ठी ते गुरु समजवा चार वधू ते शिष्यो समजवा पांच शालिकण ते पांच महाव्रत समजवा. स्वजनवर्ग ते चतुर्विध सघ समजवो. शालिकणनु दान ते पंच महाव्रतनु आरोपण समजवु पहेली वहुए करेलो जे शालिकणनो त्याग ते महाव्रत पामीने तेनो त्याग समजवो एवी रीते पांच महाव्रतोनो त्याग करनार आ लोक अने परलोकमा दुःखी थाय छे बीजी वधू सरखा मुनि ते व्रत लईने मात्र आजीविका करनारा, तपस्या विगेरे न करनारा समजवा त्रीजी वधूए जेम शालिकण जाळवीने राखी मूक्या तेम मुनिए पच महाव्रतने अतिचारथी रहित राखवा जोइए, तेवा मुनि त्रीजी वधू समान समजवा अने चोथी रोहिणीए जेम शालिकण वधार्या तेम जे महाव्रत लइने गुणवृद्धि करे ते तेना सरखा शासनना धोरी समजवा ते विषे चार दृष्टात छे प्रथम स्त्रीनु दृष्टात कंडरीक मुनि छे, बीजीनु दृष्टात द्रुमक ऋषि अथवा आधुनिक वेषधारी मुनि छे, त्रीजीनु दृष्टात मनक मुनि छे अने चोथीनु दृष्टात गौतमादि महामुनिओ छे.

शालिना कण संबंधी प्रबंध

जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमा मगध नामनो देश छे तेमा राजगृह नामनु नगर छे ते नगरमा धन नामनो श्रेष्ठी वसे छे तेने धारणी नामे रूपवती स्त्री छे ते कुक्षिथी धनशेठने धनपाल, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित नामे चार पुत्रो थया ते यौवनवयने पाम्या एटले तओने धन शेठे कोई धनाढ्यनी एकेक कन्या परणावी तेमा पहेलीनु नाम उज्झिका, बीजीनु नाम भक्षिका, त्रीजीनु नाम रक्षिका अने चोथीनु नाम रोहिणी हतु. तेमनी साथे सुख भोगवता तेओ देवतानी जेम गतकालने पण जाणता नहोता

एक वखते श्रेष्ठीए प्रात काले धर्मध्यान करी गृहचिंता करवा मांडी. तेने विचार थयो के 'आ चार पुत्रवधूमाथी मारा गृहनो निर्वाह कई वधू करशे? तेनो निर्णय करवा माटे हु तेमनी परीक्षा करु' आवु विचारी प्रात'कालनी क्रिया करी भोजन कर्या पछी पोताना बंधुपुत्रादिकनी समक्ष ते चारे वधूओने बोलावी अने तेमने पाच पाच अखंड शालिकण आप्या अने ज्यारे हु मागु त्यारे पाछा आपवा कह्यु. पहेली पुत्रवधू मंद बुद्धिवाळी हती. तेणीए एकातमा जईने चिंतव्यु के 'मारा ससरानी बुद्धि विपरीत थई लागे छे के जेथी तेणे सर्व जननी समक्ष मात्र पाच शालीना दाणा मारा हाथमा आप्या, माटे हु तो तेने फेंकी दउ छु मारे तेनु शु प्रयोजन छे? ज्यारे मागशे त्यारे हु बीजा लावी आपीश' आम विचारी तेणीए ते दाणा नाखी दीधा बीजी वधूए विचार्यु के 'ससराए आपेला आ दाणा शामाटे फेंकी देवा? ए तो हु खाई जाउ ज्यारे मागशे त्यारे बीजा लावी आपीश' आम विचारी ते खाई गई त्रीजीए विचार्यु के 'ससराए आ दाणा आप्या छे तमा काइ प्रयोजन हशे, माटे ते राखी मूकु' आवु चिंतवी तेणीए ते दाणा पोताना आभूषणना दाबडामा गोपवी राख्या अने प्रतिदिन ते तपासवा लागी चोथी बुद्धिशाळी वधूए एकात जइ विचार्यु के 'मारा ससरा बृहस्पति जेवा बुद्धिमान् छे तेमणे सर्व जननी समक्ष मने पाच शालिना दाणा आप्या छे तेमा कांईक विशेष हेतु हशे; माटे हु आ दाणानो वधारो करु' आ प्रमाणे हृदयमा विचारी तेणीए ते दाणा पोताना पियरमा भाईओ उपर मोकली दीधा अने संदेशो कहेवराव्यो के 'तमे आ दाणा तमारा मारा क्षेत्रमा घरना दाणानी जेम गणी जुदा वावजो' बेनना स्नेहथी भाईओए वर्षाकाळमा ते पाच दाणा मारी जग्याए वाव्या ते ऊगी नीकळ्या एटले तेमाथी एक प्रस्थ [बे शेर] जेटला दाणा प्रथम वर्षे थया बीजे वर्षे आढक प्रमाण थया त्रीजे वर्षे द्रोण प्रमाण थया चोथे सो खारी [कुंडशी] अने पाचमे वर्षे लाख पाली [माणा] थया

परिणमनारूप शैलेशीकरण प्राप्त थाय छे ते अयोगीकेवळी नामना चौदमा गुणठाणे समुच्छिन्नक्रियारूप चोथु ध्यान प्राप्त थाय छे; जेमा सूक्ष्म काययोगनी क्रिया पण उच्छिन्न थई जाय छे. छेल्ला गुणस्थानना छेल्ला बे समयमाहेना पहेला समये पचाशी प्रकृतिनी सत्ता होय छे, तेमाथी ७२ खपता, अपात्य समये तेर प्रकृतिनी सत्ता होय छे अने अत्य समये कर्मसत्तारहित निष्कर्म थई ते ज समये लोकातने पामे छे ते अस्पर्शमान गतिवडे एक समयथी अधिक समयने स्पर्श्या वगर सिद्धिए जाय छे

अही शिष्य पूछे छे के 'गुरुमहाराज ! निष्कर्म आत्मावाळा सिद्धनी लोकात सुधी गति केवी रीते थाय ?' गुरु उत्तर आपे छे-'भद्र ! पूर्व प्रयोगथी गति थाय छे अचिंत्य एवा आत्माना वीर्यवडे उपात्यना बे समये पचाशी कर्मप्रकृतिनो क्षय करवाने माटे जे व्यापार पूर्वे प्रयुक्त करेल, तेना प्रयत्नथी सिद्धनी गति लोकात सुधी थाय छे. अहीं दृष्टात छे के जेम कुभारनु चक्र, हिंडोळो, बाण अने गोफणनो गोळो पूर्वना प्रयोगवळे गति करे छे तेम पूर्व प्रयोगना बळे सिद्धनी गति थाय छे, अथवा कर्म सगना अभावथी गति थाय छे जेम कोई तुबडा उपर मृत्तिकाना आठ लेप करेला होय ते लेप गया पछी तुबडानी ऊर्ध्व गति थाय छे, तेम कर्मरूप लेपना अभावथी सिद्धनी ऊर्ध्व गति थाय छे, अथवा बधमोक्षना कारणथी गति थाय छे जेम एरडाना फळनी अदर रहेला बीज विगेरेनी बध तूटवाथी ऊर्ध्व गति थाय छे तेम कर्मबधना छेदथी सिद्धनी ऊर्ध्व गति थाय छे, अथवा स्वभावना परिणामथी पण सिद्धात्मानी ऊर्ध्व गति थाय छे. जेम पाषाणनो स्वभाव नीचे पडवानो, वायुनो स्वभाव आडा जवानो अने अग्निनो स्वभाव ऊचे जवानो छे तेम आत्मानो स्वभाव ऊर्ध्व गति करवानो छे.

सिद्ध पोताना स्थानथी चलित थता नथी ते विषे स्पष्टीकरण करे छे-गौरवना (भारेपणाना) अभावथी सिद्ध नीचे पडे नहि, प्रेरक विना आडाअवळा जाय नहि अने धर्मास्तिकायना अभावथी लोक उपर पण चाल्या जाय नहि

हवे जीवनु सिद्धगतिमा गमन केवी रीते थाय ते कहे छे-सिद्धि विषे जता सयमी महात्मानो चेतनात्मा शरीररूप पाजरामाथी सर्व अगवडे नीकळी जाय छे ते विषे श्रीठाणांगसूत्रना पाचमा ठाणामा कह्यु छे के " जीवने नीकळवानो मार्ग पाच प्रकारे छे १ पगे करी, २ जघाए करी, ३ पेटे करी, ४ मस्तके करी अने ५ सर्वांगे करी-एम पाच मार्ग जीव नीकळे छे. जे जीव पगे नीकळे ते नारकी थाय, जघाए नीकळे ते तिर्यंच थाय, पेटे नीकळे त मनुष्य थाय, मस्तके नीकळे ते देवता थाय अने सर्वांगे नीकळे ते मोक्षे जाय छे "

जिनेश्वर भगवत निर्वाण पामे ते पछी देवतानु कृत्य कहे छे-' इद्र अवधिज्ञाने

"आ शालिकरणनो संबंध श्रीज्ञातासूत्रमां भगवंते कहेलो छे तेनी रचना सर्वधमां बराबर चितवी मनमां उतारवो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ चतुरधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २०४ ॥

व्याख्यान २०५ मुं

भगवतना निर्वाणकल्याणकने वर्णवे छे.

देशना विविधा दत्त्वा, निजायुः प्रांतदेशके ।
पुण्यक्षेत्रे जिनाः सर्वे, कुर्वंत्यनशनादिकम् ॥ १ ॥

भावार्थ –

" सर्वे जिनेश्वर भगवंत विविध प्रकारनी देशना आपी पोताना आयुष्यना अंत काळे पुण्यक्षेत्रमां जई अनशनादि करे छे "

अहीं अनशन एटले आहारनो त्याग समजवो आदि शब्दथी शुक्लध्यानना बे छेल्ला भेदनुं ध्यान करे एटले शुक्लध्याननो त्रीजो भेद सूक्ष्मक्रियाअनिवृत्ति नामे ध्यान जे योगनिरोधनुं निमित्त छे तेनुं ध्यान करे. छद्मस्थने ध्याने करीने मननी स्थिरता थाय छे अने केवळीने ध्यान शरीरनुं स्थैर्य करनार थाय छे केवळी भगवंत शुक्लध्यानना त्रीजा पायारूढ नरतमां पर्याप्तपणुं पामेला पर्याप्त संज्ञिजीवनो ते समयवर्ती जघन्य मनोयोग जेटला प्रमाणवाळो होय ते करता असंख्यातमा भाग जेटलो मनोयोग समय समये रुंधी असंख्यात समये सर्व मनोयोगने रुंधे छे तेम ज तरतमां पर्याप्तपणुं पामेला पर्याप्त बेइंद्रियने जेटला प्रमाणनो जघन्य वचनयोग होय तेना असंख्यातमा भाग जेटलो वचनयोग समये समये रुंधी असंख्यात समये सर्व वचनयोगने रुंधे छे. तथा आद्यसमयनिष्पन्न सूक्ष्म पनकनो आद्य समये जेटलो जघन्य काययोग होय छे तेना असंख्यातमा भाग जेटला काययोगने समये समये रुंधी देहना त्रीजा भागने छोडता असंख्याता समय सर्व काययोगने रुंधे छे एवी रीते शुक्लध्यानना त्रीजा भेदमा वर्तता योगनिरोध करी पांच ह्रस्व अक्षरना उच्चार प्रमाण आयुष्य बाकी रहे त्यारे पर्वतनी जेवी निश्चल कायावाळा केवळीने शुक्लध्याननो चोथो भेद

सूक्ष्म वनस्पतिकाय

शक्र इद्र प्रभुनी जमणी तरफनी उपरनी दाढा ग्रहण करे छे. चमरेंद्र जमणी
ी नीचेनी दाढा ग्रहण करे छे, कारण के तेओ ते दिशाना स्वामी छे. ईशान
ाबी तरफनी उपरनी दाढा ग्रहण करे छे अने बलि इद्र डाबी बाजुनी नीचेनी
ा स्वीकारे छे. बाकीना देवताओ तेमना अवशिष्ट अस्थिने ग्रहण करे छे.
ाएक देवताओ पोतानो आचार जाणीने ले छे अने केटलाएक भक्तियी तेम
छे. एनु माहात्म्य एवु छे के नवीन उत्पन्न थवाने लीधे सौधर्म अने ईशान इंद्रने
त माटे ज्यारे विवाद थाय छे त्यारे तेओ वच्चे मोटु युद्ध थई पडे छे; ते निवारवा
वृद्ध देवता आ जिनदष्ट्रानो अभिषेक करी ते जळवडे छाटा नाखे छे, एटले ते
शात थई जाय छे.

चितानी भस्म विद्याधर विगेरे ग्रहण करे छे, कारण के ते सर्व उपद्रवने निवार-
औषधरूप छे. वळी लोको ' हु पहेलो लउ, हु पहेलो लउ ' एम स्पर्धाथी ते ले
थी ते स्थाने मोटो खाडो पडी जाय छे. पछी प्रभुनी चिताने स्थाने बीजा
ना चरणस्पर्शथी आशातना न थाय ते माटे अने तेवडे तीर्थनी प्रवृत्ति
तेवा हेतुथी शक्र इद्र त्या चैत्यस्तूप रचावे छे. तेम ज गणधरो अने मुनिओनी
ने स्थाने पण इद्र बे स्तूप करावे छे.

एनी रीते चतुर्विध देवता प्रभुनो निर्वाणोत्सव करी नदीश्वरद्वीपे जई अट्ठाई उत्सव
पोतपोताना स्थानके जाय छे त्या ते प्रभुनी दाढाओने पोतपोतानी सुधर्मा
ा माणवक चैत्यस्तभने अवलबीने रहेला दाबडामा मूकी प्रतिदिन पूजे छे, तेम ज
आशातना थवाना भयथी देवताओ ते सुधर्मासभामा कामक्रीडा पण करता नथी.

हवे सिद्धने केवु सुख छे ते कहे छे–" अव्यय पदने प्राप्त थयेला सिद्धोने जे सुख छे
ा मनुष्योने के देवताओने नथी ते सुखना माधुर्यने जाणनार केवळी पण मूगो
जेम गोळ विगेरे मिष्ट पदार्थ खाधा छता तेनु माधुर्य कही शकतो नथी तेम
ही शकता नथी सिद्ध, बुद्ध, पारगत, परपरागत एवा मुक्त जीवो अनतो
त काळ सुखपूर्वक लीलामा व्यतीत करे छे. "

" अरूपी छता ... प्त करनारा, अनग छता अनग (काम) थी मुक्त
...ने अनत अक्षर ... र्ण, रस, गध, स्पर्शादिथी रहित थयेला तेम ज
... एवा ... अमे स्तवीए छीए "

प्रभुनो मोक्ष जाणी, त्या आवी, विधिपूर्वक मोक्षकल्याणकनो उत्सव भक्तिथी ज्यारे आसनकंपवडे इन्द्र प्रभुनो मोक्ष जाणे छे त्यारे प्रथम तो खेद सहित के 'अरे! जगत्पतिनु निर्वाण थयु!' पछी विचारे छे के 'हवे अमारे उत्सव करवो जोईए' आम विचारी पूर्वनी जेम पादुका छोडी त्या ज रहीने प्रभुने वादे छे. कयु छे के "इन्द्रो प्रभुना निर्जीव शरीरने पण वादे छे, तेथी सम्यग्दृष्टि जीवोने प्रभुनो द्रव्यनिक्षेपो पण वादवा योग्य छे"

पछी इन्द्र परिवार सहित प्रभुना निर्वाणस्थाने आवी अश्रुपूर्ण नेत्रवडे खेद तथा उत्साह रहित शोक करता सता प्रभुना शरीरने त्रण प्रदक्षिणा करी प्रभुने आ प्रमाणे कहे छे-"हे नाथ! अमे तमारा धर्मसेवक छीए, तो अमने तमे केम कम जोता नथी? आ अकस्मात् शु थयु? निरपराधी एवा अमारो त्याग करवो आपने योग्य नथी आ भरतक्षेत्रमा तमारा जेवा विश्वपतिने आम पण घटे छे के जेथी तमे अमने छोडी एकला अनत सुख भोगवशो? हे नाथ! रमणीय क्षेत्र तमारा विना रात्रे दीवा वगरना गृहनी जेम अने दिवसे सूर्य विनाना आकाशनी जेम शून्य लागे छे हे स्वामी! जो के तमे तो अनत सुखने भजनारा थया छो, पण अमे तो अमारा स्वार्थने माटे शोक करीए छीए"

आ प्रमाणे विलाप करीने पछी इन्द्र आभियोगिक देवताओनी पासे नदनवनमाथी गोशीर्षचदनना घणा काष्ठो मगावे छे देवताओ चदन काष्ठो लावीने ते वडे अर्हत माटे, गणधर माटे अने साधुओ माटे एम त्रण चिताओ रचे छे तेमा पूर्वदिशामा भगवतनी चिता वर्तुलाकार करे छे दक्षिण दिशामा गणधरोनी चिता त्रिकोणी करे छे अने पश्चिम दिशामा यतिओनी चिता चोरस करे छे पछी इन्द्र क्षीरसागरमाथी लावेला जळवडे प्रभुना देहने नवरावी, चदनवडे विलेपन करी, हसलक्षणवाळा वस्त्र पहेरावी, सर्व अलकारथी विभूषित करे छे बीजा देवताओ गणधरोना शरीरने अने मुनिओना शरीरने ते प्रमाणे नवरावीने पूजे छे. पछी इन्द्रना वचनथी देवताओ त्रण पालखीओ करे छे तेओमाथी एकमा शक्र इन्द्र पोते प्रभुना देहने स्थापे छे बीजा देवताओ गणधर तथा मुनिओना शरीरने बीजी बे शिबिकाओमा मूके छे पछी,इन्द्र तथा देवताओ ते त्रणे शिबिकाओ उपाडीने अनुक्रमे त्रण चिताओमा महोत्सव साथे मूके छे पछी शक्रनी आज्ञाथी अग्निकुमार देवता साश्रुनयने ते चितामा अग्नि मूके छे वायुकुमार देवो पोताना इन्द्रनी आज्ञाथी ते अग्निने प्रज्वलित करे छे बीजा देवताओ इन्द्रना वचनथी मध तथा घीना कुभनो अग्निने प्रदीप्त करवा माटे होम करे छे पछी ज्यारे शरीरने दग्ध करता अस्थि मात्र बाकी रहे छे त्यारे इन्द्रनी आज्ञाथी मेघकुमार देवता ते चिताने क्षीरसमुद्रादिकथी लावेला जळनी वृष्टिवडे बुझावे छे.

पछी शक्र इंद्र प्रभुनी जमणी तरफनी उपरनी दाढा ग्रहण करे छे. चमरद्र जमणी तरफनी नीचेनी दाढा ग्रहण करे छे, कारण के तेओ ते दिशाना स्वामी छे. ईशान इंद्र डाबी तरफनी उपरनी दाढा ग्रहण करे छे अने बलि इंद्र डाबी बाजुनी नीचेनी दाढाने स्वीकारे छे बाकीना देवताओ तेमना अवशिष्ट अस्थिने ग्रहण करे छे. केटलाएक देवताओ पोतानो आचार जाणीने ले छे अने केटलाएक भक्तिथी तेम करे छे. एनु माहात्म्य एवु छे के नवीन उत्पन्न थवाने लीधे सौधर्म अने ईशान इंद्रने विमान माटे ज्यारे विवाद थाय छे त्यारे तेओ वच्चे मोटु युद्ध थई पडे छे; ते निवारवा माटे वृद्ध देवता आ जिनदंष्ट्रानो अभिषेक करी ते जळवडे छांटा नाखे छे, एटले ते विग्रह शांत थई जाय छे

चितानी भस्म विद्याधर विगेरे ग्रहण करे छे, कारण के ते सर्व उपद्रवने निवारवाने औषधरूप छे वळी लोको 'हु पहेलो लउ, हु पहेलो लउ' एम स्पर्धाथी ते ले छे. तेथी ते स्थाने मोटो खाडो पडी जाय छे. पछी प्रभुनी चिताने स्थाने बीजा लोकोना चरणस्पर्शथी आशातना न थाय ते माटे अने तेरडे तीर्थनी प्रवृत्ति थाय तेवा हेतुथी शक्र इंद्र त्या चैत्यस्तूप रचावे छे. तेम ज गणधरो अने मुनिओनी चिताने स्थाने पण इंद्र ने स्तूप करावे छे.

एवी रीते चतुर्विध देवता प्रभुनो निर्वाणोत्सव करी नंदीश्वरद्वीपे जई अट्ठाई उत्सव करी पोतपोताना स्थानके जाय छे त्या ते प्रभुनी दाढाओने पोतपोतानी सुधर्मा सभामा माणवक चैत्यस्तभने अवलबीने रहेला दाबडामा मूकी प्रतिदिन पूजे छे, तेम ज तेनी आशातना थवाना भयथी देवताओ ते सुधर्मासभामा कामक्रीडा पण करता नथी.

हवे सिद्धने केवु सुख छे ते कहे छे-" अव्यय पदने प्राप्त थयेला सिद्धोने जे सुख छे ते सुख मनुष्योने के देवताओने नथी ते सुखना माधुर्यने जाणनार केवळी पण मूगो माणस जेम गोळ विगेरे मिष्ट पदार्थ खाधा छता तेनु माधुर्य कही शकतो नथी तेम तेने कही शकता नथी सिद्ध, बुद्ध, पारगत, परपरागत एवा मुक्त जीवो अनतो अनागत काळ सुखपूर्वक लीलामा व्यतीत करे छे."

"अरूपी छता उत्कृष्ट रूपने प्राप्त करनारा, अनग छता अनग(काम)थी मुक्त थयेला अने अनत अक्षर छता अशेष वर्ण, रस, गध, स्पर्शादिथी रहित थयेला तेम ज वचनने अगोचर एवा सिद्धना जीवोने अमे स्तवीए छीए"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ पचाधिकद्विशततमः प्रबधः ॥ २०५ ॥

व्याख्यान २०६ मुं

काळनुं स्वरूप

अवसर्पिण्युत्सर्पिण्यो, स्वरूपं जिननायकैः ।
यथा प्रोक्तं तथा वाच्यं, भव्यानां पुरतो मुदा ॥ १ ॥

भावार्थ.—

" जिनेश्वर भगवंते अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी काळनुं स्वरूप जेवुं कहेलुं छे तेवुं भव्यजनोनी आगळ हर्षथी कहेवामां आवे छे."

काळनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे–अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी मळीने एक कालचक्र थाय छे. ते काळचक्रमां बार आरा होय छे. तेमां पहेला आरानी आदिमां–पृथ्वी उपर प्रथम प्रवर्तेला कालचक्रना अगियारमा आराने प्रांते जुदा जुदा सात सात दिवस सुधी विद्युत् अने विषादिकनी थयेली वर्षाथी तृण अने अन्नादिकनो नाश थयेलो होय छे अने मनुष्यो रथना मार्ग जेटला विस्तारवाळी, घणा मत्स्यथी आकुळ एवी गंगा तथा सिंधु नदीना किनारा पर रहेला वैताढ्यगिरिनी बने बाजु आवेला नव नव बील मळी कुल बोतेर बहु रोगादिकथी व्याप्त एवा बीलमां वसेला होय छे. तेओ मांसाहारी होवाथी प्राये दुर्गतिगामी, निर्लज्ज, नग्न, दुर्भाषी, कुळधर्मरहित, क्रूरकर्मा, सोळ वर्षना आयुष्यवाळा अने एक हाथना शरीरवाळा होय छे. स्त्रीओ पण छ वर्षनी वये गर्भ धारण करनारी, घणा संतानवाळी अने दुःखे प्रसवनारी थाय छे. उत्सर्पिणीना पहेला आरामां हळवे हळवे ते बीलमांथी मनुष्यो बहार नीकळे छे. एम काळ निर्गमन थतां उत्सर्पिणीना पहेला आराने अंते पुष्करसंवर्त, क्षीररस, घृतरस, अमृतरस अने सरस नामे पांच जातिना मेघ जुदा जुदा सात सात दिवस वरसे छे, तेथी पृथ्वी सर्व प्रकारना धान्यादिना रसवाळी थाय छे. उत्सर्पिणीना प्रारंभथी माणसोना देह तथा आयुष्य धीमे धीमे वधवा मांडे छे, ते त्यांसुधी वधे छे के पहेला आराने प्रांते तेमना शरीर बे हाथना प्रमाणवाळा अने आयुष्य वीश वर्षनुं थाय छे.

एवी रीते एकवीश हजार वर्षनो पहेलो दुःषमदुःषम नामनो आरो वीत्या पछी बीजो दुःषम आरानो आरंभ थाय छे. तेना प्रारंभमां तो मनुष्यना शरीर बे हाथना अने आयुष्य वीश वर्षनुं होय छे, पण ते हळवे हळवे वृद्धि पामतां बीजा आराना प्रांत भागे माणसना शरीर सात हाथ प्रमाण अने आयुष्य एकसो वीश वर्षनुं थाय छे. बीजा आरामां जातिस्मरणथी नगर वसाववा विगेरे सर्व मर्यादाना करनारा सात कुलकरो थाय छे.

एवी रीते एकवीश हजार वर्ष प्रमाण बीजो दुषम नामनो आरो व्यतीत थया पछी दुषमसुषम नामना त्रीजा आरानो आरंभ थाय छे. ते त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाडीआ व्यतीत थया पछी पहेला तीर्थंकर सात हाथनी कायावाळा अने बोंतेर वर्षना आयुष्यवाळा थाय छे. ते सर्व प्रकारना रूपातिशयवंत अने सुवर्ण जेवी कांतिवाळा वीरप्रभु जेम कुंडग्राममा उत्पन्न थया हता तेवा थाय छे. अहीं नगरनु नाम वर्तमान चोवीशीना चरम तीर्थंकरने आश्रीने कहेलु छे, बाकी तेनी नगरीनु नाम तो अन्य पण होय छे. दीवालीकल्पमां पद्मनाभ जिननी उत्पत्तिनु स्थान शतद्वार नामे नगर कहेलु छे. एवी रीते आगळ बीजा तीर्थंकरो माटे पण जाणी लेवु. ते जिनेश्वर पांचमा कल्याणके मुक्ति पाम्या पछी अमुक अंतरे बीजा तीर्थंकर नव हाथना शरीरवाळा, नील वैडूर्य मणि जेवा शरीरना वर्णने धरनारा अने सो वर्षना आयुष्यवाळा थाय छे. ते प्रभु पहेला तीर्थंकरनी उत्पत्तिना समयथी बसो ने पचाश वर्ष जतां जाणे शांतरसनी मूर्ति होय तेवा उत्पन्न थाय छे. ते प्रभु पण वाराणसी नगरीमा पार्श्व प्रभुए तीर्थ प्रवर्ताव्यु हतु तेम तीर्थ प्रवर्तावी अनुक्रमे मोक्षे गया पछी केटलोक काळ जतां सात धनुषनी कायावाळा, सातसो वर्षना आयुष्यवाळा अने सुवर्णना जेवी कांतिवाळा प्रथम चक्रवर्ती कांपिल्य नगरमा ब्रह्मदत्त चक्री थया हता तेवा उत्पन्न थाय छे. तेओ भरतक्षेत्रना छ खंडने साधे छे, नव महानिधि अने चौद रत्नोना स्वामी थाय छे. पचीश हजार यक्षो तेने सेवे छे, ६४००० स्त्रीओ अने एक लाख ने अठ्यावीश हजार वारांगनाओ तेने आनंद आपे छे अने छन्नु कोटि गामना अधिपति होय छे. तेमना मरण पाम्या पछी बीजा तीर्थंकरना जन्मथी त्राशी हजार ने साडासातसो वर्ष वीत्या पछी त्रीजा तीर्थंकर शौर्यपुरमा उत्पन्न थाय छे तेओ एक हजार वर्षना आयुष्यवाळा, दश धनुष्यनी कायावाळा अने श्याम कांतिवाळा होय छे ए समये पहेला वासुदेव उद्भवे छे. तेओ चक्रथी वैताढ्यगिरि पर्यंत त्रिखंड पृथ्वीने साधे छे. ते अर्धचक्री प्रतिवासुदेवना चक्रवडे ज तेनो अंत करे छे सोळ हजार मुगटबद्ध राजाओ तेमना चरणने नमे छे. ज्यारे ते गर्भमा आवे छे त्यारे तेनी माता सात स्वप्न जुए छे. ते वासुदेव चक्र विगेरे सात रत्नोना अधिपति, एक हजार वर्षना आयुष्यवाळा, पीतांबरधारी, ध्वजमा गरुडना चिह्नवाळा, श्याममूर्ति अने दश धनुष्यनी कायावाळा होय छे तेना ज्येष्ठ बंधु बलदेव होय छे ते उज्ज्वलवर्णी कायावाळा, गर्भमा आवे त्यारे चार स्वप्नथी सूचित थनारा, नील वस्त्र धरनारा, ध्वजामा तालवृक्षना चिह्नवाळा, हलमुशलादि शस्त्रने धारण करनारा, बारसो वर्षना आयुष्यवाळा, मृत्यु पामीने स्वर्ग के मोक्षे जनारा अने पोताना अनुज बंधु साथे परम स्नेहाकुळ एवा उत्पन्न थाय छे. ते समये प्रथम नारदमुनि पण थाय छे. जे घणा कलहप्रिय, आकाशगामी विद्यावाळा, ...

विगेरेथी पूजासत्कार मेळवनारा अने स्त्रीशीलवाळा होय छे ते संयमे तथा . . करीने ते ज भव मोक्षगामी थाय छे एवी रीते त्रीजा तीर्थंकरना वारामां चार पुरुषो थाय छे.

त्रीजा जिन मुक्ति पाम्या पछी कटलोक काळ व्यतीत थतां राजगृह त्रीजा चक्रवर्ती उत्पन्न थाय छे तेनी सुवर्ण जेवी कांति, चार धनुषनी काया अने हजार वर्षनुं आयुष्य होय छे तेना सर्व वैभवनो विस्तार पहेला चक्रवर्ती जेवो होय छे

त्रीजा तीर्थंकरना जन्मथी पांच लाख वर्ष वीत्या पछी चोथा तीर्थंकर थइ मिथिलापुरीने पवित्र करे छे तेमनुं आयुष्य दश हजार वर्षनुं, काया पंदर धनुष्यनी अने देहनो वर्ण सुवर्णना जेवो होय छे ए अवसरे कांपिल्यपुरमां त्रीजा चक्रवर्ती थाय छे तेनो वैभव विगेरे सर्व पहेला चक्रवर्ती प्रमाणे होय छे एवी रीते आगळ थनारा चक्रवर्तीओ माटे पण समजी लेवुं ते चक्रवर्तीओनी गति आश्रीने एम समजवुं के जे परिग्रहनी अत्यंत आसक्तिथी अंत अवस्था सुधी चक्रवर्तीपणुं छोडता नथी ते मरण पामीने अवश्य अधोगतिमां (नरके) जाय छे अने जेओ धर्मदेवपणुं अंगीकार करे छे एटले के चारित्रधर्मने आचरे छे तेओ अवश्य स्वर्ग के मोक्षमांथी एक गतिने पामे छे.

चोथा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी कटलोक काळ जतां बीजा प्रतिवासुदेव, वासुदेव, बलदेव तथा नारदमुनि थाय छे तेमनो वैभव तथा मृत्यु पछीनी गति विगेरे पूर्ववत् जाणी लेवा सर्वे अर्धचक्री (वासुदेव) पूर्व जन्मे उपार्जन करेल सुकृतमां नियाणुं करवाथी तेवी संपत्ति प्राप्त करी मृत्यु पछी नरके जाय छे प्रतिवासुदेव पण ते ज रीते नरके जाय छे अने बलदेव पूर्वभवे नियाणा विना धर्मविधान करवाथी समृद्धिना विस्तारने संपादन करी संयम लइ ऊर्ध्व गतिमां ज जाय छे सर्व नारद प्रांते शुद्ध चारित्र लई मोक्षे ज जाय छे. (आनो निरधार अन्यत्र कहेल नथी)

उपर कहेला बीजा अर्धचक्रीनुं शरीर सोळ धनुष्य प्रमाण होय छे अने आयुष्य चार हजार वर्ष प्रमाण होय छे अने बलदेवनुं आयुष्य पंदर हजार वर्षनुं होय छे

ए चार पुरुषो कीर्तिशेष थया पछी चोथा तीर्थंकरना जन्मथी छ लाख वर्ष वीतता राजगृह नगरमां पांचमा तीर्थंकर थाय छे तेओ श्याम कांतिवाळा, त्रीश हजार वर्षना आयुष्यवाळा अने वीश धनुष्यनी कायावाळा होय छे. ते अवसरे वाराणसी नगरीमां वीश धनुष्यनी कायावाळा अने त्रीश हजार वर्षना आयुष्यवाळा चोथा चक्रवर्ती थाय छे

पांचमा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी तेमनी उत्पत्तिना समयथी चोपन लाख वर्ष व्यतीत

थता छठ्ठा तीर्थंकर मिथिलानगरीमा उत्पन्न थाय छे. तेमनी काया पचवीश धनुष्यनी, आयुष्य पचावन हजार वर्षनु अने शरीरनी काति मरकत मणिना जेवी होय छे. ते पण प्रथमना पाच प्रभुनी जेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्यरूप अनत चतुष्टयने प्राप्त कर्या पछी एटले निर्वाण पाम्या पछी केटलोक काळ जता त्रीजा वासुदेवादि चार पुरुषो उद्भवे छे तेमनु सर्व स्वरूप पूर्वनी जेम जाणी लेवु. विशेष एटलु के ते त्रीजा वासुदेवनु शरीर छवीश धनुष्य प्रमाण ने आयुष्य छप्पन्न हजार वर्षनु होय छे अने बलरामनु आयुष्य पासठ हजार वर्षनु होय छे ते चार पुरुषो व्यतीत थया पछी केटलोक काळ जता पाचमा चक्रवर्ती हस्तिनापुरमा उत्पन्न थाय छे. तेना शरीरनु प्रमाण अठ्यावीश धनुष्यनु अने आयुष्य साठ हजार वर्षनु होय छे. ते पाचमा चक्रवर्ती थया पछी केटलोक काळ व्यतीत थता चोथा बलदेवादि चार पुरुषो थाय छे, तेमनु स्वरूप पूर्व प्रमाणे जाणवु विशेष एटलु के चोथा अर्धचक्रीना शरीरनु प्रमाण ओगणत्रीश धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण पासठ हजार वर्षनु होय छे बलदेवना आयुष्यनु मान पचाशी हजार वर्षनु होय छे.

ते चार पुरुष काळ करी गया पछी छठ्ठा तीर्थंकरना जन्मथी एक हजार कोटी वर्ष व्यतीत थता दिल्ही नगरमा सुवर्णवर्णी सातमा तीर्थंकर उद्भवे छे. ते अवसरे ते ज नगरमा चक्रवर्तीनो पण प्रसव थाय छे. ते चक्रवर्ती अने भगवतना शरीरनु प्रमाण त्रीश धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण चोराशी हजार वर्षनु होय छे.

ते सातमा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी तेमना जन्मथी एक हजार क्रोड वर्षे न्यून पल्योपमना चोथा भाग जेटलो काळ व्यतीत थता आठमा तीर्थंकर हस्तिनापुरने पोताना अवतारथी पवित्र करे छे. तेमना शरीरनु प्रमाण पात्रीश धनुष्यनु, आयुष्यनु प्रमाण पचाणु हजार वर्षनु अने शरीरनी काति सुवर्ण जेवी होय छे ते अवसरे ते ज नगरमा सातमा चक्रवर्ती पण थाय छे तेमना शरीर तथा आयुष्यनु प्रमाण ते समयना तीर्थंकर जेटलु होय छे.

आठमा तीर्थंकर मोक्षे गया पछी तेमना जन्मथी अर्धपल्योपम समय व्यतीत थता ते ज नगरमा नवमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. ते ज समये ते ज नगरमा आठमा चक्रवर्ती पण उत्पन्न थाय छे ते बनेना शरीरनु प्रमाण चाळीश धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण एक लाख वर्षनु होय छे तेओ निवृत्ति पाम्या पछी केटलोक काळ जता हस्तिनापुरमा नवमा चक्रवर्ती थाय छे तेमना शरीरनु मान साडीएकताळीश धनुष्यनु अने आयुष्यनु मान त्रण लाख वर्षनु होय छे, ते नवमा चक्रवर्ती कथाशेष थया पछी केटलोक समय जता सावत्थी नगरीमा दशमा चक्रवर्ती उत्पन्न थाय छे.

तेना शरीरनु मान साडीबेंताळीश धनुष्यनु अने आयुष्यनु मान पांच लाख वर्षनु होय छे

दशमा चक्रवर्ती थई गया पछी रत्नपुर नगरमा सुवर्ण कांतिवाळा दशमा तीर्थंकर नवमा तीर्थंकरना जन्मथी पोणा पल्योपम न्यून त्रण सागरोपमे थाय छे तेमना शरीरनु प्रमाण पीस्ताळीश धनुष्यनु, आयुष्यनु प्रमाण दश लाख वर्षनु होय छे. ते समये बलदेवादि चार प्रधान पुरुष अवतरे छे तमनु स्वरूप पूर्वनी जेम जाणी लेवु विशेष एटलु के पांचमा वासुदेवना आयुष्य तथा शरीरनुं मान ते समयना जिनना जेटलु जाणवु अने बलदेवना आयुष्यनु प्रमाण त्रीश लाख वर्षनु जाणवु

दशमा तीर्थंकर मुक्तिरूप पतिव्रताना स्वामी थया पछी तमना जन्मथी चार सागरोपम जेटलो समय वीत्या बाद अयोध्या नगरीमा अगियारमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे तेमना शरीरनी कांति सुवर्णना जेवी होय छे, शरीरनु प्रमाण पचास धनुष्यनु होय छे अने आयुष्यनु प्रमाण त्रीश लाख वर्षनु होय छे एमना समयमा छठा बलदेव विगेरे चार पुरुषो उद्भवे छे तेमा अर्धचक्रीना शरीर ने आयुनु प्रमाण ते समयना जिननी जेटलु समजवु अने बलदेवनु आयुष्य पचासन लाख वर्षनु जाणवु

अगियारमा तीर्थंकर पोताना आत्मस्वरूपने प्राप्त थया पछी तेमना जन्मथी नव सागरोपम प्रमाण काळ वीत्या बाद कपिलपुरमा बारमा तीर्थंकर उद्भवे छे तेमना शरीरनु प्रमाण साठ धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण साठ लाख वर्षनु होय छे ए समये सातमा बलदेवादि चार पुरुष उत्पन्न थाय छे तेमनु सर्व स्वरूप पूर्वनी जेम जाणी लेवु विशेष एटलु के सातमा अर्धचक्रीना शरीरने आयुनु प्रमाण ते समयना जिनना जेटलु अने बळदेवना आयुष्यनु प्रमाण पासठ लाख वर्षनु जाणवु

बारमा जिनेश्वर मुक्ति पाम्या पछी तेमना जन्मथी त्रीश सागरोपम गया पछी तेरमा तीर्थंकर चंपानगरीमा उत्पन्न थाय छे एमनु शरीर सितेर धनुष्यनु अने आयु बोंतेर लाख वर्षनु होय छे देहनो वण सुवर्ण समान होय छे तेमना समयमा आठमा बळदेवादि चार पुरुषो प्रगटे छे तेमा वासुदेवना आयुष्य तथा शरीरनु प्रमाण ते काळना जिननी जेटलु होय छे अने बलदेवना आयुष्यनु प्रमाण पचोतेर लाख वर्षनु होय छे

तेरमा तीर्थंकर महानंदपदनी महर्द्धिने प्राप्त थया पछी तेमना जन्मथी चोपन सागरोपम जेटलो समय व्यतीत थता सिंहपुरमा चौदमा तीर्थंकर उद्भवे छे तेमना शरीरनी शोभा सुवर्णनी समान हसी काढे तेवी होय छे तेमना आयुष्यनु प्रमाण चोराशी लाख वर्षनु होय छ अने शरीरनु प्रमाण एंशी धनुष्यनु होय छे ए अवसर नवमा बलदेव विगेर चार श्रेष्ठ नरो उत्पन्न थाय छे. तेमा अर्धचक्रीना शरीर तथा

आयुष्यनु प्रमाण ते समयना तीर्थंकरना जेटलु होय छे अने तेना अग्रज बधुना आयुष्यनु प्रमाण पचाशी लाख वर्षनु होय छे

चौदमा तीर्थंकर मुक्तिरूप नवोढाने आलिंगन करनारूप अति रमणीय सुखने प्राप्त कर्या पछी तेमना जन्मथी छासठ लाख ने छत्रीश हजार वर्षे अधिक एवा सो सागरोपमे न्यून एक कोटी सागरोपमनो काळ वीत्या पछी पदरमा तीर्थंकर भद्दिल-पुरमा अवतरे छे. तेमना आयुष्यनु प्रमाण एक लाख पूर्वनु, शरीरनु प्रमाण नेवु धनुष्यनु अने शरीरनी काति सुवर्णना जेवी होय छे

छ जीवनिकायना स्वामी एवा ते प्रभु शिवपदने पाम्या पछी नव कोटी सागरोपम काळ व्यतीत थता सोळमा तीर्थंकर काकदी नगरीमा उत्पन्न थाय छे. तेमना शरीरनो वर्ण चद्र जेवो, कायानु प्रमाण सो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण बे लाख पूर्वनु होय छे.

ते बोधिबीजदायक प्रभु मुक्ति पामता तेमना जन्मथी नेवु क्रोड सागरोपम काळ जता चद्रपुरीमा सत्तरमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे तेमनु आयुष्य दश लाख पूर्वनु, शरीर मूर्तिमान चद्र जेवु अने शरीरनु प्रमाण दोढसो धनुष्यनु होय छे.

ते भगवत तीर्थने प्रवर्तावी कर्ममलने दूर करी महानदपदने प्राप्त थता, तेमनी उत्पत्तिना समयथी नवमो कोटि सागरोपमप्रमाण काळ जता वाराणसी नगरीमा अढारमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे ते सुवर्णवर्णी प्रभुना आयुष्यनु प्रमाण वीश लाख पूर्वनु अने कायानु प्रमाण बसो धनुष्यनु होय छे.

ते प्रभु पण सूर्यनी जेम यथार्थ मोक्षमार्गनो प्रकाश करी शिवसुखने प्राप्त थता तेमनी पछी नव हजार क्रोड सागरोपम व्यतीत थता, कौशाबी नगरीमा ओगणीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे तेमना शरीरनु प्रमाण अढीसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण त्रीश लाख पूर्वनु होय छे

सर्व पृथ्वीमडलने प्रबोध आपीने ते प्रभु सिद्धिरूप महेलनु सुख सपादन करता तेमनी पछी नेवु हजार क्रोड सागरोपम काळ व्यतीत थता, वीशमा तीर्थंकर अवतरी कोशला नगरीने पवित्र करे छे ते जगत्वत्सल अने सुवर्णवर्णी प्रभुना शरीरनु मान त्रणसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण चालीश लाख पूर्वनु होय छे

ते त्रिकालवेत्ता अने केवलज्ञानवडे सर्व मूर्त अमूर्त पदार्थने प्रकाशित करनारा प्रभु मुक्तिपुरीना पति थता ते पछी नव लाख कोटि सागरोपमनो काळ जता, विनीतानगरीमा मोटा राजाना कुळमा एकवीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे. अज्ञान-

रूप अधकारनो नाश करवामा सूर्यरूप एवा ते प्रभुना शरीरनु प्रमाण साडाबारसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण पचास लाख पूर्वनु होय छे देह सुवर्णवर्णी होय छे

ए प्रभु पण ज्ञानादि त्रण रत्नना दानथी अनेक भव्यजनने उपकार करी सिद्धिपदने पाम्या पछी दश लाख कोटि सागरोपम काळ जता, श्रावस्ती नगरीमा सुवर्ण समान कांतिवाळा बावीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे तेमना शरीरनु प्रमाण चारसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण साठ लाख पूर्वनु होय छे

ते प्रभु पण जन्ममृत्युनो उच्छेद करी मुक्तिने प्राप्त थता तेमना जन्मथी त्रीश लाख कोटि सागरोपमनो समय वीत्या पछी, अयोध्या नगरीमा सुवर्ण समान कांतिवाळा त्रेवीशमा तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे तेमना शरीरनु प्रमाण साडा चारसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण बोतेर लाख पूर्वनु होय छे ते समयमा अगियारमा चक्रवर्ती तेज नगरीमा अवतरे छे तेमना देह तथा आयुष्यनु प्रमाण ते समयना जिन जेटलु होय छे

अजितनाथ समान ए प्रभु सर्व भवप्रपचने दूर करी मोक्षे जता तेमनी उत्पत्तिना समयथी पचास लाख कोटि सागरोपमनो समय वीत्या पछी दुषमसुषमा नामे त्रीजो आरो समाप्त थाय छे ए आरामा त्रेवीश तीर्थंकरो, अगियार चक्रवर्तीओ अने छवीश प्रतिवासुदेव विगेरे कुल सीत्तेर (नव नारद सहित) उत्तम पुरुषो उत्सर्पिणी नामना कालचक्रना दळमा उत्पन्न थाय छे आ त्रीजा आराना प्रारंभ समये मनुष्यनु आयुष्य एक सो वीश वर्षनु होय छे, ते वधतु वधतु छे के त्रीजा आराने प्राते क्रोड पूर्वनु आयुष्य थाय छे आ त्रीजा आरानु प्रमाण बेंतालीश हजार वर्षे ऊणा एक कोटाकोटि सागरोपमनु पूज्यपुरुषोए कहलु छे

" दुषमसुषमा नामे त्रीजा आरामा उत्सर्पिणीने विषे त्रेवीश तीर्थंकरो थशे तेओ सदा सर्वने उत्तम लक्ष्मीना आपनारा थाओ "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ षडधिकद्विशततम प्रबध. ॥ २०६ ॥

व्याख्यान २०७ मुं

भावी चोथा आरानु स्वरूप कहे छे

सुषमदुषमासज्ञ', तुर्यारको निगद्यते ।
नाभेयसंनिभो भावी, चतुर्विंशतमो जिन ॥ १ ॥

भावार्थः–

"उत्सर्पिणीमा सुषमदुषमा नामे चोथो आरो कहेवाय छे. तेमा श्रीऋषभदेव जेवा चोवीशमा तीर्थंकर थशे."

उत्सर्पिणीना चोथा आराना साडाआठ मासे अधिक त्रण वर्ष वीत्या पछी सुवर्णवर्णी चोवीशमा तीर्थंकर विनीता नगरीने अलंकृत करशे. तेमना शरीरनु मान पांचसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु मान चोराशी लाख पूर्वनु होय छे. त्रण जगतना लोकने पूजवा योग्य एवा ए प्रभुना वारामा बारमा चक्रवर्ती थाय छे तेमना शरीर तथा आयुष्यनु प्रमाण जिनेश्वर भगवतना जेटलु ज होय छे. ए प्रभु मुक्तिरूपी स्त्रीना भर्ता थया पछी तेमनी पट्टपरपराए श्रीजिनप्रवचनना तत्त्वविचारने करनारा श्रीयुगप्रधान मुनिपति घणा समय सुधी आ भरतखडना भूमडळने पवित्र करशे. पछी हळवे हळवे सुखी समय वृद्धि पामता युगलीआ मनुष्य उत्पन्न थवानो समय नजीक आववाने लीधे सुखना प्रचुरपणाथी प्रथम साधुसततिनो उच्छेद थई छेवटे तीर्थनो पण उच्छेद थशे युगलीआ मनुष्यना समयमा अग्निनो पण अभाव थाय छे ते साथे स्वामी, सेवक, वर्ण, व्यापार अने नगरादिकनी व्यवस्था पण उच्छेद पामे छे.

युगलीआनु स्वरूप श्रीप्रश्नव्याकरण सूत्रमा चोथा आश्रवद्वारने विषे वर्णवेलु छे. त्या लखे छे के "ते काळमा भोगसुख घणु होवा छता अने तेने भोगविषय कर्या छता पण युगलीआ जीवो तृप्ति पाम्या वगर ज काळधर्मना ग्रास थई पडे छे" देवकुरु तथा उत्तरकुरु क्षेत्रना युगलीआ सबधी वर्णन करता लखे छे के "देवकुरु तथा उत्तरकुरु क्षेत्रमा युगलीआओ वनमा विचरे छे, पगे चाले छे, तेओ भोगीमा श्रेष्ठ होय छे, भोगना लक्षणने धरनारा होय छे, तेमना रूप वर्णन करवा योग्य अने चद्रनी जेम निरखवा योग्य होय छे अने तेओ सर्व अगमा सुदर होय छे" इत्यादि पाठ त्याथी जोई लेवो

वळी ते युगलीआ [स्त्रीओ अने पुरुषो] आद्य सहनन तथा आद्य सस्थानवाळा होय छे. तेमना अग उपागना भाग कातिवडे प्रकाशित होय छे तेमना श्वासमा कमळ जेवी सुगध होय छे तेमना गुह्य भाग उत्तम अश्वनी पेठे गुप्त होय छे तेओने क्रोध, लोभादि कषाय अत्यत पातळा होय छे मणिमौक्तिकादिक पदार्थो तथा हाथी, घोडा विगेरे छता तेना उपभोगथी पराङ्मुख होय छे वळी ज्वर विगेरे रोग, ग्रह, भूत, मारी अने व्यसनथी वर्जित होय छे. तेमनामा स्वामीसेवकभाव न होवाथी तेओ बधा अहमिंद्र होय छे तेमना क्षेत्रमा वाव्या सिवाय स्वभावे ज जातिवत शालि विगेरे धान्य पुष्कळ थाय छे, पण ते तेमना भोगमा आवता नथी. ते क्षेत्रमा पृथ्वी

साकरथी पण अनंतगणा माधुर्यवाळी होय छे तेओ कल्पवृक्षना पुष्पफळनु आस्वादन करे छे ते चक्रवर्तीना भोजनथी पण अत्यंत अधिक माधुर्यवाळु होय छे. तेओ पृथ्वीनो तेम ज कल्पवृक्षना फळादिकनो तथाप्रकारनो आहार ग्रहण करीने प्रासादाना आकारवाळा जे गृहाकारकल्पवृक्षो होय छे तेने विषे सुखे करीने रहे छे तेमने खान, पान, भ्रमण विगेरे दश प्रकारना कल्पवृक्षोथी प्राप्त थया करे छे त्या डाम, जू माकड अने मक्षिका विगेरे देहने उपद्रव करनारा जंतुओ उत्पन्न ज थता नथी व्याघ्रसिंहादि हिंसक पशुओ त्या हिंस्यहिंसकभावे वर्तता नथी. ते क्षेत्रमा घोडा, हाथी विगेरे चोपगा प्राणी, घो विगेरे भुजपरिसर्प, सर्प विगेरे उरपरिसर्प तथा चकोर, हंस विगेरे पक्षीओ-सर्वे युगलीआरूपे ज थाय छे' आ बधा जुगलीआओ मरण पामीने पोताना आयुष्य जेटला आयुष्यवाळा अथवा ओछा आयुष्यवाळा देवता थाय छे, अधिक आयुष्यवाळा देव तरीके उत्पन्न थता नथी

उत्सर्पिणीना चोथा आरामा थयेला युगलीयाना देहनी ऊंचाई ते आराने प्रांते एक गाउनी होय छे अने आयुष्यनु प्रमाण एक पल्योपमनु होय छे तेओ एकांतर आमळाना फळ जेटलो आहार करे छे तमने चोमठ पासळीओ होय छे ए आरामा युगलीआ ओगणाशी दिवस संततिनु पालन करे छे पछी श्वासोश्वास, बगासु, खांसी के छींक विगेरेथी प्राण छोडी दे छे अने देवगतिमा उत्पन्न थाय छे.

आवी रीते त्रे कोटाकोटि सागरोपमनो सुषमदुषमा नामे चोथो आरो व्यतीत थया पछी सुषमा नामे पाचमो आरो उद्भवे छे ते आरानी आदिमा जुगलीआओ चोथा आराना प्रांत समये उत्पन्न थयेला जुगलीआ जेवा होय छे, परंतु हळवे हळवे तेमना शरीर तथा आयुष्य त्यासुधी वधे छे के यावत ते आराने अंते शरीरनु प्रमाण बे गाउनु अने आयुष्यनु प्रमाण बे सागरोपमनु थाय छे तेमनी पृष्ठभागनी पासळीओ पण त्या सुधी वधे छे के तेनी संख्या एकसो ने अठ्यावीशनी थाय छे तेमनो आहार घटतो घटतो त्यासुधी घटे छे के बे दिवसने आंतरे बदरीफळ(बोर)ना जेटलो आहार करे छे अने संततिने तेओ चोसठ दिवस सुधी पाळे छे आ प्रमाणे त्रण कोटाकोटि प्रमाणवाळो पाचमो आरो व्यतीत थया पछी छट्ठो आरो आवे छे

आ छट्ठा आराना प्रारंभमा जुगलीआओना शरीर विगेरेनु प्रमाण पाचमा आराना अवसाने प्रसूत थयेला जुगलीआना जेटलु होय छे, परंतु तेमना शरीर तथा आयुष्यनु प्रमाण त्यासुधी वृद्धि पामे छे के यावत् ते आराने अंते शरीरनु प्रमाण त्रण गाउनु अने आयुष्यनु प्रमाण त्रण पल्योपमनु थाय छे तेमना पृष्ठनी पासळीओनी संख्या

१ भुजपरिसर्प ने उरपरिसर्प युगलीआ थता नथी चतुष्पद ने खेचर पक्षीओ ज थाय छे

वसो ने छप्पननी थाय छे. तेमना आहारनी हानि तेटले सुधी थाय छे के त्रण दिवसने आतरे तुवर जेटलो आहार करे छे. तेओ सततिनु पालन ओगणपचास दिवस करे छे.

ए आरामा हाथीनु आयुष्य मनुष्य जेटलु, अश्वादिकनु आयुष्य मनुष्यना चोथे भागे, मेंढा विगेरेनु आठमे अशे, गाय, भेंस, खर, ऊट विगेरेनु पाचमे अशे, श्वान विगेरेनु दशमे अशे, भुजपरिसर्प तथा उरपरिसर्पनु एक क्रोड पूर्वनु, पक्षीओनु पल्योपमना असख्यातमा भागनु अने जलचरोनु एक पूर्व कोटिनु होय छे तिर्यंच पचेंद्रीनु उत्कृष्ट आयुष्य आ ज आरामा होय छे. (युगलिक तो चतुष्पद ने पक्षीओ ज थाय छे)

भुजपरिना शरीरनु मान गाउ पृथक्त्व, उरपरिना शरीरनु प्रमाण एक हजार योजननु, खेचरोनु धनुष्य पृथक्त्व अने हाथी विगेरेना शरीरनु प्रमाण छ गाउनुं होय छे. आहारनु ग्रहण बे दिवसने आतरे होय छे. तिर्यंच पचेंद्रीना शरीरनु उत्कृष्ट मान ए ज आरामा जाणवु. बाकी रहेलना शरीर तथा आयुष्यादिनु प्रमाण सूत्रथी जाणी लेवु.

आ प्रमाणेनो छट्ठो सुषमसुषमा नामनो आरो चार कोटाकोटि सागरोपमनडे समाप्त थाय छे. एवी रीते उत्सर्पिणी काळ सबधी छ आरा जाणवा.

अवसर्पिणी काळना पण छ आरा होय छे तेमा एटलु विशेष के ते आरा प्रथमना आराथी विपरीत होय छे ते आ प्रमाणे'–जे उत्सर्पिणीने छट्ठे आरे कहेलु छे ते अवसर्पिणीने पहेले आरे, जे पाचमे आरे कहेल छे ते बीजे आरे, जे चोथे आरे कहेल छे ते त्रीजे आरे, जे त्रीजे आरे कहेल छे ते चोथो आरे, जे बीजे आरे कहेल छे ते पाचमे आरे अने जे पहेले आरे कहेल छे ते छट्ठे आरे एम जाणी लेवु वळी तीर्थंकर विगेरेनु देह आयुनु प्रमाण विगेरे कहेलु छे ते पण विपरीत रीते जाणवु. ते आ प्रमाणेः–उत्सर्पिणीमा जे चोवीशमा तीर्थंकरनु स्वरूप ते अवसर्पिणीमा पहेला तीर्थंकरनु जाणवु एवी रीते बीजामा पण विपरीतपणे समजवु. चक्रवर्ती विगेरेमां पण एम ज समजवु एवी रीते चार आरा मळीने एक काळचक्र थाय छे. आ काळनी व्यवस्था पाच भरतक्षेत्र अने पाच ऐरवत क्षेत्रमा सरखी ज जाणवी, विदेह क्षेत्रमा ए प्रमाणे समजवी नहि त्या उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी प्रमाणे काळनी वर्तना नथी त्या तो सर्वदा मनुष्योना शरीरनु प्रमाण उत्कृष्ट पांचसो धनुष्यनु अने आयुष्यनु प्रमाण पूर्व कोटिनु होय छे त्रीश अकर्मभूमिमा पण सनातन एक सरखो समय वर्ते छे तेनु वर्णन अन्य स्थानकथी जाणी लेवु.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ सप्ताधिकद्विशततम' प्रबध' ॥ २०७ ॥

व्याख्यान २०८ मुं

हालमां वर्तता पांचमा दुषमा नामना आरानुं लक्षण

वर्तमानारके भावि-स्वरूप ज्ञानिनोदितम् ।
स्वप्नादिभिः प्रबंधैश्च, विज्ञेय श्रुतचक्षुषा ॥ १ ॥

भावार्थ.-

"वर्तमान आरानु जे भाविस्वरूप ज्ञानी महाराजे कहेलु छे ते स्वप्नादिक प्रबंधवडे आगमदृष्टिथी जाणवु "

सोळ स्वप्ननो संबंध व्यवहारचूलिकामा कहेलो छे ते आ प्रमाणे.-ते काळे ते समयने विषे पाटलीपुर नगरमा श्रावकधर्ममा तत्पर चंद्रगुप्त नामे राजा हतो. एक वखते ते राजा पाखीनो पोसह अहोरात्रनो लई रात्रिए धर्मजागरणाए जागतो हतो. तेवामा मध्यरात्रे अल्प निद्रा आववा सुखे सूतेला एवा ते राजाने सोळ स्वप्न जोवामा आव्या, एटले ते तत्काळ जागी उठ्यो तेने चिंता थई के आ शु ? पछी अनुक्रमे सूर्योदय थता तेणे पोसह पार्यो हवे ते समयने विषे सभूतिविजयना शिष्य (गुरुभाई) युगप्रधान भद्रबाहुस्वामी पाचसो साधु साथे विचरता पाटलीपुरना उद्यानमा समवसर्या राजा तेमने वादवा नीकळ्यो तेणे कोणिक राजानी जेम छत्रचामरादि दूर करी, पांच अभिगम साचवी गुरुमहाराजने वादीने धर्म साभळ्यो पछी तेणे स्वप्नमा कल्पवृक्षनी शाखा भागी विगेरे सोळ स्वप्न दीठा हता तेनो अर्थ स्वामीने पूछ्यो के "हे भगवंत! में आ स्वप्न जोया छे, तने अनुसारे शासनमा शु शु थशे ? ते कहो " श्रुतकेवळी भद्रबाहुस्वामी सर्व संघनी समक्ष बोल्या-" हे चंद्रगुप्त राजा ! तेनो अर्थ साभळ"-

" प्रथम स्वप्नमा तें कल्पवृक्षनी शाखा भागेली जोई, तेनु फळ एवु छे के आज पछी कोई राजा चारित्र लेशे नहि बीजे स्वप्ने तें सूर्यने अस्त थतो जोयो, तेनु फळ एवु छे के हवे केवळज्ञान उच्छेद पामशे त्रीजे स्वप्ने तें चंद्रमा छिद्र थयेला जोया, तेनु फळ एवु छे के एक धर्ममा अनेक मार्ग चालशे चोथे स्वप्ने तें भूतने नाचता जोया, तेनु फळ ए छे के कुमति लोको भूतनी जेम नाचशे पाचमे स्वप्ने तें बार फणवाळो काळो सर्प जोयो, तेनु फळ ए छे के बारवर्षी दुकाळ पडशे, कालिकसूत्र प्रमुखनो विच्छेद थशे, देवद्रव्यभक्षी साधुओ थशे, लोभथी मालानु आरोपण, उपधान, उजमणा प्रमुख घणा तपना भाव प्रकाशशे अने जे खरा धर्मना अर्थी साधु हशे ते विधिमार्गने प्ररूपशे छट्ठे स्वप्ने तें आकाशमाथी आवतु विमान चलित

थतु जोयु तेनु फळ ए छे के चारणलब्धिवत साधु भरत ऐरवतक्षेत्रमा आवशे नहि. सातमे स्वप्ने कमळने उकरडा उपर ऊगेलु जोयु, तेनु फळ ए छे के चार वर्णमा वैश्यने हाथे धर्म रहेशे, ते वणिकजनो अनेक मार्गे चालशे, सिद्धात उपर रुचिवाळा अल्प जनो थशे. आठमे स्वप्ने आगीआने उद्योत करतो जोयो, तेनु फळ ए छे के राजमार्ग (जैन मार्ग) मूकी बीजा मार्ग खजुवानी जेम प्रकाश करशे अने श्रमण–निर्ग्रंथनो पूजासत्कार ओछो थशे नवमे स्वप्ने मोटु सरोवर सूकु जोयु अने तेमा दक्षिण दिशाए थोडु जळ जोयु, तेनु फळ ए छे के ज्याज्या प्रभुना पाच कल्याणक थया छे ते ते देशमा प्राये धर्मनी हानि थशे अने दक्षिणदिशाए जिनमार्गनी प्रवृत्ति रहेशे दशमे स्वप्ने सुवर्णना थाळमा श्वानने दूध पीतो जोयो, तेनु फळ ए छे के उत्तम कुळनी सपत्ति मध्यमने घेर जशे अने कुळाचारकर्मने तजी दईने उत्तम मनुष्यो नीच मार्गे प्रवर्तशे (हिंसामा धर्म मानशे), अगियारमे स्वप्ने हाथी उपर बेठेलो वानर जोयो, तेनु फळ ए छे के पारधी विगेरे अधम लोको सुखी थशे अने सुजन दुःखी थशे, वळी उत्तम एवा इक्ष्वाकु तथा हरिवश कुळमा राज्य रहेशे नहि. बारमे स्वप्ने समुद्रे मर्यादा मूकी एम जोयु, तेनु फळ ए छे के राजा उन्मार्गचारी थशे अने क्षत्रियो विश्वासघात करशे तरमे स्वप्ने मोटे रथे नाना वाछरडा जोडेला जोया, तेनु फळ ए छे के प्राये वैराग्यभावे कोइ सयम लेशे नहि, जे वृद्ध थईने लेशे ते महाप्रमादी थशे अने गुरुकुळवासने तजी देशे, अने जे बाळभावे सयम लेशे ते लज्जाथी गुरुकुळवासने छोडशे नहि चौदमे स्वप्ने मोटा मूल्यवाळु रत्न तज रहित जोयु तेनु फळ ए छे के भरत तथा ऐरवत क्षेत्रमा साधुओ क्लेश करनारा, उपद्रव करनारा, असमाधि उपजावनारा, अविनयी अने धर्म उपर अल्प स्नेहवाळा थशे पदरमे स्वप्ने राजकुमारने पोठीआ उपर बेठेलो जोयो, तेनु फळ ए छे के राजकुमारो राज्यभ्रष्ट थशे अने हलका कार्य करशे सोळमे स्वप्ने बे काळा हाथीने झूझता दीठा, तेनु फळ ए छे के आगामी काळमा पुत्रो तथा शिष्यो अल्प बुद्धिवाळा ने अविनयी थशे, देवगुरु अने मातापितानी सेवा करनारा थशे नहि अने भाईओ माहोमाहे ईर्ष्या–कलह करशे हे राजा ! ए प्रमाणे सोळ स्वप्ननु फळ छे. श्री जिनेश्वरभगवतनां कहेला वचन अन्यथा थता नथी तेमणे कह्यु छे के आ दुषम आरो लोकोने महादुःखदायक थशे. "

आ प्रमाणे साभळी चद्रगुप्त राजा वैराग्यथी सयम लई देवलोकने प्राप्त थयो, ए स्वप्नप्रबध जाणवो. आदि शब्दथी बीजु भाविस्वरूप कल्कीना सबधथी जाणवु ते नीचे प्रमाणे छेः–

श्रीवीरप्रभुना निर्वाण पछी चारसो ने सित्तेर वर्ष गया बाद विक्रम राजानो

संवत्सर थयो ते पछी ओगणीशसो ने चौद वर्ष जतां पाटलीपुर नगरमा म्लेच्छकुळने विषे यशा नामनी चांडालिनीनी कुखमा तेर मास रहीने चैत्र शुदि आठमने दिवसे कल्कीनो जन्म थशे ते कल्की, रुद्र अने चतुर्मुख एवा त्रण नामने धारण करशे. तेनु शरीर त्रण हाथ ऊंचु थशे तेना मस्तक परना केश कपिलवर्णी [काबरा] अने नेत्र पीळा थशे जन्मथी पांचमे वर्षे तेना उदरमा रोग उत्पन्न थशे अढारमे वर्षे कार्तिक मासना शुक्ल पडवाने दिवसे तेनो राज्याभिषेक थशे ते मृगांक नामे मुगट, अदत्त नाम अश्व, दुर्वास नामे भालो अने दैत्यसूदन नामे खड्ग धारण करशे तेने सूर्य, चंद्र नामे बे पगना रुडां अने त्रैलोक्यसुंदर नामे सुंदर वासगृह थशे ते सुवर्णनु पुष्कळ दान आपी विक्रमना संवत्सरने उत्थापी पोतानो संवत्सर चलावशे तेने चार पुत्रो थशे तेमा दत्त नामनो पुत्र राजगृह नगरीमां, विजय नामनो पुत्र अणहिलपुरपाटणमां, मुंज नामनो पुत्र अवंती देशमा अने अपराजित नामनो पुत्र बीजा देशमा पोतपोतानी राजधानी स्थापित करश. ते कल्कीना राज्यसमयमा आ पृथ्वी म्लेच्छोना अने क्षत्रियराजाओना रुधिरप्रवाहथी स्नान करशे. तेना द्रव्यभंडारमा नवाणु कोटि सोनैया एकठा थशे. तेनी सेनामा चौद हजार हाथी, चारसो पचास हाथणी, सत्याशी लाख घोडा अने पांच कोटि पेदल थशे आकाशमा मेले तेवा त्रिशूलने धारण करनारो, पाषाणना अश्वनु वाहन करनारो अने अति निर्दय एवो ए कल्की छत्रीश वर्षनी वये त्रिखंड भरतनो स्वामी थशे तेना राज्यना समयमा मथुरानगरीमां वासुदेव तथा बलदेवना प्रासाद अकस्मात् पडी जशे अनुक्रमे ते कल्की अतिलोभथी पोताना नगरने खोदावी सर्व तरफथी द्रव्य कढावीने ग्रहण करशे ए प्रमाणे खोदता लोकोनी भूमिमाथी पाषाणमय लवणदेवी नामे प्रभाविक गाय नीकळशे तेने चौटामा स्थापन करश त्या ऊभी रही सती ते गाय भिक्षा माटे फरता साधुओने दिव्यशक्तिवडे पोताना शीगडावडे मारवा धसशे ते जोइ साधुओ ते नगरमा जळनो भारी उपसर्ग जाणी विहार करी जशे त्यारपछी सत्तर अहोरात्र सुधी अखंड मेघवृष्टि थशे तेथी कल्कीनु नगर डूबी जशे. कल्की नासीने कोई ऊंचे स्थळे जतो रहेशे पछी जळना पूरथी उपरनी माटी धोवाइ जवाथी नंदराजाए करावेला सुवर्णना गिरि उघाडा थयेला जोई ते अर्थने अत्यंत लोलुपी थश तेथी पुनः त्या नवु नगर वसावी ब्राह्मण विगेरना सर्वना कर लेशे ते समय पृथ्वी परथी सुवर्णनाणु नाश पामशे अने चामडाना नाणाथी ते व्यवहार चलावशे लोको कंबल तथा घासना वस्त्र पहेरश कल्कीना भयथी संभ्रांत थयेला लोको पत्रावली विगेरमा भोजन करशे

एक समये कल्की राजमार्गमा फरता साधुओने जोई तेमनी भिक्षामाथी छठ्ठो भाग

मागशे, एटले साधुए कायोत्सर्ग करीने बोलावेली शासनदेवी तेने तेम करता निवारशे पछी पचासमे वर्षे तेने डाबी जंघामा अने जमणी कुक्षीमा प्रहार थशे, तथापि पाछो कल्की साधुओनी भिक्षानो छठ्ठो भाग लेवा माटे तेमने गायना वाडामा पूरशे. तेमा प्रातिपद नामना आचार्य पण आवी जशे. पछी सर्व संघना स्मरणथी शासनदेवी आवी तेने समजावशे तथापि ते समजशे नहि, एटले आसनकंपथी ते हकीकत जाणी इंद्र वृद्ध ब्राह्मणने रूपे त्या आवी तेने आ प्रमाणे कहेशे–'हे राजा! आवा निर्ग्रंथने पीडवा ते तने योग्य नथी ' त्यारे कल्की कहेशे के ' मारा राज्यमा बीजा सर्व भिक्षुको कर आपे छे अने साधुओ काई पण कर आपता नथी, तेथी मे तेमने वाडामा रोक्या छे ' पछी इंद्र तेने त्रण वार समजावशे, ते छता ज्यारे ते नहि समजे त्यारे इंद्र क्रोधथी लपडाक मारी तेने हणी नाखशे कल्की छाशी वर्षनु आयुष्य भोगवी मरण पामीने नरके जशे. पछी इंद्र तेना पुत्र दत्तने केटलीक शिखामण दई, राज्ये बेसारी गुरुने नमीने स्वर्गे जशे. दत्त पिताने मळेला तेना पापना फळने जाणीने बधी पृथ्वीने जिनचैत्यथी मंडित करशे तथा शत्रुंजयनो उद्धार करशे. त्यारपछी जिन धर्मनो महिमा घणो वृद्धि पामशे

आवा समयमा पण केटलाएक धर्मना रागी थशे. कह्यु छे के " जेम शृंगी मत्स्य खारा समुद्रमा रह्या सता पण मिष्ट जळ पीवे छे तेम आवा काळमां पण प्राज्ञ पुरुषो धर्मतत्त्वमा तत्पर होय छे "

ए दुषमा आरामा युगप्रधान सूरिवरो थशे, चतुर्विध संघ धर्ममा वर्तशे अने राजाओ धर्मकर्ममा तत्पर थशे युगप्रधान विगेरेनी संख्या देवेंद्रसूरिकृत कालसित्तरी प्रकरणमा आ प्रमाणे कहेली छेः—

" दुषमा काळमा अगियार लाख अने सोळ हजार राजाओ जिनेश्वरना भक्त थशे अने अगियार क्रोड जैनशासनना प्रभावक थशे तथा सुधर्मास्वामीथी छेल्ला दुप्पसह-सूरि पर्यंत त्रेवीश उदयमा बे हजार ने चार युगप्रधानं थशे अने अगियार लाख ने सोळ हजार आचार्य थशे " बे हजार ने चार युगप्रधानमा सुधर्मास्वामी अने जंबूस्वामी ते भवे सिद्धिपदने पामशे अने बाकीना सर्वे एकावतारी थशे. ते प्रभावकना आठ गुणने धारण करनार मुनि महाराजा ज्या विहार करशे त्या चारे दिशामा अढी अढी योजन पर्यंत दुष्काल, मरकी प्रमुख उपद्रव नाश पामशे अने अगियार लाख ने सोळ हजार आचार्यो प्रावचनी, धर्मकथी इत्यादि ज्ञानक्रियागुणवाळा अने

१ ते समयमा वर्तता सर्व सूत्रना पारगामी होय तेने युगप्रधान कहेवामा आवे छे

युगप्रधान जेवा थशे दीवालीकल्पमा त्रण प्रकारना सूरि थशे एम कहेलु छे तेमा पचावन कोटि, पचावन लाख, पचावन हजार अने पाचसो सूरि उत्कृष्टक्रियावाळा उत्तम समजवा तेत्रीश लाख, चार हजार, चारसो ने एकाणु सूरि मध्यमक्रिया-वाळा होवाथी मध्यम समजवा अने पचावन कोटि, पचावन लाख, पचावन हजार, पाचसो ने पचावन सूरि प्रमादी अने अनाचारी होवाथी जघन्य समजवा हवे उपाध्यायनी सख्या कहे छे-पचावन क्रोड, पचावन लाख ने पचावन हजार उत्तम, चोपन क्रोड मध्यम अने चुमाळीस क्रोड, चुमाळीस लाख ने चुमाळीस हजार जघन्य-एटला उपाध्याय पाचमा आरामा थशे एम समजवु हवे साधुओनी सख्या कहे छे-सीत्तेर लाख क्रोड अने नव हजार हजार क्रोड उत्तम, सो क्रोड मध्यम अने एकत्रीश कोटि, एकत्रीश लाख ने साठ हजार जघन्य एटला साधुओ थशे हवे साध्वीनी सख्या कहे छे-दश हजार नवश ने बार क्रोड, छप्पन लाख, छत्रीश हजार, एक सो ने नवाणु एटली उत्तम साध्वीओ थशे हवे श्रावकनी सख्या कहे छे-सोळ लाख त्रण हजार त्रणशे ने सत्तर क्रोड अने चोराशी लाख एटला श्रावको थशे हवे श्राविकानी सख्या कहे छे-पचवीश लाख, नाणु हजार पाचशें ने बत्रीश क्रोड उपर चार एटली श्राविका थशे आ प्रमाणे दुषमा आरामा चतुर्विध सघनु प्रमाण कहेलु छे[1]

अहीं केटलाएक कहे छे के आ प्रमाण जबूद्वीपना भरतक्षेत्र सबधी जाणवु केटला एक कहे छे के आ प्रमाण श्रीवीरप्रभुए प्रतिबोध पमाडेला चतुर्विध सघ सहित जाणवु वळी केटलाएक कहे छे के ते पाचे भरतक्षेत्र सबधी एकठु प्रमाण जाणवु तेनो खुलासो दुषम आराना यत्रपटथी तथा बहुश्रुतना मुखथी जाणी लेवो.

हवे पाचमा आराने अते उत्पन्न थनारा चतुर्विध सघना नाम कालसित्तरीने अनुसार लखवामा आवे छे " स्वर्गथी च्यवीने थयेला दुप्पसहसूरि नामे साधु, फल्गुश्री नामे साध्वी, नागिल श्रेष्ठी नामे श्रावक अने सत्यश्री नामे श्राविका ए चरम सघ जाणवो " सबोधसत्तरीमा कह्यु छे के " एक साधु, एक साध्वी, एक श्रावक अने एक श्राविका-आज्ञायुक्त होय तो तेने सघ जाणवो अने शेष आज्ञा रहितने अस्थिनो[2] सघ जाणवो " ते काळे मुनि दशवैकालिक, जितकल्प, आवश्यक, अनुयोगद्वार अने नदी एटला सूत्रना पाठी थशे तेमने इद्र नमस्कार करशे उत्कृष्ट

१ आमा जणावेली सख्या दीवालीकल्प साथे बराबर मळती नथी वळी आ भाषातर जेना उपरथी थाय छे ते प्रत पण अशुद्ध ने तेमा सख्या अस्तव्यस्त होवाथी आ सख्या उपर आधार राखी शकाय तेम नथी २ हाडकानो समूह

छठ्ठ तपना करनारा थशे. दुप्पमहसूरि बे हाथना देहवाळा, चार वर्ष सुधी गृहस्थपणे रही, चार वर्ष सुधी व्रतधारी थई, चार वर्ष आचार्यपद धारण करी, अते अष्टम तप-वडे काळधर्म पामी, एक सागरोपमना आयुष्यवाळा देवपणाने पामी त्याथी च्यवी आ भरतक्षेत्रमा ज सिद्धिपदने पामशे

पाचमा आराना प्रातःसमये पुर्वाह्नकाळे श्रुत, सूरि, सघ ने धर्म विच्छेद पामशे. राजा विमलवाहन, मत्री सुधर्मा अने न्यायधर्म मध्याह्ने नाश पामशे अने अग्नि साय-काले नाश पामशे. श्रीवीरस्वामीथी जेटला काळ सुधी पाचमा आरामा श्रीजैनधर्मनी प्रवृत्ति रहेशे ते आ प्रमाणे–वीश हजार ने नवसो वर्ष, त्रण मास, पाच दिवस, पाच पहोर, एक घडी, बे पळ अने अडताळीश अक्षर एटलो काळ जिनधर्मनी प्रवृत्ति रहेशे.

" आ प्रमाणे सोळ स्वप्ना प्रबधथी अने कल्की राजानी कथाथी काळनु सर्व स्वरूप जाणीने प्राज्ञ पुरुषो श्रीयुगप्रधान मुनीश्वरोनी तथा श्रीजिनेश्वर भगवतनी आज्ञानु विराधन करता नथी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ अष्टाधिकद्विशततमः प्रबधः ॥ २०८ ॥

व्याख्यान २०९ मुं

भविष्यमां थनारा श्रीजिनेश्वर भगवंतनु वर्णन

भाविनां पद्मनाभादि–जिनानां प्राग्भवास्तथा ।
नामानि स्तूयतेऽस्माभि॰, प्राप्य पूर्वोक्तशास्त्रत॰ ॥ १ ॥

भावार्थ.–

" भविष्यमा थनारा पद्मनाभ विगेरे तीर्थंकरोना पूर्व भव अने नाम पूर्वोक्त शास्त्रथी जाणीने अहीं स्तववामा आवे छे." भाविजिनना पूर्वभव विगेरेनु स्वरूप आ प्रमाणे छेः–

उत्सर्पिणीनो बीजो आरो श्रावण वदि एकमे बेसशे त्यारथी अनुक्रमे सात सात दिवस सुधी पाच जातिना मेघ वरसशे. तेमा प्रथम पुष्करावर्त नामे मेघ पृथ्वीना सर्व तापने दूर करशे. बीजो क्षीरोद मेघ सर्व औषधिना बीजने उपजावशे त्रीजो

१ कल्कीनु वृत्तात सवतना सबधमा मेळ खातु नथी, तेथी तेनो खुलासो बहुश्रुतथी जाणी लेवो

घृतोदमेघ सर्व धान्यादिमा स्नेह-रस उत्पन्न करशे चोथो शुद्धोदक सर्व औषधिने परिपक्व करशे पांचमो रसोत्कमेघ पृथ्वी उपर इक्षु विगेरेमां रस उपजावशे एवी रीते पांच मेघ पांत्रीस दिवस सुधी वृष्टि करशे, तथी वृक्ष, लता, औषधि, धान्य विगेरे सर्व पोतानी मेळे उत्पन्न थशे ते जाइने बिलमा जईने वसेला सर्व जीवो बहार नीकळशे अनुक्रमे बीजा आराना अंतभागे मध्यदशनी पृथ्वीमा सात कुलकर थशे. तेओमा पहेला कुलकर विमलवाहन जातिस्मरणथी राज्य विगेरेनी स्थितिने स्थापित करशे ते पछी[1] त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाडिया गया पछी शतद्वार नगरमा सातमा कुलकर समुचि नामे राजानी भद्रा राणीनी कुक्षिमा श्रेणिक राजानो जीव पहेली नरकमांथी च्यवी श्रीवीरप्रभुना च्यवनने दिवसे अने ते ज वेळाए अवतरशे अने श्रीवीर प्रभुना जन्मदिवसे ज तेनो जन्म थशे ते श्रीपद्मनाभ जिन महावीर जेवा पहेला तीर्थंकर थशे श्रीवीरप्रभु अने पद्मनाभ प्रभुनो अंतर श्रीप्रवचनसारोद्धारमा आ प्रमाणे कहेल छे "चोराशी हजार वर्ष, सात वर्ष अने पाच मासनु श्रीवीर प्रभुनु निर्वाण अने पद्मनाभ प्रभुना च्यवन वच्चेनु अंतर जाणवु " तेमनु निर्वाण कल्याणक दीवाळीने दिवसे थशे.

बीजा तीर्थंकर सुरदेव नामे थशे तेमना शरीरनो वर्ण, आयुष्य, लांछन, देहनी ऊंचाई अने पंच कल्याणकना दिवस विगेरे पार्श्वनाथ प्रभुनी प्रमाणे थशे श्रीवीरस्वामीना काका सुपार्श्वनो जीव बीजा तीर्थंकर थशे.

त्रीजा सुपार्श्व नामे तीर्थंकर शरीरकांति विगेरथी बावीसमा जिन श्रीनेमिनाथना जेवा थशे ते पाटलीपुत्रना राजा उदायननो जीव जाणवो ते श्रेणिक राजाना पौत्र अने कोणिक राजाना पुत्र जेनो पौषधगृहमा विनयरत्न नामना अभव्य साधुथी घात थयो हतो तेनो जीव त्रीजा तीर्थंकर थशे

चोथा स्वयंप्रभ नामे तीर्थंकर एकवीशमा नमिनाथ जिनना जेवा थशे ते पोटिल मुनिनो जीव जाणवो पाचमा सर्वानुभूति नामे तीर्थंकर के जे दृढायु श्रावकनो जीव छे ते वीशमा मुनिसुव्रत प्रभुनी समान थशे छठ्ठा तीर्थंकर देवसुत नामे थशे, ते कार्तिक शेठनो जीव जाणवो तेमा विशेष जाणवानु एटलु छे के हमणा जे कार्तिक श्रेष्ठीनो जीव व सागरोपमने आउखे सौधर्मेंद्रपणु अनुभवे छे तेनो जीव ए नहीं ए सरखा आवरामा कोई बीजा कार्तिक शेठ थयेला छे तेनो जीव समजवो ते देवसुत जिन मल्लिनाथनी जेवा थशे पण स्त्रीवेदवाळा थशे नहि

सातमा उदय नामे तीर्थंकर शंख श्रावकनो जीव थशे, पण ते भगवतीमां वर्णवेलो शंख श्रावक नहि, आ कोई बीजो जीव छे ते तीर्थंकर अढारमा अरनाथ प्रभुनी

१ बीजे पाच कुलकर सुधर्म, सगम, सुपार्श्व, दत्त अने सुमुख ए नामना थशे

जेवा थशे अहीं विशेष एटलु छे के तेमना चक्रवर्तीपणानो निश्चय जाणवो नहि. आठमा पेढाल नामे तीर्थंकर थशे ते आनंद नामना श्रावकनो जीव छे. अहीं विशेष एटलु जाणवानु छे के सातमा अगमा कहेल आनद श्रावक ते आ नहिं. ते तो महाविदेह क्षेत्रमा सिद्धिने पामनार छे. एथी कुंथुनाथ प्रभुना जेवा आ तीर्थंकर ते कोई बीजा आनंदनो जीव जाणवो नवमा तीर्थंकर पोटिल नामे सुनदा श्राविकानो जीव थशे ते शातिनाथ प्रभुनी समान थशे दशमा शतकीर्ति नामे तीर्थंकर थशे. ते शतकश्रावकनो जीव अने धर्मनाथ प्रभुनी समान थशे आ शतक पुष्कली एवा बीजा नामथी भगवतीजीमा कहेल श्रावकनो जीव समजवो. अगियारमा सुव्रत नामे तीर्थंकर दशारसिंह ने कृष्ण तेनी माता देवकीनो जीव थशे ते अनतनाथनी तुल्य थशे बारमा अमम नामे भगवंत नवमा वासुदेव कृष्णनो जीव थशे ते तेरमा विमलनाथ प्रभुनी समान थशे समवायागसूत्रमा कहेलु छे के कृष्ण भावी चोवीशीमा तेरमा तीर्थंकर थशे तत्त्व बहुश्रुत जाणे

तेरमा निष्कषाय नामे तीर्थंकर सत्यकी विद्याधरनो जीव थशे ते सुज्येष्ठा साध्वीना पुत्र अने जे लोकमा ११मा रुद्र (महाशिव) एवा नामथी प्रसिद्ध थयेला छे तेनो जीव जाणवो समवायाग सूत्रमा ते बारमा जिन थशे एम कहेलुं छे. तत्त्व बहुश्रुत जाणे ते प्रभु वासुपूज्यस्वामी समान थशे चौदमा तीर्थंकर निष्पुलाक नामे बळदेवनो जीव थशे. पण आ बळदेव कृष्णना बधु बळभद्र समजवा नहि, कारण के ते बलदेव माटे श्रीहेमचद्रसूरिए श्रीनेमिचरित्रमा कह्यु छे के बलभद्रनो जीव कृष्णना तीर्थमा सिद्धि पामशे, तेथी आ बळदेव बीजा समजवा ते तीर्थंकर श्रेयास प्रभुनी समान थशे पदरमा तीर्थंकर निर्मम नामे सुलसानो जीव थशे आ सुलसा श्राविका ते समजवी के जेनी प्रत्ये श्रीवीरप्रभुए अबडने मुखे धर्मलाभ कहेवराव्यो हतो. ते प्रभु शीतलनाथनी समान थशे सोळमा चित्रगुप्त नामे तीर्थंकर बलभद्रनी माता रोहिणीनो जीव थशे. ते सुविधिनाथजी समान थशे सत्तरमा समाधि नामे तीर्थंकर थशे. ते रेवती श्राविकानो जीव जाणवो, जे रेवतीए बीजोरापाक वहोरावीने गोशाले मूकेली तेजोलेश्याथी श्रीवीरप्रभुना देहमा थयेल व्याधिने शमाव्यो हतो ते तीर्थंकर चद्रप्रभुनी समान थशे अढारमा सवर नामे तीर्थंकर शताली श्रावकनो जीव थशे, जे सुपार्श्वप्रभुनी तुल्य थशे ओगणीशमा यशोधर नामे तीर्थंकर द्वीपायननो जीव थशे. ते पद्मप्रभुनी समान थशे आ द्वीपायन लोकमा वेदव्यास एवा नामे प्रसिद्ध छे ते समजवा वीशमा विजय नामे परमेष्ठी कर्णराजानो जीव थशे. ते सुमतिनाथनी समान थशे केटलाएक आ कर्णने पाडवकौरवनो भाई कहे छे अने केटलाएक तेने चपानगरीना पति वासुपूज्यना वशनो कहे छे. तत्त्व

एकवीशमा मल्ल नामे तीर्थंकर नारदनो जीव थशे ते अभिनंदन प्रभुनी समान थशे केटलाएक आ नारदने भगवतीसूत्रमा वर्णवेल निर्ग्रंथ कहे छे अने केटलाएक रामलक्ष्मणना समयमा थयेला नारद कहे छे बावीशमा देव नामे तीर्थंकर अबडनो जीव थशे, ते संभवनाथनी समान थशे औपपातिक सूत्रमा जे अबडने वर्णव्यो छे ते तो महाविदेहमा सिद्धि पामशे एम कहेलु छे, तेथी आ अबड सुलसानी परीक्षा करनार जणातो नथी तत्त्व केवळी जाणे. त्रेवीशमा अनन्तवीर्य नामे तीर्थंकर अमर नो जीव थशे, ते अजितनाथनी समान थशे चोवीशमा भद्रकर नामे तीर्थंकर बुद्धनो जीव थशे ते श्रीऋषभप्रभुनी समान थशे

ए सर्व तीर्थंकरोना देहनु अने आयुष्यनु प्रमाण, कल्याणक तिथिओ, लांछन, वर्ण अने अंतर विगेरे पश्चानुपूर्वी ए वर्तमान तीर्थंकरोनी समान जाणवु

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद-
वृत्तौ नवाधिकद्विशततम प्रबंध ॥ २०९ ॥

व्याख्यान २१० मु

दीपोत्सवी पर्वनुं वर्णन

विश्वे दीपालिकापर्व, विख्यात केन हेतुना ।
पृष्ट संप्रतिभूपेना–र्यसुहस्ती गुरुर्जगौ ॥ १ ॥

भावार्थ –

"संप्रति राजाए आर्यसुहस्तीसूरिने पूछयु के लोकमा दीवाळीनु पर्व क्या हेतुथी प्रचलित थयेलु छे ?" त्यारे गुरुए तेने आ प्रमाणे कह्यु–

उज्जयिनी नगरीमा मोटा संघथी परिवृत थयेला आर्यसुहस्ती गुरुने आवेला जाणी संप्रति राजा तेमनी पासे गया अने गुरुने नमीने पूछयु के 'हे पूज्य ! तमे मने ओळखो छो ?' गुरु बोल्या–'हे संप्रति राजा ! तने कोण न ओळखे ? तु तो आ देशनो स्वामी छे' राजा बोल्यो– 'हे स्वामी ! एवा अल्प हेतुथी ओळखवा माटे हु पूछतो नथी, मने कोई

१ आमा पूर्वभवना जीवोना नामो श्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रना १० पर्वमा कहेला नामोथी घणा जुदा छे, तेथी तेनो खुलासो बहुश्रुतथी जाणी लेवो श्रीलोकप्रकाशमा नामो विगेरे आधार साथे बतावेला छे जुओ सर्ग ३४मो

" हे इंद्र ! आयुष्यकर्मना पुद्‌गलो जे पूर्वभवे बांधेला होय ते ...करवाने जिनेश्वर पण समर्थ नथी तेथी अमारा माटे पण ... भावनो नाश थतो नथी " अनुक्रमे प्रभुए पचावन अध्ययन ... कह्या अने पचावन अध्ययन अशुभ फलविपाकना कह्या तेम ज ... पूछ्या वगर मात्र लोकनी अनुकंपा माटे छत्रीस अध्ययन कह्या ... योगनिरोध करी, शैलेशीकरण आचरी सिद्धिगतिने प्राप्त थया ते ... उद्धरी न शकाय तेवा कुंथुआ घणा उत्पन्न थवाथी हवे संयम पाळवु ... एम धारी घणा साधुओए अनशन ग्रहण कर्युं प्रभुना निर्वाणकाळे सर्व ... अश्रु लावी आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्यो–" हे जगद्‌बंधु ! हे कृपासिंधु ! ... तरीके विख्यात छो, ते छतां अमने मन्दभाग्यने साथे लीधा विना तमे महानंदने केम ... हे नाथ ! तमे शरीर छोडता सता अधम एवा नारकीओ पण किंचित् हर्षने ... तो अमने खेद केम करावो छो ? वळी हे त्रण विश्वना आधार ! ... एक विनति सांभळो तमने अहीं रहेवा छतां श्री संघनो तमारा परनो अत्यंत ... विविध प्रकारनो अनुभाव तमने निष्कामी केम न थयो ? हे ... वीर !' एम कहीने कोनी पासे पृच्छा करशु अने अमारा संशयो टाळशु के ... अमने मुग्धोने आश्वासन आपीने मोक्षे चाल्या गया ? हे स्वामी ! हवे अमे ... तमारा जेवो संघनी निःस्पृहपणे सारसार करनारो कोइ नथी हवे भावनेत्रने ... अने जीवोना नायक एवा अमोघ तमारा नामने कोण धारण करशे ? हे ... तमे अमारा त्राता छो तो लोकोना चित्तनी गतिने जाणवा छतां अमारी उपेक्षा करो छो ? हवे मूर्तिमान् ज्ञानवडे संसारनु स्वरूप अमे केवी रीते जाणीशु ? "

आ प्रमाणे लोको विलाप करता हता ते अवसरे काशी अने कोशल ... राजानी आज्ञामा वर्तनारा अने नव मल्लकीजातिना तथा नव लच्छकीजातिना ... अढार राजाओ कोई कार्यप्रसंगे त्यां एकठा थया हता तेओ अमावास्याने दिवसे ... पोषध सहित उपवास करी जिनवाणी सांभळता हता रात्रिने समये श्रीवीरजिनेंद्रनु ... निर्वाणकल्याणक थतां ते राजाओए पाछली रात्रिए श्रीवीरप्रभुरूप भावउद्योत ... अस्त थइ जवाथी व्यापी गयेला बन्ने प्रकारना अंधकारने सहन न थवाथी द्रव्यउद्योत ... करनारा दीवा कर्या तेमज छता आवता देवदेवीओथी ते रात्रि ज्योतिर्मय थइ गइ ... ते समये देवताना गण अंधकारने हरनारा प्रकाशित रत्न हाथमा लइ त्यां आववा ... लाग्या अने प्रभु प्रत्ये कहेवा लाग्या के ' हे प्रभु ! अमे आपनी आरति उतारीए ... छीए ,' एथी सर्व स्थळे मेआराइय (अमारी आरति) एवो शब्द लोकोमा प्रसरी ... गयो एटले लोको पण हाथमा दीपावळी लई ' आ अमारी आरती ! ...

था आव्या आ प्रमाणे परस्पर सर्व स्थळे दीवा थवा लाग्या मोए द्रव्यउद्योत कर वार दीपश्रेणी करवाथी दीपोत्सवी नामनु पर्व त्यारथी लोकमा प्रवर्त्युं

भस्मराशिग्रह भगवतना जन्मनक्षत्रे सक्रम्यो त्यारथी मिथ्यात्वी देवताओ वगेरे वीरभगवतना शासन प्रत्ये दुष्टता करे छे. तेमना करेला दुष्ट फळने हणवाने माटे मेराया थवा लाग्या एटले ' श्री वीरप्रभुना सघनी आर्ति–पीडा दूर थाओ ' एवी धारणाने लईने रूढीथी ए पर्वमा मेराया करवानु पण प्रवर्त्युं

हवे देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध आपीने प्रभाते गौतमगणधर श्रीवीरप्रभुने वांदवा तेमनी पासे आववा चाल्या. त्या मार्गमा निरुत्साही अने निरानदी एवा घणा देव, मनुष्यो तथा नारीओने जोई गौतमस्वामीए पूछ्यु के ' अत्यारे तमे सौ आम आनद रहित केम थई गया छो ? ' त्यारे देवताओए कह्यु–' श्री वीरप्रभु मुक्ति पाम्या, तेथी अमे दिलगीर थयेला छीए ' ते साभळी जेमना नेत्र स्तभित थई गया छे एवा गौतमगणधर मनमा चितववा लाग्या–" अहो ! जगच्चक्षु श्रीवीरप्रभु चाल्या गया ! हवे मारा जेवा भिक्षुओने इक्षुरस जेवी मीठी वाणीथी कोण प्रतिबोध आपशे ? हे नाथ ! आवे समये तमारावडे ज जीववारा आश्रितने दूर करवो ते योग्य नहोतु. हे स्वामी ! तमे मने अतराळे मूकीने मोक्षे चाल्या गया ! मने पासे राख्यो होत तो शु हुं तमारा वस्त्रनो छेडो पकडीने बाळचेष्टा करत ? हे प्रभु ! तमे मोहादि महायोद्धाओथी भय पाम्या नहि अने आ अल्प शिशुथी केम भय पाम्या ? अथवा शु मारा आववाथी मारी अवगाहनावडे मोक्षस्थान साकडु थई जात ? ते स्थानके तो अनतगुणपर्यायवाळा स्वस्वधर्मयुक्त अनत जीवो परस्पर बाधारहित मिलाप रहेला छे अने आगामी काळे रहेवाना छे. आवी सिद्धनी स्थितिनुं वर्णन तो तमे ज करेलु छे हे प्रभु ! तमे सहसा वियोग केम कर्यो ? हे वीतराग ! तमारा दर्शन विना हु चर्ची योनिओमा अनंतीवार भम्यो छु, एम भमता भमता महा भाग्ययोगे तमारु दर्शन प्राप्त थयेलु छे, तो हवे मारे वियोग थवो न जोईए हे वीतराग ! जे समये तमने वदना करवानो महोत्सव मने प्राप्त थयो ते दिवस सफळ हतो अने ते क्षण सर्व कामनाने पूरनारी हती. हे स्वामी ! आ बाळकने मिष्ट वचनथी लोभावी तमारे चाल्यु जवु ते योग्य नथी, हवे ' हे गोयम ! ' एवा मधुर वचनवडे तमारा आगमनु रहस्य कोण बतावशे ? हे जिननाथ ! मने दर्शन आपो ! हवे विलब करो छो ते तमने शोभतु नथी हे भगवन् ! पोतानो आग्रह छोडी द्यो, नहि तो पछी सागर एवी तमारी विख्याति शी रीते घटशे ? हे प्रभु ! हवे हु कोना चरणकमळने वादीश ? मे तो मारु जीवित तमारामा ज स्था-

१ मे आराइयनो अपभ्रश मेराया समजवो

શ્રી ઉપદેશપ્રાસાદ ભાષાંતર

આ ગ્રંથના કર્તા શ્રી વિજયલક્ષ્મીસૂરિ છે તેમણે આ ગ્રંથરૂપ પ્રાસાદના સ્થભો કલ્પી દરેક સ્થભની પદર પદર અસ્ર (હાશ) કલ્પી છે એ રીતે વર્ષ દિવસપ્રમાણુ ૩૬૦ વ્યાખ્યાનોરૂપ સસ્કૃત ભાષામા આ ગ્રંથ રચ્યો છે પ્રસગે અ સૂત્રોના તથા ગ્રંથોના આધાર શ્લોકો તથા ગદ્ય તરીકે આપેલા છે તેનુ ભાષા કરાવીને અમે તે પાચ ભાગમા પ્રગટ કરેલુ છે

પ્રથમ ભાગમા પ્રથમના ચાર સ્થભ ને ૬૧ વ્યાખ્યાન આપેલા છે તેમા સમ કિતના ૬૭ બોલનુ વર્ણન કથાઓ સાથે આપેલુ છે કિં રૂા ૨ાા

બીજા ભાગમા પાચમાથી નવમા સુધીના પાચ સ્થભ ને ૭૪ વ્યાખ્યા ૬૨ થી ૧૩૫ સુધી આપેલા છે તેમા શ્રાવકના પાચ અણુવ્રત ને ત્રણ ગુણવ્રત સ્વરૂપ કથાઓ સાથે આપેલુ છે કિં રૂા ૨)

ત્રીજા ભાગમા દશમાથી ચૌદમા સુધીના પાચ સ્થભ ને ૭૫ વ્યાખ્યાન ૧૩ થી ૨૧૦ સુધી આપેલા છે તેમા ચાર શિક્ષાવ્રતોનુ સ્વરૂપ તથા બીજી અને બાબતો કથાઓ સાથે આપેલી છે કિં રૂા ૨)

ચોથા ભાગમા પદરમાથી ઓગણીશમા સુધી પાચ સ્થભ ને ૭૫ વ્યાખ્યા ૨૧૧ થી ૨૮૫ સુધી આપેલા છે તેમા જિનપૂજાદિ અનેક વિષયોનુ તથા જ્ઞાના ચારાદિ ત્રણ આચારોનુ સ્વરૂપ કથાઓ સાથે આપેલુ છે કિં રૂા ૨ાા

પાચમા ભાગમા વીશમાથી ચોવીશમા સુધી પાચ સ્થભ ને ૭૬ વ્યાખ્યાનો ૨૮૬ થી ૩૬૧ સુધી આપેલા છે તેમા તપાચાર ને વીર્યાચારનુ સ્વરૂપ, ઉપાધ્યાયજીના કરેલા ૩૨ અષ્ટકો ઉપર ૩૮ વ્યાખ્યાન તથા તપગચ્છની પટ્ટાવળી વિગેરે અનેક બાબતો કથાઓ સાથે આપેલ છે કિં રૂા ૨ાા **પાચે ભાગ ભેગા લેનારના રૂા ૧૦)**

આ દરેક વ્યાખ્યાનમા પ્રાયે નાની મોટી એકેક કથા આપેલી છે તે બધી (૩૫૨) કથાઓની અનુક્રમણિકા અક્ષરાનુક્રમે પાચમા ભાગની પ્રાતે આપેલ છે તે જોવાથી જે કથા જાણુવાની ઈચ્છા હોય તે તરતજ નીકળી શકે છે

આ ગ્રંથમા જ્ઞાનપચમી વિગેરે તમામ પર્વતિથિઓના વ્યાખ્યાન એટલે (૧૧) પર્વની કથા આપેલી છે તેની અનુક્રમણિકા પણ પાચમા ભાગને [illegible] પેલી

પ્રથમ વ્યાખ્યાનની શરૂઆત ચૈત્ર શુદિ ૧ થી [illegible]
ગણત્રીએ બધા પર્વના વ્યાખ્યાનો આપેલા છે [illegible]